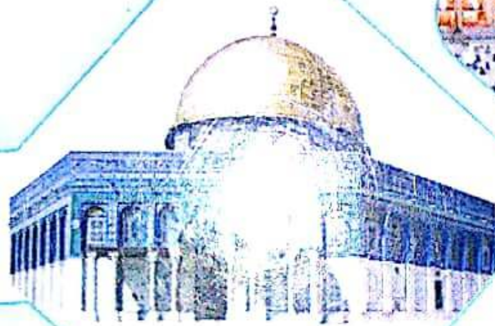
सच्ची हिकायात

हज़रत मौलाना अबुन्नूर मौहम्मद बशीर साहब









अदबी दुनिया

इल्तिज़ा है कि इस किताब को अपनी मोबाईल की मैमोरी में सेव करके ना रखे वल्कि आप से गुजारिश है कि इस किताब का मुताला की जिये ये किताब बहुत शानदार है।

दुआ की गुजारिश
डॉ ज़ाहूर रज़वी
अल अश्हर अकडमी

दुआ की ग़ुज़ारिश
मोहम्मद अहतिराम क़ुरैशी

आप हज़रात से गुजारिश है कि इस किताब को आप अपना निम्ती वक़्त दे और इस किताब का मुताला करे और हम ना चीज़ को अपनी अपनी दुआओं में याद रखे

नाम किताब	:	सच्ची हिकायात मुकम्मल
तालीफ़	:	मौलाना अबु अलनूर बशीर
सन इशाअत	:	2013
सफ़हात	:	936
मतबअ	:	नाहिद प्रेस, देहली
हदिया	:	
नाशिर	:	अदबी दुनिया, देहली

इस किताब में

कुतब अहादीस और दीगर मुसतनिद इस्लामी किताबों से दिलचस्प, मुफ़ीद और सबक़ आमोज़ हिकायात जमा कर दी गई हैं और हर हिकायत के बाद इससे जो सबक़ हासिल होता हैए लिख दिया गया है और हर हिकायत को असल किताब से देखकर दर्ज किया गया है और किताब का नाम, सफ़हा और जिल्द सब कुछ दिया गया है।

Publisher

ADABI DUNIYA

399, Matia mahal, jama masjid,
Delhi - 110006
Phone : 23250122

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहली नज़र

इस ज़माने में अफ़्साने, ड्रामे, किस्से और कहानियाँ बड़े शौक़ से पढ़ी जाती हैं और ये शौक़ बिलअमूम हर छोटे बड़े मर्द और औरत में पाया जाता है, आज कल हर वो तहरीर जिसमें अफ़्सानवी तर्ज़ और हिकायती रंग मौजूद हो, पसंदीदगी की नज़र से देखी जाती है, क़ौम का यही रूहजान तबअे इस अम्र का बाइस है के मुल्क के अक्सर रसायल व जरायद अपने अपने "कहानी नम्बर" और "अफ़्साना नम्बर" शाय करते हैं और अफ़्साना पसंद अफ़राद इन्हें हाथों हाथ लेते हैं।

ये अफ़्साने, ड्रामे और आज कल की हिकायात व कहानियाँ ज़्यादा तर दरोग़ व कज़िब और ग़ैर वाक़ेई बिना पर मुबनी होती हैं, उनकी कोई हक़ीक़त और असल नहीं होती और ऐसे अफ़्साना लिखने वाले उन वज़अई हिकायात को "तबै ज़ाद" और अपनी तख़लीक़ क़रार देकर अपने वज़अे व कज़िब को अपना एक शाहकार साबित करते हैं और अफ़्साना पसंद तबीअतें उन्हें उस कारनामे पर दादे तहसीन देतीं हैं और उसे तरक़्क़ी पसंद अदब के नाम से मोसूम करने लगती हैं।

क़िस्से और हिकायात ज़रूरी नहीं के झूट ही हों, इस आलम में क़िस्सों और सच्ची हिकायात का वजूद भी है, खुद क़ुरआने पाक और अहादीसे शरीफ़ा में भी हिकायात व क़सस मौजूद हैं और वो हिकायात व क़सस ऐसे हैं जिनमें सौ फ़ीसदी सदाक़त है और जो अपनी सदाक़त के बाइस मख़्लूक़ के लिए मौजिबे रूश्दो हिदायत और वजह दर्से इब्रत हैं। खुदा तआला ने अपनी सच्ची किताब मजीद में अम्बियाइक्राम अलेहिमअस्सलाम के ईमान अफ़रोज़ क़िस्से और उमम साबिक़ा की सबक़ आमोज़ हिकायात बयान फ़रमाई हैं और रसूले खुदा सल-लल्लाहो-तआला-अलेह व सल्लम ने भी अपने इर्शादाते आलिया में पहली उम्मतों के इब्रत आमोज़ वाक़ेयात और सबक़ आमोज़ हिकायात सुनाई हैं और इसी तरह बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात और उनकी तालीफ़ात में भी इस क़िस्म की सच्ची हिकायत का वजूद पाया जाता है मगर मुश्किल ये है के ये सब पुरानी बातें हैं और इस नए दौर में उन परानी बातों की तरफ़ तवज्जह नहीं की जाती ऐ काश! मुसलमान आज

कल के लायानी अफ़्सानों और वज़अई और झूटी हिकायात की बजाए अपने हक़ीक़ी अफ़्सानों और सच्ची हिकायात को पढ़ते पढ़ाते तो दिलचस्पी के अलावा उन्हें दीनी और दुनयवी फ़वायद भी हासिल होते।

मुद्दत से मेर दिल में ये ख़याल था के क़ुरआन व हदीस और दीगर इस्लामी लिटरेचर से हक़ीक़ी क़िस्सों और सच्ची हिकायात को जमा करूं और उन्हें सादा और आम फ़हेमो तर्ज़ में क़लमबंद कर के मुसलमानों के लिए एक ऐसी किताब लिखूं जिसका मुतअल्ला उनके लिए दिलचस्पी भी पैदा करे और साथ साथ ही उनके लिए सबक़ व इब्रत पेश करके उनके दीन व दुनिया की इसलाह भी करे चुनाँचे इसी अपने इरादे के तहेत मैंने सच्ची हिकायात को जमा करना शुरू कर दिया और क़ुरआन व हदीस के अलावा और बहुत सी इस्लामी कुतुब का मुतअल्ला करने के बाद इस सबक़ आमोज़ सिसिले की इब्तिदा कर दी।

मेरे ज़हेन में ये सिलसिला बड़ा तवील है और इरादा है के मुबारक सिलसिला को दूर तक ले जाऊँ, मैंने इस तालीफ़ के लिए जो बाब तजवीज़ किए हैं वो हस्बे ज़ेल हैं:-

पहला बाब	तौहीदे बारी
दूसरा बाब	सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा सल-लल्लाहो-अलेह व सल्लम
तीसरा बाब	अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल-सलाम
चौथा बाब	ख़ुलफ़ाए राशिदीन रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
पाँचवा बाब	सहाबाइक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
छटा बाब	अहले बैत अेज़ाम रिज़वान-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन
सातवाँ बाब	आयम्माइक्राम रहमत-उल्लाही अलेहिम अजमईन
आठवाँ बाब	औलियाइक्राम रहमत-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन
नवाँ बाब	सलातीने इस्लाम
दसवाँ बाब	मुख़्तलिफ़ हिकायात

चूँके ये सिलसिला बहुत तवील है इसलिए इस किताब को तीन हिस्सों पर तक़सीम कर दिया है इसका ये पहला हिस्सा जो आपके हाथ में है पहले चार अबवाब पर मुशतमिल है, इसमें पहला, दूसरा, तीसरा, और चौथा बाब है और बाक़ी दूसरे अबवाब इंशाअल्लाह दूसरे हिस्सों में आएँगे इस किताब के पहले बाब में ऐसी हिकायात का इन्तिख़ाब है जिनका ताल्लुक़ "तौहीदे बारी" से है और दूस. बाब में उन रिवायात व हिकायात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ातेग्रामी से है, उन सच्ची हिकायात व रिवायात से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मरातिब व मदारिज, आपके इख़्तियारात व कमालात और आपके उलूम का पता चलता है और ये बात साबित होती है के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार हैं और दानाऐ ग़यूब हैं और हर गिज़ हर गिज़ हमारी मिस्ल नहीं हैं, तीसरे बाब में अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल सलाम के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे पता चलता है के अम्बियाऐक्राम की बहुत बड़ी शानें हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात अता फ़रमाए हैं, चौथे बाब में ख़ुल्फ़ाऐ राशिदीन यानी हज़रत सिद्दिके अक्बर, हज़रते उमर फ़ारूक़ आज़म हज़रत उस्मान ज़ुलनोरैन और हज़रते मौला अली रिज़्वानउल्लाही अलेहिम अजमईन के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे इन चार याराने नबी के मरातिब व मदारिज ज़ाहिर होते हैं और पता चलता है के ये चारों ही अल्लाह के महबूब के महबूब हैं और उनकी मोहब्बत ऐन ईमान है और उनकी अदावत से ईमान जाता रहता है। इस हिस्से में ये चारों बाब हैं बाक़ी के छः अबवाब दूसरे और तीसरे हिस्से में हैं।

ज़रूरत है के आज वो मुसलमान जो क़िस्सों के शौक़ीन हैं वो झूटी हिकायात को छोड़ कर उन सच्ची हिकायात को पढ़ें ताके उन के लिए दीनी तरक़्क़ी का सबब हो और वो मुसलमान औरतें जो रातों में बच्चों को झूटी कहानियाँ सुनाया करती हैं इन सच्ची हिकायात को पढ़ें, याद करें और अपने बच्चों को ये सच्ची हिकायात सुनाएँ ताके बच्चों के दिल में भी दीन की रग़बत पैदा हो।

(अबु अलनूर मोहम्मद बशीर)

फेहरिस्त हिकायात

पहला बाब
वजूदे बारी और तौहीद

दूसरा बाब
सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा(स०अ०स०)

तीसरा बाब
अम्बियाइक्राम (अलेहिस्सलाम)

चौथा बाब

खुलफ़ा-ए-राशिदीन

हिस्सा दोम
पाँचवाँ बाब
सहाबा इक्राम रिज़्वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

छटा बाब
अहले बैत अेज़ाम रिज़वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

सातवाँ बाब

आइम्मा इक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

हिस्सा सोम

आठवाँ बाब

औलिया इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन

नवाँ बाब
खुलफा-ए-सलातीन

दसवाँ बाब
मुख़्तलिफ हिकायात

हिस्सा चहरम
दसवाँ बाब
मुख़्तलिफ़ हिकायात

अदब-उल-अरब

पाँचवाँ हिस्सा
ग्यारहवाँ बाब

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहला बाब

वजूदे बारी और तौहीद

हिस्सा अव्वल

लो काना फ़ीहिमअ आलिहातन इल्ललाहू लफ़सादता

हिकायत नम्बर (1) हज़रत इमाम आज़म(र०अ०) का एक दहरिया से मुनाज़रह

हमारे इमाम हज़रत इमामे आज़म रज़ीअल्लाहो अन्ह का एक दहरिया, खुदा की हस्ती के मुनकिर से मुनाज़रा मुक़र्रर हुआ और मोज़ूअे मुनाज़रा यही मसला था के आलम का कोई ख़ालिक़ है या नहीं? इस अहम मसले पर मुनाज़रा और फ़िर इतने बड़े इमाम से चुनाँचे मैदाने मुनाज़रा में दोस्त दुश्मन सभी जमा हो गए मगर हज़रते इमाम आज़म वक़्ते मुक़र्ररह से बहुत देर के बाद मजलिस में तशरीफ़ लाए, दहरिया ने पूछा के आपने इतनी देर क्यों लगाई? आपने फ़रमाया के अगर मैं इसका जवाब ये दूं के मैं एक जंगल की तरफ़ निकल गया था वहाँ एक अजीब वाक़ेया नज़रा आया जिसको देखकर मैं हैरत में आकर वहीं खड़ा हो गया और वो वाक़ेया ये था के दरया के किनारे एक दरख़्त था, देखते ही देखते वो दरख़्त खुद ब खुद कट कर ज़मीन पर गिर पड़ा फिर खुद उसके तख़्ते तैयार हुए फिर उन तख़्तों की खुद ब खुद एक कश्ती तैयार हुई और खुद ब खुद ही दरया में चली गई और फ़िर खुद ब खुद ही वो दरया के इस तरफ़ के मुसाफ़िरों को उस तरफ़ और उस तरफ़ के मुसाफ़िरों को इस तरफ़ लाने और ले जाने लगी, फिर हर एक सवारी से खुद ही किराया भी वसूल करती थी,

तो बताओ तुम मेरी इस बात पर यक़ीन कर लोगे?

दहरिया ने ये सुन कर एक क़हेक़हा लगाया और कहा, आप जैसा बुज़ुर्ग और इमाम ऐसा झूट बोले तो तआज्जुब है, भला ये काम क़हीं खुद ब खुद हो सकते हैं? जब तक कोई करने वाला ना हो किसी तरह नहीं हो सकते।

हज़रते इमाम आज़म ने फ़रमाया के ये तो कुछ भी काम नहीं हैं तुम्हारे नजदीक तो उससे भी ज़्यादा बड़े बड़े आलीशान काम खुद ब खुद बगैर

किसी करने वाले के तैयार होते हैं, ये ज़मीन, ये आसमान, ये चाँद, ये सूरज, ये सितारे, ये बाग़ात, ये सदहा क़िस्म के रंगीन फूल और शीरीं फल ये पहाड़, ये चौपाए, ये इंसान, और ये सारी खुदाई बग़ैर बनाने वाले के तैयार हो गई, अगर एक कश्ती का बग़ैर किसी बनाने वाले के खुद ब खुद बन जाना झूट है तो सारे जहान का बग़ैर बनाने वाले के बन जाना इससे भी ज़्यादा झूट है।

दहरिया आपकी तक़रीर सुन कर दम ब खुद हैरत में आ गया और फ़ौरन अपने अक़ीदे से तायब होकर मुसलमान हो गया। (तफ़्सीर कबीर सफ़ा 221 जिल्द 1)

सबक़:- इस कायनात का यक़ीनन एक ख़ालिक़ है जिसका नाम अल्लाह है और वजूदे बारी का इंकार अक्ल के भी ख़िलाफ़ है।

हिकायात नम्बर (2) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (र॰अ॰) और एक दहरिया मल्लाह

खुदा की हस्ती के एक मुनकिर की जो मल्लाह था हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ीअल्लाहो अन्ह से गुफ़्तगू हुई, वो मल्लाह कहता था के खुदा कोई नहीं(मआज़ अल्लाह!) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ीअल्लाहो अन्ह ने उससे फ़रमया तुम जहाज़ रान हो, ये तो बताओ कभी समुंद्री तूफ़ान से भी तुम्हें साबिक़ा पड़ा? वो बोला हाँ! मुझे अच्छी तरह याद है के एक मर्तबा समुंद्र के सख़्त तूफ़ान में मेरा जहाज़ फंस गया था, हज़रत इमाम ने फ़रमाया फिर क्या हुआ? वो बोला, मेरा जहाज़ ग़र्क़ हो गया और सब लोग जो उस पर सवार थे डूब कर हलाक हो गए, आपने पूछा और तुम कैसे बच गए? वो बोला मेरे हाथ जहाज़ का एक तख़्ता आ गया, मैं उसके सहारे तेरता हुआ साहिल के कुछ क़रीब पहुँच गया मगर अभी साहिल दूर ही था के वो तख़्ता भी हाथ से छूट गया, फिर मैंने खुद ही कोशिश शुरू कर दी और हाथ पैर मार कर किसी ना किसी तरह किनारे आ लगा, हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाने लगे, लो अब सुनो!

जब तुम अपने जहाज़ पर सवार थे तो तुम्हें अपने जहाज़ प्रर ऐतमाद व भरोसा था के ये जहाज़ पार लगा देगा और जब वो डूब गया तो फिर तुम्हारा ऐतमाद व भरोसा उस तख़्ते पर रहा जो इत्तेफ़ाक़न तुम्हारे हाथ लग गया था मगर जब वो भी तुम्हारे हाथ से छूट गया तो अब सोच कर बताओ के इस बेसहारा वक़्त और बेचारगी के आलम में भी क्या तुम्हें ये उम्मीद थी

के अब भी कोई बचाना चाहे तो मैं बच सकता हूँ? वो बोला हाँ! ये उम्मीद तो थी, हज़रत ने फ़रमाया मगर वो उम्मीद थी किससे के कौन बचा सकता है? अब वो दहरिया ख़ामोश हो गया और आपने फ़रमया खूब याद रखो उस बेचारगी के आलम में तुम्हें जिस ज़ात पर उम्मीद थी वही खुदा है और उसी ने तुम्हें बचा लिया था, मल्लाह ये सुन कर होश में आ गया और इस्लाम ले आया। (तफ़्सीर कबीर सफ़ा 221 जिल्द 1)

सबक़: खुदा है और यक़ीनन है और मुसीबत के वक़्त ग़ैर इख़्तियारी तौर पर भी खुदा की तरफ़ ख़याल जाता है गोया खुदा की हस्ती का इक़्रार फ़ित्री चीज़ है।

हिकायात नम्बर (3) एक अक़्लमंद बुढ़िया

एक आलिम ने एक बुढ़िया को चर्खा कातते देख कर फ़रमाया के बुढ़िया! सारी उम्र चर्खा ही काता या कुछ अपने खुदा की भी पहचान की? बुढ़िया ने जवाब दिया के बेटा सब कुछ इसी चर्खे में देख लिया, फ़रमाया! बड़ी बी! ये तो बताओ के खुदा मौजूद है या नहीं? बुढ़िया ने जवाब दिया के हाँ हर घड़ी और रात दिन हर वक़्त खुदा मौजूद है, आलिम ने फ़रमाया मगर इसकी दलील? बुढ़िया बोली, दलील ये मेरा चर्खा, आलिम ने पूछा ये कैसे? वो बोली वो ऐसे के जब तक मैं इस चर्खे को चलाती रहती हूँ ये बराबर चलता रहता है और जब मैं इसे छोड़ देती हूँ तब ये ठहर जाता है तो जब इस छोटे से चर्खे को हर वक़्त चलाने वाले की ज़रूरत है तो ज़मीन व आसमान, चाँद सूरज के इतने बड़े चर्खों को किस तरह चलाने वाले की ज़रूरत ना होगी? पस जिस तरह ज़मीन व आसमान के चर्खे को एक चलाने वाला चाहिए जब तक वो चलाता रहेगा ये सब चर्खे चलते रहेंगे और जब वो छोड़ देगा तो ये ठहर जाऐंगे मगर हम ने कभी ज़मीन व आसमान, चाँद सूरज को ठहरे नहीं देखा तो जान लिया के उनका चलाने वाला हर घड़ी मौजूद है। मौलवी साहब ने सवाल किया, अच्छा ये बताओ के आसमान व ज़मीन का चर्खा चलाने वाला एक है या दो? बुढ़िया ने जवाब दिया के एक है और इस दावे की दलील भी यही मेरा चर्खा है क्यों के जब इस चर्खे को मैं अपनी मर्ज़ी से एक तरफ़ को चलाती हूँ ये चर्खा मेरी मर्ज़ी से एक ही तरफ़ को चलता है अगर कोई दूसरी चलाने वाली भी होती फिर या तो वो मेरी मददगार होकर मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ चर्खा चलाती तब तो चर्खा की रफ़्तार तेज़ हो जाती और इस चर्खे की रफ़्तार में फ़र्क़ आकर नतीजा

हासिल ना होता और अगर वो मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ और मेरे चलाने की मुख़ालिफ़ जहेत पर चलाती तो ये चर्खा चलने से ठहर जाता या टूट जाता मगर ऐसा नहीं होता इस वजह से के कोई दूसरी चलाने वाली नहीं है इसी तरह आसमान व ज़मीन का चलाने वाला अगर कोई दूसरा होता तो ज़रूर आसमानी चर्खा की रफ़्तार तेज़ होकर दिन रात के निज़ाम में फ़र्क़ आ जाता या चलने से ठहर जाता या टूट जाता जब ऐसा नहीं है तो ज़रूर आसमान व ज़मीन के चर्खे को चलाने वाला एक ही है। (सीरत-उल-सालेहीन स०:3)

सबक़:- दुनिया की हर चीज़ अपने ख़ालिक़ के वजूद और उसकी यक्ताई पर शाहिद है मगर अक़्ले सलीम दरकार है।

दूसरा बाब

सय्यद-उल-अम्बिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा (स०अ०स०)

वमा अरसल्नाका इल्ला रहमतल-लिलआलमीन

हिकायत नम्बर (4) जिब्राईले अमीन और एक नूरानी तारा

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने हज़रत जिब्राईले अमीन अलेहिस्सलाम से दरयाफ़्त फ़रमाया के ऐ जिब्राईल तुम्हारी उम्र कितनी है? तो जिब्राईल ने अर्ज़ किया हुज़ूर मुझे कुछ ख़बर नहीं हाँ इतना जानता हूँ के चौथे हिजाब में एक नूरानी तारा सत्तर हज़ार बरस के बाद चमकता था, मैंने उसे बहत्तर हज़ार मर्तबा चमकते देखा है, हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने ये सुनकर फ़रमाया *व इज़्ज़ती रब्बी अना ज़ालिकल कोकब* मेरे रब की इज़्ज़त की क़सम! मैं ही वो नूरानी तारा हूँ। (रूह-उल-बयान सफ़ा 974 जिल्द 1)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम कायनात की हर चीज़ से पहले पैदा फ़रमाए गए हैं और आपका नूरे पाक उस वक़्त भी था जब के ना कोई फ़रिश्ता था ना कोई बशर ना ज़मीन थी ना आसमान और ना कोई और शै। फ़सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम।

हिकायत नम्बर (5) यमन का बादशाह

किताब-उल-मुसतज़रफ़ और हज्जतुल्लाह अली अलआलमीन और तारीखे इब्ने असाकर में है के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से एक हज़ार साल पैश्तर यमन का बादशा तुब्बअे अव्वल हमेरी था एक मर्तबा वो अपनी सल्तनत के दौरे को निकला, बारह हज़ार आलिम और हकीम और एक लाख बत्तीस हज़ार सवार और एक लाख तेरह हज़ार पियादे अपने हमराह लिए और इस शान से निकला के जहाँ भी पहुँचता उसकी शान व शौकते शाही देखकर मख्लूके खुदा चारों तरफ़ से नज़ारे को जमा हो जाती थी, ये बादशाह जब दौरा करता हुआ मक्का पहुँचा तो अहले मक्का से कोई उसे देखने ना आया, बादशा हैरान हुआ और अपने वज़ीरे आज़म से इसकी वजह पूछी तो उसने बताया के इस शहर में एक घर है जिसे बैत-उल्लाह कहते हैं, उसकी और उसके ख़ादिमों की जो यहाँ के बाशिन्दे हैं तमाम लोग बेहद तअज़ीम करते हैं और जितना आपका लश्कर है उससे कहीं ज़्यादा दूर और नज़दीक के लोग उस घर की ज़ियारत को आते हैं और यहाँ के बाशिन्दों की ख़िदमत करके चले जाते हैं, फिर आपका लश्कर उनके ख़याल में क्यों आए, ये सुन कर बादशाह को ग़ुस्सा आया और क़सम खा कर कहने लगा के मैं उस घर को खुदवा दूंगा और यहाँ के बाशिन्दों को क़त्ल करवाऊँगा, ये कहना था के बादशा के नाक, मुंह और आँखों से खून बहना शुरू हो गया और ऐसा बदबूदार माद्दा बहने लगा के उसके पास बैठने की भी किसी को ताक़त ना रही, इस मर्ज़ का इलाज किया गया मगर अफ़ाक़ा ना हुआ शाम के वक़्त बादशा के हमराही उलमा में से एक आलिम रब्बानी तशरीफ़ लाए और नब्ज़ देख कर फ़रमाया, मर्ज़ आसमानी है और इलाज ज़मीन का हो रहा है, ऐ बादशाह! आपने अगर कोई बुरी नीयत की है तो फ़ौरन उससे तौबा कीजिए, बादशाह ने दिल ही दिल में बैत-उल्लाह शरीफ़ और ख़ुद्दामे कअबा के मुतअल्लिक़ अपने इरादे से तौबा की, तौबा करते ही उसका वो खून और माद्दा बहना बन्द हो गया और फिर सेहत की खुशी में उसने बैत-उल्लाह शरीफ़ को रेशमीं ग़िलाफ़ चढ़ाया और शहर के हर बशिन्दे को सात सात अशर्फ़ी और सात सात रेशमी जोड़े नज़्र किए।

फिर यहाँ से चल कर जब मदीना मुनव्वरह पहुँचा तो हमराही उल्मा ने जो कुतुब समाविया के आलिम थे वहाँ की मिट्टी को सूंघा और कंकरियों को देखा और नबी आख़िर-उज़्ज़माँ की हिज्रतगाह की जो अलामतें उन्होंने पढ़ी

थीं, उनके मुताबिक़ उस सरज़मीन को पाया तो बाहम अहेद कर लिया के हम यहाँ ही मर जाएंगे मगर इस सर ज़मीन को ना छोड़ेंगे, अगर हमारी क़िस्मत ने यावरी की तो कभी ना कभी जब नबी आख़िर-उज़्ज़माँ सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम यहाँ तशरीफ़ लायेंगे हमें भी ज़ियारत का शर्फ़ हासिल हो जाएगा, वरना हमारी क़ब्रों पर तो ज़रूर ही कभी ना कभी उनकी जूतियों की मुक़द्दस खाक उड़कर पड़ जाएगी जो हमारी निजात के लिए काफ़ी है।

ये सुनकर बादशाह ने उन आलिमों के वास्ते चार सौ मकान बनवाए और इस बड़े आलिमे रब्बानी के मकान पास हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़ातिर एक दो मंज़िला उम्दा मकान तैयार कराया और वसीयत कर दी के जब आप तशरीफ़ लायें तो ये मकान आपकी अरामगाह होगी और उन चार सौ उल्मा की काफ़ी माली इम्दाद भी की और कहा, तुम हमेशा यहीं रहो और फिर इस बड़े आलिमे रब्बानी को एक ख़त लिख दिया और कहा के मेरा ये ख़त इस नबी आख़िर-उज़्ज़माँ सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में पेश कर देना और अगर ज़िन्दगी भर तुम्हें सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़्यारत का मौक़ा ना मिले तो अपनी औलाद को वसीयत कर देना के नस्लन बाद नस्ल मेरा ये ख़त महेफ़ूज़ रखें हत्ता के सरकारे अब्दक़रार सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में पेश किया जाए, ये कहकर बादशाह वहाँ से चल दिया।

वो ख़त नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में एक हज़ार साल बाद पेश हुआ कैसे हुआ और ख़त में क्या लिखा था? सुनिए और अज़्मते मुसतफ़ा सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का एत्राफ़ फ़रमाईए, ख़त का मज़्मून ये था:

(तर्जुमह)"कमतरीन मख़्लूक़ तबअे अव्वल हमेरी की तरफ़ से, शफ़ीअ-उलमुज़्नबीन सय्यद-उलमुर्सलीन मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो व सल्लम अम्मा बाद: ऐ अल्लाह के हबीब मैं आप पर ईमान लाता हूँ और जो किताब आप पर नाज़िल होगी उस पर ईमान लाता हूँ और आपके दीन पर हूँ, पस अगर मुझे आपकी ज़्यारत का मौक़ा मिल गया तो बहुत अच्छा व ग़नीमत और अगर मैं आपकी ज़्यारत ना कर सका तो मेरी शफ़ाअत फ़रमाना और क़यामत के रोज़ मुझे फ़रामोश ना करना, मैं आपकी पहली उम्मत में से हूँ और आपके साथ आपकी आमद से पहले ही बैत करता हूँ, मैं गवाही देता हूँ के अल्लाह एक है और आप उसके सच्चे रसूल हैं।"

शाहे यमन का ये ख़त नस्लन बाद नस्ल उन चार सौ उल्मा के अन्दर

हर्ज़ेजान की हैसियत से महेफ़ूज़ चला आया यहाँ तक के एक हज़ार साल का अर्सा गुज़र गया, उन उल्मा की औलाद इस कसरत से बढ़ी के मदीने की आबादी में कई गुना इज़ाफ़ा हो गया और ये ख़त दस्त ब दस्त मअे वसीयत के उस बड़े आलिमे रब्बानी की औलाद में से हज़रत अबु अय्युब अनसारी रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास पहुँचा और आपने वो ख़त अपने गुलामे ख़ास अबु लैला की तहवील में रखा और जब हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मक्का-ए-मोअज़्ज़मा से हिज्रत फ़रमा कर मदीना मुनव्वरह पहुँचे और मदीना मुनव्वरह की अलविदाई घाटी सनियात की घाटियों से आपकी ऊँटनी नमूदार हुई और मदीने के खुश नसीब लोग महेबूबे खुदा का इस्तक़बाल करने को जूक़ दर जूक़ आ रहे थे और कोई अपने मकानों का सजा रहा था तो कोई गलियों और सड़कों को साफ़ कर रहा था कोई दावत का इन्तेज़ाम कर रहा था और सब यही इसरार कर रहे थे के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मेरे घर तशरीफ़ फ़रमा हों। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के मेरी ऊँटनी की नकेल छोड़ दो जिस घर में ये ठहरेगी और बैठ जाएगी वही मेरी क़यामगाह होगी, चुनाँचे जो दो मंज़िला मकान शाहे यमन तबअे ने हुज़ूर की ख़ातिर बनवाया था वो उस वक़्त हज़रत अबु अय्युब अनसारी रज़ी अल्लाहो अन्ह की तहवील में था, उसी में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ऊँटनी जाकर ठहर गई। लोगों ने अबु लैला को भेजा के जाओ हुज़ूर को शाहे यमन तबअे का ख़त दे आओ जब अबु लैला हाज़िर हुआ तो हुज़ूर ने उसे देखते ही फ़रमाया तू अबु लैला है? ये सुनकर अबु लैला हैरान हो गया हुज़ूर ने फिर फ़रमाया, मैं मोहम्मद रसूल अल्लाह हूँ, शाहे यमन का जो मेरा ख़त तुम्हारे पास है लाओ वो मुझे दो चुनाँचे अबु लैला ने वो ख़त दिया और और हुज़ूर ने पढ़ कर फ़रमाया, सालेह भाई तबअे को आफ़रीं व शाबास है। (मेज़ान-उल-दयान सफ़ा 171)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का हर ज़माने में चर्चा रहा और खुश क़िस्मत अफ़राद ने हर दौर में हुज़ूर से फ़ेज़ पाया और मोहम्मद सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अगली पिछली तमाम बातें जानते हैं और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की आमद आमद की खुशी में कमानात और बाज़ारों को सजाना और मुज़य्यन करना सहाबाइक्राम की सुन्नत है, फिर आज अगर हुज़ूर की आमद की खुशी में बाज़ारों को सजाया जाए घरों को मुज़य्यन किया जाए और जलूस निकाला जाए तो उसे बिदअत कहने वाला खूद क्यों बिदअती ना होगा।

हिकायत नम्बर (6) हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह का ख़्वाब

हज़रत सिद्दीके अक्कर रज़ी अल्लाहो अन्ह क़ब्ले अज़ इस्लाम एक बहुत बड़े ताजिर थे, आप तिजारत के सिलसिले में मुल्के शाम में तशरीफ़ फ़रमा थे के एक रात ख़्वाब में देखा के चाँद और सूरज आसमान से उतर कर उनकी गोद में आ पड़े हैं, हज़रते सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपने हाथ से चाँद और सूरज को पकड़ कर अपने सीने से लगाया और उन्हें अपनी चादर के अन्दर कर लिया सुबह उठे तो एक इसाई राहिब के पास पहुँचे और उससे इस ख़्वाब की ताबीर पूछी, राहिब ने पूछा आप कौन हैं? आपने फ़रमाया में अबु बक्र हूँ और मक्का का रहने वाला हूँ राहिब ने पूछा कौन से क़बीले से हैं आप? फ़रमाया, बनू हाशिम से, और ज़रियाऐ मआश क्या है? फ़रमाया तिजारत! राहिब ने कहा तो फिर ग़ौर से सुन लो नबी आख़िर-उज़्ज़माँ हज़रते मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ ले आए हैं वो भी इसी कबीले बनी हाशिम से हैं और वो आख़री नबी हैं और अगर वो ना होते तो खुदाऐ तआला ज़मीन व आसमान को पैदा ना फ़रमाता, वो अव्वलीन व आख़रीन के सरदार हैं और ऐ अबु बक्र! तुम उसके दीन में शामिल होगे और उसके वज़ीर और उसके बाद उसके ख़लीफ़ा बनोगे ये है तुम्हारे ख़्वाब की ताबीर और ये भी सुन लो मैंने उस पाक नबी की तारीफ़ व नाअत तौरात व इंजील में पढ़ी है और मैं उस पर ईमान ला चुका हूँ और मुसलमान हूँ लेकिन इसाईयों के ख़ौफ़ से अपने ईमान का इज़्हार नहीं किया। हज़रते सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जब अपने ख़्वाब की ये ताबीर सुनी तो इश्के रसूल का जज़्बा बैदार हुआ और आप फ़ौरन मक्का मोअज़्ज़मा में वापस आए और हुज़ूर की तलाश करके बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और दीदारे पुर अनवार से अपनी आँखों को ठंडा किया। हुज़ूर ने फ़रमाया, अबु बक्र! तुम आ गए, लो अब जल्दी करो और दीने हक़ में दाख़िल हो जाओ। सिद्दीके अक्बर ने अर्ज़ किया बहुत अच्छा हुज़ूर! मगर कोई मौजज़ा तो दिखाईये। हुज़ूर ने फ़रमाया, वो ख़्वाब जो शाम में देख कर आए हो और उसकी ताबीर जो उस राहिब से सुनकर आए हो मेरा ही तो मौजज़ा है, सिद्दीके अक्बर ने ये सुन कर अर्ज़ किया : *सदक्ता या रसूलअल्लाही! अना अशहदअन्नाका रसूलअल्लाह* सच फ़रमाया ऐ अल्लाह के रसूल आपने और मैं गवाही देता हूँ के आप वाक़ई अल्लाह के

सच्चे रसूल हैं (जामअे अलमोजज़ात सफ़ा 4)

सबक़:- हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला व सल्लम के वज़ीर और ख़लीफ़ा बरहक़ हैं और हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से कोई बात छुपी नहीं रहती आप दानाऐ ग़यूब हैं और ये भी मालूम हुआ के तमाम मख़्लूक़ हमारे हुज़ूर के ही सदक़े में पैदा की गई है अगर हुज़ूर ना होते तो कुछ ना होता!

वो जो ना थे तो कुछ ना था, वो जो ना हों तो कुछ ना हो!
जान हैं वो जहान की, जान है तो जहान है

हिकायत नम्बर(7) इबलीस का पोता

बेहेकी में अमीर-उल-मोमिनीन हज़रते उमर फ़ारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह से रिवायत है के एक रोज़ हम हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के हमराह तहामा की पहाड़ी पर बैठे थे के अचानक एक बूढ़ा हाथ में असा लिए हुए हुज़ूर रसूल-उल-सकलेन सय्यद-उल-अम्बिया सल-लल्लाहो तअला अलेह व सल्लम के सामने हाज़िर हुआ और सलाम अर्ज़ किया, हुज़ूर ने जवाब दिया और फ़रमाया, उसकी आवाज़ जिनों की सी है, फिर आपने उससे दरयाफ़्त किया तू कौन है? उसने अर्ज़ किया मैं जिन्न हूँ मेरा नाम हामा है, बेटा हेम का और हेम बेटा लाक़ीस का और लाक़ीस बेटा इबलीस का है, हुज़ूर ने फ़रमाया तो गोया तेरे और इबलीस के दरमियान सिर्फ़ दो पुश्तें हैं, फिर फ़रमाया अच्छा ये बताओ तुम्हारी उम्र कितनी है? उसने कहा या रसूल अल्लाह! जितनी उम्र दुनिया की है उतनी ही मेरी है कुछ थोड़ी सी कम है, हुज़ूर जिन दिनों क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया था उस वक़्त मैं कई बरस का बच्चा ही था मगर बात समझता था, पहाड़ों में दौड़ता फिरता था और लोगों का खाना व ग़ल्ला चोरी कर लिया करता था और लोगों के दिलों में वसवसे भी डाल लेता था के वो अपने ख़वीश व अक़रबअ से बदसलूकी करें।

हुज़ूर ने फ़रमायाः तब तो तुम बहुत बुरे हो, उसने अर्ज़ की हुज़ूर मुझे मलामत ना फ़रमाईये इसलिए के अब मैं हुज़ूर की ख़िदमत में तौबा करने हाज़िर हुआ हूँ, या रसूल अल्लाह! मैंने हज़रते नूह अलेहिस्सलाम से मुलाक़ात की है और एक साल तक उनके साथ उनकी मस्जिद में रहा हूँ, उससे पहले मैं उनकी बारगाह में भी तौबा कर चुका हूँ, हज़रते हूद, हज़रते याक़ूब और हज़रते यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की सोहबतों में भी रह चुका हूँ और उन से तौरात सीखी है और उनका सलाम हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम को

पहुँचाया था और ऐ नबियों के सरदार ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया था के अगर तू मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मुलाक़ात करे तो मेरा सलाम उनको पहुँचाना, सो हुज़ूर! अब मैं इस अमानत से सबुकदोश होने को हाज़िर हुआ हूँ और ये भी आरज़ू है के आप अपनी ज़बाने हक़ तर्जुमान से मुझे कुछ कलाम अल्लाह तलीम फ़रमाईये, हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने उसे सूरह मुरसलात, सूरह अम्मायतासअलून, अख़्लास और मऊज़तीन और इज़ा अश्शम्स तालीम फ़रमायीं और ये भी फ़रमाया के ऐ हामा! जिस वक़्त तुम्हें कोई अहेतियाज हो फिर मेरे पास आ जाना और हम से मुलाक़ात ना छोड़ना।

हज़रते उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने तो विसाल फ़रमाया लेकिन हामा की बाबत फिर कुछ ना फ़रमाया, खुदा जाने हामा अब भी ज़िन्दा है या मर गया है (खुलासत-उल-तफ़ासीर सफ़ा 170)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम रसूल-उल-सक़लेन और रसूल अलकुल हैं और आपकी बारगाहे आलिया जिन्नो इन्स की मरजअे है।

हिकायत नम्बर (8) मुक़द्दस क़ातिल

मक्का मोअज़्ज़मा में एक काफ़िर वलीद नामी रहता था, उसका एक सोने का बुत था जिसे वो पूजा करता था एक दिन उस बुत में हर्कत पैदा हुई और वो बोलने लगा, उस बुत ने कहा। "लोगो! मोहम्मद अल्लाह का रसूल नहीं है, उसकी हर गिज़ तसदीक़ ना करना।" (मआज़ अल्लाह) वलीद बड़ा खुश हुआ और बाहर निकल कर अपने दोस्तों से कहा, मुबारकबाद! आज मेरा मअबूद बोला है और साफ़ साफ़ उसने कहा है के मोहम्मद अल्लाह का रसूल नहीं है, ये सुनकर लोग उसके घर आए तो देखा के वाक़ई उसका बुत ये जुमले दोहरा रहा है, वो लोग भी बहुत खुश हुए और दूसरे दिन एक आम एलान के ज़रिये वलीद के घर में एक बहुत बड़ा इजतमअ हो गया ताके उस दिन भी वो लोग बुत के मुंह से वही जुमला सुनें, जब बड़ा इजतमअ हो गया तो उन लोगों ने हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को भी दअवत दी ताके हुज़ूर खुद भी तशरीफ़ लाकर बुत्त के मुंह से वही बकवास सुन जाएँ चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम भी तशरीफ़ ले आए, जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो बुत बोल उठा:

"ऐ मक्का वालो! खूब जान लो के मोहम्मद अल्लाह के सच्चे रसूल हैं

उनका हर इर्शाद सच्चा है और उनका दीन बरहक़ है तुम और तुम्हारे बुत झूटे, गुमराह और गुमराह करने वाले हैं अगर तुम इस सच्चे रसूल पर ईमान ना लाओगे तो जहन्नम में जाओगे पस अक़्लमंदी से काम लो और इस सच्चे रसूल की ग़ुलामी इख़्तियार कर लो।"

बुत का ये वाज़ सुन कर वलीद बड़ा घबराया और अपने मअबूद को पकड़ कर ज़मीन पर दे मारा और उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम फ़ातेहाना तौर पर वापस हुए तो रास्ते में एक घोड़े का सवार जो सब्ज़ पोश था हुज़ूर से मिला उसके हाथ में तलवार थी जिससे खून बह रहा था, हुज़ूर ने फ़रमाया तुम कौन हो? वो बोला हुज़ूर! मैं जिन हूँ और आपका ग़ुलाम और मुसलमान हूँ, जबले तूर पर रहता हूँ, मेरा नाम महीन बिन अलअेबर है, मैं कुछ दिनों के लिए कहीं बाहर गया हुआ था आज घर वापस आया तो मेरे घर वाले रो रहे थे, मैंने वजह दरयाफ़्त की तो मालूम हुआ के एक काफ़िर जिन्न जिसका नाम मुसफ़्फ़र था वो मक्का में आकर वलीद के बुत में घुस कर हुज़ूर के ख़िलाफ़ बकवास कर गया है और आज फिर गया है ताके फिर बुत में घुसकर आपके मुतअल्लिक़ बकवास करे या रसूल अल्लाह! मुझे सख़्त ग़ुस्सा आया, मैं तलवार लेकर उसके पीछे दौड़ा और उसे रास्ते ही में क़त्ल कर दिया और फिर मैं खुद वलीद के बुत के अन्दर घुस गया और आज जिस क़द्र तक़रीर की है मैंने ही की है या रसूल अल्लाह!

हुज़ूर ने ये क़िस्सा सुना तो आपने बड़ी मुसर्रत का इज़हार किया और उस अपने ग़ुलाम जिन्न के लिए दुआ फ़रमाई। (जाम ।-अलमौजज़ात सफ़ा 7)

सबक़:– हमारे हुज़ूर जिनों के भी रसूल ; और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की शाने पाक के ख़िलाफ़ सुनने सुनाने के लिए कोई जल्सा करना ये वलीद जैसे काफ़िर की सुन्नत है।

हिकायत नम्बर (9) एक जन्तर मन्तर से इलाज करने वाला

क़बीलाऐ अज़्दशनवत में एक शख़्स था जिसका नाम ज़माद था वो अपने जन्तर मन्तर से लोगों के जिन्न भूत वग़ैरा के साए उतारा करता था एक मर्तबा वो मक्का मोअज़्ज़मा में आया तो बाज़ लोगों को ये कहते सुना के मोहम्मद को जिन्न का साया है या जुनून है (मआज़अल्लाह) ज़माद ने कहा मैं ऐसे बीमारों का इलाज अपने जन्तर मन्तर से कर लेता हूँ मुझे दिखाओ,

वो कहाँ है? वो उसे हुज़ूर के पास ले आए। ज़माद जब हुज़ूर के पास बैठा तो हुज़ूर ने फ़रमाया, ज़माद! अपना जन्तर मन्तर फिर सुनाना पहले मेरा कलाम सुनो चुनाँचे आपने अपनी ज़बाने हक़ से ये ख़ुत्बा पढ़ना शुरू किया:

अल्हम्दुल्लाही नहमदहू व नसतईनुहू व नसतग़फ़िरहू व नोअमिनू बिहि व नतावक्कलू अलेहि व नऊज़ूबिल्लाही मिन शुरूरी अनफ़ुसिना व मिन सय्यीआती अआमालिना मंयहदीहील्लाह फ़ला मुज़िल्ल-ललाहू वमंय-युज़लिलहु फ़ला हादीयलाहू व अशहद अन्ला-ईलाहा इल-लल्लाहू वहदाहू लाशरीकलाहू व अशहदु अन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

ज़माद ने ये ख़ुत्बाऐ मुबारका सुना तो मबहूत रह गया और अर्ज़ करने लगा हुज़ूर! एक बार फिर पढ़िए। हुज़ूर ने फिर यही ख़ुत्बा पढ़ा, अब ज़माद (वो ज़माद जो साया उतारने आया था उसका अपना सायाऐ कुफ्र उतरता है देखिये) ना रह सका और बोला:

"ख़ुदा की क़सम! मैंने कई काहिनों, साहिरों और शायरों की बातें सुनी लेकिन जो आपसे मैंने सुना है ये तो मअनन एक बहेरे ज़ख़ार है अपना हाथ बढ़ाईए, मैं आपकी बैअत करता हूँ, ये कहकर मुसलमन हो गया और जो लोग उसे इलाज करने के लिए लाए थे हैरान व पशेमान वापस फिरे" (मुस्लिम सफ़ा 320 जिल्द:1)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़बाने हक़ तर्जुमान में वो तासीर पाक थी के बड़े बड़े संग दिल मोम हो जाते थे और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर को जो लोग साहिर व मजनूँ कहते थे दरअसल वो ख़ुद ही मजनून थे इसी तरह आज भी जो शख़्स हुज़ूर के इल्म व इख़्तियार और आपके नूरे जमाल का इंकार करता है वो दरअसल ख़ुद ही जाहिल, सियाह दिल और सियाह रू है।

हिकायत नम्बर (10) रकाना पहलवान

बनी हाशिम में एक मुश्रिक शख़्स रकाना नामी बड़ा ज़बरदस्त और दिलैर पहलवान था उसका रिकार्ड था के उसे किसी ने ना गिराया था। वो एक जंगल में जिसे इज़्म कहते थे रहा करता था बकरियाँ चराता था। और बड़ा मालदार था, एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अकेले उस तरफ़ जा निकले, रकाना ने आपको देखा तो आप के पास आकर कहने लगा: ऐ मोहम्मद! तू ही वो है जो हमारे लात व उज़्ज़ा की तोहीन व तहक़ीर

करता है और अपने एक खुदा की बड़ाई बयान करता ह? अगर मेरा तुझ से ताल्लुक़ रहमी ना होता तो आज मैं तुझे मार डालता, आ मेरे साथ कुश्ति कर, तू अपने ख़ुदा को पुकार! मैं अपने लात व उज़्ज़ा को पुकारता हूँ देखें तो तुम्हारे ख़ुदा में कितनी ताक़त है? हुज़ूर ने फ़रमाया रकाना! अगर कुश्ति ही करना है तो चल मैं तैयार हूँ, रकाना ये जवाब सुनकर अव्वल तो हैरान हुआ और फिर बड़े ग़रूर के साथ मुक़ाबले में खड़ा हो गया।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने पहली ही झपट में उसे गिरा लिया और उसके सीने पर बैठ गए, रकाना उम्र में पहली मर्तबा गिर कर बड़ा शर्मिंदा भी हुआ और हैरान भी, और बोला ऐ मोहम्मद! मेरे सीने से उठ खड़ा हो मेरे लात व उज़्ज़ा ने मेरी तरफ़ ध्यान नहीं किया एक बार और मौक़ा दो और दूसरी मर्तबा कुश्ति लड़ें, हुज़ूर सीने से उठ खड़े हुए और दोबारा कुश्ति के लिए रकाना भी उठा, हुज़ूर ने दूसरी मर्तबा भी रकाना को पल भर में गिरा लिया, रकाना ने कहा ऐ मोहम्मद! मालूम होता है आज मेरा लात व उज़्ज़ा मुझ पर नाराज़ है और तुम्हारा खुदा तेरी मदद कर रहा है, ख़ैर एक मर्तबा और आओ, अब की दफ़ा लात व उज़्ज़ा ज़रूर मेरी मदद करेंगे, हुज़ूर ने तीसरी मर्तबा की कुश्ति भी मंज़ूर फ़रमाई और तीसरी मर्तबा भी हुज़ूर ने उसे पिछाड़ दिया, अब तो रकाना बड़ा ही शर्मिंदा हुआ और बोला ऐ मोहम्मद! मेरी इन बकरियों में जितनी चाहो बकरियाँ ले लो हुज़ूर ने फ़रमाया रकाना मुझे तुम्हारे माल की ज़रूरत नहीं, हाँ मुसलमान हो जाओ ताके जहन्नम से बच जाओ। वो बोला या मोहम्मद! मुसलमान तो हो जाऊँ मगर नफ़्स झिड़कता है के मदीना और नवाह की औरतें और बच्चे क्या कहेंगे के इतने बड़े पहलवान ने शिकस्त खाई और मुसलमान हो गया।

हुज़ूर ने फ़रमाया तो तेरा माल तुझी को मुबारक! ये कहकर आप वापस तशरीफ़ ले आए, इधर हज़रत अबु बक्र व उमर रज़ी अल्लाहो अन्हुमा आपकी तलाश में थे और ये मालूम करके के हुज़ूर वादीऐ इज़्म की तरफ़ तशरीफ़ ले गए हैं। मुताफ़क्किर थे के इस तरफ़ रकाना पहलवान रहता है मुबादा हुज़ूर को ईज़ा दे, हुज़ूर को वापस तशरीफ़ लाते देखकर दोनों हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! आप इधर अकेले क्यों तशरीफ़ ले गए थे जब के उस तरफ़ रकाना पहलवान जो बड़ा ज़ोरआवर और दुश्मने इस्लाम है, रहता है? हुज़ूर ये सुनकर मुसकुराए और फ़रमाया जब मेरा अल्लाह हर वक़्त मेरे साथ है फिर किसी रकाना बकाना की क्या परवाह। लो इस रकाना की पहलवानी का किस्सा सुनो, चुनाँचे

हुज़ूर ने सारा किस्सा सुनाया, सिद्दीक़ व फ़ारूक़ सुन सुन कर खुश होने लगे और अर्ज़ किया हुज़ूर वो तो ऐसा पहलवान था के आज तक उसे किसी ने गिराया ही ना था, उसे गिराना गिराना अल्लाह के रसूल ही का काम है:(अबु दाऊद सफ़ा 209 जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हर फ़ज़्लो कमाल के मुनब्बअे व मख़्ज़न हैं और दुनिया की कोई ताक़त हुज़ूर के मुक़ाबले में नहीं ठहर सकती और मुख़ालफ़ीन के दिल भी हुज़ूर के फ़ज़्लो कमाल को जानते हैं लेकिन दुनिया की आर से उसका इक़्रार नहीं करते।

हिकायत नम्बर (11) ख़ालिद की टोपी

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह ज़ो अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार थे, आप जिस मैदाने जंग में तशरीफ़ ले जाते अपनी टोपी को ज़रूर सर पर रख कर जाते और हमेशा फ़तेह ही पाकर लौटते, कभी शिकस्त का मुंह ना देखते, एक मर्तबा जंगे यरमूक में जब के मैदाने जंग गर्म हो रहा था हज़रत ख़ालिद की टोपी गुम हो गई, आपने लड़ना छोड़ कर टोपी की तलाश शुरू कर दी, लोगों ने जब देखा के तीर और पत्थर बरस रहे हैं, तलवार और नेज़ेह अपना काम कर रहे हैं, मौत सामने है और उस आलम में ख़ालिद को अपनी टोपी की पड़ी हुई है और वो उसी को ढूंडने में मसरूफ़ हो गए हैं तो उन्होंने हज़रत ख़ालिद से कहा, जनाब टोपी का ख़याल छोड़िये और लड़ना शुरू किजिए, हज़रत ख़ालिद ने उनकी उस बात की परवाह ना की और टोपी की बदस्तूर तलाश शुरू रखी, आख़िर टोपी उनको मिल गई तो उन्होंने खुश होकर कहा भाईयो! जानते हो मुझे ये टोपी क्यों इतनी अज़ीज़ है? जान लो के मैंने आज तक जो जंग भी जीती इसी टोपी के तुफ़ैल, मेरा क्या है सब इसी की बर्कतें हैं, मैं इसके बग़ैर कुछ भी नहीं और अगर ये मेरे सर पर हो तो फिर दुश्मन मेरे सामने कुछ भी नहीं, लोगों ने कहा आख़िर इस टोपी की क्या खूबी है? तो फ़रमाया, ये देखो इसमें क्या है, ये हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सर अनवर के बाल मुबारक हैं जो मैंने इसी में सी रखे हैं। हुज़ूर एक मर्तबा उमरह बजा लाने को बैअत-उल्लाह शरीफ़ तशरीफ़ ले गए और सर मुबारक के बाल उतरवाए तो उस वक़्त हम में से हर एक शख़्स बाल मुबारक लेने की कोशिश कर रहा था और हर एक दूसरे पर गिरता था तो मैंने भी इसी कोशिश में आगे बढ़ कर चन्द बाल मुबारक हासिल कर लिए थे और फिर

इस टोपी में सी लिए, ये टोपी अब मेरे लिए जुमला बर्कात व फ़तूहात का ज़रिया है, मैं इसी के सदके़ में हर मैदान का फ़ातहे बनकर लौटता हूँ फिर बताओ! ये टोपी अगर ना मिलती तो मुझे चैन कैसे आता? (हुज्जत-उल्लाह अललआलमीन सफ़ा 282)

सबक़:- हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ही जुमला बर्कात व इनामात का ज़रिया हैं और आपका बाल बाल शरीफ़ बर्कत व रहमत है और ये भी मालूम हुआ के सहाबाऐ इक्राम अलेहिम अर्रिज़वान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मुतअल्लिक़ अशिया को बतौर तबर्रूक अपने पास रखते थे और जिसके पास आपका बाल मुबारक भी होता अल्लाह तआला उसे कामयाबियों से सरफ़राज़ फ़रमाता था।

हिकायत नम्बर (12) बाल का कमाल

हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की रेश मुबारक के दो बाल मुबारक हज़रत सिद्दीके़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को मिल गए, आप उन दो बालों को बतौर तबर्रूक घर ले आए और बड़ी तअज़ीम के साथ अन्दर एक जगह रख दिए, थोड़ी देर के बाद अन्दर से क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ें आने लगीं, सिद्दीके़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह अन्दर गए तो मुलाक़ात की आवाज़ें तो आ रही थीं मगर पढ़ने वाले नज़र ना आते थे, हज़रत सिद्दीके़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर सारा क़िस्सा अर्ज़ किया तो हुज़ूर ने मुसकुरा कर फ़रमाया:

इन्नल मलाएकता यजतमीऊना अला शअेरी व यक़्राऊनल क़ुरआन

"ये फ़रिश्ते हैं जो मेरे बाल के पास जमा होकर क़ुरआन पढ़ते हैं" (जामअे-अल-मौजज़ात सफ़ा 62)

सबक़:- हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का हर बाल मुनब्बअे अलकमाल है और आपका बाल बाल शरीफ़ ज़ियारतगाहे ख़लायक़ है, फिर जिन लोगों के बाल मूंड कर नाई नालियों में फैंक देता है वो अगर हुज़ूर की मिस्ल होने का दावा करने लगें तो किस क़द्र ज़ुल्म है।

हिकायत नम्बर (13) बकरी ज़िन्दा हो गई

जंगे अहज़ाब में हज़रत जाबिर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दअवत की और एक बकरी

ज़ब्ह की, हुज़ूर जब सहाबाऐ इक्राम की मईयत में जाबिर के घर पहुँचे तो जाबिर ने खाना लाकर आगे रखा, खाना थोड़ा था और खाने वाले ज़्यादा थे, हुज़ूर ने फ़रमाया थोड़े थोड़े आदमी आते जाओ और बारी बारी खाना खाते जाओ, चुनाँचे ऐसा ही हुआ के जितने आदमी खाना खा लेते वो निकल जाते, उसी तरह सब ने खाना खा लिया, जाबिर फ़रमाते हैं के हुज़ूर ने पहले ही फ़रमा दिया था के कोई शख़्स गोश्त की हड्डी ना तोड़े, ना फैंके, सब एक जगह रखते जाएँ जब सब खा चुके तो आपने हुक्म दिया के छोटी मोटी सब हड्डियाँ जमा कर दो, जमा हो गईं तो आपने अपना दस्त मुबारक उन पर रख कर कुछ पढ़ा आपका दस्ते मुबारक अभी हड्डियों के ऊपर ही था और ज़बाने मुबारक से आप कुछ पढ़ ही रहे थे के वो हड्डियाँ कुछ का कुछ बनने लगीं, यहाँ तक के गोश्त पोस्त तैयार होकर कान झाड़ती हुई वो बकरी उठ खड़ी हुई, हुज़ूर ने फ़रमाया: "जाबिर! ले ये अपनी बकरी ले जा।" (दलायल-उल-नबुव्वत सफ़ा 224 जिल्द 2)

सबक़:– हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुनब्बऐ अल-हयात और हयात बख़्श हैं, आपने मुर्दा दिलों और मुर्दा जिस्मों को भी ज़िन्दा फ़रमा दिया फिर जो लोग (मआज़ अल्लाह) हुज़ूर को "मर कर मिट्टी में मिलने वाला" कहते हैं किस क़द्र जाहिल और बेदीन हैं।

हिकायत नम्बर (14) साँप का अण्डा

एक सहाबी हज़रत हबीब अल्लाह बिन फ़िदयक रज़ी अल्लाहो अन्ह कहीं जा रहे थे के उनका पाँऊ इत्तेफ़ाक़न एक ज़हरीले साँप के अण्डे पर पड़ गया और वो पिस गिया और उसके ज़हर के असर से हज़रत हबीब बिन फ़िदयक रज़ी अल्लाहो अन्ह की आँखें बिलकुल सफ़ेद हो गईं और नज़र जाती रही, ये हाल देखकर उनके वालिद बहुत परेशान हुए और उन्हें लेकर हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में पहुँचे, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सारा किस्सा सुनकर अपना थूक मुबारक उनकी आँखों में डाला तो हज़रत हबीब बिन फ़िदयक की अंधी आँखें फ़ौरन रोशन हो गईं और उन्हें नज़र आने लगा। रावी का बयान है के मैंने खुद हज़रत फ़िदयक को देखा उस वक़्त उनकी उम्र अस्सी(80) साल की थी और आँखें तो उनकी बिलकुल सफ़ेद थीं मगर हुज़ूर की थूक मुबारक के असर से नज़र इतनी तेज़ थी के सूई में धागा डाल लेते थे। (दलायल-उल-नबव्वत सफा 167)

सबक़:– हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मिस्ल बनने वालों के लिए मुक़ाम ग़ौर है के हुज़ूर वो हैं जिनकी थूक मुबारक से अंधी आँखों में बीनाई और नूर पैदा हो जाए और वो वो हैं के उनकी थूक के मुतअल्लिक़ रेल गाड़ियों में ये लिखा होता है के "थूको मत। इससे बीमारी फैलती है।" फिर मर्ज़ व शिफ़ा दोनों बराबर कैसे हो सकती हैं?

हिकायत नम्बर (15) हज़रत जाबिर का मकान और एक हज़ार मेहमान

हज़रत जाबिर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जंगे ख़न्दक़ के दिनों हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम शिकम अनवर पर पत्थर बंधा देखा तो घर आकर अपनी बीवी से कहा के क्या घर में कुछ है ताके हम हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए कुछ पकाएँ और हुज़ूर को खिलाएँ? बीवी ने कहा, थोड़े से जौ हैं और ये एक बकरी का छोटा बच्चा है इसे ज़ब्ह कर लेते हैं आप हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को बुला लाईये मगर चूंके वहाँ लश्कर बहुत ज़्यादा है इसलिए हुज़ूर से पौशीदगी में कहियेगा के वो अपने हमराह दस आदमियों से कुछ कम ही लाएँ। जाबिर ने कहा, अच्छा तो लो मैं इस बकरी के बच्चे को ज़ब्ह करता हूँ तुम इसे पकाओ और मैं हुज़ूर को बुला लात हूँ, चुनाँचे जाबिर हुज़ूर की ख़िदमत में पहुँचे और कान में अर्ज़ किया हुज़ूर मेरे हाँ तशरीफ़ ले चलिये और अपने साथ दस आदमियों से कुछ कम आदमी ले चलिये। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने सारे लश्कर को मुख़ातिब फ़रमा कर फ़रमाया चलो मेरे साथ चलो जाबिर ने खाना पकाया है और फिर जाबिर के घर आकर हुज़ूर ने उस थोड़े से आटे में अपना थूक मुबारक डाल दिया और इसी तरह हंडिया में भी अपना थूक मुबारक डाल दिया और फिर हुक्म दिया के अब रोटियाँ और हंडिया पकाओ, चुनाँचे उस थोड़े से आटे और गोश्त में थूक मुबारक की बर्कत से इतनी बर्कत पैदा हुई के एक हज़ार आदमी खाना खा गया मगर ना कोई रोटी कम हुई और ना कोई बोटी। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 524)

सबक़:– ये हुज़ूर के थूक मुबारक की बर्कत थी के थोड़े से खाने में इतनी बर्कत पैदा हो गई के हज़ार आदमी सेर शिकम होकर खा गया लेकिन खाना बदस्तूर वैसे का वैसा ही रहा और कम ना हुआ और ये हुज़ूर की थूक मुबारक है और जो उनकी मिस्ल बशर बनने वाले हैं वो अगर कभी अपने

घर की हंडिया में भी थूकें तो उनकी बीवी ही वो हंडिया बाहर फैंक देगी और कोई खाने को तैयार ना होगा, गोया उनके थूकने से थोड़े बहुत खाने से भी जवाब।

हिकायत नम्बर (16) कोज़े में दरया

हुदैबिया के रोज़ सारे लश्कर सहाबा में पानी ख़त्म हो गया हत्ता के वज़ू और पीने के लिए भी पानी का क़तरा तक बाक़ी ना रहा। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के पास एक कोज़ह पानी का था हुज़ूर जब उस कोज़ेह से वज़ू फ़रमाने लगे तो सब लोग हुज़ूर की तरफ़ लपके और फ़रयाद की के या रसूल अल्लाह! हमारे पास तो एक क़तरा भी पानी का बाक़ी नहीं रहा हम ना तो वज़ू कर सकते हैं और ना ही अपनी प्यास बुझा सकते हैं हुज़ूर! ये आप ही के कोज़े में पानी बाक़ी है हम सब के पास पानी ख़त्म हो गया और हम प्यास की शिद्दत से बेचैन हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ये बात सुनकर अपना हाथ मुबारक उस कोज़े में डाल दिया लोगों ने देखा के हुज़ूर के हाथ मुबारक की पाँचों उंगलियों से पानी के पाँच चश्मे ज़ारी हो गए और सब लोग उन चश्मों से सैराब होने लगे और हर शख़्स ने जी भर के पानी पिया और प्यास बुझाई सब ने वज़ू भी कर लिया हज़रत जाबिर से पूछा गया के लश्कर की तअदाद कितनी थी? तो फ़रमाया उस वक़्त अगर एक लाख आदमी भी होते तो वो पानी सब के लिए काफ़ी था मगर हम उस वक़्त पन्द्रह सौ की तअदाद में थे। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 524)

सबक़:– हमारे हुज़ूर को अल्लाह ने ये इख़्तियार व तसर्रूफ़ फ़रमाया है के आप थोड़ी चीज़ को ज़्यादा कर देते हैं "ना" से हाँ और मअदूम से मौजूद करना अल्लाह का काम है और थोड़े से ज़्यादा कर देना मुसतफ़ा का काम है और ये अल्लाह ही की अता है।

हिकायत नम्बर (17) एक सहराई क़ाफ़्ला

अरब के एक सहरा में एक बहुत बड़ा क़ाफ़्ला राह पैमा था के अचानक उस क़ाफ़्ला का पानी ख़त्म हो गया उस क़ाफ़्ला में छोटे बड़े बूढ़े जवान और मर्द औरतें सभी थे प्यास के मारे सब का बुरा हाल था और दूर तक पानी का निशान तक ना था और पानी उनके पास एक क़तरा तक बाक़ी ना रहा था ये आलम देखकर मौत उनके सामने रक़्स करने लगी मगर उन पर ये ख़ास करम हुआ के

नागहानी आँ मग़ीस हर दोकौन
मुसतफ़ा पैदा शुदह् अज़ बहरे औन

यानी अचानक दो जहाँ के फ़रयादरस मोहम्मद मुसतफ़ा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उनकी मदद फ़रमाने वहाँ पहुँच गए हुज़ूर को देख कर सबकी जान में जान आ गई और सब हुज़ूर के गिर्द जमा हो गए। हुज़ूर ने उन्हें तसल्ली दी और फ़रमाया के वो सामने जो टीला है उसके पीछे एक सियाह रंग हबशी ग़ुलाम ऊंटनी पर सवार हुए जा रहा है उसके पास पानी का एक मशकीज़ह है उसको ऊंटनी समेत मेरे पास ले आओ चुनाँचे कुछ आदमी टीले के उस पार गए तो देखा के वाक़ई एक ऊंटनी पर सवार हबशी जा रहा है वो उस हबशी को हुज़ूर के पास ले आए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उस हबशी से मशकीज़ह ले लिया और अपना दस्ते रहमत उस मशकीज़हे पर फैर कर उसका मुंह खोल दिया और फ़रमाया, आओ अब जिस क़द्र भी प्यासे हो आते जाओ और पानी पी पी कर अपनी प्यास बुझाते जाओ चुनाँचे सारे क़ाफ़्ले ने उस एक मशकीज़हे से जारी चश्माऐ रहमत से पानी पीना शुरू किया और फिर सब ने अपने अपने बर्तन भी भर लिए, सब के सब सैराब हो गए और सब बर्तन भी पुर आब हो गए, हुज़ूर का ये मौजज़ा देखकर वो हबशी बड़ा हैरान हुआ और हुज़ूर के दस्ते अनवर चूमने लगा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपना दस्ते अनवर उसके मुंह पर फैरा तो

शुद सपैदाँ रंगी ज़ादहऐ हबश
हमचू बदरूरोज़े रोशन शुद शबश

उस हबशी का सियाह रंग काफूर हो गया और वो सफ़ेद पुरनूर हो गया फिर उस हबशी ने कलमा पढ़ कर अपना दिल भी मुनव्वर कर लिया और मुसलमान होकर जब वो अपने मालिक के पास पहुँचा तो मालिक ने पूछा तुम कौन हो? वो बोला तुम्हारा ग़ुलाम हूँ, मालिक ने कहा तुम ग़लत कहते हो, वो तो बड़ा सियाह रंग का था वो बोला ये ठीक है मगर मैं उस मुनब्बअे नूर ज़ाते बाबर्कात से मिल कर और उस पर ईमान लाकर आया हूँ जिसने सारी कायनात को मुनव्वर फ़रमा दिया है मालिक ने सारा क़िस्सा सुना तो वो भी ईमान ले आया। (मसनवी शरीफ़)

सबक़:- हमारे हुज़ूर बइज़्न अल्लाह दो जहान के फ़रयादरस हैं और मुसीबत के वक़्त मदद फ़रमाने वाले हैं फिर अगर कोई शख़्स यूं कहे के हुज़ूर किसी की मदद नहीं फ़रमा सकते और किसी की फ़रयाद नहीं सुनते तो

वो किस क़द्र जाहिल व बेख़बर है पस अपना अक़ीदह ये रखना चाहिए के

फ़रयादअम्ती जो करे हाले ज़ार में
मुमकिन नहीं के ख़ैर बशर को ख़बर ना हो

हिकायत नम्बर(18) बादलों पर हकूमत

मदीना मुनव्वरह में एक मर्तबा बारिश नहीं हुई थी क़हेत का सा आलम था और लोग बड़े परेशान थे एक जुमअे के रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जब के वाज़ फ़रमा रहे थे एक आराबी उठा और अर्ज़ करने लगा या रसूल अल्लाह! माल हलाक हो गया और औलाद फ़ाक़े करने लगी दुआ फ़रमाईये बारिश हो। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उसी वक़्त अपने प्यारे प्यारे नूरानी हाथ उठाए रावी का बयान है के आसमान बिलकुल साफ़ था अब्र का नाम व निशान तक ना था मगर मदनी सरकार के हाथ मुबारक उठे ही थे के पहाड़ों की मानिंद अब्र छा गए और छाते ही मिनह बरसने लगा, हुज़ूर मिंबर पर ही तशरीफ़ फ़रमा थे के मिनह शुरू हो गया, इतना बरसा के छत टपकने लगी और हुज़ूर की रैश अनवर से पानी के क़तरे गिरते हमने देखे फिर ये मिनह बन्द नहीं हुआ बल्के हफ़्ते को बरसता रहा फिर अगले दिन भी और फिर उससे अगले दिन भी हत्ता के लगातार अगले जुमअे तक बरसता ही रहा और हुज़ूर जब दूसरे जुमअे का वाज़ फ़रमाने उठे तो वही आराबी जिसने पहले जुमअे में बारिश ना होने की तकलीफ़ अर्ज़ की थी उठा और अर्ज़ करने लगा या रसूल अल्लाह! अब तो माल ग़र्क़ होने लगा और मकान गिरने लगे अब फिर हाथ उठाईये के ये बारिश बन्द भी हो। चुनाँचे हुज़ूर ने फिर उसी वक़्त अपने प्यारे प्यारे नूरानी हाथ उठाए और अपनी उंगली मुबारक से इशारा फ़रमा कर दुआ फ़रमाई के ऐ अल्लाह! हमारे इर्दगिर्द बारिश हो, हम पर ना हो, हुज़ूर का ये इशारा करना ही था के जिस जिस तरफ़ हुज़ूर की उंगली गई उस तरफ़ से बादल फटता गया और मदीना मुनव्वरह के ऊपर ऊपर सब आसमान साफ़ हो गया। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 528)

सबक़:– सहाबाइक्राम मुश्किल के वक़्त हुज़ूर ही की बारगाह में फ़रयाद लेकर आते थे और उनका यक़ीन था के हर मुश्किल यहीं हल होती है और वाक़ई वहीं हल होती रही है इसी तरह आज भी हम हुज़ूर ही के मोहताज हैं और बग़ैर हुज़ूर के वसीले के हम अल्लाह से कुछ भी नहीं पा सकते और सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की हकूमत बादलों पर भी जारी है।

हिकायत नम्बर (19) चाँद पर हकूमत

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दुश्मनों ने बिलख़सूस अबु जहल ने एक मर्तबा हुज़ूर से कहा के अगर तुम खुदा के रसूल हो तो आसमान पर जो चाँद है उसके दो टुकड़े करके दिखाओ। हुज़ूर ने फ़रमाया लो ये भी करके दिखा देता हूँ चुनाँचे आपने चाँद की तरफ़ अपनी उंगली मुबारक से इशारा फ़रमाया तो चाँद के दो टुकड़े हो गए, ये देख कर अबु जहल हैरान हो गया मगर बे ईमान माना भी नहीं और हुज़ूर को जादूगर ही कहता रहा। (हुज्जतु-उल्लाह सफ़ा 396 और बुखारी शरीफ़ सफ़ा 271 जुज़ 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर की हकूमत चाँद पर भी जारी है और बावजूद इतने बड़े इख़्तियार के बे ईमान अफ़राद हुज़ूर के इख़्तियार व तसर्रूफ़ को फिर भी नहीं मानते।

हिकायत नम्बर (20) सूरज पर हकूमत

एक रोज़ मुक़ामे सेहबा में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नमाज़ ज़ोहर अदा की और फिर हज़रते अली रज़ी अल्लाहो अन्ह को किसी काम के लिए रवाना फ़रमाया हज़रते अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के वापस आने तक हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नमाज़ अस्र भी अदा फ़रमा ली और जब हज़रते अली वापस आए तो उनकी आग़ोश में अपना सर रख कर हुज़ूर सो गए हज़रते अली ने अभी तक नमाज़ अस्र अदा ना की थी इधर सूरज को देखा तो ग़ुरूब होने वाला था। हज़रत अली सोचने लगे के इधर रसूले खुदा आराम फ़रमा हैं और इधर नमाज़े खुदा का वक़्त हो रहा है, रसूले खुदा की इसतराहत का ख़याल रखूं तो नमाज़ जाती है और नमाज़ का ख़याल करूं तो रसूले खुदा की इसतराहत में ख़लल वाक़ेअ होता है। करूं तो क्या करूं? आख़िर मौला अली शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़ैसला किया के नमाज़ को क़ज़ा होने दो मगर हुज़ूर की नींद मुबारक में ख़लल ना आए चुनाँचे सूरज डूब गया और अस्र का वक़्त जाता रहा, हुज़ूर उठे तो हज़रत अली को मग़मूम देखकर वजह दरयाफ़्त की तो हज़रत अली ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मैंने आपकी इसतराहत के पेशे नज़र अभी तक नमाज़ अस्र नहीं पढ़ी और सूरज ग़ुरूब हो गया है हुज़ूर ने फ़रमाया तो ग़म किस बात का, लो अभी सूरज वापस आता है और फिर उसी मुक़ाम पर आकर रूकता है जहाँ वक़्ते अस्र होता है चुनाँचे हुज़ूर ने दुआ फ़रमाई

तो गुरूब शुदा सूरज फिर निकला और उल्टे क़दम उसी जगह आकर ठहर गया जहाँ अस्र के वक़्त होता है हज़रते अली ने उठकर अस्र की नमाज़ पढ़ी तो सूरज गुरूब हो गया। (हुज्जत–उलअली–अलआलमीन सफ़ा 398)

सबक़: हमारे हुज़ूर की हकूमत सूरज पर भी जारी है और आप कायनात के हर ज़र्रे के हाकिम व मुख़्तार हैं आप जैसा ना कोई हुआ ना होगा ना हो सकता है।

हिकायत नम्बर (21) ज़मीन पर हकूमत

हुज़ूर सल–लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह की मईयत में जब मक्का से हिज्रत फ़रमाई तो क़ुरैशे मक्का ने एलान किया के जो कोई मोहम्मद (सल–लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) और उसके साथी (सिद्दीक़े अक्बर रज़ीअल्लाहो अन्ह) को गिरफ़्तार करके लाएगा उसे सौ ऊँट इनाम में दिए जाएँगे, सर्राक़ा बिन जअशिम ने ये एलान सुना तो अपना तेज़ रफ़्तार घोड़ा निकाला और उस पर बैठ क़र कहने लगा के मेरा ये तेज़ रफ़्तार घोड़ा मोहम्मद और अबु बक्र का पीछा कर लेगा और मैं अभी उन दोनों को पकड़ कर लाता हूँ चुनाँचे उनसे अपने घोड़े को दौड़ाया और थोड़ी देर में हुज़ूर के क़रीब पहुँच गया। सिद्दीक़े अक्बर ने जब देखा के सर्राक़ा घोड़े पर सवार हमारे पीछे आ रहा है और हम तक पहुँचने ही वाला है तो अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! सर्राक़ा ने हमें देख लिया है और वो देखिए हमारे पीछे आ रहा है। हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ सिद्दीक़ कोई फ़िक्र ना करो अल्लाह हमारे साथ है, इतने में सर्राक़ा बिलकुल क़रीब आ पहुँचा तो हुज़ूर ने दुआ फ़रमाई तो ज़मीन ने फ़ौरन सर्राक़ा के घोड़े को पकड़ लिया और उसके चारों पैर पेट तक ज़मीन में धंस गए, सर्राक़ा ये मंज़र देख कर घबराया और अर्ज़ करने लगा।

"या मोहम्मद! मुझे और मेरे घोड़े को इस मुसीबत से निजात दिलाईये मैं आप से वादा करता हूँ के मैं पीछे मुड़ जाऊँगा और जो कोई आपका पीछा करता हुआ आपकी तलाश में इधर आ रहा होगा उसे भी वापस ले जाऊँगा और आप तक ना आने दूंगा चुनाँचे हुज़ूर के हुक्म से ज़मीन ने उसे छोड़ दिया।"

सबक़: हमारे हुज़ूर का हुक्मो फ़रमान ज़मीन पर भी जारी है और कायनात की हर चीज़ अल्लाह ने हुज़ूर के ताबअे कर दी है फिर जिस शख़्स की अपनी बीवी भी उसकी ताबअे ना हो वो अगर हुज़ूर की मिस्ल बनने लगे तो वो किस क़द्र अहमक़ व बेवक़ूफ़ है।

हिकायत नम्बर (22) दरख़्तों पर हकूमत

एक मर्तबा एक आराबी ने हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से कहा ऐ मोहम्मद! अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो कोई निशानी दिखलाईये हुज़ूर ने फ़रमाया अच्छा लो देखा! वो जो सामने दरख़्त खड़ा है उसे जाकर इतना कह दो के तुम्हें अल्लाह का रसूल बुलाता है चुनाँचे वो आराबी उस दरख़्त के पास गया और उससे कहा, तुम्हें अल्लाह का रसूल बुलाता है वो दरख़्त ये बात सुन कर अपने आगे पीछे और दायें बायें गिरा और अपनी जड़ें ज़मीन से उखाड़ कर ज़मीन पर चलने लगा और चलते हुए हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो गया और अर्ज़ करने लगा, "अस्सलाम अलेकुम या रसूल अल्लाह! आराबी हुज़ूर से कहने लगा अब इसे हुक्म दीजिए के ये फिर अपनी जगह पर चला जाए चुनाँचे हुज़ूर ने उसे फ़रमाया के जाओ वापस चले जाओ, वो दरख़्त ये सुनकर पीछे मुड़ गया और अपनी जगह जाकर फिर क़ायम हो गया।

आराबी ये मौजज़ा देख कर मुसलमान हो गया और हुज़ूर को सज्दा करने की इजाज़त चाही हुज़ूर ने फ़रमाया सज्दा करना जायज़ नहीं फिर उसने हुज़ूर के हाथ पैर मुबारक चूमने की इजाज़त चाही तो हुज़ूर ने फ़रमाया हाँ ये बात जायज़ है और उसने हुज़ूर के हाथ और पैर मुबारक चूम लिए। (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 441)

सबक़:- हमारे हुज़ूर का हुक्म दरख़्तों पर भी जारी है और ये भी मालूम हुआ के बुज़ुर्गों के हाथ पैर चूमने जायज़ हैं हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उससे मना नहीं फ़रमाया।

हिकायत नम्बर (23) दीवाना ऊँट

बनी निजार के एक बाग़ में एक दीवाना ऊँट घुस आया जो शख़्स भी उस बाग़ में जाता वो ऊँट उसे काटने दौड़ता था लोग बड़े परेशान थे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सारा क़िस्सा अर्ज़ किया हुज़ूर ने फ़रमाया, चलो मैं चलता हुँ चुनाँचे हुज़ूर उस बाग़ में तशरीफ़ ले गए और उस ऊँट से फ़रमाया, इधर आओ उस ऊँट ने जब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का हुक्म सुना तो दौड़ता हुआ हाज़िर हुआ और अपना सर हुज़ूर के क़दमों में डाल दिया हुज़ूर ने फ़रमाया इसकी नकेल लाओ, नकेल लाई गई और हुज़ूर ने

उसे नकेल डाल कर उसके मालिक के हवाले कर दिया और वो आराम से चला गया, हुज़ूर ने फिर सहाबा से फ़रमाया, काफ़िरों के सिवा मुझे ज़मीन व आसमान वाले सब जानते हैं मैं अल्लाह का रसूल हूँ। (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 458)

सबक़:- हमारे हुज़ूर का हुक्म जानवरों पर भी जारी है और कायनात की हर शै बजुज़ काफ़िरों के हमारे हुज़ूर की रिसालत व सदाक़त को जानती है।

हिकायत नम्बर (24) बैत-उल्लाह की कुंजी

हिज्रत से पहले बैत-उल्लाह की कुंजी क़ुरैशे मक्का के क़ब्ज़े में थी और ये कुंजी उस्मान बिन तलहा के पास रहा करती थी, ये लोग बैत-उल्लाह को पीर और जुमअेरात के रोज़ खोला करते थे, एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए और उस्मान बिन तलहा से दरवाज़ा खोलने को फ़रमाया तो उस्मान ने दरवाज़ा खोलने से इंकार कर दिया, हुज़ूर ने फ़रमाया ऐ उस्मान! आज तो तू ये दरवाज़ा खोलने से इंकार कर रहा है और एक दिन ऐसा भी आएगा के बैत-उल्लाह की ये कुंजी मेरे क़ब्ज़े में होगी और मैं जिसे चाहूंगा ये कुंजी दूंगा, उस्मान ने कहा तो क्या उस दिन क़ौमे क़ुरैश हलाक हो चुकी होगी? देखा जाएगा, फिर हिज्रत के बाद जब मक्का फ़तह हुआ और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सहाबा के क़ुदुसी लश्कर समेत मक्का में फ़ातेहाना दाख़िल हुए तो सबसे पहले कअबा शरीफ़ में तशरीफ़ लाए और उसी कलीद बरदार उस्मान से कहा, लाओ वो कुंजी मेरे हवाले कर दो, नाचार उस्मान को वो कुंजी देनी पड़ी, हुज़ूर ने वो कुंजी लेकर उस्मान को मुख़ातिब फ़रमा कर फ़रमाया, उस्मान! लो, कलीद बरदार मैं भी तुझी को मुक़र्रर करता हूँ तुम से कोई ज़ालिम ही ये कुंजी लेगा।

उस्मान ने दोबारा कुंजी ली तो हुज़ूर ने फ़रमाया उस्मान! वो दिन याद है जब मैंने तुम से कुंजी तलब की थी और तुम ने दरवाज़ा खोलने से इंकार कर दिया था और मैं ने कहा था के एक दिन ऐसा भी आएगा के ये कुंजी मेरे क़ब्ज़े में होगी और मैं जिसे चाहूंगा दूंगा, उस्मान ने कहा हाँ हुज़ूर! मुझे याद है और मैं गवाही देता हूँ के आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। (हुज्जत-उल्लाह अलआलमीन 499)

सबक़:- हमारे हुज़ूर अगली पिछली सब बातों के आलिम हैं और क़यामत तक जो कुछ भी होने वाला है सब आप पर रोशन है ख़ुदा ने आपको इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है और आप दानाऐ ग़यूब व आलमे माकान

व मा-यकून हैं फिर अगर कोई शख़्स यूं कहे के हुज़ूर को कल की बात का इल्म ना था तो वो किस क़द्र जाहिल है।

हिकायत नम्बर (25) गुमशुदा ऊँटनी

जंगे तबूक में हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ऊँटनी गुम हो गई तो एक मुनाफ़िक़ ने मुसलमानों से कहा के तुम्हारा मोहम्मद (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) तो नबी होने का मुद्दई है और तुम्हें आसमान की बातें सुनाता है फिर उसे अपनी ऊँटनी का पता क्यों नहीं चलता के वो कहाँ है? हुज़ूर ने जब मुनाफ़िक़ की ये बात सुनी तो फ़रमाया बेशक मैं नबी हूँ और मेरा इल्म अल्लाह ही का अता फ़रमूदा है लो सुनो! मेरी ऊँटनी फ़लाँ जगह खड़ी है एक दरख़्त ने उसकी नकेल को रोक रखा है जाओ वहाँ से उस ऊँटनी को ले आओ, चुनाँचे सहाबाइक्राम गए तो वाक़ई ऊँटनी उसी जगह खड़ी थी और उसकी नकेल दरख़्त से अटकी हुई थी। (ज़ाद-उल-मआद सफ़ा 3 जिल्द 3 हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 510)

सबक़:- हमारे हुज़ूर को अल्लाह ने इस क़द्र इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है के कोई बात आप से छुपी हुई नहीं मगर मुनाफ़िक़ इस इल्मे ग़ैब के मोअतरिफ़ नहीं।

हिकायत नम्बर (26) क़ैदी चचा

जंगे बद्र में जब अल्लाह ने मुसलमानों को फ़तह और कुफ़्फ़ार को शिकस्त दी तो मुसलमानों के हाथ जो क़ैदी आए उनमें हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के चचा हज़रते अब्बास भी थे क़ैदियों से जब तावान तलब किया गया तो हज़रत अब्बास कहने लगे ऐ मोहम्मद! मैं तो एक ग़रीब आदमी हूँ मेरे पास क्या है मक्का में जब आपने मुझे छोड़ा था तो मैं तमाम क़बीले के अफ़राद से ग़रीब था हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया और अब जब के आपने अपने घर से फ़ौज कुफ़्फ़ार के साथ जंगे बद्र में आना चाहा तो आप अपनी बीवी उम्मे फ़ज़्ल को पौशीदगी में चन्द सोने की ईंटें देकर आए थे चचा जान! ये राज़ आप क्यों छुपा रहे हैं, हज़रते अब्बास ये ग़ैब की बात सुन कर हैरान रह गए और बक़ौले शायर

जनाबे हज़रत अब्बास पह रअेशा हुआ तारी
के पैग़म्बर तो रखता है दिलों की भी ख़बरदारी

ख़याल आया मुसलमाँ नेक व बद पहचान जाते हैं
मोहम्मद आदमी के दिल की बातें जान जाते हैं

हुज़ूर की ये इत्तिला अली अलग़ैब का मौजज़ा देखकर हज़रत अब्बास ईमान ले आए।

(दलायल-उल-नबुव्वत सफ़ा 171 जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कोई बात मख़्फ़ी नहीं अल्लाह ने हर चीज़ का हुज़ूर को इल्म दे दिया है और ये इल्मे ग़ैब भी हुज़ूर का एक मौजज़ा है जिस पर हर मुसलमान का ईमान है।

हिकायत नम्बर (27) कबूतर के बच्चे

एक आराबी अपनी आसतीन में कुछ छुपाए हुए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा ऐ मोहम्मद! (मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) अगर तू बता दे के मेरी आसतीन के अन्दर क्या है तो मान लूंगा के वाक़ई तू सच्चा नबी है। हुज़ूर ने फ़रमाया वाक़ई ईमान ले आओगे? उसने कहा हाँ वाक़ई ईमान ले आऊँगा, फ़रमाया तो सुनो! तुम एक जंगल से गुज़र रहे थे तो तुम न एक दरख़्त देखा जिस पर कबूतर का एक घोंसला था उस घोंसले में कबूतर के दो बच्चे थे तुम ने उन दोनों बच्चों को पकड़ लिया उन बच्चों की माँ ने जब देखा तो वो माँ अपने बच्चों पर गिरी तो तुम ने उसे भी पकड़ लिया और वो दोनों बच्चे और उनकी माँ इस वक़्त भी तुम्हारे पास हैं और इस आसतीन के अन्दर हैं।

आराबी ये सुनकर हैरान रह गया और झट पुकार उठा: *अशहद-अन-ला इलाहा इल-लल्लाह व अशहद अन्नका रसूल अल्लाह* (जामअे अलमौजज़ात सफ़ा 21)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कोई चीज़ पनेहाँ ना थी और एक आराबी भी उस हक़ीक़त जानता था के जो नबी हो वो ग़ैब जान लेता है फिर बराए नाम पढ़ा लिखा होकर हुज़ूर के इल्म को तसलीम ना करे वो उजड और गंवार से भी ज़्यादा उजद और गंवार हुआ या नहीं?

हिकायत नम्बर (28) जन्नत की ऊँटनी

हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह एक बार घर तशरीफ़ लाए तो

हज़रत फ़ातिमा रज़ी अल्लाहो अन्हा ने कहा मैंने ये सूत काता है आप इसे बाज़ार ले जाईए और बेच कर आटा ले आईये ताके हसन व हुसैन (रज़ी अल्लाह अन्हुमा) को रोटी खिलाऊँ, हज़रत अली वो सूत बाज़ार ले गए और उसे छः रुपये पर बेच दिया, फिर उन रुपयों का कुछ ख़रीदना चाहते थे के एक सायल ने सदा की *मंयुक़रिज़-उल्लाहा क़रज़न हसाना*, हज़रत

अली ने वो रुपये उस सायल को दे दिए थोड़ी देर के बाद एक आराबी आया जिसके पास बड़ी फ़रबा एक ऊँटनी थी वो बोला ऐ अली! ये ऊँटनी ख़रीदोगे? फ़रमाया पैसे पास नहीं, आराबी ने फ़रमाया उधार देता हूँ ये कह कर ऊँटनी की मिहार हज़रत अली के हाथ में दे दी और खुद चला गया, इतने में एक दूसरा आराबी नमूदार हुआ और कहा अली! ऊँटनी देते हो? फ़रमाया ले लो आराबी ने कहा तीन सौ नक़द देता हूँ ये कहा और तीन सौ नक़द हज़रत अली को दे दिए और ऊँटनी लेकर चला गया उसके बाद हज़रत अली ने पहले आराबी को तलाश किया मगर वो ना मिला आप घर आए और देखा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत फ़ातिमा के पास तशरीफ़ फ़रमा हैं हुज़ूर ने मुसकुरा कर फ़रमाया, अली! ऊँटनी का किस्सा तुम खुद सुनाते हो या मैं सुनाऊँ?

हज़रत अली ने अर्ज़ किया हुज़ूर आप ही सुनाएँ फ़रमाया पहला आराबी जिब्राईल था और दूसरा आराबी इसराफ़ील था और ऊँटनी जन्नत की वो ऊटनी थी जिस पर जन्नत में फ़ातिमा सवार होगी खुदा को तुम्हारा ईसार जो तुम ने छः रुपये सायल मो दिए पसंद आया और उसके सिले में दुनिया में भी उसने तुम्हें उसका अज्र ऊँटनी की ख़रीद व फ़रोख़्त के बहाने दिया। (जामअे अलमोजज़ात सफ़ा 4)

सबक़:- अल्लाह वाले खुद भूके रहकर भी मोहताजों को खाना खिलाते हैं ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम दानाऐ ग़यूब हैं आपसे कोई बात मख़्फ़ी नहीं।

हिकायत नम्बर (29) जंगल की हिरनी

एक जंगल में एक हिरनी रहती थी उसके दो बच्चे थे एक बार वो बाहर निकली तो किसी शिकारी ने राह में जाल बिछा रखा था बेख़बर हिरनी उस जाल में फंस गई जब उसने देखा के मैं तो फंस गई हूँ तो बड़ी परेशान हुई उसकी खुश क़िस्मती देखिए के उसी जंगल में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाते हुए उसे नज़र आए जब उसने हुज़ूर रहमते

आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा तो पुकारी या रसूल अल्लाह! मुझ पर रहम फ़रमाईए हुज़ूर ने उसकी पुकार सुनी और उसके पास तशरीफ़ लाकर फ़रमाया क्या हाजत है? वो बोली हुज़ूर! मैं उस आराबी के जाल में फंस गई हूँ मेरे दो छोटे छोटे बच्चे हैं जो उस क़रीब के पहाड़ों में हैं थोड़ी देर के लिए आप मेरी ज़मानत देकर इस जाल से मुझे आज़ाद करा दीजिए ताके मैं आख़िरी बार एक मर्तबा बच्चों को दूध पिला आऊँ, हुज़ूर मैं दूध पिलाकर फिर यहीं वापस आजाऊँगी, हुज़ूर ने फ़रमाया अच्छा जा मैं तुम्हारी ज़मानत देता हूँ और तुम्हारी जगह यहीं ठहरता हूँ, तो बच्चों को दूध पिलाकर जल्दी वापस आ जाओ चुनाँचे हिरनी को आपने रिहा कर दिया और वहाँ खुद क़याम फ़रमा हो गए आराबी जो मुसलमान ना था कहने लगा, अगर मेरा शिकार वापस ना आया तो अच्छा ना होगा हुज़ूर ने फ़रमाया तुम देखो तो सही के हिरनी वापस आती है या नहीं। चुनाँचे हिरनी बच्चों के पास पहुँची और बच्चों को दूध पिला कर फ़ौरन वापस लौटी और आते ही हुज़ूर के क़दमों पर सर डाल दिया ये अेजाज़ देखकर वो आराबी भी क़दमों पर गिर गया

झुक गए सर हिरनी व काफ़िर के दोनों साथ साथ
मुसतफ़ा ने उनके सर पर रख दिया रहमत का हाथ
फिर बशारत उसको और उसको मिली सरकार से
जाल से आज़ाद तू, और तू अज़ाबे नार से!

(शिफ़ा शरीफ़ सफ़ा 76 जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जानवरों तक के लिए रहमत हैं और जानवर भी हुज़ूर के हुक्म की तामील करते हैं फिर जो इंसान होकर हुज़ूर का हुक्म ना माने वो जानवरों से भी गया गुज़रा है या नहीं?

हिकायत नम्बर (30) एक काफ़िरा का मकान

हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम फ़तह मक्का के बाद एक दिन मक्का मोअज़्ज़मा की एक काफ़िरा औरत के मकान की दीवार से तकिया लगाकर किसी अपने ग़ुलाम से गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे उस माकन वाली काफ़िरा को जब पता चला के मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मेरे मकान की दीवार से तकिया लगाए खड़े हैं तो बुग्ज़ व अदावत से उसने अपने मकाल की सब खिड़कियाँ बन्द कर डालीं

ताके हुज़ूर की आवाज़ ना सुन पाए उसी वक़्त जिब्राईले अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया:

या रसूल अल्लाह! खुदा फ़रमाता है के अगरचे ये औरत काफ़िरा है मगर आपकी शान बड़ी अरफ़अ व बुलंद है चूंके उस काफ़िरा के मकान की दीवार के साथ आपकी पुश्ते अनवर लग गई है इस लिए मैं नहीं चाहता के ये मकान वाली अब जहन्नम में जले। उस औरत ने अपने मकान की खिड़कियों को बन्द किया है मगर मैंने उसके दिल की खिड़की खोल दी है और ये सिर्फ़ उसकी दीवार से आपके तकिया लगा कर खड़े होने की बर्कत से है, इतने में वो औरत बेचैन होरक घर से निकली और हुज़ूर के क़दमों पर गिर गई और सच्चे दिल से पुकार उठी। *अशहद-अन-ला इलाहा इल-लल्लाह व अशहद अन्नका रसूल अल्लाह* (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 78 जिल्द 2)

सबक़:- जिस औरत के मकान की दीवार से हुज़ूर की पुश्ते अनवर लग गई वो औरत आग से बच गई तो जिस खुश क़िस्मत और मुक़द्दस ख़ातून हज़रते आमना रज़ी अल्लाहो अन्हा के शिकम अनवर में हुज़ूर ने क़याम फ़रमया हो वो मुक़द्दस ख़ातून क्यों जन्नत की मालिक ना होगी फिर किस क़द्र बदबख़्त हैं वो लोग जो हुज़ूर के वालदैन मोअज़मीन के मुतअल्लिक़ कुछ का कुछ बकते हैं।

"रज़ी अल्लाहो तआला अन व अलदीयह सल-लल्लाहो अलेह व आलिही व सल्लम"

हिकायत नम्बर (31) शीरख़्वार बच्चे का एलाने हक़

हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक मर्तबा सहाबाइक्राम अलेहिम अर्रिज़वान में तशरीफ़ फ़रमा थे के एक मुशरिका औरत जिसकी गोद में दो माह का शीरख़्वार बच्चा था उस तरफ़ से गुज़री उस बच्चे ने हुज़ूर की तरफ़ नज़र की तो यकदम बज़बाने फ़सीह पुकार उठा:

अस्सलाम अलेका या रसूल व या अक्रमा ख़ल्क़ीअल्लाह

माँ ने जब देखा के मेरा दो माह बच्चा कलाम करने लगा है तो हैरान रह गई और बोली बेटा! ये कलाम करना तुझे किस ने सिखा दिया? और ये अल्लाह के रसूल हैं, ये तुझे किस ने बता दिया? बच्चा अब अपनी माँ से मुख़ातिब होकर कहने लगा ऐ माँ! ये कलाम करना मुझे उसी अल्लाह ने

सिखाया है जिसने सब इंसानों को ये ताक़त दी है और ये देख मेरे सर पर जिब्राईले अमीन खड़े हैं जो मुझे बता रहे हैं के ये अल्लाह के रसूल हैं माँ ने ये अेजाज़ देखा तो झट कलमा पढ़ कर मुसलमान हो गई, मौलाना रूमी अलेह अर्रहमत मसनवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं के फिर हुज़ूर ने उस बच्चे को मुख़ातिब फ़रमाया और दरयाफ़्त फ़रमाया के तुम्हारा नाम क्या है? तो वो बोला

अब्द ईज़्ज़ा पेश एँ यकमश्त चीज़
लेक नामम पेशे हक़ अब्दुल अज़ीज़

यानी या रसूल अल्लाह! इस मुश्ते खाक माँ के नज़दीक तो मेरा नाम अब्दे ईज़्ज़ा है लेकिन अल्लाह के नज़दीक मेरा नाम अब्दुल अज़ीज़ है। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 78 जिल्द 2)

सबक़:- एक दो माह का बच्चा तो हुज़ूर को जान और मान ले और अपनी माँ को भी जन्नत में ले जाए मगर अफ़सोस उन उम्र रसीदा बदबख़्तों पर जिन्होंने हुज़ूर को ना जाना ना माना और अपनी जहालत व गुस्ताख़ियों से खुद भी डूबे और दूसरों को भी ले डूबे।

हिकायत नम्बर (32) रात का चोर

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह को सदक़ाए फ़ित्र की हिफ़ाज़त के लिए मुक़र्रर फ़रमाया, हज़रत अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह रात भर उस माल की हिफ़ाज़त फ़रमाते रहे, एक रात एक चोर आया और माल चुराने लगा, हज़रते अबु हुरेरा ने उसे देख लिया और उसे पकड़ लिया और फ़रमाया मैं तुझे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में पेश करूंगा उस चोर ने मिन्नत समाजत करना शुरू की और कहा खुदारा मुझे छोड़ दो मैं साहिबे अयाल हूँ और मोहताज हूँ, अबु हुरेरह को रहम आ गया और उसे छोड़ दिया। सुबह अबु हुरेरह जब बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो हुज़ूर ने मुसकुरा कर फ़रमाया अबु हुरेरह! वो रात वाले तुमहारे क़ैदी (चोर) ने क्या किया? अबु हुरेरह ने अर्ज़ किया, हुज़ूर! उसने अपनी अयाल दारी और मोहताजी बयान की तो मुझे रहम आ गया और मैंने छोड़ दिया हुज़ूर ने फ़रमाया उसने तुम से झूट बोला, ख़बरदार रहना आज रात वो फिर आएगा। अबु हुरेरह कहते हैं के मैं दूसरी रात भी उसके इन्तिज़ार में रहा क्या देखता हूँ के वो वाक़ई फिर आ पहुँचा और माल चुराने लगा मैंने फिर

उसे पकड़ लिया उसने फिर मिन्नत खुशामद की और मुझे फिर रहम आ गया और मैंने फिर छोड़ दिया सुबह जब हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर हुआ तो हुज़ूर ने फिर फ़रमाया, अबु हुरेरह! वो रात वाले कैदी (चोर) ने क्या किया? मैंने फिर अर्ज़ किया के हुज़ूर! वो अपनी हाजत बयान करने लगा तो मुझे रहम आ गया और मैंने फिर छोड़ दिया, हुज़ूर ने फ़रमाया उसने तुम से झूट कहा ख़बरदार! आज वो फिर आएगा अबु हुरेरह कहते हैं के तीसरी रात वो फिर आया और मैंने उसे पकड़ कर कहा कमबख़्त आज ना छोड़ूंगा और हुज़ूर के पास ज़रूर ले जाऊँगा। वो बोला, अबु हुरेरह! मैं तुझे चन्द ऐसे कलमात सिखा जाता हूँ जिनको पढ़ने से तू नफ़ा में रहेगा, सुनो! जब सोने लगो तो आयत-अलकुर्सी पढ़ कर सोया करो, इससे अल्लाह तआला तुम्हारी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा और शैतान तुम्हारे नज़दीक नहीं आ सकेगा, अबु हुरेरह कहते हैं वो मुझे ये कलमात सिखा कर फिर मुझ से रिहाई पा गया और मैंने जब सुबह हुज़ूर की बारगाह में ये सारा क़िस्सा बयान किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया उसने ये बात सच्ची कही है हालाँके खुद वो बड़ा झूटा है क्या तू जानता है ऐ, अबु हुरेरह! के वो तीन रात आने वाला कौन था? मैंने अर्ज़ किया नहीं या रसूल अल्लाह! मैं नहीं जानता, फ़रमाया वो शैतान था। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 177)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम गुज़रे हुए और होने वाले सब वाक़ेयात को जानते हैं अबु हुरेरह के पास रात को चोर आया तो हुज़ूर ने खुद ही फ़रमाया के अबु हुरेरह रात के कैदी ने क्या किया और फिर ये भी फ़रमाया के आज फिर आएगा चुनाँचे वही कुछ हुआ जो हुज़ूर ने फ़रमाया। मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम आलिम माकाना वमा यकुन हैं।

हिकायत नम्बर (33) भेड़िये की गवाही

मदीना मुनव्वरा के किसी मुक़ाम पर एक चरवाहा अपनी बकरियाँ चरा रहा था के अचानक एक भेड़िया आया। और बकरियों के रेवड़ में घुस कर एक बकरी का शिकार ले भागा चरवाहे ने देखा तो उस भेड़िये का तआक़्क़ुब किया और उससे बकरी छुड़ा ली भेड़िये ने जब देखा के मेरा शिकार मुझ से छीन लिया गया है तो एक टीले पर चढ़ कर बज़बान फ़सीह कहने लगा, मियाँ चरवाहे! अल्लाह ने मुझे रिज़्क़ दिया था मगर अफ़सोस! के तुम ने मुझ से छीन लिया, चरवाहे ने जब एक भेड़िये को कलाम करते

हुए देखा तो हैरान होकर बोला तआज्जुब है के एक भेड़िया भी कलाम करता है, भेड़िये ने फिर कलाम किया और कहा और उससे से भी ज़्यादा तआज्जुब वाली बात तो ये है के मदीना शरीफ़ में एक ऐसा वजूद मौजूद है जो तुम्हें जो कुछ हो चुका है और जो कुछ आईंदा होने वाला है उन सब अगली पिछली बातों की ख़बर देता है मगर तुम उस पर ईमान नहीं लाते चरवाहा जो यहूदी था भेड़िये की उस गवाही को सुन कर बड़ा मुतास्सिर हुआ और बारगाहे रिसालत में हाज़िर होकर मुसलमान हो गया। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 533)

सबक़:- एक जानवर भी जानता और मानता है के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हर गुज़री हुई और होने वाली बात को जानते हैं मगर एक बराए नाम इंसान भी हैं जो (मआज़ अल्लाह) हुज़ूर के लिए दीवार के पीछे का इल्म भी तसलीम नहीं करते।

हिकायत नम्बर (34) खुश अक़ीदा यअफ़ूर

फ़तह ख़ैबर के बाद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम वापस आ रहे थे के रास्ते में आपकी ख़िदमत में एक गधा हाज़िर हुआ और अर्ज़ करने लगा।

हुज़ूर! मेरी अर्ज़ भी सुनते जाईये। हुज़ूर रहमते आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उस मिसकीन जानवर की अर्ज़ सुनने को ठहर गए और फ़रमाया बताओ क्या कहना चाहते हो, वो बोला, हुज़ूर मेरा नाम यज़ीद बिन शहाब है और मेरे दादा की नस्ल से खुदा ने साठ खुर पैदा किए हैं उन सब पर अल्लाह के नबी सवार होते रहे और हुज़ूर! मेरे दिल की ये तमन्ना है के मुझ मिसकीन पर हुज़ूर सवारी फ़रमाएँ और या रसूल अल्लाह! मैं उस बात का मुसतहिक़ हूँ और वो इस तरह के मेरे दादा की औलाद में से सिवा मेरे कोई बाक़ी नहीं रहा और अल्लाह के रसूलों में से सिवा आपके कोई बाक़ी नहीं रहा।

हुज़ूर ने उसकी ये ख़्वाहिश सुन कर फ़रमाया अच्छा हम तुम्हें अपनी सवारी के लिए मंज़ूर फ़रमाते हैं और तुम्हारा नाम बदल कर हम यअफ़ूर रखते हैं (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 460)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़त्म नबुव्वत का इक़्रार एक गधा भी कर रहा है फिर जो ख़त्म नबुव्वत का इंकार करे वो क्यों ना गधे से भी बदत्तर हो।

हिकायत नम्बर (35) हुज़ूर(स०अ०स०) और मलक-उल-मौत

हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के विसाल शरीफ़ का जब वक़्त आया तो मलक-उल-मौत जिब्राईल की मईयत में हाज़िर हुआ जिब्राईले अमीन ने अर्ज़ किया:

या रसूल अल्लाह! ये मलक-उल-मौत आया है और आप से इजाज़त तलब करता है, हुज़ूर! उसने आज तक कभी ना किसी से इजाज़त ली है और ना आपके बाद किसी से इजाज़त लेगा हुज़ूर अगर इजाज़त दें तो अपना काम करे हुज़ूर ने फ़रमाया! मलक-उल-मौत को आगे आने दो चुनाँचे मलक-उल-मौत आगे बढ़ा और अर्ज़ करने लगा, या रसूल अल्लाह! अल्लाह तआला ने मुझे आपकी तरफ़ भेजा है और मुझे ये हुक्म दिया है के मैं आपका हर हुक्म मानूं और जो आप फ़रमाएँ वही करूं, लिहाज़ा आप अगर फ़रमाएँ तो मैं रूह मुबारक क़ब्ज़ करूं वरना वापस चला जाऊँ जिब्राईल ने अर्ज़ किया, हुज़ूर! खुदा वंद करीम आपके लक़ाऐ विसाल को चाहता है हुज़ूर ने फ़रमया तो ऐ मलक-उल-मौत तुम्हें जान लेने की इजाज़ है, जिब्राईल बोले हुज़ूर! अब जब के आप तशरीफ़ लिए जा रहे हैं तो फिर ज़मीन पर मेरा ये आख़िरी फैरा है इसलिए के मेरा मक़सूद तो आप ही थे, इसके बाद मलक-उल-मौत क़ब्ज़ रूहे अनवर के शरफ़ से मुशर्रफ़ हुआ।

(मवाहिब-उल-लुदनिया सफ़ा 571, जिल्द: 4, मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 541)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इतनी बड़ी शान है के वो मलक-उल-मौत जिसने कभी किसी बड़े से बड़े बादशाह से भी इजाज़त नहीं ली हमारे हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर पहले इजाज़त तलब करता है और यूं कहता है के अगर आप फ़रमाएँ तो जाँ लूं वरना वापस चला जाऊँ और खुदा उसे ये हुक्म देकर भेजता है के मेरे महबूब की इताअत करना, जो वो फ़रमाएँ वही करना बावजूद उसके जो गुसताख़ हुज़ूर को अपनी मिस्ल कहते हैं किस क़द्र गुमराह हैं क्या कभी उनसे भी मलक-उल-मौत ने इजाज़त ली है।

हिकायत नम्बर (36) शाही इसतक़्बाल

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के विसाल शरीफ़ के वक़्त जिब्राईले अमीन हाज़िर हुआ और अर्ज़ करने लगा या रसूल अल्लाह! आज

आसमानों पर हुज़ूर के इसतक़्बाल की तैयारियाँ हो रही हैं, खुदा तआला ने जहन्नम के दारोग़ा मालिक को हुक्म दिया है के मालिक! मेरे हबीब की रूह मुतहेरा आसमानों पर तशरीफ़ ला रही है, इस अेज़ाज़ में दोज़ख़ की आग बुझा दे और हूराने जन्नत से फ़रमाया के तुम सब अपनी तज़ईन व आरास्तगी करो और सब फ़रिश्तों को हुक्म दिया है के तअज़ीमे रूह मुसतफ़ा के लिए सब सफ़ बसफ़ खड़े हो जाओ और मुझे हुक्म फ़रमाया है के मैं जनाब की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपको बशारत दूं के तमाम अम्बिया और उनकी उम्मतों पर जन्नत हराम है जब तक के आप और आपकी उम्मत जन्नत में दाख़िल ना हो जाए और कल क़यामत को अल्लाह तआला आपकी उम्मत पर आपके तुफ़ैल इस क़द्र बख़्शिश व मग़फ़िरत की बारिश फ़रमाएगा के आप राज़ी हो जाएँगे। (मदारिज-उन्नबुव्वत सफ़ा 254 जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का अेज़ाज़ व इक्राम दोनों आलम में है और जिन्न व बशर हूरो मलायक सभी हुज़ूर के खुद्दाम व लश्करी हैं और आप दोनों आलम के बादशाह हैं।

हिकायत नम्बर (37) हुज़ूर(स॰अ॰स॰) का गुस्ल मुबारक

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के गुस्ल मुबारक के वक़्त सहाबाइक्राम अलेहिम-उर्रिज़्वान सोचने लगे और आपस में कहने लगे के जिस तरह दूसरे लोगों के कपड़े उतार कर उनको गुस्ल दिया जाता है क्या इसी तरह हुज़ूर के कपड़े मुबारक भी उतार कर हुज़ूर को गुस्ल दिया जाएगा या हुज़ूर को कपड़ों समेत गुस्ल दिया जाए? इस बात पर गुफ़्तगू कर रहे थे के अचानक सब पर नींद तारी हो गई और सब के सर उनके सीनों पर ढलक आए फिर सब को एक आवाज़ आई, कोई कहने वाला कह रहा था के तुम जानते नहीं ये कौन हैं? ख़बरदार! ये "रसूल अल्लाह" हैं इनके कपड़े ना उतारना इन्हें "कपड़ों समेत ही गुस्ल दो" फिर सब की आँखें खुल गईं और हुज़ूर को कपड़ों समेत ही गुस्ल दिया गया। (मवाहिब लदनिया सफ़ा 378 जिल्द 2 मिश्कात सफ़ा 537)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की शान सब से मुमताज़ और बरगज़ीदा है और कोई शख़्स ऐसा नहीं जो उनकी मिस्ल हो आपकी ये ज़िन्दगी आपका विसाल शरीफ़, आपका गुस्ल शरीफ़ और आपका क़ब्र अनवार में रोनक़ अफ़्रोज़ होना हर बात आपकी मुमताज़ है और कोई शख़्स किसी बात में आपकी मिस्ल नहीं।

हिकायत नम्बर (38) क़ब्र अनवर से आवाज़

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं जब हम हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दफ़्ने मुबारक से फ़ारिग़ हुए तो तीन रोज़ के बाद एक आराबी क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुआ और क़ब्र अनवर के सामने गिर कर क़ब्र अनवर की खाक अपने सर डालने लगा और फिर कहने लगा। या रसूल अल्लाह! जो कुछ आपने फ़रमाया हम ने सुना और आपकी ज़बानी हम ने कुरआन की ये आयत भी सुनी *वलो अन्नाहुम इज़ज़लामू अनफुसाहुम जाऊका* "यानी जो लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म कर बैठें वो आपके पास हाज़िर हों" पस ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपनी जान पर ज़ुल्म कर बैठा हूँ और अब गुनाहों की माफ़ी के लिए आपके पास आ पहुँचा हूँ।

आराबी ने ये कहा तो क़ब्र अनवर से आवाज़ आई, "जाओ अल्लाह ने तुम्हें बख़्श दिया।" (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 777)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का दरबारे रहमत, विसाल शरीफ़ के बाद भी बदस्तूर लगा हुआ है और हुज़ूर अपने विसाल शरीफ़ के बाद भी गुनहगारों के लिए ज़रियाऐ निज़ात और मुनब्बअे फ़यूज़ व बर्कात हैं और आज भी हम हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बदस्तू मोहताज हैं।

हिकायत नम्बर (39) क़ब्र अनवर से अज़ान की आवाज़

जिन दिनों लश्करे यज़ीद ने मदीना मुनव्वरह पर चढ़ाई की उन दिनों तीन दिन मस्जिद नबव्वी में अज़ान ना हो सकी हज़रत सईद बिन अलमसीब रज़ी अल्लाह अन्ह ने ये तीन दिन मस्जिद नबव्वी में रह कर गुज़ारे, आप फ़रमाते हैं के नमाज़ के वक़्त हो जाने का मुझे कुछ पता नहीं चलता था मगर इस तरह जब नमाज़ का वक़्त आता क़ब्र अनवर से एक हल्की सी अज़ान की आवाज़ आने लगती। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 537)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम क़ब्र अनवर में भी ज़िन्दा हैं और जो शख़्स (मआज़ अल्लाह) हुज़ूर को मर कर मिट्टी में मिल जाने वाला लिखता है वो बड़ा बे अदब और गुस्ताख़े रसूल है।

हिकायत नम्बर (40) आसमान का गिरया

मदीना मुनव्वरह में एक बार क़हेत पड़ गया, बारिश होती ही ना थी लोग उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अन्हा की ख़िदमत

में फ़रयाद लेकर हाज़िर हुए हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ी अल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की क़ब्र अनवर पर से छत में एक सूराख़ कर दो ताके आसमान और क़ब्र में कोई हिजाब ना रहे चुनाँचे लोगों ने ऐसा ही किया तो इस क़द्र बारिश हुई के खेतियाँ हरी भरी हो गईं और जानवर मोटे हो गए मोहद्दिसीन लिखते हैं के आसमान ने जब क़ब्र अनवर को देखा तो रो पड़ा था। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 527)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का फ़यूज़ पाक विसाल शरीफ़ के बाद भी बदस्तूर जारी है और हुज़ूर की क़ब्र अनवर की ज़ियारत से हर आँख आँसूओं के फूल बरसाने लगती है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह से कुछ पाने के लिए हुज़ूर का वसीला ज़रूरी है।

हिकायत नम्बर (41) बिलाल का ख़्वाब

हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह के अहेदे ख़िलाफ़त में एक मर्तबा क़हेत पड़ गया तो हज़रत बिलाल बिन हारिस मुज़नी रज़ी अल्लाहो अन्ह रोज़ाए अनवर पर हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! आपकी उम्मत हलाक हो रही है बारिश नहीं होती, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उन्हें ख़्वाब में मिले और फ़रमाया ऐ बिलाल! उमर के पास जाओ उसे मेरा सलाम कहो और कह दो के बारिश हो जाएगी और उमर से ये भी कहना के कुछ नर्मी इख़्तियार करे (ये हुज़ूर ने इस लिए फ़रमाया के हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह दीन के मामले में बड़े सख़्त थे) हज़रत बिलाल हज़रत उमर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हुज़ूर का सलाम व पैग़ाम पहुँचा दिया, हज़रत उमर ये सलाम व पैग़ामे महबूब पा कर रोए और फिर बारिश भी खूब हुई। (शवाहिद-उल-हक़-लिलनबहानी सफ़ा 67)

सबक़:- मालूम हुआ के विसाल शरीफ़ के बाद भी सहाबाइक्राम मुश्किल के वक़्त हुज़ूर ही की ख़िदमत में हाज़िर होते थे और हर मुश्किल यहीं से हल होती थी और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह की बड़ी शान है और आप ख़लीफ़ा बरहक़ हैं और इस क़द्र ख़ुशक़िस्मत हैं के विसाल शरीफ़ के बाद भी हुज़ूर के सलाम व पैग़ाम से मुशर्रफ़ होते हैं फिर जिसे फ़ारूके आज़म से अदावत होगी वो हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम को क्यों ना बुरा लगेगा।

हिकायत नम्बर (42) उम्मे फ़ातिमा

असकन्द्रिया की एक औरत उम्मे फ़ातिमा मदीना मुनव्वरह में हाज़िर हुई तो उसका एक पैर ज़ख़्मी और मुतावर्रिम हो गया हत्ता के वो चलने से रह गई लोग मक्का मोअज़्ज़मा जाने लगे मगर वो वहीं रह गई, एक दिन वो किसी तरह रोज़ाऐ अनवर पर हाज़िर हुई और रोज़ाऐ अनवर का तवाफ़ करने लगी तवाफ़ करती जाती और ये कहती जाती, या हबीबी या रसूल अल्लाह लोग चले गए और मैं रह गई, हुज़ूर! या तो मुझे भी वापस भेजिये या फिर अपने पास बुला लीजिए ये कह रही थी के तीन अरबी नोजवान मस्जिद में दाख़िल हुए और कहने लगे के कौन मक्का मोअज़्ज़मा जाना चाहता है उम्मे फ़ातिमा ने जल्दी से कहा मैं जाना चाहती हूँ उनमें से एक बोला तो उठो, उम्मे फ़ातिमा बोली मैं उठ नहीं सकती उसने कहा अपना पैर फैलाओ तो उम्मे फ़ातिमा ने मतावर्रिम पैर फैला दिया उसका जो अब मुतावर्रिम पैर देखा तो तीनों बोले हाँ यही वो है और फिर तीनों आगे बढ़े और उम्मे फ़ातिमा को उठा कर सवारी पर बैठा दिया और मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचा दिया और दरयाफ़्त करने पर उनमें से एक नोजवान ने बताया के मुझे हुज़ूर ने ख़्वाब में हुक्म फ़रमाया था के उस औरत को मक्का पहुँचा दो उम्मे फ़ातिमा कहती है के मैं बड़े आराम से मक्का पहुँच गई। (शवाहिद-उल-हक़ सफ़ा 164)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम आज भी हर फ़रयादी की फ़रयाद सुनते हैं और हर मुश्किल हल फ़रमा देते हैं बशर्त ये के फ़रयादी दिल और सच्ची अक़ीदत से या हबीबी या रसूल अल्लाह कहने का भी आदी हो।

हिकायत नम्बर (43) एक हाशमी औरत

मदीना मुनव्वरह में एक हाशमी औरत रहती थी उसे बअज़ लोग ईज़ा दिया करते थे एक दिन वो हुज़ूर के रोज़े पर हाज़िर हुई और अर्ज़ करने लगी, या रसूल अल्लाह! ये लोग मुझे ईज़ा देते हैं, रोज़ाऐ अनवर से आवाज़ आई।

क्या मेरा असवाऐ हस्ना तुम्हारे सामने नहीं, दुश्मनों ने मुझे ईज़ाएँ दीं और मैंने सब्र किया मेरी तरह तुम भी सब्र करो, वो औरत फ़रमाती है के मुझे बड़ी तसकीन हुई और चन्द दिन के बाद मुझे ईज़ा देने वाले भी मर गए। (शवाहिद-उल-हक़ सफ़ा 165)

सबक़:- हमारे हुज़र सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सबकी

सुनते है। और हर मज़लूम के लिए आप ही का दर, जाऐ पनाह है और या रसूल अल्लाह कहने से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की जानिब से रहमत व तसकीन, हासिल होती है।

हिकायत नम्बर (44) रसूल अल्लाह(स०अ०स०) का पैग़ाम एक मजूसी के नाम

शीराज़ के एक बुज़ुर्ग हज़रत फ़ाश फ़रमाते हैं मेरे हाँ एक बच्चा पैदा हुआ और मेरे पास ख़र्च करने के लिए कुछ भी ना था और वो मोसम इन्तिहाई सर्दी का था मैं उसी फ़िक्र में सो गया तो ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत नसीब हुई आपने फ़रमाया क्या बात है? मैंने अर्ज़ किया हुज़ूर ख़र्च के लिए मेरे पास कुछ नहीं बस इसी फ़िक्र में था, हुज़ूर ने फ़रमाया, दिन चढ़े तो फ़लाँ मजूसी के घर जाना और उससे कहना के रसूल अल्लाह ने तुझे कहा है के बीस दीनार तुझे दे दे, हज़रते फ़ाश सुबह उठे तो हैरान हुए के एक मजूसी के घर कैसे जाऊँ और रसूल अल्लाह का हुक्म वहाँ कैसे सुनाऊँ और फिर ये बात भी दुरस्त है के ख़्वाब में हुज़ूर नज़र आएँ तो वो हुज़ूर ही होते हैं इसी शश व पंज में वो दिन गुज़र गया और दूसरी रात फिर हुज़ूर की ज़ियारत हुई और हुज़ूर ने फ़रमया तुम इस ख़याल को छोड़ो और उस मजूसी के पास जाकर मेरा पैग़ाम दो चुनाँचे हज़रत फ़ाश सुबह उठे और उस मजूसी के घर चल पड़े, क्या देखते हैं के वो मजूसी अपने हाथ में कुछ लिए हुए दरवाज़े पर खड़ा है जब उसके पास पहुँचे तो चूंके वो उनको जानता ना था और ये पहली मर्तबा उसके पास आए थे इसलिए शर्मा गए और वो मजूसी खुद ही बोल पड़ा, बड़े मियाँ! क्या कुछ हाजत है? हज़रत फ़ाश बोले हाँ मुझे रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने तुम्हारे पास ये कह कर भेजा है के तुम मुझे बीस दीनार दे दो, उस मजूसी ने अपनाा हाथा खोला और कहा तो लीजिए ये बीस दीनार मैंने आप ही के लिए निकाल रखे थे और आपकी राह देख रहा था। हज़रत फ़ाश ने वो दीनार ले लिए और उस मजूसी से पूछा, भई मैं तो भला रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ख़्वाब में देख कर यहाँ आया हूँ मगर तुझे मेरे आने का कैसे इल्म हो गया तो वो बोला, मैंने रात को उस शक्ल व सूरत के एक नूरानी बुज़ुर्ग को ख़्वाब में देखा है जिसने मुझ से फ़रमाया के एक शख़्स साहिबे हाजत है वो कल तुम्हारे पास पहुँचेगा उसे बीस दीनार दे देना चुनाँचे मैं ये बीस दीनार लेकर तुम्हारे ही इन्तिज़ार में था।

हज़रत फ़ाश ने जब उसकी ज़बानी रात को मिलने वाले नूरानी बुज़ुर्ग का हुलिया सुना तो वो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का था चुनाँचे फ़ाश ने उससे कहा, यही रसूल सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम हैं उस मजूसी ने ये वाक़ेया सुन कर थोड़ी देर तोक़िफ़ किया और फिर कहा मुझे अपने घर ले चलो चुनाँचे वो हज़रत फ़ाश के घर आया और कलमा पढ़ कर मुसलमान हो गया फिर उसकी बीवी, बहन और उसकी औलाद भी मुसलमान हो गई। (शवाहिद-उल-हक़, सफ़ा 169)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की नज़रे रहमत जिस पर भी पड़ जाए उसका बेड़ा पार हो जाता है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपने मोहताज ग़ुलामों की फ़रयाद सुनते हैं और विसाल शरीफ़ के बाद भी मोहताजों की मदद फ़रमाते हैं।

हिकायत नम्बर (45) ख़्वाब का दूध

हज़रत शेख़ अबु अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं एक मर्तबा हम मदीना मुनव्वरह हाज़िरत हुए तो मस्जिद नबव्वी में महेराब के पास एक बुज़ुर्ग आदमी को सोए हुए देखा थोड़ी देर में वो जागे और जागते ही रोज़ाऐ अनवर के पास जाकर हुज़ूर अनवर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम पर सलाम अर्ज़ किया और फिर मुसकुराते हुए लौटे एक ख़ादिम ने उन से इस मुसकुराहट की वजह पूछी तो बोले मैं सख़्त भूका था इसी आलम में मैंने रोज़ाऐ अनवर पर हाज़िर होकर भूक की शिकायत की तो ख़्वाब में मैंने हुज़ूर को देखा आपने मुझे एक पियाला दूध का अता फ़रमाया और मैंने खूब पेट भर कर दूध पिया और फिर उस बुज़ुर्ग ने अपनी हथेली पर मुंह से थूक कर दिखाया तो हम ने देखा के हथेली पर वाक़ई दूध ही था। (हुज्जत-उल्लाह अलआलमीन, सफ़ा 804)

सबक़:- हुज़ूर (स॰अ॰स॰) को ख़्वाब में देखने वाला हुज़ूर ही को देखता है और हुज़ूर की ख़्वाब में भी जो अता हो वो वाक़ई अता होती है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर भी वैसे ही ज़िन्दा हैं जैसे पहले थे।

हिकायत नम्बर (46) ख़्वाब की रोटी

हज़रत अबुअलख़ैर फ़रमाते हैं एक मर्तबा मैं मदीना मुनव्वरह में हाज़िर हुआ तो मुझे पाँच दिन का फ़ाक़ह आ गया, मैं रोज़ाऐ अनवर पर हाज़िर हुआ और हुज़ूर पर सलाम अर्ज़ करके फिर हज़रत अबु बक्र और हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्हूमा पर सलाम अर्ज़ किया और फिर अर्ज़ किय

या रसूल अल्लाह! मैं तो आप का मेहमान हूँ और पाँच रोज़ से भूका हूँ, अबुअलख़ैर कहते हैं के मैं फिर मिंबर के पास सो गया तो ख़्वाब में देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए हैं आपके दायें तरफ़ हज़रत सिद्दीक़ और बायें तरफ़ हज़रत उमर और आगे हज़रत अली (रज़ी अल्लाहो अन्हुम) थे। हज़रत अली ने मुझे आगे बढ़ कर ख़बरदार किया और फ़रमाया उठो वो देखो! रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तशरीफ़ ला रहे हैं और तुम्हारे लिए खाना लाए हैं, मैं उठा और देखा के हुज़ूर के हाथ में रोटी है वो रोटी हुज़ूर ने मुझे अता फ़रमाई मैंने हुज़ूर की पैशानी अनवर को बोसा देकर वो रोटी ले ली और खाने लगा आधी खाली तो मेरी आँख खुल गई क्या देखता हूँ के बाक़ी आधी रोटी मेरे हाथ में है। (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन, सफ़ा 805)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम विसाल शरीफ़ के बाद भी क़ासिम रिज़्क़ उल्लाह हैं और मोहताजों के लिए दाता हैं और ये भी मालूम हुआ के बुज़ुर्गाने दीन अपनी तकालीफ़ व मुश्किलात बारगाहे नबव्वी में पेश किया करते थे और हुज़ूर विसाल के बाद भी अपने गुलामों की फ़रयाद रसी फ़रमाते हैं।

हिकायत नम्बर (47) शाहे रोम का क़ैदी

उन्दलिस के एक मर्द सालेह के लड़के को शाहे रोम ने क़ैद कर लिया था वो मर्द सालेह फ़रयाद लेकर मदीना मुनव्वरह को चल पड़ा रास्ते में एक दोस्त मिला, और उसने पूछा कहाँ जा रहे हो? तो उसने बताया के मेरे लड़के को शाहे रोम ने क़ैद कर लिया है और तीन सौ रूपये उस पर जुर्माना कर दिया है। मेरे पास इतना रूपया नहीं जो देकर मैं उसे छुड़ा सकूं इसलिए मैं हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के पास फ़रयाद लेकर जा रहा हूँ उस दोस्त ने कहा मगर मदीना मुनव्वरह ही पहुँचने की क्या ज़रूरत है हुज़ूर से तो हर मकान पर शफ़ाअत कराई जा सकती है उसने कहा ठीक है मगर मैं तो वहीं हाज़िर होऊँगा। चुनाँचे वो मदीना मुनव्वरह हाज़िर हुआ और रोज़ाए अनवर की हाज़री के बाद अपनी हाजत अर्ज़ की फिर ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ियारत हुई तो हुज़ूर ने उससे फ़रमाया "जाओ अपने शहर पहुँचो" चुनाँचे वो वापस आ गया और घर आकर देखा के लड़का घर आ गया है, लड़के से रिहाई का क़िस्सा पूछा तो उसने बताया के फ़लानी रात मुझे और मेरे सब साथी कैदियों को बादशाह ने खुद ही

रिहा कर दिया है इस मर्द सालेह ने हिसाब लगाया तो ये वही रात थी जिस रात हुज़ूर की ज़ियारत हुई थी और आपने फ़रमाया था "जाओ अपने शहर पहुँचो" (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन, सफ़ा 780)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम हर मुसीबत ज़दा की मदद फ़रमाते हैं और क़ब्र अनवर में तशरीफ़ फ़रमा होकर भी अपने ग़ुलामों की एआनत फ़रमाते हैं और उनके ग़ुलाम किसी मकान से भी उनकी तरफ़ तवज्जह करें हुज़ूर की रहमत उनका काम कर देती है।

और ये भी मालूम हुआ के पहले बुज़ुर्ग की बारगाह में फ़रयादें किया करते थे और उसे किसी ने भी शिर्क नहीं कहा।

हिकायत नम्बर (48) क़ातिल की रिहाई

बग़दाद के हाकिम इब्राहीम बिन इसहाक़ ने एक रात ख़्वाब में हुज़ूरे अक्रम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को देखा और हुज़ूर ने उससे फ़रमाया "क़ातिल को रिहा कर दो" ये हुक्म सुन कर हाकिम बग़दाद कांपता हुआ उठा और मातहेत अम्ले से पूछा के क्या कोई ऐसा मुज्रिम भी है जो क़ातिल हो? उन्होंने बताया के हाँ एक ऐसा शख़्स भी है जिस पर इल्ज़ाम क़त्ल है हाकिम बग़दाद ने कहा उसे मेरे सामने लाओ, चुनाँचे उसे लाया गया, हाकिमे बग़दाद ने पूछा के सच सच बताओ वाक़ेया क्या है? उसने कहा सच कहूँगा झूट हरगिज़ ना बोलूंगा, बात ये हुई के हम चन्द आदमी मिलकर अय्याशी व बदमाशी किया करते थे एक बूढ़ी औरत को हम ने मुक़र्रर कर रखा था जो हर रात किसी बहाने से कोई ना कोई औरत ले आती थी एक रात वो एक ऐसी औरत को लाई जिसने मेरी दुनिया में इंक़िलाब बर्पा कर दिया बात ये हुई के वो नोवारिद औरत जब हमारे सामने आई तो चीख़ मार कर और बेहोश होकर गिर गई मैंने उसे उठा कर एक दूसरे कमरे में लाकर उसे होश में लाने की कोशिश की और जब वो होश में आ गई तो उससे चीख़ने और बेहोश होने की वजह पूछी, वो बोली ऐ नोजवान! मेरे हक़ में अल्लाह से डर। फिर कहती हूँ के अल्लाह से डर! ये बुढ़िया तो मुझे बहाने ही बहाने से इस जगह ले आई है देख:-

"मैं एक शरीफ़ औरत हूँ और सय्यदा हूँ, मेरे नाना रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और मेरी माँ फ़ातिमा-त-उज़्ज़ोहरा है ख़बरदार इस निस्बत का लिहाज़ रखना और मेरी तरफ़ बद निगाही से ना देखना।"

मैंने जब उस पाक औरत से जो सय्यदा थी ये बात सुनी तो लरज़ गया और अपने दोस्तों के पास आकर उन्हें हक़ीक़त हाल से आगाह किया और कहा के अगर आक़बत की ख़ैर चाहते हो तो इस मुकर्रमा व मोअज़्ज़मा ख़ातून की बे अदबी ना होने पाए। मेरे दोस्तों ने मेरे इस वाज़ से ये समझा के शायद मैं उनको हटा कर खुद तनहा ही इरतिक़ाबे गुनाह करना चाहता हूँ और उनसे धोका कर रहा हूँ इस ख़याल से मुझ से लड़ने पर आमादा हो गए, मैंने कहा मैं तुम लोगों को किसी सूरत में इस अम्रे शीनअ की इजाज़त ना दूंगा लड़ूंगा, मर जाऊंगा मगर उस सय्यदा की तरफ़ बद निगाही मंज़ूर ना करूंगा चुनाँचे वो मुझ पर झपट पड़े और मुझे उनके हमले से एक ज़ख़्म भी आ गया और इसी असना में एक शख़्स जो उस सय्यदा के कमरे की तरफ़ जाना चाहता था मेरे रोकने पर मुझ पर जो हमला आवर हुआ तो मैंने उस पर छुरी से हमला कर दिया और उसे मार डाला फिर उस सय्यदा को अपनी हिफ़ाज़त में लेकर बाहर निकाला तो शोर मच गया छुरी मेरे हाथ में थी मैं पकड़ा गया और आज ये बयान दे रहा हूँ।

हाकिमे बग़दाद ने कहा, जाओ तुम्हें रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हुक्म से रिहा किया जाता है। (हुज्जत-उल्लाह अली अलआलमीन सफ़ा 813)

सबक़:– हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के हर नेक व बद आदमी और हर नेक व बद अमल को जानते और देखते हैं और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर की निस्बत के लिहाज़ व अदब से आदमी का अंजाम अच्छा हो जाता है लिहाज़ा हर उस चीज़ का दिल में अदब व एहत्राम रखना चाहिए जिसका हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से ताल्लुक़ हो।

हिकायत नम्बर (49) जज़ीरे का क़ैदी

इब्ने मरज़ूक बयान करते हैं के जज़ीराऐ शिक़्र के एक मुसलमान को दुश्मनों ने क़ैद कर लिया और उसके हाथ पाँऊ लोहे की ज़ंजीरों से बाँध कर क़ैदख़ाने में डाल दिया और उस मुसलमान ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नाम लेकर फ़रयाद की और ज़ोर से कहने लगा "या रसूल अल्लाह" ये नअरा सुन कर काफ़िर बोले अपने रसूल से कहो तुम्हें इस क़ैद से छुड़ाने आए फिर जब रात हुई और आधी रात का वक़्त हुआ तो क़ैदख़ाने में कोई शख़्स आया और उसने क़ैदी से कहा, उठो! "अज़ान कहो"

कैदी ने अज़ान देना शुरू की और जब वो इस जुमले पर पहुँचा *अशहदन्ना मोहम्मदुर्रसूल अल्लाह* तो उसकी सब जंजीरें टूट गईं और वो आज़ाद हो गया फिर उसके सामने एक बाग़ ज़ाहिर हो गया और वो उस बाग़ से होता हुआ बाहर आ गया, सुबह उसकी रिहाई का सारे जज़ीरे में चर्चा होने लगा। (शवाहिद-उल-हक़ सफ़ा 162)

सबक़:- मुसलमान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नअराऐ रिसालत हमेशा लगाते रहे और इस नअरा का मज़ाक़ उड़ाना दुश्मनाने रिसालत का काम है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नाम मुश्किल कुशा है के ये नाम लेते ही मुसीबत की कड़ियाँ टूट जाती हैं।

हिकायत नम्बर (50) फंसा हुआ जहाज़

एक मर्दे सालेह को एक काफ़िर बादशाह ने गिरफ़्तार कर लिया वो फ़रमाते हैं उस बादशाह का एक बहुत बड़ा जहाज़ दरया में फंस गया था जो बड़ी कोशिश के बावजूद दरया से निकल ना सका आख़िर एक दिन जिस क़द्र क़ैदी थे उनको बुलाया गया ताके वो सब मिलकर उस जहाज़ को निकालें चुनाँने उन क़ैदियों ने जिनकी तअदाद तीन हज़ार थी मिलकर कोशिश की मगर फिर भी वो जहाज़ निकल ना सका फिर उन क़ैदियों ने बादशाह से कहा के जिस क़द्र मुसलमान क़ैदी हैं उनको कहिये वो ये जहाज़ निकाल सकेंगे लेकिन शर्त ये है के वो जो नअरा लगाएँ उन्हें रोका ना जाए, बादशाह ने ये बात तसलीम कर ली और सब मुसलमान क़ैदियों को रिहा कर के कहा के तुम अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ जो नअरा लगाना चाहो लगाओ और उस जहाज़ को निकालो। वो मर्दे सालेह फ़रमाते हैं के हम सब मुसलमान क़ैदियों की तअदाद चार सौ थी हम ने मिल कर नअराऐ रिसालत लगाया और एक आवाज़ से "या रसूल अल्लाह" कहा और जहाज़ को एक धक्का लगाया तो वो जहाज़ अपनी जगह से हिल गया फिर हम ने ये नअरा लगाते हुए उसे रूकने नहीं दिया हत्ता के उसे बाहर निकाल दिया। (शवाहिद-उल-हक़-लिलनबहानी सफ़ा 163)

सबक़:- नअराऐ रिसालत मुसलमानों का मेहबूब नअरा है और मुसलमानों ने उसे हमेशा अपनाए रखा और उस नामे पाक से बड़े बड़े मुश्किल काम हल हो जाते हैं फिर जो शख़्स उस नअरा की मुख़ाल्फ़त करे किस क़द्र बेख़बर है।

हिकायत नम्बर (51) एक सय्यदज़ादी और मजूसी

मुल्के समरकन्द में एक बेवा सय्यदज़ादी रहती थी उसके चन्द बच्चे भी थे, एक दिन वो अपने भूके बच्चों को लेकर एक रईस आदमी के पास पहुँची और कहा मैं सय्यदज़ादी हूँ मेरे बच्चे भूके हैं उन्हें खाना खिलाओ, वो रईस आदमी जो दौलत के नशे में मख़्मूर और बराए नाम मुसलमान था कहने लगा तुम अगर वाक़ई सय्यदज़ादी हो तो कोई दलील पेश करो, सय्यदज़ादी बोली मैं एक ग़रीब बेवा हूँ ज़बान पर एतबार करो के सय्यदज़ादी हूँ और दलील क्या पेश करूँ? वो बोला मैं ज़बानी जमा ख़र्च का मोअतक़िद नहीं अगर कोई दलील है तो पेश करो वरना जाओ, वो सय्यदज़ादी अपने बच्चों को लेकर वापस चली आई और एक मजूसी रईस के पास पहुँची और अपना क़िस्सा बयान किया वो मजूसी बोला, मोहत्रमा! अगरचे मैं मुसलमान नहीं हूँ मगर तुम्हारी सियादत की तअज़ीम व क़द्र करता हूँ आओ और मेरे हाँ ही क़याम फ़रमाओ मैं तुम्हारी रोटी और कपड़े का ज़ामिन हूँ, ये कहा और उसे अपने हाँ ठहरा कर उसे और उसके बच्चों को खाना खिलाया और उनकी बड़ी ख़िदमत की, रात हुई तो वो बराए नाम मुसलमन रईस सोया तो उसने ख़्वाब में हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा जो एक बहुत बड़े नूरानी महल के पास तशरीफ़ फ़रमा थे, इस रईस ने पूछा या रसूल! ये नूरानी महल किस लिए है? हुज़ूर ने फ़रमाया, मुसलमान के लिए, वो बोला तो हुज़ूर मैं भी मुसलमान हूँ ये मुझे अता फ़रमा दीजिए, हुज़ूर ने फ़रमाया अगर तू मुसलमान है तो अपने इस्लाम की कोई दलील पेश कर! वो रईस ये सुनकर बड़ा घबराया, हुज़ूर ने फिर उसे फ़रमाया मेरी बेटी तुम्हारे पास आए तो उससे सियादत की दलील तलब करे और खुद बग़ैर दलील पेश किए इस महल में चला जाए ना मुमकिन है, ये सुन कर उसकी आँख खुल गई और बड़ा रोया फिर उस सय्यदज़ादी की तलाश में निकला तो उसे पता चला के वो फ़लाँ मजूसी के घर क़याम पज़ीर है चुनाँचे उस मजूसी के पास पहुँचा और कहा के हज़ार रूपये ले लो और वो सय्यदज़ादी मेरे सपुर्द कर दो, मजूसी बोला क्या मैं वो नूरानी महल एक हज़ार रूपये पर बेच दूं? ना मुमकिन है, सुन लो! हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जो तुम्हें ख़्वाब में मिलकर उस महल से दूर कर गए हैं वो मुझे भी ख़्वाब में मिलकर और कलमा पढ़ा कर उस महल में दाख़िल फ़रमा गए अब मैं भी बीवी बच्चों समेत मुसलमान हूँ और मुझे हुज़ूर बशारत दे गए हैं के तू

अहलो अयाल समेत जन्नती है। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 194 जिल्द 2)

सबक़:- दलील तलब करने वाला बराए नाम मुसलमान भी जन्नत से महरूम रह गया और निस्बते रसूल का लिहाज़ करके बग़ैर दलील के भी तअज़ीम व अदब करने वाला एक मजूसी भी दौलते ईमान से मुशर्रफ़ होकर जन्नत पा गया मालूम हुआ के अदब व तअज़ीम रसूल के बाब में बात बात पर दलील तलब करने वाले बराए नाम मुसलमान बदबख़्त और महरूम रह जाने वाले हैं।

हिकायत नम्बर (52) अब्दुल्लाह बिन मुबारक और सय्यदज़ादा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमत-उल्लाह अलेह एक बड़े मजमअे के साथ मस्जिद से निकले तो एक सय्यदज़ादे ने उनसे कहा।

ऐ अब्दुल्लाह! ये कैसा मजमअ है? देख मैं फ़रज़न्द रसूल हूँ और तेरा बाप तो ऐसा ना था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने जवाब दिया, मैं वो काम करता हूँ जो तुम्हारे नाना जान ने किया था और तुम नहीं करते और ये भी कहा के बेशक तुम सय्यद हो और तुम्हारे वालिद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं और मेरा वालिद ऐसा ना था मगर तुम्हारे वालिद से इल्म की मीरास बाक़ी रही, मैंने तुम्हारे वालिद की मीरास ली मैं अज़ीज़ और बुज़ुर्ग हो गया तुम ने मेरे वालिद की मीरास ली तुम इज़्ज़त ना पा सके।

उसी रात ख़्वाब में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा के चेहराऐ मुबारक आपका मुतग़य्यर है, अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! ये रंजिश क्यों? फ़रमाया! तुम ने मेरे एक बेटे पर नुक्ता चीनी की है अब्दुल्लाह बिन मुबारक जागे और उस सय्यदज़ादे की तलाश में निकले ताके उससे माफ़ी तलब करें, इधर इस सय्यद ज़ादे ने भी उसी रात को ख़्वाब में हुज़ूरे अक्रम को देखा और हुज़ूर ने उससे ये फ़रमाया के बेटा अगर अच्छा होता तो वो तुम्हें क्यों ऐसा कलमा कहता वो सय्यद ज़ादा भी जागा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक की तलाश में निकला चुनाँचे दोनों की मुलाक़ात हो गई और दोनों ने अपने अपने ख़्वाब सुना कर एक दूसरे से मआज़रत तलब कर ली। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 173)

सबक़:- हमारे सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उम्मत की

हर बात पर शाहिद और हर बात से बाख़बर हैं और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से निस्बत रखने वाली किसी चीज़ पर नुक्ता चीनी करना हुज़ूर की ख़फ़्गी का मौजिब है।

हिकायत नम्बर (53) अबु अलहसन ख़ुरक़ानी और हदीस का दर्स

हज़रत अबु अलहसन ख़ुरक़ानी अलेह अर्रहमा के पास एक शख़्स इल्मे हदीस पढ़ने के लिए आया और दरयाफ़्त किया के आपने हदीस कहाँ से पढ़ी? हज़रत ने फ़रमाया, बराहे रास्त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से, उस शख़्स को यक़ीन ना आया, रात को सोया तो हुज़ूर ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया अबु अलहसल सच कहता है मैंनें ही उसे पढ़ाया है, सुबह को हज़रत अबु अलहसन की ख़िदमत में वो हाज़िर हुआ और हदीस पढ़ने लगा, बअज़ मुक़ामात पर हज़रत अबु अलहसन ने फ़रमाया हदीस आँ हज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मरवी नहीं उस शख़्स ने पूछा के आपको कैसे मालूम हुआ, फ़रमया तुम ने हदीस पढ़ना शुरू की तो मैंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के अब्रूऐ मुबारक को देखना शुरू किया मेरी आँखें हुज़ूर के अब्रूऐ मुबारक पर हैं जब हुज़ूर के अब्रूऐ मुबारक पर शिकन पड़ती है तो मैं समझ जाता हूँ के हुज़ूर इस हदीस से इंकार फ़रमा रहे हैं। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 496)

सबक़:- हमारे हुज़ूर(स०अ०स०) ज़िन्दा हैं और हाज़िर व नाज़िर और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले हुज़ूर के दीदारे पुर अनवार से अब भी मुशर्रफ़ होते हैं फिर जो हुज़ूर को ज़िन्दा ना माने वो खुद ही मुर्दा है।

हिकायत नम्बर (54) एक वली और मोहद्दिस

एक वली एक मोहद्दिस के दर्से हदीस में हाज़िर हुए तो एक मोहद्दिस ने एक हदीस पढ़ी और कहा क़ाला रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम यानी रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने यूं फ़रमाया तो वो वली बोले, ये हदीस बातिल है रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हर गिज़ यूं नहीं फ़रमाया, वो मोहद्दिस बोले के तुम ऐसा क्यों कह रहे हो? और तुम्हें कैसे पता चला के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ऐसा नहीं फ़रमाया? तो वली ने जवाब दिया:-

हाज़ा अन्नबिय्यू सल-लल्लाहो अलेही व सल्लम वाक़िफू अला रासिका यकूलू इन्नी लम अकुल हाज़ल हदीस। "ये देखो नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तुम्हारे सर पर खड़े हैं और फ़रमा रहे हैं मैंने हर गिज़ ये हदीस नहीं कही।"

वो मोहद्दिस हैरान रह गए और वली बोले, क्या तुम भी हुज़ूरे अक्रम को देखना चाहते हो तो देख लो, चुनाँचे जब उन मोहद्दिस ने ऊपर देखा तो हुज़ूर को तशरीफ़ फ़रमा देख लिया। (फ़तावा हदीस सफ़ा 212)

सबक़:- हमारे हुज़ूर हाज़िर व नाज़िर हैं मगर देखने के लिए किसी वली की नज़र दरकार है और किसी कामिल वली की नज़रे करम हो जाए तो आज भी सरकारे अबद क़रार के दीदार पुर अनवार का शरफ़ हासिल हो सकता है।

एक मुशायरा

एक मजलिस मुशायरे में एक इसाई शायर ने हस्बे ज़ेल शैर कहे :-

मोहम्मद तो ज़मीं में बेगुमाँ है!
फ़लक पर इब्ने मरयम का मकाँ है
जो ऊँचा है वही अफ़्ज़ल रहेगा
जो नीचे है भला अफ़्ज़ल कहाँ है?

एक मुसलमान शायर ने उसके जवाब में ये शैर कहा :-

तराज़ू को उठा कर देख नादाँ!
वही झुकता है जो पल्ला गिराँ है

तीसरा बाब

अम्बियाइक्राम (अलेहिस्सलाम)

तिल्करसूलु फ़ज़्ज़ल्ना बअज़ाहुम अला बअज़िन
मिन्हुम्म मन कल्लामल्लाहो व रफ़ाआ बअज़ाहुम दराजातिन

हिकायत नम्बर (55) हज़रत आदम अलेहिस्सलाम और शैतान

ख़ुदावन्द करीम ने फ़रिश्तों में जब एलान फ़रमाया के मैं ज़मीन में अपना एक ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ। तो शैतान लईन ने उस बात का बहुत

बुरा मनाया और अपने जी ही जी में हसद की आग में जलने लगा।

चुनाँचे जब खुदा ने हज़रत आदम अलेहिस्सलाम को पैदा फ़रमा कर फ़रिश्तों को हुक्म दिया के मेरे ख़लीफ़ा के आगे सज्दे में झुक जाओ। तो सब सज्दे में झुक गए। मगर शैतान लईन अकड़ रहा। और ना झुका। खुदावन्द करीम को उसका ये तजुर्बा पसंद ना आया। और उससे दरयाफ़्त फ़रमाया। के ऐ इबलीस! मैंने जब अपने ये कुद्रत से बनाए हुए ख़लीफ़ा के आगे सज्दा करने का हुक्म दिया। तो तुम ने क्यों ना सज्दा किया शैतान ने जवाब दिया।

मैं आदम से अच्छा हूँ। इसलिए के मैं आग से बना हुआ हूँ और वो मिट्टी से बना है। फिर मैं एक बशर को सज्दा क्यों करता?

खुदा तआला ने उसका ये रऊनत भरा जवाब सुना। तो फ़रमाया:

मर्दूद निकल जा मेरी बारगाहे रहमत से। जा तू क़यामत तक के लिए मर्दूद व मलऊन है। (क़ुरआने करीम सूरह बक़र)

सबक़:- खुदा के रसूल और उसके मक़्बूलों की इज़्ज़त व तअज़ीम करने से खुदा खुश होता है। और उनको अपनी मिस्ल बशर समझ कर उनकी तअज़ीम से इंकार कर देना फ़ैल शैतान है। और एक पैग़म्बरे खुदा को सबसे पहले तह्क़ीरन बशर कहने वाला शैतान है।

हिकायत नम्बर (56) शैतान की थूक

खुदा ने जब हज़रत आदम अलेहिस्सलाम का पुतला मुबारक तैयार फ़रमाया तो फ़रिश्ते हज़रत आदम अलेहिस्सलाम के उस पुतले मुबारक की ज़ियारत करते थे। मगर शैतान लईन हसद की आग में जल भुन गया। और एक मर्तबा उस मर्दूद ने बुग्ज़ व कीने में आकर हज़रत आदम अलेहिस्सलाम के पुतले मुबारक पर थूक दिया ये थूक हज़रत आदम अलेहिस्सलाम की नाफ़ मुबारक के मुक़ाम पर पड़ी, खुदा तआला ने हज़रत जिब्राईल अलेहिस्सलाम को हुक्म दिया। के उस जगह से इतनी मिट्टी निकाल कर उस मिट्टी का कुत्ता बना दो।

चुनाँचे उस शैतानी थूक से मिली हुई मिट्टी का कुत्ता बना दिया गया। ये कुत्ता आदमी से मानूस इसलिए है। के मिट्टी हज़रत आदम अलेहिस्सलाम की है। और पलीद इसलिए है। के थूक शैतान की है। और रात को जागता इसलिए है के हाथ इसे जिब्राईल के लगे हैं। (रूह-उल-बयान सफ़ा 68 जिल्द 1)

सबक़:- शैतान के थूकने से हज़रत आदम अलेहिस्सलाम का कुछ नहीं बिगड़ा। बल्के मुक़ामे नाफ़ शिकम के लिए वजह ज़ीनत बन गया। इसी

तरह अल्लाह वालों की बारगाह में गुस्ताख़ी करने से उन अल्लाह वालों का कुछ नहीं बिगड़ता। बल्के उनकी शान और भी चमकती है। और ये भी मालूम हुआ। के अल्लाह वालों को हसद व नुसरत की निगाह से देखना शैतानी काम है।

हिकायत नम्बर (57) हज़रत आदम अलेहिस्सलाम और जंगली हिरन

हज़रत आदम अलेहिस्सलाम जब जन्नत से ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो ज़मीन के जानवर आपकी ज़ियारत को हाज़िर होने लगे। हज़रत आदम अलेहिस्सलाम हर जानवर के लिए उसके लायक़ दुआ फ़रमाते। उसी तरह जंगल के कुछ हिरन भी सलाम करने और ज़ियारत की नीयत से हाज़िर हुए। आपने अपना हाथ मुबारक उनकी पुश्तों पर फेरा। और उनके लिए दुआ फ़रमाई। तो उनमें नाफ़ाऐ मुश्क पैदा हो गई। वो हिरन जब ये खूश्बू का तोहफ़ा लेकर अपनी क़ौम में वापस आए। तो हिरनों के दूसरे गिरोह ने पूछा। के ये खूश्बू तुम कहाँ से ले आए? वो बोले अल्लाह का पैग़म्बर आदम अलेहिस्सलाम जन्नत से ज़मीन पर तशरीफ़ लाया है। हम उनकी ज़ियारत के लिए हाज़िर हुए थे। तो उन्होंने रहमत भरा अपना हाथ हमारी पुश्तों पर फेरा। तो ये खूश्बू पैदा हो गई। हिरनों का वो दूसरा गिरोह बोला। तो फिर हम भी जाते हैं। चुनाँचे वो भी गए हज़रत आदम अलेहिस्सलाम ने उनकी पुश्तों पर भी हाथ फेरा। मगर उनमें वो खूश्बू पैदा ना हुई। और वो जैसे गए थे। वैसे के वैसे ही वापस आ गए। वापस आकर वो मुतअज्जिब होकर बोले। के ये क्या बात है? तुम गए तो खूश्बू मिल गई। और हम गए तो कुछ ना मिला। पहले गिरोह ने जवाब दिया। इसकी वजह ये है के हम गए थे। सिर्फ़ ज़ियारत की नीयत से। तुम्हारी नीयत दुरस्त ना थी। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 4 जिल्द 1)

सबक़:- अल्लाह वालों के पास नेक नीयती से हाज़िर होने में बहुत कुछ मिलता है। और अगर किसी बदबख़्त को कुछ ना मिले। तो उसकी अपनी नीयत का क़ुसूर होता है। अल्लाह वालों की दैन व अता का कोई क़ुसूर नहीं होता।

हिकायत नम्बर (58) नूह अलेहिस्सलाम की कश्ती

हज़रत नूह अलेहिस्सलाम की कौम बडी बदबख़्त और नाआक़्बत

अन्देश थी। हज़रत नूह अलेहिस्सलाम ने साढ़े नो सौ साल के अर्से में दिन रात तबलीगे हक़ फ़रमाई। मगर वो ना माने। आख़िर नूह अलेहिस्सलाम ने उनकी हलाकत की दुआ माँगी। और ख़ुदा से अर्ज़ की। के मौला! इन काफ़िरों को बेख़ व बिन से उखाड़ दे। चुनाँचे आपकी दुआ क़बूल हो गई। और ख़ुदा ने हुक्म दिया के, ऐ नूह! मैं पानी का एक तूफ़ाने अज़ीम लाऊँगा। और उन सब काफ़िरों को हलाक कर दूंगा। तू अपने और चन्द मानने वालों के लिए एक कश्ती बना ले।

चुनाँचे हज़रत नूह अलेहिस्सलाम ने एक जंगल में कश्ती बनाना शुरू फ़रमाई काफ़िर आपको देखते और कहते। ऐ नूह! क्या करते हो आप फ़रमाते ऐसा मकान बनाता हूँ। जो पानी चले। काफ़िर ये सुन कर हंसते और तमसख़ुर करते थे हज़रत नूह अलेहिस्सलाम फ़रमाते। के आज तुम हंसते हो और एक दिन हम तुम पर हंसेंगे। हज़रत नूह अलेहिस्सलाम ने ये कश्ती दो साल में तैयार की। उसकी लम्बाई तीन सौ गज़, चौड़ाई पचास गज़। और ऊँचाई तीस गज़ थी। इस कश्ती में तीन दर्जे बनाए गए थे। नीचे के दर्जे में व-हवश और दरिन्दे, दरमियानी दर्जे में चौपाए वग़ैरा। और ऊपर के दर्जे में खुद हज़रत नूह अलेहिस्सलाम और आपके साथी और खाने पीने का सामान, परिंदे भी ऊपर के दर्जे में थे, फिर जब बहुक्म इलाही तूफ़ाने अज़ीम आया। तो उस कश्ती पर सवार होने वालों के सिवा रूऐ ज़मीन पर जो कोई था। पानी में ग़र्क़ हो गया। हत्ता के नूह अलेहिस्सलाम का बेटा कनआन भी जो काफ़िर था। उसी तूफान में ग़र्क़ हो गया। (क़ुरआने करीम सूरते हूद। ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 33)

सबक़:- ख़ुदा की नाफ़रमानी से इस दुनिया में भी तबाही व हलाकत कासामना करना पड़ता है। और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान, और उनकी इताअत से ही दोनों जहान में निजात व फ़लाह मिल सकती है।

हिकायत नम्बर (59) तूफ़ाने नूह और एक बूढ़िया

हज़रत नूह अलेहिस्सलाम ने बहुक्मे इलाही जब कश्ती बनाना शुरू की तो एक मोमिना बूढ़िया ने हज़रत नूह से पूछा। के आप ये कश्ती क्यों बना रहे हैं। आपने फ़रमाया। बड़ी बी! एक बहुत बड़ा पानी का तूफ़ान आने वाला है जिसमें सब काफ़िर हलाक हो जाऐंगे। और मोमिन इस कश्ती के ज़रिये बच जाऐंगे। बूढ़िया ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! जब तूफ़ान आने वाला हो। तो मुझे ख़बर कर दीजिएगा। ताके मैं भी कश्ती पर सवार हो जाऊँ। बूढ़िया

की झोंपड़ी शहर से बाहर कुछ फ़ासले पर थी। फिर जब तूफ़ान का वक़्त आया। तो हज़रत नूह अलेहिस्सलाम दूसरे लोगों को तो कश्ती पर चढ़ाने में मशगूल हो गए। मगर उस बूढ़िया का ख़याल ना रहा हत्ता के ख़ुदा का होलनाक अज़ाब पानी के तूफ़ान की शकल में आया। और रूऐ ज़मीन के सब काफ़िर हलाक हो गए। और जब ये अज़ाब थम गया। और पानी उतर गया। और कश्ती वाले कश्ती से उतरे तो वो बूढ़िया हज़रत नूह अलेहिस्सलाम के पास हाज़िर हुई। और कहने लगी।

हज़रत! वो पानी का तूफ़ान कब आएगा? हर रोज़ इस इन्तिज़ार में हूँ के आप कब कश्ती में सवार होने के लिए फ़रमाते हैं। हज़रत ने फ़रमाया बड़ी बी! तूफ़ान तो आ भी चुका। और काफ़िर सब हलाक भी हो चुके। और कश्ती के ज़रिये ख़ुदा ने अपने मोमिन बन्दों को बचा लिया। मगर तअज्जुब है के तुम ज़िन्दा कैसे बच गईं। अर्ज़ किया। अच्छा ये बात है। तो फिर उसी ख़ुदा ने जिसने आपको कश्ती के ज़रिये बचा लिया। मुझे मेरी टूटी फूटी झोंपड़ी ही के ज़रिये बचा लिया। (रूह-उल-बयान सफ़ा 85 जिल्द 2)

सबक़:- जो ख़ुदा का हो जाए। ख़ुदा हर हाल में उसकी मदद फ़रमाता है और बग़ैर किसी सबब ज़ाहिरी के भी उसके काम हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर (60) हज़रत उज़ैर अलेहिस्सलाम और ख़ुदा की क़ुद्रत के करिश्मे

बनी इस्राईल जब ख़ुदा की नाफ़रमानी में हद से ज़्यादा बढ़ गए। तो ख़ुदा ने उन पर एक ज़ालिम बादशाह बख़्त नस्र को मुसल्लत कर दिया। जिसने बनी इस्राईल को क़त्ल किया। गिरफ़्तार किया। और तबाह किया। और बैत-उल-मुक़द्दस को बर्बाद व वीरान कर डाला। हज़रत उज़ैर अलेहिस्सलाम एक दिन शहर में तशरीफ़ लाए तो आपने शहर की वीरानी व बर्बादी को देखा। तमाम शहर में फिरे। किसी शख़्स को वहाँ ना पाया। शहर की तमाम इमारतों को मुनहदिम देखा। ये मंज़र देख कर आपने बराह तआज्जुब फ़रमाया। *अन्नीया यूहियी हाज़ीहिल्लाहू बअदा मौतिहा यअन ये।* अल्लाह इस शहर की मौत के बाद उसे फिर कैसे ज़िन्दा फ़रमाएगा?

आप एक दराज़ गोश पर सवार थे। और आपके पास एक बर्तन खजूर और एक पियाला अंगूर के रस का था। आपने अपने दराज़गोश को एक दरख़्त से बाँधा और उस दरख़्त के नीचे आप सो गए। जब सो गए। तो ख़ुदा

ने उसी हालत में आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली। और गधा भी मर गया। इस वाक़ेये के सत्तर साल बाद अल्लाह तआला ने शाहाने फ़ारस में से एक बादशाह को मुसल्लत किया। और वो अपनी फ़ौजें लेकर बैत-उल-मुक़द्दस पहुँचा। और उसको पहले से भी बेहतर तरीक़े पर आबाद किया और बनी इस्राईल में से जो लोग बाक़ी रहे थे। ख़ुदा तआला उन्हें फिर यहाँ लाया। और वो बैत-उल-मुक़द्दस और उसके नवाह में आबाद हुए। और उनकी तअदाद बढ़ती रही। उस ज़माना में अल्लाह तआला ने हज़रत उज़ैर अलेहिस्सलाम को दुनिया की आँखों से पौशीदा रखा। और कोई आपको देख ना सका जब आपकी वफ़ात को सौ साल गुज़र गए। तो अल्लाह ने दोबारह आपको ज़िन्दा किया। पहले आँखों में जान आई। अभी तमाम जिस्म मुर्दा था। वो आपके देखते देखते ज़िन्दा किया गया। जिस वक़्त आप सोए थे। वो सुबह का वक़्त था। और सौ साल के बाद जब आप दोबारह ज़िन्दा किए गए तो ये शाम का वक़्त था। ख़ुदा ने पूछा। ऐ उज़ैर! तुम यहाँ कितने ठहरे? आपने अंदाज़े से अर्ज़ किया। के एक दिन या कुछ कम। आपका ख़याल ये हुआ के ये उसी दिन की शाम है जिसकी सुबह को सोए थे। ख़ुदा ने फ़रमाया। बल्के तुम तो सौ बरस ठहरे हो। अपने खाने और पानी यानी खजूर और अंगूर के रस को देखिये के वैसा ही है इसमें बू तक नहीं आई और अपने गधे को भी ज़रा देखिए। आपने देखा। तो वो मरा हुआ और गल चुका था। आज़ा उसके बिखरे हुए और हड्डियाँ सफ़ेद चमक रही थीं। आपकी निगाह के सामने अल्लाह ने उस गधे को भी ज़िन्दा फ़रमाया। पहले उसके अज्ज़ा जमा हुए और अपने अपने मौक़े पर आए। हड्डियों पर गोश्त चढ़ा। गोश्त पर खाल आई। बाल निकले फिर उसमें रूह आई। और आपके देखते देखते ही वो उठकर खड़ा हुआ। और आवाज़ करने लगा। आपने अल्लाह की क़ुद्रत का मुशाहेदा किया। और फ़रमाया मैं जानता हूँ के अल्लाह तआला हर शै पर क़ादिर है। फिर आप अपनी सवारी पर सवार होकर अपने मोहल्ले में तशरीफ़ लाए। आपको कोई पहचानता ना था। अंदाज़े से आप अपने मकान पर पहुँचे उम्र आपकी वही चालीस साल की थी। एक ज़ईफ़ बूढ़िया मिली। जिसके पाऊँ रह गए थे और नाबीना थी। वो आपके घर की बांदी थी और उसने आपको देखा था आपने उससे पूछा। के ये उज़ैर का मकान है। उसने कहा। हाँ। मगर उज़ैर को गुम हुए सौ बरस गुज़र गए। ये कह कर खूब रोई। आपने फ़रमाया। अल्लाह तआला ने मुझे सौ बरस मुर्दा रखा फिर ज़िन्दा किया। बूढ़िया बोली। उज़ैर अलेहिस्सलाम मुसतजाब-उल-दावात थे। जो दुआ करते क़बूल हो जाय

करती थी। आप अगर उज़ैर हैं। तो दुआ कीजिए। के मैं बीना हो जाऊँ ताके मैं अपनी आँखों से आपको देखूं।

आपने दुआ की तो वो बीना हो गई। फिर आपने उसका हाथ पकड़ कर फ़रमाया ख़ुदा के हुक्म से उठ। ये फ़रमाते ही उसके मरे हुए पाऊँ भी दुरूस्त हो गए उसने आपको देख कर पहचाना और कहा। मैं गवाही देती हूँ। के आप बेशक उज़ैर ही हैं। फिर वो आपको मोहल्ले में ले गई। वहाँ एक मजलिस में आपके फ़रज़न्द थे। जिनकी उम्र एक सौ अट्ठारह साल की हो चुकी थी। और आपके पोते भी थे। जो बूढे हो चुके थे। बूढ़िया ने मजलिस में पुकारा। ये हज़रत उज़ैर तशरीफ़ लाए हैं, अहले मजलिस ने उस बात को झुटलाया। उसने कहा मुझे देखो। मैं आपकी दुआ से बिलकुल तनदुरूस्त और बीना हो गई हूँ। लोग उठे और आपके पास आए। आपके फ़रज़न्द ने कहा। मेरे वालिद साहब के शानों के दरमियान सियाह बालों का एक हलाल था। जिस्म मुबारक खोल कर देखा गया। तो वो मौजूद था। (क़ुरआन करीम प॰ 3 रूकू 3 और ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 65)

सबक़:- ख़ुदा की नाफ़रमानी का एक नतीजा ये भी है। ज़ालिम हाकिम मुसल्लत कर दिए जाते हैं। और मुल्क बर्बाद व वीरान हो जाते हैं। और अल्लाह तआला बड़ी क़ुद्रतों का मालिक है। वो जो चाहे कर सकता है और एक दिन उसने सब को दोबारह ज़िन्दा करके अपने हुज़ूर बुलाना है और हिसाब लेना है और ये भी मालूम हुआ के नबी का जिस्म मौत वारिद होने के बाद भी सही सालिम रहता है। हाँ जो गधे हैं वही मर कर मिट्टी में मिल जाते और मिट्टी हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर (61) हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम और चार परिन्दे

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने एक रोज़ समुंद्र के किनारे एक आदमी मरा हुआ देखा। आपने देखा के समुंद्र की मछलियाँ उसकी लाश को खा रही हैं। और थोड़ी देर के बाद फिर परिन्दे आकर उसकी लाश को खाने लगे। फिर आपने देखा के जंगल के कुछ दरिन्दे आए। और वो भी उसकी लाश को खाने लगे। आपने ये मंज़र देखा। तो आपको शौक़ हुआ के आप मुलाहेज़ा फ़रमाएँ। के मुर्दे किस तरह ज़िन्दा किए जाएँगे चुनाँचे आपने ख़ुदा से अर्ज़ किया। इलाही! मुझे यकीन है के तू मुर्दों को जिन्दा फरमाएगा। और उनके

अज्ज़ाऐ दरयाई जानवरों। परिन्दों और दरिन्दों के पेटों से जमा फ़रमाएगा। लेकिन मैं ये अजीब मंज़र देखने की आरज़ू रखता हूँ। ख़ुदा ने फ़रमाया अच्छा ऐ ख़लील! तुम चार परिन्दे लेकर उन्हें अपने साथ हिला लो। ताके अच्छी तरह उनकी शनाख़्त हो जाए। फिर उन्हें ज़िबह करके उनके अज्ज़ाऐ बाहम मिला जुला कर उनका एक एक हिस्सा। एक एक पहाड़ पर रख दो। और फिर उनको बुलाओ। और देखो वो किस तरह ज़िन्दा होकर तुम्हारे पास दौड़ते हुए आते हैं।

चुनाँचे हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने मोर, कबूतर, मुर्ग़ और कव्वा। ये चार परिन्दे लिए और उन्हें ज़िबह किया। और उनके पर उखाड़े, और उन सब का क़ीमा करके और आपस में मिला जुला कर उस मजमूए के कई हिस्से किए। और एक एक हिस्सा एक एक पहाड़ पर रख दिया। और सर सब के अपने पास महफ़ूज़ रखे। और फिर आपने उनसे फ़रमाया। "चले आओ।" आपके फ़रमाते ही वो अज्ज़ा उड़े और हर हर जानवर के अज्ज़ा अलेहदा अलेहदा होकर अपनी तरतीब से जमा हुए। और परिन्दों की शक्लें बनकर अपने पाँऊ से दौड़ते हुए हाज़िर हुए। और अपने अपने सरों से मिलकर बईनही पहले की तरह मुकम्मल होकर उड़ गए। (क़ुरआन करीम प॰ 3 रूकू 3 ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 66)

सबक़:- ख़ुदा तआला बड़ी क़ुद्रत व ताक़त का मालिक है। कोई डूब कर मर जाए और उसे मछलियाँ खा जाएँ या जल कर मरे और राख हो जाए। या किसी को दरिन्दे परिन्दे और दरयाई जानवर थोड़ा थोड़ा खा जाएँ। और उसके अज्ज़ा मुनतशिर हो जाएँ ख़ुदाऐ बरतर व तवाना फिर भी उसे जमा फ़रमा कर ज़रूर ज़िन्दा फ़रमाएगा। और बारगाह ऐज़्दी की हाज़री से उसे मुफ़िर नहीं। और ये भी मालूम हुआ के मुर्दे सुनते हैं। वरना ख़ुदा अपने ख़लील से ये ना फ़रमाता के उन मुर्दा और क़ीमा शुदा परिन्दों को बुला। हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने बहुक्म इलाही उन मुर्दा परिन्दों को बुलाया। और वो मुर्दा परिन्दे आपकी आवाज़ को सुन कर दौड़ पड़े। ये परिन्दों की समाअत है। और जो अल्लाह वाले हैं। उनकी समाअत का आलम क्या हुआ। और ये भी मालूम हुआ के। उन परिन्दों को ज़िन्दा तो ख़ुदा ने किया। लेकिन ये ज़िन्दगी उन्हें मिली इब्राहीम अलेहिस्सलाम के बुलाने और उनके लब हिलने से, गोया किसी अल्लाह वाले के लब हिल जाएँ। तो ख़ुदा काम कर देता है। इसी लिए मुसलमान अल्लाह वालों के पास जाते हैं ताके उनकी मुबारक और मुसतजाब दुआओं से अल्लाह हमारा काम कर दे।

हिकायत नम्बर (62) तीशाए ख़लील

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम जब पैदा हुए तो नमरूद का दौर था। और बुत परस्ती का बड़ा ज़ोर था। हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम एक दिन उन बुत परस्तों से फ़रमाने लगे। के ये तुम्हारी क्या हरकत है के उन मूर्तियों के आगे झुके रहते हो। ये तो परसतिश के लायक़ नहीं। परसतिश के लायक़ तो सिर्फ़ एक अल्लाह है।

वो लोग बोले। हमारे तो बाप दादा भी इन्हीं मूर्तियों की पूजा करते चले आए हैं मगर आज तुम एक ऐसे आदमी पैदा हो गए हो। जो उनकी पूजा से रोकने लगे हो।

आपने फ़रमाया! तुम और तुम्हारे बाप दादा सब गुमराह हैं। हक़ बात यही है। जो मैं कहता हूँ। के तुम्हारा और ज़मीन व आसमान सबका रब वो है जिसने उन सब को पैदा फ़रमाया। और सुन लो! मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूँ। के तुम्हारे इन बुतों को मैं समझ लूंगा।

चुनाँचे एक दिन जब के बुत परस्त अपने सालाना मेले पर बाहर जंगल में गए हुए थे। हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम उनके बुतख़ाने में तशरीफ़ ले गए। और अपने तीशे से सारे बुत तोड़ फोड़ डाले और जो बड़ा बुत था। उसे ना तोड़ा और अपना तीशा उसके कंधे पर रख दिया। उस ख़याल से के बुत परस्त जब यहाँ आएँ। तो अपने बुतों का ये हाल देख कर शायद उस बड़े बुत से पूछें। के उन छोटे बुतों को ये कौन तोड़ गया है? और ये तीशा तेरे कंधे पर क्यों रखा है? और उन्हें उनका अज्ज़ ज़ाहिर हो और होश में आएँ के ऐसे आजिज़ ख़ुदा नहीं हो सकते।

चुनाँचे जब वो लोग मे मेले से वापस आए और अपने बुतख़ाने में पहुँचे तो अपने मअबूदों का ये हाल देखकर के कोई इधर टूटा हुआ पड़ा है, किसी का हाथ नहीं तो किसी की नाक सलामत नहीं। किसी की गर्दन नहीं तो किसी की टाँगें ही ग़ायब हैं। बड़े हैरान हुए। और बोले। के किस ज़ालिम ने हमारे उन मअबूदों का ये हश्र किया है?

फिर ये ख़बर नमरूद और उसके अमरआ को पहुँची। और सरकारी तौर पर उसकी तहक़ीक़ होने लगी। तो लोगों ने बताया। के इब्राहीम उन बुतों के ख़िलाफ़ बहुत कुछ कहते रहते हैं। ये उन्हीं का काम मालूम होता है। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम को बुलाया गया। और आपसे पूछा गया। के ऐ इब्राहीम! क्या तुम ने हमारे ख़ुदाओं के साथ ये काम किया? आपने फ़रमाया। वो बड़ा बुत,

जिसके कंधे पर तीशा है। उस सूरत में तो ये क़यास किया जा सकता है। के ये उसी का काम है। तो फिर मुझ से क्या पूछते हो। उसी से पूछ लो ना। के ये काम किस ने किया। वो बोले मगर वो तो बोल नहीं सकते। उस मौक़े पर हज़रत इब्राहीम जलाल में आ गए और फ़रमाया जब तुम खुद मानते हो। के वो बोल नहीं सकते। तो फिर तुफ़ है तुम बे अक़्लों पर। और उन बुतों पर जिन को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो। (क़ुरआन प॰ 17 रूकू 5)

सबक़:- खुदा को छोड़ कर बुतों को पूजना शिर्क है। और क़ुरआन में जहाँ *मिन दूनिल्लाही* यानी "अल्लाह के सिवा" का लफ़्ज़ आया है। वहाँ यही बुत मुराद हैं ना के अम्बिया व औलिया। इसलिए के हज़रत अलेहिस्सलाम उन पर "तुफ़" फ़रमा रहे हैं तो अगर उनसे मुराद अम्बिया व औलिया हों तो हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ऐसा क्यों फ़रमाते।

हिकायत नम्बर (63) ख़लील व नमरूद का मुनाज़रह

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने जब नमरूद को खुदा परस्ती की दअवत दी तो नमरूद और हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम में हस्बे ज़ेल मुनाज़रह हुआ।

नमरूद: तुम्हारा रब कौन है। जिसकी पर परसतिश की तुम मुझे दअवत देते हो? हज़रत ख़लील अलेहिस्सलाम: मेरा रब वो है। जो ज़िन्दा भी कर देता है। और मार भी डालता है।

नमरूद: ये बात तो मेरे अन्दर भी मौजूद है। लो अभी देखो मैं तुझे ज़िन्दा भी करके दिखाता हूँ और मार कर भी। ये कहकर नमरूद ने दो शख़्सों को बुलाया। उनमें से एक शख़्स को क़त्ल कर दिया। और एक को छोड़ दिया और कहने लगा। देख लो। एक को मैंने मार डाला। और एक को गिरफ़्तार करके छोड़ दिया। गोया उसे ज़िन्दा कर दिया। नमरूद की ये अहमक़ाना बात देख कर हज़रत ख़लील अलेहिस्सलाम ने एक दूसरी मुनाज़राना गुफ़्तगू फ़रमाई और फ़रमाया।

ख़लील अलेहिस्सलाम: मेरा रब सूरज को मशरिक़ की तरफ़ से लाता है तुझ में अगर ताक़त है। तो तू मग़रिब की तरफ़ से लाकर दिखा। ये बात सुन कर नमरूद के होश उड़ गए और ला जवाब हो गया। (क़ुरआन प॰ 3 रूकू 3)

सबक़:- झूटे दअवे का अंजाम ज़िल्लत व रूसवाई, और काफ़िर इन्तिहाई अहमक़ होता है।

हिकायत नम्बर (64) आतिश कदाऐ नमरूद

नमरूद मलऊन ने हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम से जब मुनाज़रह में शिकस्त खाई। तो और तो कुछ ना कर सका। हज़रत का जानी दुश्मन बन गया। और आपको क़ैद कर लिया। और फिर एक बहुत बड़ी चार दीवारी तैयार की, और उसमें महीने भर तक बकोशिश क़िस्म क़िस्म की लकड़ियाँ जमा कीं। और एक अज़ीम आग जलाई। जिसकी तपिश से हवा में उड़ने वाले परिन्दे जल जाते थे। और एक मुनजनीक़ (गोफ़न) तैयार करके खड़ी की और हज़रत इब्राहीम को बाँध कर उसमें रखकर आग में फैंका। हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम की ज़बान पर उस वक़्त ये कलमा जारी था। *हसबीयल्लाहू व नीअेमल वकील* इधर नमरूद ने आपको आग में फैंका और इधर अल्लाह ने आग को हुक्म फ़रमाया। के ऐ आग! ख़बरदार! हमारे ख़लील को मत जलाना। तू हमारे इब्राहीम पर ठंडी हो जा। और सलामती का घर बन जा। चुनाँचे वो आग हज़रत इब्राहीम के लिए बाग़ व बहार बन गई। और नमरूद की सारी कोशिश बेकार चली गई। (क़ुरआन करीम प॰ 17 रूकू 5 और ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 463)

सबक़:- अल्लाह वालों को दुश्मन हमेशा तंग करते रहे। लेकिन अल्लाह वालों का कुछ ना बिगाड़ सके और खुद ही ज़लील होते रहे।

हिकायत नम्बर (65) ख़लील व जिब्राईल

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम को नमरूद ने जब आग में फैंकना चाहा तो जिब्राईल हाज़िर हुए। और अर्ज़ किया। हुज़ूर! अल्लाह से कहिये वो आपको इस आतिशकदा से बचा ले। आपने फ़रमाया। अपने जिस्म के लिए इतनी बुलंद व बाला पाक हस्ती से ये मामूली सा सवाल करूं? जिब्राईल ने अर्ज़ किया। तो अपने दिल के बचाने के लिए उससे कहिये फ़रमाया ये दिल उसी के लिए है। वो अपनी चीज़ से जो चाहे सलूक करे। जिब्राईल ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! इतनी बड़ी तेज़ आग से आप क्यों नहीं डरते?

फ़रमाया। ऐ जिब्राईल! ये आग किस ने जलाई?

जिब्राईल ने जवाब दिया। नमरूद ने!

फ़रमाया। और नमरूद के दिल में ये बात किस ने डाली?

जिब्राईल ने जवाब दिया। रब्बे जलील ने!

ख़लील ने फ़रमाया। तो फिर इधर हुक्मे जलील है। तो इधर रज़ाऐ

ख़लील है। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 204 जिल्द 2)

सबक़:- अल्लाह वाले हमेशा अल्लाह की रज़ा में राज़ी रहते हैं।

(नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 204 जिल्द 2)

सबक़:- अल्लाह वाले हमेशा अल्लाह की रज़ा में राज़ी रहते हैं।

हिकायत नम्बर (66) जिब्राईल की मुशक़्क़त

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला ने एक मर्तबा जिब्राईल से पूछा। ऐ जिब्राईल कभी तुझे आसमान से मुशक़्क़त के साथ बड़ी जल्दी और फ़ौरन भी ज़मीन पर उतरना पड़ा है? जिब्राईल ने जवाब दिया। हाँ या रसूल अल्लाह! चार मर्तबा ऐसा हुआ है के मुझे फ़ीअलफ़ोर बड़ी सरअत के साथ ज़मीन पर उतरना पड़ा।

हुज़ूर ने फ़रमाया। वो चार मर्तबा किस किस मौके़ पर?

जिब्राईल ने अर्ज़ किया।

(1) एक तो जब इब्राहीम अलेहिस्सलाम को आग में डाला गया। तो मैं उस वक़्त अर्शे इलाही के नीचे था। मुझे हुक्म इलाही हुआ के जिब्राईल! ख़लील के आग में पहुँचने से पहले पहले फ़ौरन मेरे ख़लील के पास पहुंचो। चुनाँचे मैं बड़ी सरअत के साथ फ़ौरन ही हज़रत ख़लील के पास पहुँचा।

(2) दूसरी बार जब हज़रत इसमाईल अलेहिस्सलाम की गर्दने अतहर पर छुरी रख दी गई तो मुझे हुक्म हुआ के छुरी चलने से पहले ही ज़मीन पर पहुँचूं। और छुरी को उल्टा दूं। चुनाँचे मैं छुरी के चलने से पहले ही ज़मीन पर पहुँच गया। और छुरी को चलने ना दिया।

(3) तीसरी मर्तबा जब हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को भाईयों ने कुँए में गिराया तो मुझे हुक्म हुआ के मैं यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के कुँए की तह तक पहुँचने से पहले पहले ज़मीन पर पहुँचूं। और कुँए से एक पत्थर निकाल कर हज़रत यूसुफ़ को उस पत्थर पर बाआराम बैठा दूं। चुनाँचे मैंने ऐसा ही किया।

(4) और चौथी मर्तबा या रसूल अल्लाह जबके काफ़िरों ने हुज़ूर का दनदाने मुबारक शहीद किया। तो मुझे हुक्म इलाही हुआ के मैं फ़ौरन ज़मीन पहुँचूं और हुज़ूर के दनदाने मुबारक का खून मुबारक ज़मीन पर ना गिरने दूं और ज़मीन पर गिरने से पहले ही मैं वो खून मुबारक अपने हाथों पर ले लूं। या रसूल अल्लाह! ख़ुदा ने मुझे फ़रमाया था। जिब्राईल! अगर मेरे मेहबूब का ये खून ज़मीन पर गिर गया। तो क़यामत तक ज़मीन में से ना कोई सब्ज़ी उगेगी। और ना कोई दरख़्त। चूनाँचे मैं बड़ी सरअत के साथ ज़मीन पर पहुँचा।

और हुज़ूर के खून मुबारक को अपने हाथ पर ले लिया। (रूह-उल-बयान सफ़ा 411 जिल्द 3)

सबक़:- अम्बिया इक्राम अलेहिमुस्सलाम की बहुत बड़ी बुलंद शान है। के जिब्राईल अमीन भी उनका ख़ादिम है। और ये भी मालूम हुआ के करोड़ों, पद्मों मील का तवील सफ़र अल्लाह वाले पल भर में तय कर लेते हैं।

हिकायत नम्बर (67) बेटे की कुर्बानी

हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने एक रात ख़्वाब में देखा। के कोई शख़्स गैब से आवाज़ देता है। और कहता है। ऐ इब्राहीम! तुम्हें ख़ुदा का हुक्म है के अपने बेटे को ख़ुदा की राह में ज़िबह कर दो। चूंके नबियों का ख़्वाब सच्चा और अज़ क़बील वही होता है। इसलिए आप अपने मेहबूब बेटे हज़रत इसमाईल अलेहिस्सलाम को अल्लाह की राह में कुर्बान करने को तैयार हो गए।

चूंके हज़रत इसमाईल अभी कम उम्र थे। इसलिए आपने उनसे सिर्फ़ इतना कहा। के बेटा रस्सी और एक छुरी लेकर मेरे साथ चलो। चुनाँचे अपने बेटे को लेकर आप एक जंगल में पहुँचे। हज़रत इसमाईल ने पूछा। अब्बा जान! आप ये छुरी और रस्सी लेकर क्यों चलते हैं। फ़रमाया आगे चलकर एक कुर्बानी ज़िबह करेंगे।

फिर आगे चल कर हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने साफ़ साफ़ बयान फ़रमा दिया। और कहा! बेटा मैं तो अल्लाह की राह में तुझे ही ज़िबह करने यहाँ आया हूँ। मैंने ख़्वाब में देखा है के तुझे ज़िबह कर रहा हूँ। बेटा ये अल्लाह की मर्ज़ी है। बता तेरी मर्ज़ी क्या है? हज़रत इसमाईल ने जवाब दिया।

अब्बा जान! जब अल्लाह की यही मर्ज़ी है। तो फिर मेरी मर्ज़ी का क्या सवाल? आपको जिस बात का हुक्म हुआ है। आप वो कीजिए। इंशाअल्लाह मैं सब्र करके दिखा दूंगा। बेटे का ये जुराअत आमेज़ जवाब सुनकर हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम बड़े खुश हुए और अपने बेटे को अल्लाह की राह में ज़िबह करने पर तैयार हो गए। और जब बाप ने अपने बेटे को माथे के बल लिटाया और गर्दन पर छुरी रखी और उस चलाया तो छुरी ने गर्दने इसमाईल को बिलकुल ना काटा। आपने और ज़ोर से छुरी चलाई। तो आवाज़ आई बस ऐ इब्राहीम! तुम हुक्मे इलाही की तअमील कर चुके। और इस सख़्त इम्तिहान में पूरे उतरे। आपने मुड़ कर देखा। तो एक दुंबा पास ही खड़ा था।

और आप से कह रहा था। हज़रत! इसमाईल की जगह मुझे ज़िबह कीजिए। और उन्हें हटा दीजिए। चुनाँचे हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम ने उस दुंबे को ज़िबह फ़रमा दिया। और हज़रत इसमाईल उठ बैठे और इस इम्तिहान में दोनों बाप बेटे, अलेहिमा अस्सलाम, कामयाब हो गए। (कुरआन करीम प० 23 कतुब तफ़ासीर)

सबक़:- अल्लाह वाले अल्लाह की राह में सब कुछ कुर्बान करने पर तैयार हो जाते हैं। हत्ता के औलाद भी। फिर आज जो लोग अल्लाह की राह में एक बकरा भी देने में हज़ार हीलो हुज्जत करते हैं। उनका ख़ुदा से क्या तअल्लुक़?

हिकायत नम्बर (68) फ़िरऔन का ख़्वाब

फ़िरऔन ने एक बार ख़्वाब में देखा। के उसका तख़्त औंधा होकर गिर गया है। फ़िरऔन ने काहिनों से उसकी तअबीर पूछी। तो उन्होंने बताया के एक ऐसा बच्चा पैदा होगा। जो तेरी हकूमत के ज़वाल का बाइस होगा। फ़िरऔन को उस बात की फ़िक्र हुई और उसने बच्चों को मरवाना शुरू कर दिया। जो बच्चा किसी के हाँ पैदा होता। वो उसे मरवा देता था। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम जब पैदा हुए तो अल्लाह ने मूसा अलेहिस्सलाम की माँ के दिल में ये बात डाली। के उसे दूध पिलाओ और जब कोई ख़तरा देखो, तो उसे दरया में डाल दो। चुनाँचे चन्द रोज़ हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की माँ ने हज़रत को दूध पिलाया। इस अर्से में हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ना रोते थे ना उनकी गोद में हरकत करते थे। और ना आपकी बहन के सिवा किसी को आपकी विलादत का इल्म था। फिर जब तीन माह का अर्सा गुज़र गया। तो मूसा अलेहिस्सलाम की माँ को कुछ ख़तरा महसूस हुआ। तो ख़ुदा ने दिल में ये बात डाल दी। के अब तो मूसा को एक संदूक़ में बन्द करके दरया में डाल दे। और कोई फ़िक्र ना कर। हम उसे फिर तुम्हारी गोद में ले आएँगे। चुनाँचे उम्मे मूसा ने एक संदूक़ तैयार किया। और उसमें रूई बिछाई और मूसा अलेहिस्सलाम को उसमें रख कर संदूक़ बन्द कर दिया। और ये संदूक़ दरयाए नील में डाल दिया। उस दरया से एक बड़ी नहर निकल कर फ़िरऔन के महल में गुज़रती थी। फ़िरऔन मअे अपनी बीबी आसिया के नहर के किनारे बैठा था। जब एक संदूक़ नहर में आते देखा। तो उसने कनीज़ों और गुलामों को संदूक़ निकालने का हुक्म दिया वो संदूक़ निकाल कर सामने लाया गया। खोला। तो उसमें एक नरानी शक्ल फरजन्द जिसकी

पेशानी से वजाहत व इक़बाल के आसार नमूदार थे। नज़र आया। देखते ही फ़िरऔन के दिल में ऐसी मोहब्बत पैदा हुई। के वो वारिफ़्ता हो गया। लेकिन क़ौम के लोगों ने उसे वरग़लाया। और कहा के मुमकिन है। यही वो बच्चा हो। जिसने आपकी हकूमत को बर्बाद करना है। चुनाँचे फ़िरऔन आपके क़त्ल पर आमादा हुआ। तो फ़िरऔन की बीबी आसिया जो बड़ी नेक ख़ातून थी। कहने लगी के ये बच्चा मेरी और तेरी आँख की ठंडक है। इसे क़त्ल ना कर। क्या मालूम ये किस सरज़मीन से बहता हुआ आया है। और तुझे जिस बच्चे से अन्देशा है वो तो इसी मुल्क के बनी इस्राईल से बताया गया है। आसिया की ये बात फ़िरऔन ने मान ली और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम फ़िरऔन के महल में ही रहने लगे। और फ़िरऔन ने आपको दूध पिलाने के लिए दाईयाँ बुलाईं। मगर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम किसी दाई का दूध ना पीते थे। अब फ़िरऔन को फ़िक्र हुई। के इस बच्चे के लिए कोई ऐसी दाई मिले। जिसका ये दूध पीने लगे। इधर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की माँ अपने बच्चे की जुदाई में बेक़रार थी। और मूसा अलेहिस्सलाम की बहन जिसका नाम मरयम था। वो आपके तजस्सुस करने और मालूम करने के संदूक़ कहाँ पहुँचा और आप किस के हाथ आए आपकी तलाश में थी हत्ता के पता चलाते चलाते वो फ़िरऔन के महल में पहुँच गई और जब मालूम हुआ के मेरा भाई इसी महल में है। और किसी दाई का दूध नहीं पी रहा। तो फ़िरऔन से कहने लगी। क्या मैं एक ऐसी दाई की ख़बर दूं? जिसका दूध ये बच्चा ज़रूर पियेगा। फ़िरऔन ने कहा। हाँ ज़रूर ऐसी दाई को लाओ। चुनाँचे वो उसकी ख़्वाहिश पर अपनी वालिदा को बुला लाईं। और जब वो आईं तो मूसा अलेहिस्सलाम फ़िरऔन की गोद में थे। और दूध के लिए रो रहे थे। फ़िरऔन आपको बहला रहा था। जब आपकी वालिदा आईं। और आपने उनकी खूश्बू पाई। तो आप चुप हो गए। और अपनी वालिदा का दूध पीने लगे फ़िरऔन ने पूछा। तू इस बच्चे की कौन है? जो उसने किसी दाई का दूध नहीं पिया और तेरा झट पी लिया है। उन्होंने कहा मैं एक पाक साफ़ औरत हूँ मेरा दूध खुशगवार है। जिस्म खुश्बूदार है। इसलिए जिन बच्चों के मिज़ाज में नफ़ासत होती है। वो और औरतों का दूध नहीं पीते हैं। मेरा दूध पी लेते हैं। फ़िरऔन ने बच्चा उन्हें दिया। और दूध पिलाने पर उन्हें मुक़र्रर करके फ़रज़न्द को अपने घर ले जाने की इजाज़त दे दी। चुनाँचे आप मूसा अलेहिस्सलाम को घर ले आईं। और अल्लाह तआला का ये वादा पूरा हो गया के हम उसे फिर तुम्हारी गोद में लाएँगे। इस तरह मूसा अलेहिस्सलाम

की परवरिश खुद फ़िरऔन ही के ज़रिये होने लगी। आप दूध पीने के ज़माने तक अपनी वालिदा के पास रहे। उस ज़माने में फ़िरऔन उन्हें एक अशर्फ़ी रोज़ाना देता रहा। दूध छोड़ने के बाद आप मूसा अलेहिस्सलाम को फ़िरऔन के पास ले आईं और आप वहाँ परवरिश पाते रहे। (कुरआन करीम प॰ 16 रूकू 11 प॰ 20 रूकू 4 खज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 444, सफ़ा 544)

सबक़:- अल्लाह तआला बड़ी कुद्रत और बेनियाज़ी का मालिक है। के मूसा अलेहिस्सलाम को खुद फ़िरऔन ही के महल में रख कर उनकी परवरिश फ़रमाई और मूसा अलेहिस्सलाम ने अपने बचपन में किसी दाई का दूध ना पी कर, और अपनी माँ को पहचान कर उन्हीं का दूध पी कर ये बता दिया के नबी बचपन में भी ऐसा इल्मो इर्फ़ान रखता है। जिससे अवाम महरूम होते हैं। अम्बिया को अपनी मिस्ल बशर कहने वालों में से अगर किसी को बचपन में कुतिया के दूध पर भी डाला जाए। तो वो उस कुतिया का भी दूध पीना शुरू कर देगा। मगर नबी की शान इल्म ये है। के वो बचपन में अपनी माँ के सिवा किसी दूसरी औरत का भी दूध नहीं पीता फिर अम्बिया की मिस्ल होने का दावा करना किस क़द्र जहालत की बात है?

हिकायत नम्बर (69) फ़िरऔन की बेटी

फ़िरऔन की एक बेटी थी। फलबहरी का मर्ज़ था। फ़िरऔन ने उसका बड़े बड़े अत्तिबआ से इलाज कराया। मगर वो अच्छी ना हुई। आख़िर फ़िरऔन ने काहिनों से उसके मुतअल्लिक़ पूछा। तो उन्होंने बताया के उसको शिफ़ा दरया से मिलेगी। चुनाँचे एक दिन फ़िरऔन और उसकी बीबी आसिया और फ़िरऔन की बेटी, दरया के किनारे बैठे थे के हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम का संदूक़ बहता हुआ आया। जब ये संदूक़ फ़िरऔन के सामने लाया गया। और खोला। तो मूसा अलेहिस्सलाम नज़र आए जो अपने अंगूठे को चूस रहे थे। फ़िरऔन की बीबी आसिया को, मूसा अलेहिस्सलाम बड़े प्यारे लगे और उसने उन्हें उठा लिया। और फ़िरऔन की बेटी ने मूसा अलेहिस्सलाम को देखा तो उसे भी ये नूरानी बच्चा बड़ा प्यारा लगा। और उसने आपके दहन मुबारक की थूक मुबारक लेकर अपने बदन पर मल ली। इस थूक मुबारक के असर से फ़िरऔन की बेटी का फलबहरी का मर्ज़ फ़ौरन जाता रहा। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 208 जिल्द 2)

सबक़:- अम्बियाक्राम की थूक मुबारक भी दाफ़अे-उल-बलाओ होती है। फिर जिन लोगों की थूक बीमारी के ख़तरनाक जरासीम का घर हो

वो उन नफ़ूस कुदसिया की मिस्ल कैसे हो सकते हैं?

हिकायत नम्बर (70) मूसा अलेहिस्सलाम का मुक्का

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम जब तीस बरस के हो गए। तो एक दिन फ़िरऔन के महल से निकल कर शहर में दाख़िल हुए तो आपने दो आदमी आपस में लड़ते झगड़ते देखा। एक तो फ़िरऔन का बावर्ची था और दूसरा हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की कौम यानी बनी इस्राईल में से था। फ़िरऔन का बावर्ची लकड़ियों का गट्ठा उस दूसरे आदमी पर लाद कर उसे हुक्म दे रहा था। के वो फ़िरऔन के बावर्ची ख़ाने तक वो लकड़ियाँ ले चले हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने, ये बात देखी तो फ़िरऔन के बावर्ची से फ़रमाया। उस ग़रीब आदमी पर ज़ुल्म ना कर लेकिन वो बाज़ ना आया। और बद ज़बानी पर उतर आया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसे एक मुक्का मारा। तो उस एक ही मुक्के से उस फ़िरऔनी का दम निकल गया। और वो वहीं ढेर हो गया।

(कुरआन करीम पारा 20 रूकू 5 रूह-उल-बयान सफ़ा 925 जिल्द 2)

सबक़:- अम्बियाक्राम अलेहिमुस्सलाम मज़लूमों के हामी बनकर तशरीफ़ लाए हैं और ये भी मालूम हुआ के नबी सीरत व सूरत और ज़ोर व ताक़त में भी सबसे बुलंद व बाला होता है और नबी का मुक्का एक इम्तियाज़ी मुक्का था। के एक ही मुक्के से ज़ालिम का काम तमाम हो गया।

हिकायत नम्बर (71) मूसा अलेहिस्सलाम का तमाचा

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के पास जब मलक-उल-मौत हाज़िर हुआ। तो हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने मलक-उल-मौत को एक ऐसा तमाँचा मारा। के मलक-उल-मौत की आँख निकल आई। मलक-उल-मौत फ़ौरन वापस पलटा और अल्लाह के हुज़ूर अर्ज़ करने लगा। इलाही आज तो तूने मुझे एक ऐसे अपने बन्दे की तरफ़ भेजा है। जो मरना ही नहीं चाहता। ये देख के उसने मुझे तमाँचा मार कर मेरी आँख निकाल दी है। ख़ुदा ने मलक-उल-मौत की वो आँख दुरस्त फ़रमा दी। और फ़रमाया मेरे बन्दे मूसा के पास फिर जाओ और बैल साथ लेते जाओ। और मूसा से कहना के अगर तुम चलना चाहते हो तो उस बैल की पुश्त पर हाथ फैरो। जितने बाल तुम्हारे हाथ के नीचे आ जाएँगे। उतने ही साल और ज़िन्दा रह लेना। चुनाँचे मलक-उल-मौत बैल लेकर फिर हाज़िर हुआ। और अर्ज़ करने लगा। हुज़ूर! उसकी पुश्त पर हाथ फेरिये। जितने बाल आपके हाथ के नीचे आजाएँगे इतने साल आप

और ज़िन्दा रह लें। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया और उसके बाद फिर तुम आ जाओगे? अर्ज़ किया। हाँ! तो फ़रमाया। फिर अभी ले चलो। (मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 499)

सबक़:- अल्लाह के नबियों की ये शान है के चाहें तो मलक-उल-मौत को भी तमाँचा मार दें। और उसकी आँख निकाल दें। और नबी वो होता है जो मरना चाहे तो मलक-उल-मौत क़रीब आता है और अगर ना मरना चाहे तो मलक-उल-मौत वापस चला जाता है। हालाँके अवाम की मौत उस शैर के मिसदाक़ होती है के

लाई हयात आए क़ज़ा ले चली चले
अपनी खुशी ना आए ना अपनी खुशी चले

हिकायत नम्बर (72) मदयन का कुँआ

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने बड़े होकर जब हक़ का बयान और फ़िरऔन और फ़िरऔनियों की गुमराही का बयान शुरू किया। तो बनी इस्राईल के लोग आपकी बात सुनते और आपका इत्तिबा करते। आप फ़िरऔनियों के दीन की मुख़ालफ़त फ़रमाते रफ़्ता रफ़्ता इस बात का चर्चा हुआ। और फ़िरऔनी जुस्तजू में हुए। फिर फ़िरऔन के बावर्ची का मूसा अलेहिस्सलाम के मुक्के से मारा जाना भी जब उन लोगों को मालूम हुआ। तो फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के क़त्ल का हुक्म दिया। और लोग हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की तलाश में निकले। फ़िरऔनियों में से एक मर्दे नेक मूसा अलेहिस्सलाम का ख़ैरख़्वाह भी था। वो दौड़ा हुआ आया। और मूसा अलेहिस्सलाम को ख़बर दी और कहा। आप यहाँ से कहीं और तशरीफ़ ले जाईये। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम उसी हालत में निकल पड़े और मदयन की तरफ़ रूख़ किया। मदयन वो मुक़ाम है। जहाँ हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम तशरीफ़ रखते थे। ये शहर फ़िरऔन के हदूद सलतनत से बाहर था। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसका रास्ता भी ना देखा था। ना कोई सवारी साथ थी ना कोई हमराही चुनाँचे अल्लाह ने एक फ़रिश्ता भेजा। जो आपको मदयन तक ले गया। हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम उसी शहर में रहते थे। आपकी दो लड़कियाँ थीं। और बकरियाँ आपका ज़रिया मआश था। मदयन में एक कुआँ था हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम पहले उसी कुएँ पर पहुँचे और आपने देखा के बहुत से लोग उस कुएँ से पानी खींचते हैं। और अपने जानवरों को पिला लेते हैं। और हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम की दोनों लड़कियाँ भी अपनी

बकरियों को अलग रोक कर वहीं खड़ी हैं। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उन लड़कियों से पूछा के तुम अपनी बकरियों को पानी क्यों नहीं पिलातीं? उन्होंने कहा। के हम से डोल खींचा नहीं जाता। ये लोग चले जाएेंगे। तो जो पानी होज़ में बच रहेगा। वो हम अपनी बकरियों को पिला लेंगीं। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम को रहम आ गया। और पास ही जो एक दूसरा कुआँ था। जिस पर एक बहुत बड़ा पत्थर ढका हुआ था। और जिसको बहुत आदमी मिलकर हटा सकते थे। आपने तनहा उसको हटा दिया। और उसमें से डोल खींच कर उनकी बकरियों को पानी पिला दिया घर जाकर उन दोनों लड़कियों ने हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम से कहा। अब्बा जान! एक बड़ा नेक और क़वी नोवारिद मुसाफ़िर आया है। जिसने आज हम पर रहम खा के हमारी बकरियों को सैराब कर दिया है। हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम ने एक साहबज़ादी से फ़रमाया। के जाओ और उस मर्द सालेह को मेरे पास बुला लाओ चुनाँचे बड़ी साहबज़ादी चहरे को आसतीन से ढके हुए और जिस्म को छुपाए हुए बड़ी शर्म व हया से चलती हुई हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के पास आई और कहा के मेरे बाप आपको बुलाते हैं। ताके आपको उजरत दें हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम उजरत लेने पर तो राज़ी ना हुए। हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम की ज़ियारत और उनकी मुलाक़ात के लिए चल पड़े और उनकी साहबज़ादी से फ़रमाया के आप मेरे पीछे रहकर रस्ता बताती जाईये ये आपने पर्दे के एहतिमाम से फ़रमाया। और इसी तरह तशरीफ़ लाए। जब हज़रत शुऐब के पास पहुँचे। तो हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम से आपने फ़िरऔन का हाल और अपनी विलादत से लेकर फ़िरऔन के बावर्ची के मारे जाने तक का सब किस्सा सुनाया। हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। अब कोई फ़िक्र ना करो तुम ज़ालिमों से बच कर चले आए। अब यहीं मेरे पास रहो। (क़ुरआन करीम प॰20 रूकू 6खज़ायन उल-इर्फ़ान सफ़ा 548)

सबकः- ज़ालिम और मग़रूर हाकिम अल्लाह वालों के दरपये अज़ाद हो जाते हैं। और अल्लाह वाले मसायब व अलाम की बर्दाश्त फ़रमा लेते हैं मगर इशाअते हक़ से नहीं रूकते और अल्लाह तआला अपने उन हक़ गौ बन्दों की हिफ़ाज़त फ़रमाता है।

हिकायत नम्बर (73) दरख़्त से आवाज़

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम के पास दस बरस तक रहे और फिर हजरत शुऐब अलेहिस्सलाम ने अपनी साहबज़ादी

का निकाह हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के साथ कर दिया। इतने अर्से के बाद आप हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम से इजाज़त लेकर अपनी वालिदा से मिलने के लिए। मिस्र की तरफ़ रवाना हुए। आपकी बीवी भी साथ थी। रास्ते में जब के आप रात के वक़्त एक जंगल में पहुँचे तो रास्ता गुम हो गया। अंधेरी रात और सर्दी का मौसम था। उस वक़्त आपने जंगल में दूर एक चमकती हुई आग देखी। और बीवी से फ़रमाया तुम यहाँ ठहरो मैंने वो दूर आग देखी है मैं वहाँ जाता हूँ। शायद वहाँ से कुछ ख़बर मिले। और तुम्हारे तांपने के लिए कुछ आग भी ला सकूं। चुनाँचे आप अपनी बीवी को वहीं बैठा कर उस आग की तरफ़ चले। और जब उसके पास पहुँचे तो वहाँ एक सरसब्ज़ शादाब दरख़्त देखा जो ऊपर से नीचे तक निहायत रोशन था। और जितना उसके क़रीब जाते हैं। वो दूर हो जाता है। और ठहर जाते हैं। तो वो क़रीब हो जाता है। आप उस नूरानी दरख़्त के अजीब हाल को देख रहे थे के उस दरख़्त से आवाज़ आई ऐ मूसा! "मैं सारे जहानों का रब अल्लाह हूँ। तुम बड़े पाकीज़ा मुक़ाम में आ गए हो। अपने जूते उतार डालो। और जो तुझे वही होती है। कान लगाकर सुनो। मैंने तुझे पसंद कर लिया।" (क़ुरआन करीम प॰16 रूकू 10, प॰20 रूकू 7ख़ज़ायन उल-इर्फ़ान स॰442, स॰549)

सबक़:- नबुव्वत अल्लाह की अता महेज़ है उसमें मेहनत और कसब को दख़्ल नहीं यानी नबुव्वत किसी कोर्स पूरा करने और मेहनत करने से नहीं मिलती। बल्के अल्लाह जिसे चाहता था। इस शरफ़ से मुर्शरफ़ फ़रमा देता था जैसे मूसा अलेहिस्सलाम! के गए आग लेने को और आए नबुव्वत लेकर और ये सिलसिला हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम तक जारी रहा, फिर जो शख़्स ये कहे इहदीनस सिरातल मुसतक़ीम पढ़ने से आदमी नबी बन सकता है वो किस क़द्र जाहिल है!

हिकायत नम्बर (74) ख़ौफ़नाक साँप

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के हाथ में एक असा था। ऐ मूसा ज़रा इस असा को ज़मीन पर तो डालो। हज़रत ने उसे ज़मीन पर डाला। तो वो एक ख़ौफ़नाक साँप बनकर लहराने लगा। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने ये मंज़र देखकर पीठ मोड़ ली। और पीछे मुड़कर ना देखा। ख़ुदा ने फ़रमाया। ऐ मूसा! डरो नहीं। इसे पकड़ लो। ये फिर वही असा बन जाएगा। चुनाँचे आपने उस साँप को पकड़ा। तो वो फिर असा बन गया। अल्लाह तआला ने ये भी एक मओजज़ा अता फ़रमा कर मूसा अलेहिस्सलाम से फ़रमाया। के अब फ़िरऔन

की तरफ़ जाओ। और उसे डराओ। और उसको समझाओ। के वो कुफ्र व तुग़यानी को छोड़ दे। और अगर वो मओजज़ा तलब करे तो ये असा डाल कर उसे दिखाओ (कुरआन करीम प॰16 रूकू 10प॰20 रूकू 7)

सबक़:- अंबिया अलेहिमुस्सलाम को अल्लाह तआला ने बड़े बड़े मओजज़ात अता फ़रमाए हैं। और वो ऐसे ऐसे काम कर दिखाते हैं जो दूसरे हर गिज़ नहीं कर सकते।

हिकायत नम्बर (75) अज़्दहा का हमला

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम शरफ़ नबुव्वत से मुशर्रफ़ होकर जब फ़िरऔन के पास पहुँचे। तो उससे फ़रमाया के ऐ फ़िरऔन! मैं अल्लाह का रसूल हूँ। और हक़ व सदाक़त का अलम्बरदार हूँ। दअवऐ ख़ुदाई को छोड़। और एक अल्लाह का परस्तार बन! फ़िरऔन ने कहा। अगर तुम अल्लाह के रसूल हो तो कोई निशानी दिखाओ। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया तो लो देखो आपने असा मुबारक ज़मीन पर डाल दिया। जब आपने वो असा ज़मीन पर डाला। तो वो एक बड़ा अज़्दहा बन गया। ज़र्द रंग मुंह खोले हुए ज़मीन से एक मील ऊँचा अपनी दुम पर खड़ा हो गया। और एक जबड़ा उसने ज़मीन पर रखा। और क़स्र शाही की दीवार पर। फिर उसने फ़िरऔन की तरफ़ रूख़ किया तो ऐसी भाग पड़ी के हज़ारों आदमी कुचल कर मर गए फ़िरऔन घर में जाकर चींख़ने लगा। और कहने लगा। ऐ मूसा! तुम्हें उसकी क़सम जिसने तुझे रसूल बनाया। उसको पकड़ लो। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसको उठा लिया। तो वो मिस्ल साबिक़ असा था। और फ़िरऔन की जान में जान आई।

(कुरआन करीम प॰9 रूकू 3ख़ज़ायन उल-इर्फ़ान स॰236)

सबक़:- पैग़म्बर बड़ी शान व शौकत और अज़ीम ताक़त का मालिक होता है और बड़े से बड़ा बादशाह भी उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता।

हिकायत नम्बर (76) जादूगरों की शिकस्त

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के असा का साँप बन जाना फ़िरऔन के लिए बड़ी मुश्किल का बाइस हुआ। और वो बड़ा घबरा गया। फ़िरऔन के दरबारी फ़िरऔन से कहने लगे के मूसा कहीं से जादू सीख आया है। अब तुम भी अपनी सारी ममलिकत से जादूगरों को जमा करो। और उनको मूसा के मुक़ाबले में लाओ। चुनाँचे फ़िरऔन ने अपने आदमी सारी ममलिकत में भेज दिए। और वो हर मुक़ाम से जादूगरों को जमा करके लिए आए।

जब हज़ारों की तादाद में जादूगर जमा हो गए। तो फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम को उन जादूगरों से मुक़ाबला करने का चेलंज दे दिया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने वो चेलंज क़बूल कर लिया। फ़िरऔन ने पूछा। दिन कौन सा होगा? आपने फ़रमाया। तुम्हारे मेले का दिन मुक़र्रर करता हूँ ये फ़िरऔनियों का एक ऐसा दिन था। जिस दिन वो ज़ीनतें कर कर के दूर दूर से जमा होते थे। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने ये दिन इस लिए मुक़र्रर फ़रमाया। के ये रोज़ उनकी ग़ायत शौकत का दिन था। उस दिन को मुक़र्रर करना सब लोगों पर हक़ वाज़ह कर देने के लिए था। चुनाँचे जब वो दिन आया तो हज़ारों जादूगर मुक़ामे मुक़र्रर पर पहुँच गए। और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम भी तशरीफ़ ले आए। हज़ारहा के इस इजतमअे में उन जादूगरों ने अपनी अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डाल दीं। जब डालीं तो वो सब की सब साँप बन गईं और दौड़ने लगीं। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने देखा के ज़मीन साँपों से भर गई है और मीलों के मैदान में साँप ही साँप दौड़ रहे हैं। ये हैबतनाक मंज़र देख कर लोग हैरान रह गए। इतने में हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने भी अपना असा डाल दिया। तो वो एक अज़ीमुश्शान अज़्दहा बन गया। और जादूगरों की तमाम सहरकारियों को एक एक करके निगलने लगा। तमाम रस्सियाँ और लाठियाँ जो उन्होंने जमा की थीं। और जो साँप वनकर फिर रही थीं। और जो तीन सौ ऊंट का बौझ थीं। सबका ख़ात्मा कर दिया। और जब हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसे दस्ते मुबारक में लिया। तो पहले की तरह वो फिर असा बन गया। और उसका हजम और वज़न अपने हाल पर रहा। ये देखकर जादूगरों ने पहचान लिया। के असाऐ मूसा सहर नहीं है। और क़ुद्रत बशरी ऐसा करिश्मा नहीं दिखा सकती। ज़रूर ये अम्र आसमानी है। ये बात समझ कर वो सब के सब आमन्ना बिरब्बिल आलमीन कहते हुए सज्दे में गिर गए और ईमान ले आए। (क़ुरआन करीम प॰9 रूकू 4 ख़ज़ायन उल-ईफ़ान स॰237)

सबक़:- सारी ख़ुदाई इक तरफ़, फ़ज़्ल इलाही इक तरफ़ के मिसदाक़ सारी दुनिया मुक़ाबले को आ जाए। मगर फ़तह व नुसरत उसी तरफ़ होगी जिस तरफ़ ताईद हक़ होगी। और बातिल को कभी फ़रोग़ ना होगा।

हिकायत नम्बर (77) पानी का अज़ाब

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के असा मुबारक का अज़्दहा बन जाना देख कर फ़िरऔन के ख़ुश नसीब जादूगर हज़रत मसा अलेहिस्सलाम पर ईमान

ले आए। लेकिन फ़िरऔन और उसकी सरकश क़ौम अपने कुफ्र से बाज़ ना आई। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने ये सरकशी देख कर उनके हक़ में बद दुआ फ़रमा दी। और अर्ज़ किया केः

"इलाही! फ़िरऔन बहुत सरकश हो गया है। और उसकी क़ौम भी अहेद शिकन और मग़रूर हो गई। उन्हें ऐसे अज़ाब में गिरफ़्तार कर जो उन के लिए सज़ा हो। और मेरी क़ौम और बाद वालों के लिए इब्रत।"

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की ये दुआ क़बूल हो गई। और अल्लाह ने फ़िरऔनियों पर एक तूफ़ान भेजा। अब्र आया। अंधेरा छा गया और कसरत से बारिश होने लगी। फ़िरऔनियों के घर में पानी उनकी गर्दनों तक आ गया। उनमें जो बैठा डूब गया। ना हिल सकते थे। ना कुछ काम कर सकते थे। सनीचर से सनीचर तक सात रोज़ तक ऐसी मुसीबत में मुबतला रहे और क़ुद्रत ख़ुदावंदी का करिश्मा देखिये। के बावजूद ये के बनी इस्राईल के घर उन फ़िरऔनियों के घरों से मुत्तसिल थे। मगर बनी इस्राईल के घरों में पानी ना आया। जब ये लोग आजिज़ हुए तो हज़रत मुसा अलेहिस्सलाम से अर्ज़ किया। के हमारे लिए इस मुसीबत के टल जाने की अपने रब से दुआ फ़रमाईये। ये मुसीबत टल गई तो हम ईमान ले आएंगे। चुनाँचे हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई। तो तूफ़ान की मुसीबत रफ़अे हो गई।

(क़ुरआन करीम पारा 9 रूकू 6 ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 239, रूह-उल-बयान सफ़ा 768 जिल्द 1)

सबक़:- ये पानी जो हमारे लिए मौजिब हयात है। जब अज़ाब इलाही बनकर आ जाए। तो हमारी जानों और मालों के लिए तबाही का मौजिब बन जाता है और पानी का इस तरह का सैलाब हमारे अपने आमाल बद का नतीजा होता है। और ये भी मालूम हुआ के मक़्बूल और प्यारों की दुआ से बड़े बड़े अज़ाब टल जाते हैं।

हिकायत नम्बर (78) टिड्डी दल

फ़िरऔन की कौम ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम को सताया। तो मूसा अलेहिस्सलाम की बद दुआ से उन पर पानी का अज़ाब आ गया। जिस में वो बुरी तरह घिर गए। और फिर हज़रत मूसा ही से इलतिजा करने लगे। के इस अज़ाब के टल जाने की दुआ कीजिए। हम आप पर ईमान ले आएंगे। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई। तो पानी का अज़ाब टल गया और वही पानी रहमत की शक्ल में तब्दील होकर ज़मीन की सरसब्ज़ी व

शादाबी का मौजिब बन गया। खेतियाँ खूब हुईं। दरख़्त खूब फले इस तरह की सरसब्ज़ी पहले कभी ना देखी थी फ़िरऔनी कहने लगे। के पानी तो नअेमत था। हमें मूसा पर ईमान लाने की क्या हाजत है चुनाँचे वो मग़रूर अपने अहेद से फिर गए। तो मूसा अलेहिस्सलाम ने फिर उनके लिए बद दुआ की। और एक महीना आफ़ियत से गुज़र जाने के बाद अल्लाह ने फिर उन पर टिड्डियाँ भेज दीं। जो खेतियाँ, और दरख़्तों के फल। हत्ता के फ़िरऔनियों के दरवाज़े और छतें भी खा गईं। और कुद्रते हक़ का करिश्मा देखिये। के टिड्डियाँ फ़िरऔनियों के घरों में घुस आईं। मगर बनी इस्राईल के घरों में मतलक़ ना गईं। तंग आकर उन मग़रूरों ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से फिर इस अज़ाब के भी टल जाने की इलतिजा की। और वादा किया। के ये बला टल जाए तो हम ज़रूर ईमान ले आएंगे। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई। तो टिड्डी दल का अज़ाब भी दूर हो गया। मगर काफ़िरों का कुफ्र बदस्तूर रहा। और फिर अहेद से फिर गए। (कुरआन करीम पारा 9 रूकू 6 खज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 229, रूह-उल-बयान सफ़ा760 जिल्द1)

सबकः- इंसान की हद से ज़्यादा सरकशी पर अल्लाह तआला किसी कमज़ोर मखलूक़ से उसे तबाह कर देता है। और ग़ाफ़िल इंसान मुसीबत के वक़्त तो अल्लाह की तरफ़ रूजूअ का अहेद कर लेता है। मगर मुश्किल रफ़अे हो जाने के बाद फिर वही चाल बेढंगी इख़्तियार कर लेता है। और ये बात बड़ी ख़तरनाक है।

हिकायत नम्बर (79) जुएँ और मेण्ढक

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की बद दुआ से फ़िरऔनियों पर टिड्डी दल का अज़ाब आ गया और वो फ़िरऔनियों की सब खेतियाँ, दरख़्त फल, और उनके घरों के दरवाज़े और छत तक खा गईं। फ़िरऔनियों ने आजिज़ आकर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से ये अज़ाब टल जाने की इलतिजा की और हज़रत मूसा पर ईमान लाने का वादा किया। हज़रत मूसा ने दुआ की और आपकी दुआ से ये अज़ाब टल गया। मगर फ़िरऔनी अपने अहेद पर क़ायम ना रहे और ईमान ना लाए। उस पर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फिर बददुआ फ़रमाई। और फ़िरऔनियों पर जुओं का अज़ाब नाज़िल हो गया। ये जूएँ फ़िरऔनियों के कपड़ों में घुस कर उनके जिस्मों को काटतीं और उनके खाने में भर जाती थीं। और घुन की शक्ल में उनके गेहूं की बोरियों में फैल कर उनके गेहूं को तबाह करने लगीं। अगर कोई दस बोरी गंदम की चक्की

पर ले जाता तो तीन सेर वापस लाता। और फ़िरऔनियों के जिस्मों पर उस कसरत से चलने लगीं के उनके बाल भवें, पलकें चाट के जिस्म पर चेचक की तरह दाग़ कर दिए और उन्हें सोना दुशवार कर दिया। ये मुसीबत देख कर उन्होंने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से ये बला टल जाने की इलतिजा की। और ईमान लाने का वादा किया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने दुआ की और ये भी बला टल गई। मगर वो काफ़िर अपने अहेद पर क़ायम ना रहे और कुफ्र से बाज़ आए। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फिर उनके लिए बददुआ की। तो अल्लाह तआला ने अब उन पर मेण्ढकों का अज़ाब नाज़िल किया। ओर हाल ये हुआ के आदमी बैठता था। तो उसकी गोद में मेण्ढक भर जाते थे। बात करने के लिए मुंह खोलता तो मेण्ढक कूद कर मुंह में पहुँचता था। हांडियों में मेण्ढक। खानों में मेण्ढक और चूलहों में मेण्ढक भर जाते थे और आग बुझ जाती थी। लेटते तो मेण्ढक ऊपर सवार होते थे। इस मुसीबत से फ़िरऔनी रो पड़े। और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से अर्ज़ किया के अब की बार हम अपने अहेद पर क़ायम रहेंगे और पक्की तौबा करते हैं। हम पर से मुसीबत टालिये। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फिर दुआ फ़रमाई। और ये अज़ाब भी रफ़ओ हुआ। मगर तमाशा देखिये के वो काफ़िर फिर भी अपने अहेद पर क़ायम ना रहे। और अपने कुफ्र पर बदसतूर डटे रहे। (क़ुरआन करीम पारा 9 रूकू 6 ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 240 रूह-उल-बयान सफ़ा 760, जिल्द 1)

सबक़: काफ़िरों के वादे का कोई एतबार नहीं और बार बार अहेद शिकनी करना काफिरों का काम है।

हिकायत नम्बर (80) खून ही खून

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की बददुआ से फ़िरऔनियों पर जूओं और मेण्ढकों का अज़ाब नाज़िल हुआ। और फिर आपकी दुआ से वो अज़ाब दफ़ओ हो गया। मगर फ़िरऔनी फिर भी ईमान ना लाए और कुफ्र पर क़ायम रहे। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फिर बददुआ फ़रमाई। तो तमाम कुओं का पानी, नहरों का और चश्मों का पानी, दरयाए नील का पानी, ग़र्ज़ हर पानी उनके लिए ताज़ा खून बन गया। और वो इसी नई मुसीबत से बहुत ही परेशान हुए। जो पानी भी उठाते। उनके लिए खून जाता। और कुद्रते खुदा का करिशमा देखिये। के बनी इस्राईल के लिए पानी, पानी ही था। मगर फ़िरऔनियों के लिए हर पानी खून बन गया था। आख़िर तंग आकर फ़िरऔनियों ने बनी

इस्राईल के साथ मिल कर एक ही बर्तन से पानी लेने का इरादा किया। तो जब बनी इस्राईल निकालते। तो पानी निकलता। और फ़िरऔनी निकालते। तो उसी बर्तन से ख़ून निकलता। यहाँ तक के फ़िरऔनी औरतें प्यास से तंग आकर बनी इस्राईल की औरतों के पास आईं। और उनसे पानी माँगा। तो वो पानी उनके बर्तन में आते ही ख़ून हो गया। तो फ़िरऔनी औरत कहने लगी के पानी अपने मुंह पानी अपने मुंह में लेकर मेरे मुंह में कुल्ली कर दे जब तक वो पानी बनी इस्राईल की औरत के मुंह में रहा। पानी था। और फ़िरऔनी औरत के मुंह में पहुँचा तो ख़ून हो गया।

फ़िरऔन ख़ूद प्यास से लाचार हुआ। तो उसने तर दरख़्तों की रतूबत चूसी। वो रतूबत मुंह में पहुँचते ही ख़ून बन गई। इस क़हरे इलाही से आजिज़ आकर फ़िरऔनियों ने फिर हज़रत मूसा से इलतिजा की। के एक मर्तबा और दुआ कीजिए। और इस अज़ाब को भी टालिये। फिर हम यक़ीनन ईमान ले आएंगे। चुनाँचे हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई और उन पर से ये अज़ाब भी रफ़अे हो गया। मगर वो बेईमान फिर भी अपने अहेद पर क़ायम ना रहे। (क़ुरआन करीम पारा 9 रूकू 6 ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 240 रूह-उल-बयान सफ़ा 460 जिल्द 1)

सबक़: ख़ुदा तआला अपने नाफ़रमान बन्दों को बार बार मोहलत देता है। ताके वो संभल जाएँ। मगर कुफ़्र आशना बन्दे उस मोहलत से फ़ायदा नहीं उठाते। और बदस्तूर अपने कुफ़्र पर क़ायम रहते हैं और नुक़सान उठाते हैं।

हिकायत नम्बर(81) फ़िरऔन की हलाकत

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के ईमान लाने से मायूस हो गए। तो आपने उनकी हलाकत की दुआ की। और कहा:

"ऐ रब हमारे! उनके माल बर्बाद कर दे और उनके दिल सख़्त कर दे के ईमान ना लायें। जब तक दर्दनाक अज़ाब ना देख लें।"

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की ये दुआ क़बूल हुई। और ख़ुदा ने उन्हें हुक्म दिया के वो बनी इस्राईल को लेकर रातों रात शहर से निकल जाएँ। चुनाँचे मूसा अलेहिस्सलाम ने अपने क़ौम को निकल चलने का हुक्म सुनाया और बनी इस्राईल की औरतें फ़िरऔनी औरतों के पास गईं। और उनसे कहने लगीं। के हमें एक मेले में शरीक होना है। वहाँ पहन कर जाने के लिए हमें मुसतआर तौर पर अपने ज़ेवरात दे दो। चुनाँचे फ़िरऔनी औरतों ने अपने अपने ज़ेवरात उन बनी इस्राईल की औरतों को दे दिए। और फिर सब बनी

इस्राईल औरतों और बच्चों समेत हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के साथ रातों रात ही निकल गए। उन सब मर्दों, औरतों, छोटों, बड़ों की तअदाद छः लाख थी। फ़िरऔन को जब उस बात की ख़बर पहुँची। तो वो भी रातों रात ही पीछा करने के लिए तैयार हो गया। और अपनी सारी कौ़म को लेकर बनी इस्राईल के पीछे निकल पड़ा। फ़िरऔनियों की तअदाद बनी इस्राईल की तअदाद से दोगुनी थी। सुबह होते ही फ़िरऔन के लश्कर ने बनी इस्राईल का पा लिया बनी इस्राईल ने देखा। के पीछे फ़िरऔन मअे लश्कर के आ रहा है। और आगे दरया भी आ गया हैं। तो उन्होंने मूसा अलेहिस्सलाम से अर्ज़ किया। तो मूसा अलेहिस्सलाम ने अपना असा मुबारक दरया पर मारा। तो दरया फट गया। और उस में बारा रास्ते ज़ाहिर हो गए और बनी इस्राईल उन रास्तों से दरया के पार हो गए। और जब फ़िरऔनी लश्कर दरया के किनाने पहुँचा। तो वो भी दरया उबूर करने के लिए, उन रास्तों पर चल पड़े जब फ़िरऔन और उसका सारा लश्कर उन बारह रास्तों में दाखिल हो गया। तो खुदा ने दरया को हुक्म दिया। के वो मिल जाए और उन सब को ग़र्क़ कर दे। चुनाँचे दरया फ़ौरन मिल गया। और फ़िरऔन अपने लश्कर समेत दरया में ग़र्क़ होकर हलाक हो गया। (कु़रआन करीम पारा 11 रूकू 14 रूह-उल-बयान सफ़ा 761 जिल्द 1)

सबक़: हद से ज़्यादा कुफ्र व सरकशी का अंजाम बेहद होलनाक होता है। और इस दुनिया में भी हलाकत व बर्बादी का सामना करना पड़ता है।

हिकायत नम्बर(82) नमक हराम ग़ुलाम

एक मर्तबा जिब्राईल अलेहिस्सलाम फ़िरऔन के पास एक इसतफ़्तआ लाए जिसका मज़मून ये था। के बादशाह का क्या हुक्म है ऐसे ग़ुलाम के हक़ में जिसने एक शख़्स के माल व नअेमत में परवरिश पाई, फिर उसकी नाशुक्री की। और उसके हक़ में मुनकिर हो गया। और अपने आप मौला होने का मुद्दई बन गया? इस पर फ़िरऔन ने ये जवाब लिखा। के जो नमक हराम ग़ुलाम अपने आक़ा की नअेमतों का इंकार करे। और उसके मुक़ाबिल आए। उसकी सज़ा ये है के उसको दरया में डूबो दिया जाए।

चुनाँचे फ़िरऔन जब खुद दरया में डूबने लगा। तो हज़रत जिब्राईल ने उसका वही फ़तवा उसके सामने कर दिया। और उसको उसने पहचान लिया। (ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 311)

सबक़: इंसान अगर अपने ग़ुलाम की नाफ़रमानी पर ग़ुस्से में आ

जाता है और उसे सज़ा देता है। तो फिर वो खुद भी अगर मालिके हक़ीक़ी का नाफ़रमान होगा। तो सज़ा भुगतने के लिए तैयार रहे।

हिकायत नम्बर (83) हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम और एक बूढ़िया

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम दरया पार करने के लिए जब किनारे दरया तक पहुँचे तो सवारी के जानवरों के मुंह अल्लाह ने फैर दिए। के खुदबखुद वापस पलट आए मूसा अलेहिस्सलाम ने अर्ज़ की। इलाही ये क्या हाल है? इर्शाद हुआ तुम क़ब्र यूसुफ़ के पास हो। उनका जिस्म मुबारक अपने साथ ले लो। मूसा अलेहिस्सलाम को क़ब्र का पता मालूम ना था। फ़रमाया! क्या तुम में कोई जानता है? शायद बनी इस्राईल की बूढ़िया को मालूम हो। उसके पास आदमी भेजा। के तुझे यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की क़ब्र मालूम है? उसने कहा। हाँ मालूम है। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। तू मुझे बता दे। वो बोली खुदा की क़सम मैं ना बताऊंगी। जब तक के जो कुछ मैं आप से माँगूं। आप मुझे अता ना फ़रमाएँ। मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। तेरी अर्ज़ क़बूल है माँग क्या माँगती है। वो बूढ़िया बोली। तो हुज़ूर से मैं ये माँगती हूँ के जन्नत में मैं आपके साथ हूँ। उस दर्जे में जिसमें आप होंगे। मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। जन्नत माँग ले यानी तुझे यही काफ़ी है। इतना बड़ा सवाल ना कर। बूढ़िया बोली। खुदा की क़सम में ना मानूंगी। मगर यही के आपके साथ हूँ। मूसा अलेहिस्सलाम उससे यही रद्दोबदल करते रहे अल्लाह ने वही भेजी। मूसा वो जो माँग रही है' तुम उसे वही अता कर दो। के उसमें तुम्हारा कुछ नुक़सान नहीं। चुनाँचे मूसा अलेहिस्सलाम ने जन्नत में अपनी रफ़ाक़त उसे अता फ़रमा दी। उसने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की क़ब्र बता दी। मूसा अलेहिस्सलाम नअश मुबारक को साथ लेकर दरया से उबूर फ़रमा गए। (तिब्रानी शरीफ़ अलअमन व अलअला सफ़ा 229)

सबक़: हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उस बूढ़िया को ना सिर्फ़ जन्नत ही बल्के जन्नत में अपनी रफ़ाक़त भी दे दी।

मालूम हुआ के खुदा के मक़्बूलों को जन्नत पर इख़्तियार हासिल है फिर जो मक़्बूलों और रसूलों के सरदार हज़ूर अहमद मुख़्तार सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बेइख़्तियार कहे। बड़ा ही बे ख़बर और जाहिल है।

हिकायत नम्बर(84) बनी इस्राईल की गुमराही

बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा अलेहिस्लाम की मईयत में फ़िरऔन से निजात पा ली। और दरया को उबूर कर के जब पार हो गए। तो उनका गुज़र एक बुत परस्त क़ौम पर हुआ। जब बुतों के आगे आसन मारे बैठे थे। और उन बुतों को पूज रहे थे। ये बुत गाय की शक्ल के थे। बनी इस्राईल हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से कहने लगे के ऐ मूसा! जिस तरह उन लोगों के लिए इतने खुदा हैं। इसी तरह हमें भी आप एक खुदा बना दें। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया जाहिलों! ये क्या बकने लगे हो। ये बुत परस्त तो बर्बादी व हलाकत के हाल में हैं। और जो कुछ कर रहे हैं। बिलकुल बातिल है। क्या मैं एक अल्लाह के सिवा कोई दूसरा खुदा तुम्हारा लिए तलाश करूं? (क़ुरआन करीम 9 रूकू 7)

सबक़: खुदा तआला की इतनी मेहरबानियों के बावजूद जो उसे भूल जाए और बुतों के आगे झुकने पर आमादा हो जाएँ। उनकी गुमराही व जहालत में क्या कलाम है?

हिकायत नम्बर(85) सामरी सुनार

बनी इस्राईल में सामरी नाम का एक सुनार था। ये क़बीला सामरा की तरफ़ मनसूब था। और ये क़बीला गाय की शक्ल के बुत का पूजारी था। सामरी जब बनी इस्राईल की क़ौम में आया। तो उनके साथ बज़ाहिर ये भी मुसलमान हो गया। मगर दिल में "गाए की पूजा" की मोहब्बत रखता था। चुनाँचे जब बनी इस्राईल दरया से पार हुए। और बनी इस्राईल ने एक बुत परस्त क़ौम को देखकर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से अपने लिए भी एक बुत की तरह का खुदा बनाने की दरख़्वास्त की और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम उस बात पर नाराज़ हुए। तो सामरी मौक़े की तलाश में रहने लगा। चुनाँचे हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम तौरात लाने के लिए कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए। तो मौक़ा पाकर सामरी ने बहुत सा ज़ेवर पिघला कर सोना जमा किया। और उससे एक गाए का बुत तैयार किया। और फिर उसने कुछ खाक उस गाए के बुत में डाली। तो वो गाए के बछड़े की तरह बोलने लगा और उसमें जान पैदा हो गई। सामरी ने बनी इस्राईल में उस बछड़े की परसतिश शुरू करा दी। और बनी इस्राईल उस बछड़े के पुजारी बन गए। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम जब कोहे तूर से वापस तशरीफ़ लाए। तो क़ौम

का ये हाल देख कर बड़े गुस्से में आए और सामरी से दरयाफ़्त फ़रमाया। के ऐ सामरी! ये तूने क्या किया? सामरी ने बताया। के मैंने दरया से पार होते वक़्त जिब्राईल को घोड़े पर सवार देखा था। और मैंने देखा के जिब्राईल के घोड़े के क़दम जिस जगह पर पड़ते हैं वहाँ सब्ज़ा उग आता है। मैंने उस घोड़े के क़दम की जगह से कुछ खाक़ उठा ली। और वो खाक मैंने बछड़े के बुत में डाल दी। तो ये ज़िन्दा हो गया है और मुझे यही बात अच्छी लगी है। मैंने जो कुछ किया है। अच्छा किया है हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमया। अच्छा तो जा, दूर हो जा। अब इस दुनिया में तेरी सज़ा ये है। के तू हर एक से ये कहेगा। के मुझे छू ना जाना। यानी तेरा ये हाल हो जाएगा। के तू किसी शख़्स को अपने क़रीब ना आने देगा। चुनाँचे वाक़ई उसका ये हाल हो गया। के जो कोई उससे छू जाता। तो उस छूने वाले को और सामरी को भी बड़ी शिद्दत का बुखार हो जाता। और उन्हें बड़ी तकलीफ़ होती। इसलिए सामरी खुद ही चीख़ चीख़ कर लोगों से कहता फिरता के मेरे साथ कोई ना लगे। और लोग भी उससे इजतनाब करे। ताके उससे लगकर बुखार में मुबतला ना हो जाएँ। इस अज़ाब दुनिया में गिरफ़्तार होकर सामरी बिलकुल तनहा रह गया और जंगल को चला गया। और बड़ा ज़लील होकर मरा। (क़ुरआन करीम पारा 16 रूकू 14 रूह-उल-बयान सफ़ा 599 जिल्द 2)

सबक़: आज भी गव के पुजारी छूत छात के इल्म बरदार हैं। और जिस तरह वो मुसलमानों से अलग रहना चाहते हैं। उसी तरह मुसलमानों को भी उनसे इजतनाब रखना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के जिब्राईल के घोड़े के क़दम की खाक से अगर ज़िन्दगी मिल सकती है तो जिब्राईल के भी आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं। और हुज़ूर के उम्मती जो ओलिया अल्लाह हैं। उनके दमक़दम से हज़ारों लाखों फ़यूज़ व बर्कात क्यों हासिल नहीं हो सकते, होते हैं और यक़ीनन होते हैं लेकिन जो दिल के अंधे हैं और सामरी से भी ज़्यादा शक़ी हैं। वो उंन अल्लाह वालों के फ़यूज़ व बर्कात के मुनकिर हैं।

हिकायत नम्बर (86) क़ातिल का सुराग़

बनी इस्राईल में एक मालदार शख़्स था। उसके चचा ज़ाद भाई ने बतमअे वारिस उसको क़त्ल करके शहर से बाहर फैंक दिया। और सुबह को उसके खून का मुद्दई बन कर वावेला करने लगा। लोगों ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से अर्ज़ किया। के आप दुआ फ़रमाएँ के अल्लाह तआला

असल बात को ज़ाहिर फ़रमाए। उस पर खुदा का हुक्म ये हुआ के एक गाय ज़िबह करो और उस गाय का एक टुकड़ा उस मक़्तूल पर मारो। तो मक़्तूल ज़िन्दा होकर खुद ही बता देगा के उसका क़ातिल कौन है? लोगों ने ये बात सुन कर हैरान होकर पूछा। के क्या मज़ाक़ तो नहीं? हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मआज़ अल्लाह! क्या मैं कोई ऐसी फ़िज़ूल बात करूँगा। मैं बिलकुल सही कह रहा हूँ लोगों ने पूछा। तो फिर फ़रमाईये गाय कैसी हो? हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। खुदा फ़रमाता है। के ना बहुत बूढ़ी और ना बिलकुल नो उम्र, बल्के उन दोनों के बीच में हो। लोगों ने कहा। खुदा से ये भी पूछ दीजिए। के उसका रंग क्या हो? फ़रमाया! खुदा फ़रमाता है। के ऐसी पीली गाय हो। जिसकी रंगत डबडबाती और देखने वालों को खूश कर देने वाली हो। लोगों ने फिर कहा के गाए की हर हैसियत के मुतअल्लिक ज़रा तफ़सील से पूछ दीजिए। ऐसा ना हो के हम से कोई ग़लती हो जाए। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। खुदा फ़रमाता है के ऐसी गाय हो, जिस से कोई ख़िदमत ना ली गई हो। ना हल जोती गई हो ना उससे खेती को पानी दिया गया हो और बेऐब हो। जिसमें कोई दाग़ ना हो।

अब वो लोग इस क़िस्म की गाय की तलाश करने लगे। मगर ऐसी गाय का मिलना मुश्किल था। हाँ एक गाय के मुतअल्लिक़ उन्हें पता चला के वो गाए उन सिफ़ात से मोसूफ़ है। वो गाय एक यतीम बच्चे की गाय थी। और उस का क़िस्सा ये था के बनी इस्राईल में एक सालेह आदमी था। जिसका एक छोटी उम्र का बच्चा था। और उसके पास सिवाए एक गाय के बच्चे के कुछ ना रहा था। उसने उस बछिया की गर्दन पर मोहर लगा कर उसे छोड़ दिया। और बारगाह हक़ में अर्ज़ किया के ऐ अल्लाह! मैं उस बछिया को अपने बेटे के लिए तेरे पास अमानत रखता हूँ। मेरा बेटा जब बड़ा हो जाए। तो ये उसके काम आए। उस मर्द सालेह का तो इन्तिक़ाल हो गया और बछिया जंगल में परवरिश पाती रही।

ये लड़का जब बड़ा हुआ। तो बाप की तरह सालेह और नेक निकला। अपनी माँ का बड़ा फ़रमाँबरदार था। एक रोज़ उसकी माँ ने कहा। बेटा! तेरे बाप ने फ़लाँ जंगल में तेरे लिए एक बछिया छोड़ दी है। वो अब जवान हो गई होगी। उसको जंगल से ले आ। और अल्लाह से दुआ कर के वो तुझे तेरी अमानत अता फ़रमा दे। चुनाँचे वो लड़का जंगल पहुँचा। और अपनी गाय को देख कर माँ की बताई हुई निशानियाँ उसमें पाकर उसे पहचान लिया। और खुदा की क़सम देकर उसे बुलाया। तो गाय फ़ौरन हाज़िर हो गई वो

उसे लेकर माँ के पास पहुँचा। माँ ने हुक्म दिया। के जाओ उसे बाज़ार में ले जाकर तीन दीनार पर बेच आओ। और शर्त ये की के जब सौदा हो जाए, तो एक बार फिर मुझ से पूछ लिया जाए। उस ज़माने में गाय की क़ीमत तीन दीनार तक ही होती थी वो लड़का गाय लेकर बाज़ार पहुँचा। तो एक फ़रिश्ता ख़रीदार की शक्ल में आया। और उस गाय की क़ीमत छः दीनार लगा दी। मगर उस शर्त से के लड़का अपनी माँ से इजाज़त लेने ना जाए यहीं खड़े खड़े खुद ही बेच डाले। लड़के ने मंज़ूर ना किया और कहा के माँ से इजाज़त लिए बग़ैर मैं हर गिज़ कोई सौदा ना करूँगा। फिर घर आकर माँ को सारा क़िस्सा सुनाया। माँ ने छः दीनार पर गाय बेच दने की इजाज़त तो दे दी। मगर दोबारा बीअे हो जाने के बाद फिर अपनी मर्ज़ी दरयाफ़्त कर लने की पाबंदी लगा दी। वो लड़का फिर बाज़ार में आया। और वही फ़रिश्ता खरीदार बन कर आया। और बारह दीनार क़ीमत लगा दी। मगर शर्त पर के लड़का माँ से इजाज़त लेने ना जाए। लड़के ने ये बात फिर ना मंज़ूर कर दी। और माँ से आकर सारा हाल कह दिया। माँ समझ गई के ये खरीदार कोई फ़रिश्ता है। जो आज़माईश के लिए आता है। लड़के से कहा के अब जो वो खरीदार आए। तो उससे कहना के आप हमें ये गाय बेचने की इजाज़त देते हैं या नहीं? लड़के ने यही बात उस खरीदार से कह दी। तो फ़रिश्ते ने कहा। के अभी इस गाय को रोके रखो। जब बनी इस्राईल खरीदने आएँ तो उसकी क़ीमत ये मुक़र्रर करना। के उसकी खाल को सोने से भर दिया जाए। लड़का गाय को घर वापस ले आया ये गाय ही एक ऐसी गाय थी। जिसमें खुदा की बताई हुई सारी सिफ़ात पाई जाती थीं और जिसकी बनी इस्राईल को तलाश थी। चुनाँचे बनी इस्राईल को उस गाय का पता चला तो मकान पर पहुँचे। तो उस गाय की यही क़ीमत मुक़र्रर हुई के उसकी खाल को साने से भर दिया जाए। और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की ज़मानत पर वो गाय बनी इस्राईल के सपुर्द कर दी गई। और बनी इस्राईल ने उसे ज़िबह कर के उस गोश्त का एक टुकड़ा। उस मक़्तूल की लाश पर मारा। तो वो ज़िन्दा होकर कहने लगा। के मुझे मेरे चचा ज़ाद भाई ने क़त्ल किया है। चुनाँचे क़ातिल को भी इक़्रार करना पड़ गया। और वो पकड़ा गया। (कुरआन करीम पारा 1 रूकू 9-8 रूह-उल-बयान सफ़ा 109 जिल्द 1)

सबक़: खुदा की बताई हुई गाय के टुकड़े में अगर इतनी बर्कत है के मुर्दे से लग जाए तो वो ज़िन्दा हो जाए। तो जो खुदा के मक़बूल बन्दे हैं। उनके वजूद बाजूद में क्यों ना लाखों बर्कतें और करामतें होंगी और क्यों ना

उनके इशारे ही से मुर्दों को ज़िन्दगी मिलती होती?

ये भी मालूम हुआ के ज़ालिम लाख छुपा कर ज़ुल्म करे। मगर उसका पोल खुल कर ही रहेगा और जिस तरह हिकमत रब्बानी से बनी इस्राईल के मक़्तूल के क़ातिल का पता चल गया। इसी तरह कल कयामत के दिन हिकमते रब्बी से हर ज़ालिम का पता चल जाएगा। और ये भी मालूम हुआ के माँ का वजूद बड़ी नअेमत है और उसकी रज़ाई जोई से दीन व दुनिया की बहेतरी हासिल होती है और ये भी मालूम हुआ। के ये गाय मअबूद नहीं है। मअबूद सिर्फ़ अल्लाह ही है बनी इस्राईल ने चूँके सामरी के बनाए हुए गाय के बुत ही की पूजा की थी। इसलिए अल्लाह ने उन्हीं के हाथों एक गाय ही को ज़िबह कराया। ताके उन्हें पता चल जाए के असल मअबूद तो वो है। जो उस गाय को ज़िबह करने का हुक्म दे रहा है।

हिकायत नम्बर (87) हज़रत मूसा व हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने एक मर्तबा बनी इस्राईल में बड़ा फ़सीह व बलीग़ वाज़ फ़रमाया। और ये भी फ़रमाया। के इस वक़्त मैं बहुत बड़ा आलिम हूँ। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम का ये फ़रमाना खुदा को ना भाया और हज़रत मूसा से फ़रमाया। ऐ मूसा! तुम से ज़्यादा आलिम मेरा बन्दा ख़िज़्र है। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़्र से मुलाक़ात का शौक़ ज़ाहिर किया और खुदा से इजाज़त लेकर हज़रत ख़िज़्र को मिलने के लिए रवाना हो गए खुदा ने मदद फ़रमाई। और हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने ख़िज़्र अलेहिस्सलाम को पा लिया। और उनसे कहा के मैं आपके साथ रहना चाहता हूँ ताके आपके इल्म से मैं भी कुछ मुसतफ़ीद हूँ। हज़रत ख़िज़्र ने जवाब दिया के आप मेरे साथ रहकर कई ऐसी बातें देखेंगे के आप उन पर सब्र ना कर सकेंगे। हज़रत मूसा ने फ़रमाया। नहीं मैं सब्र करूँगा आप मुझे अपने साथ रहने दीजिए। ख़िज़्र अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। तो फिर मैं चाहे कुछ करूँ आप मेरी किसी बात में दखल ना दें। फ़रमाया! मंज़ूर है और आप साथ रहने लगे एक रोज़ दोनों चले और कश्ती पर सवार हुए। कश्ती वाले ने हज़रत ख़िज़्र को पहचान कर मुफ़्त बैठा लिया मगर हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम ने उसकी कश्ती को एक जानिब से तोड़ दिया और ऐबदार कर दिया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ये बात देखकर बोल उठे के जनाब ये आपने क्या किया? के एक ग़रीब शख़्स की जिसने बैठाया भी हमें मुफ़्त है। आपने कश्ती तोड़ दी।

हज़रत खिज़्र बोले। मूसा! मैं ना कहता था। के आप से सब्र ना हो सकेगा। और मेरी बातों में आप दखल दिए बग़ैर ना रह सकेंगे। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया ये मुझ से भूल हो गई है। आईंदा मोहतात रहूंगा। फिर चले तो रस्ते में एक लड़का मिला। हज़रत खिज़्र ने उस लड़के को क़त्ल कर डाला। हज़रत मूसा फिर बोल उठे। के ऐ खिज़्र! तुमने क्या किया? एक बच्चे को मार डाला। खिज़्र बोले। मूसा! आप फिर बोले जाईये! मेरा और आपका साथ मुश्किल है। हज़रत मूसा फ़रमाने लगे। एक बार और मौक़ा दीजिए अब अगर बोला। तो मुझे अलग कर देना। चुनाँचे फिर चले। तो एक ऐसे गाँव में पहुँचे। जिस गाँव के बाशिन्दों ने मूसा व खिज़्र अलेहिमाअस्सलाम को खाना तक ना पूछा। बल्के उन्होंने खाना तलब फ़रमाया तो उन्होंने इंकार कर दिया। उस गाँव में एक शिकस्ता मकान की दीवार गिरने वाली थी। हज़रत खिज़्र ने उस दीवार को अपने हाथ से सीधा कर के मज़बूती से क़ायम कर दिया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम नें देखा के ये गाँव वाले तो इतने बखील हैं के खाना तक देने को तैयार नहीं। और ये खिज़्र इस क़द्र शफ़्क़त पर उतर आए हैं के उनकी गिरने वाली दीवारें क़ायम करने लगे हैं। ये देखकर फिर बोल उठे के ऐ खिज़्र! अगर आप चाहते। तो इस दीवार के खड़ा कर देने की आप उनसे उजरत भी ले सकते थे। मगर आपने तो मुफ़्त काम कर दिया। हज़रत खिज़्र बोले मूसा बस अब मेरी और आपकी जुदाई है। लेकिन जुदा होने से पहले इन बातों की हिकमत भी सुनते जाईये। वो जो मैंने कश्ती को थोड़ा सा तोड़ दिया था उसकी हिकमत ये थी के दरया के दूसरे किनारे एक ज़ालिम बादशाह था जो हर साबत कश्ती ज़बरदस्ती छीन लेता था। मगर जिस कश्ती में कोई ऐब होता उसे नहीं छीनता था। कश्ती वाले को उस बात का इल्म ना था। मैं अगर कश्ती का कुछ हिस्सा ना तोड़ता। तो उस ग़रीब की सारी कश्ती छिन जाती और वो जो लड़का मैंने मार डाला। उसकी हिकमत ये थी के उसके माँ बाप मुसलमान थे और ये लड़का, मैं डरा के बड़ा होकर काफ़िर निकलेगा। और उसके माँ बाप भी उसकी मोहब्बत में दीन से फिर जाएँगे। तो मैंने इरादा कर लिया के उसके माँ बाप को अल्लाह उससे बेहतर लड़का दे। और उसे मैंने मार डाला। ताके उसके माँ बाप इस फ़ितने से महफ़ूज़ रहें। और मैंने गाँव में गिरने वाली दीवार को सीधा कर दिया। उसकी हिकमत ये थी के वो दीवार शहर के दो यतीम लड़कों की थी। और उसके नीचे उनका खज़ाना था। और बाप उनका बड़ा सालेह था तो रब की ये मर्ज़ी थी के दोनों बच्चे जवान हो जाएँ और अपना खज़ाना आप निकाल लें ये थी उनकी हिकमत जो आपने

देखीं। (कुरआन करीम पारा 16 रूकू 1, रूह-उल-बयान सफ़ा 494 जिल्द 1)

सबक़: दीन की बातों में ज़रूर कोई ना कोई हिकमत होती है और आदमी को इल्म की तलाश जारी रखनी चाहिए। चाहे वो कितना बड़ा आलिम क्यों ना हो। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दों को ये इल्म होता है। के फ़लाँ बच्चा बड़ा होकर मोमिन या काफ़िर होगा।

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दे जिस बात का इरादा कर लें। खुदा वैसे ही कर देता है क्योंके हज़रत खिज़्र अलेहिस्सलाम ने उस लड़के को क़त्ल कर के यूं फ़रमाया था। *"फ़आरदना अंयुब्दी लहमा रब्बुहुमा खेरम्म मिनहू"* पस हमने इरादा कर लिया। के उन दोनों का रब उन्हें उससे बेहतर अता फ़रमाए। चुनाँचे खुदा ने हज़रत खिज़्र अलेहिस्सलाम के इरादे के मुताबिक़ उन दोनों को उससे बेहतर बच्चा अता फ़रमा दिया।

हिकायत नम्बर (88) जानवरों की बोलियाँ

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के पास एक शख़्स हाज़िर हुआ और कहने लगा हुज़ूर! मुझे जानवरों की बोलियाँ सिखा दीजिए, मुझे इस बात का बड़ा शौक़ है। आपने फ़रमाया के तुम्हारा ये शौक़ अच्छा नहीं तुम इस बात को रहने दो उसने कहा। आपका इसमें क्या नुक़्सान है हुज़ूर मेरा एक शौक़ है उसे पूरा कर ही दीजिए। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ की के मौला ये बन्दा मुझ से इस बात का इसरार कर रहा है। इर्शाद फ़रमा के मैं क्या करूँ। हुक्म इलाही हुआ के जब ये शख़्स बाज़ नहीं आता तो तुम उसे जानवरों की बोलियाँ सिखा दो। चुनाँचे हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसे जानवरों की बोलियाँ सिखा दीं।

उस शख़्स ने एक मुर्ग़ और एक कुत्ता पाल रखा था एक दिन खाना खाने के बाद उसकी खादिमा ने दसतरख़्वान जो झाड़ा तो रोटी का एक टुकड़ा गिरा। उसका कुत्ता और मुर्ग़ दोनों उसकी तरफ़ लपके और वो रोटी का टुकड़ा उस मुर्ग़ ने उठा लिया। कुत्ते ने उस मुर्ग से कहा। अरे ज़ालिम मैं भूका था ये टुकड़ा मुझे खा लेने देता। तेरी खूराक तो दाना दुनका है मगर तूने ये टुकड़ा भी ना छोड़ा। मुर्ग़ बोला, घबराओ नहीं कल हमारे मालिक का ये बैल मर जाएगा तुम कल जितना चाहोगे उसका गोश्त खा लेना। उस शख़्स ने उनकी ये गुफ़्तगू सुन कर बैल को फ़ौरन बेच डाला वो बैल दूसरे दिन मर तो गया लेकिन नुक़्सान खरीदार का हुआ और ये शख़्स नुक़्सान से बच गया। दूसरे दिन कुत्ते ने मुर्ग़ से कहा बड़े झूटे हो तुम ख़्वाह-म-ख़्वाह

मुझे आज की उम्मीद में रखा बताओ कहाँ है वो बैल जिसे मैं खा सकूं मुर्ग़ ने कहा मैं झूटा नहीं हूँ हमारे मालिक ने नुक़सान से बचने के लिए वो बैल बैच डाला है और अपनी बला दूसरे के सर डाल दी है मगर लो सुनो कल हमारे मालिक का घोड़ा मरेगा, कल घोड़े का गोश्त जी भर कर खाना उस शख़्स ने ये बात सुनी और घोड़ा भी बेच डाला दूसरे दिन कुत्ते ने फिर शिकायत की तो मुर्ग़ बोला। भई क्या बताऊँ हमारा मालिक बड़ा बेवक़ूफ़ है जो अपनी आई ग़ैरों के सर डाल रहा है उसने घोड़ा भी बेच डाला और वो घोड़ा खरीदार के घर जाकर मर गया बैल और घोड़ा इसी घर में मरते तो हमारे मालिक की जान का फ़िदया बन जाते। मगर उसने उनको बेच कर अपनी जान पर आफ़त मोल ले ली। लो सुनो और यक़ीन करो के कल हमारा मालिक खुद ही मर जाएगा और उसके मरने पर जो खाने पकेंगे उसमें से बहुत कुछ खाना तुम्हें मिल जाएगा।

उस शख़्स ने जब ये बात सुनी तो होश उड़ गए के अब मैं क्या करूँ कुछ समझ में ना आया और दौड़ा दौड़ा हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम के पास आया और बोला। हुज़ूर मेरी ग़लती माफ़ फ़रमाईये और मौत से मुझे बचा लीजिए हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, नादान अब ये बात मुश्किल है आई क़ज़ा टल ना सकेगी, तुम्हें अब जो बात सामने आई है मुझे उसी दिन नज़र आ रही थी। जब तुम जानवरों की बोलियाँ सीखने पर इसरार कर रहे थे। चुनाँचे अब मरने के लिए तैयार हो जाओ चुनाँचे दूसरे दिन वो शख़्स मर गया। (मसनवी शरीफ़)

सबक़: मालो दौलत पर अगर कोई आफ़त नाज़िल हो और किसी क़िस्म का कोई नुक़्सान हो जाए तो इंसान को ग़म और शिकवा ना करना चाहिए बल्के अपनी जान का फ़िदया समझ कर अल्लाह का शुक्र ही अदा करना चाहिए। और ये समझना चाहिए के जो हुआ बेहतर हुआ अगर माल पर ये आफ़त नाज़िल ना होती तो मुमकिन है जान हलाकत मे पड़ जाती।

हिकयत नम्बर(89) तूफ़ान बाद

क़ौमे आद एक बड़ी ज़बरदस्त क़ौन थी जो इलाक़ा यमन के एक रेगिस्तान अहक़ाफ़ में रहती थी उन लोगों ने ज़मीन को फ़िस्क़ो फ़ुजूर से भर दिया था। और अपने ज़ोर व क़ुव्वत के ज़ोम में दुनिया की दूसरी क़ोमों को अपनी जफ़ा कारियों से पामाल कर डाला था ये लोग बुत परस्त थे। अल्लाह तआला ने उनकी हिदायत के लिए हज़रत हूद अलेहिस्सलाम को मबऊस

फ़रमाया आपने उनको दर्स तौहीद दिया और जोर व सितम से रोका तो वो लोग आपके मुनकिर और मुख़ालिफ़ हो गए और कहने लगे आज हम से ज़्यादा ज़ोर आवर कौन है? कुछ लोग हज़रत हूद अलेहिस्सलाम पर ईमान लाए मगर वो बहुत थोड़े थे क़ौम ने जब हद से ज़्यादा बग़ावत व शिक़ावत का मुज़ाहेरह किया और अल्लाह के पैग़म्बर की मुख़ालफ़त की तो एक सियाह रंग का अब्र आया जो क़ौमे आद पर छा गया। वो लोग देखकर खूश हुए के पानी की ज़रूरत है उससे पानी खूब बरसेगा। मगर उसमें से एक हवा चली वो इस शिद्दत से चली के ऊँटों और आदमियों को उड़ा उड़ा कर कहीं से कहीं ले जाती थी। ये देखकर वो लोग घरों में दाखिल हुए और दरवाज़े बन्द कर लिए। मगर हवा की तेज़ी से ना बच सके। उसने दरवाज़े भी उखेड़ दिए और उन लोगों को हलाक भी कर दिया। फिर क़ुद्रते इलाही से कुछ सियाह परिन्दे नमूदार हुए। जिन्होंने उनकी लाशों को उठा कर समुंद्र में फैंक दिया। हज़रत हूद अलेहिस्सलाम अपने चन्द मोमिनों को लेकर क़ौम से जुदा हो गए थे इसलिए वो सलामत रहे। (क़ुरआन करीम पारा 8, रूकू 18) (ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान, 231, रूह-उल-बयान, सफ़ा 237)

सबक़: खुदा से बग़ावत और उसके रसूल की नाफ़रमानी का एक नतीजा ये भी है के ये अनासिर अरबआ मिट्टी, पानी आग और हवा भी हमारे लिए अज़ाब बन जाते हैं।

हिकायत नम्बर (90) पत्थर की ऊँटनी

क़ौम आद की हलाकत के बाद क़ौम समूद पैदा हुई। ये लोग हिजाज़ व शाम के दरमियान इक़्ताअ में आबाद थे। उनकी उम्रें बहुत बड़ी होतीं। पत्थर के मज़बूत मकान बनाते। वो टूट फूट जाते। मगर मकीन बस्तूर बाक़ी रहते जब उस क़ौम ने भी अल्लाह की नाफ़रमानी शुरू की। तो अल्लाह ने उनकी हिदायत के लिए हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम को मबऊस फ़रमाया। क़ौम ने इंकार करना शुरू किया। बअज़ ग़रीब ग़रीब लोग आप पर ईमान ले आए उन लोगों का साल के बाद एक ऐसा दिन आता था। जिसमें ये मेले के तौर पर ईद मनाया करते थे। उसमें दूर दूर से आकर लोग शरीक होते। ये मेले का दिन आया तो लोगों ने हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम को भी इस मेले में बुलाया। हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम एक बहुत बड़े मजमअे में तबलीग़े हक़ की ख़ातिर तशरीफ़ ले गए। क़ौमे समूद के बड़े बड़े लोगों ने वहाँ हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम से ये कहा। के अगर आपका खुदा सच्चा है। और आप

उसके रसूल हैं तो हमें कोई मौजज़ा दिखलाईये आपने फ़रमाया। बोलो! क्या देखना चाहते हो। उनका सबसे बड़ा सरदार बोला। वो सामने जो पहाड़ी नज़र आ रही है। अपने रब से कहिये के उसमें से वो एक बहुत बड़ी ऊँटनी निकाल दे। जो दस महीने की हामला हो। हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम ने उस पहाड़ी के क़रीब आकर दो रकअत नमाज़ अदा की। और दुआ की। तो वो पहाड़ी लरज़ने लगी। और थोड़ी देर के बाद वो पहाड़ी शक़ हुई। और उसमें से सबके सामने एक ऊँटनी निकली। जो हामला थी। और फिर उसने उसी वक़्त बच्चा भी जना। इस वाक़ये से क़ौम में एक हैरत पैदा हुई। कुछ लोग मुसलमान हुए और बहतु से अपने कुफ़्र पर ही क़ायम रहे। (क़ुरआन करीम पारा 8 रूकू 17 रूह-उल-बयान सफ़ा 728 जिल्द 1)

सबक़: अम्बियाक्राम अलेहिमअस्सलाम के मोजज़ात बरहक़ हैं। और अल्लाह तआला हर बात पर क़ादिर है। अम्बिया अलेहिमअस्सलाम के मोजज़ात का इंकार काफ़िरों का ही काम है।

हिकायत(91) ठंडा चश्मा

हज़रत अय्युब अलेहिस्सलाम को अल्लाह ने हर तरह की नअेमतें अता फ़रमाई थीं हुस्ने सूरत भी। कसरत औलाद भी और कसरत अमवाल भी। अल्लाह तआला ने आपको इब्तला में डाला। और आपके फ़रज़ंद व औलाद मकान के गिरने से दबकर मर गए। तमाम जानवर जिनमें हज़ारहा ऊँट और हज़ारहा बकरियाँ थीं सब मर गए। तमाम खेतियाँ और बाग़ात बर्बाद हो गए। कुछ बाक़ी ना रहा। और जब आपको उन चीज़ों के हलाक होने और ज़ाए हो जाने की ख़बर मिलती। तो आप हम्द इलाही बजा लाते और फ़रमाते थे मेरा क्या है। जिसका था उसने ले लिया। जब तक मुझे दिया। मेरे पास रहा उसका शुक्र अदा नहीं हो सकता। मैं उसकी मर्ज़ी पर राज़ी हूँ। फिर आप बीमार हो गए बदन मुबारक पर आबले पड़ गए। जिस्म शरीफ़ सब ज़ख़्मों से भर गया। सब लोगों ने छोड़ दिया। बजुज़ आपकी बीबी साहिबा के के वो आपकी ख़िदमत करती रही और ये हालत कितनी मुद्दत तक रही। आख़िर एक रोज़ हज़रत अय्युब अलेहिस्सलाम ने अल्लाह से दुआ की। तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया। ऐ अय्युब! तू अपना पाँऊ ज़मीन पर मार। तेरे पेर मारने से एक ठंडा चश्मा निकल आएगा। उसका पानी पीना। और उससे नहाना। चुनाँचे हज़रत अय्युब अलेहिस्स्लाम ने अपना पाँऊ ज़मीन पर मारा तो एक ठंडा चश्मा निकल आया। जिससे आप नहाए और पानी पिया। तो आपका

तमाम मर्ज़ जाता रहा। (कुरआन करीम पारा 23 रूकू 12 खज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 464)

सबक़: अल्लाह वाले मसायब व आलाम और बीमारियों में घिर कर भी अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं। और उसका शिकवा नहीं करते और अल्लाह के मक़्बूलों के पाँऊ में भी ये बर्कत है। के वो पाँऊ मारें तो ऐसा चश्मा निकल आए जिसका पानी दाफ़ुअे अलबला हो फिर जो उन मक़्बूलाने हक़ के फ़यूज़ व बरकात का इंकार करता है। किस क़द्र जाहिल व बदबख़्त है।

हिकायत नम्बर (92) एक अज़ीमुश्शान हकूमत

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम को अल्लाह ने एक अज़ीमुश्शान हकूमत अता फ़रमाई थी और आपके बस में हवा कर दी थी। आप हवा को जहाँ हुक्म फ़रमाते थे। वो आप के तख़्त को उड़ा कर वहाँ पहुँचा देती थी (1, क़ुरआन करीम पारा 17 रूकू 6) और जिन्न व इंसान और परिन्दे सब आपके ताबअे और लश्करी थे (2, पारा 19 रूकू 17) आप हैवानात की बोलियाँ भी जानते थे (3, पारा 19 रूकू 17) हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम जब बैत-उल-मुक़द्दस की तामीर से फ़ारिग़ हुए तो आपने हरम शरीफ़ (मक्का मोअज़्ज़मा) पहुँचने का अज़्म फ़रमाया। चुनाँचे तैयारी शुरू हुई और आपने जिनों, इंसानों परिन्दों और दीगर जानवरों को साथ चलने का हुक्म दिया। हत्ता के एक बहुत बड़ा लश्कर तैयार हो गया। ये अज़ीम लश्कर तक़रीबन तीस मील में पूरा आया। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने हुक्म दिया तो हवा ने तख़्त सुलेमान को मअे उस लश्कर अज़ीम के उठाया। और फ़ौरन हरम शरीफ़ में पहुँचा दिया। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम हरम शरीफ में कुछ अर्सा ठहरे उस अर्से में आप मक्का मोअज़्ज़मा में हर रोज़ पाँच हज़ार ऊँट। पाँच हज़ार गाय और बीस हज़ार बकरियाँ ज़िबह फ़रमाते थे। और अपने लश्कर में हमारे हुज़ूर सय्यद-उल-अम्बिया सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की बशारत सुनाते रहे और यहीं से एक नबी अर्बी पैदा होंगे जिनके बाद फिर कोई और नबी पैदा ना होगा। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम कुछ अर्से के बाद मक्का मोअज़्ज़मा में मनासिक अदा फ़रमाने के बाद एक सुबह को वहाँ से चल कर सनआ मुल्क यमन में पहुँचे। मक्का मोअज़्ज़मा से सनआ का एक महीने का सफ़र है। और आप मक्का से सुबह को रवाना हुए। और सनआ ज़वाल के वक़्त पहुँच गए। आपने यहाँ भी कुछ अर्सा ठहरने का इरादा फ़रमाया। यहाँ पहुँच कर परिन्दा हुद हुद एक रोज़ ऊपर उड़ा और बहुत ऊपर

जा पहुँचा और सारी दुनिया के तूल व अर्ज़ को देखा। उसको एक सरसब्ज़ बाग़ नज़र आया ये बाग़ मल्का बिलक़िस का था। उसने देखा के उस बाग़ नें एक हुद हुद बैठा है हज़रत सुलमोन अलेहिस्सलाम के हुद हुद का नाम यअफ़ूर था। यअफ़ूर और यमनी हुद हुद की हस्बे ज़ेल गुफ़्तगू हुई।

यमनी हुद हुदः भई तुम कहाँ से आए और कहाँ जाओगे?

यअफ़ूरः मैं मुल्क शाम से, अपने बादशाह सुलेमान के साथ आया हूँ।

यमनी हुद हुदः सुलेमान कौन है?

यअफ़ूरः वो जिनों, इंसानों, शयातीन, परिन्दों, जानवरों और हवा का एक अज़ीमुश्शान फ़रमानरवा और सुलतान है उसमें बड़ी ताक़त है हवा उसकी सवारी है। और हर चीज़ उसकी ताबअे है। अच्छा तुम बताओ के तुम किस मुल्क के हो।

यमनी हुद हुदः मैं इसी मुल्क का रहने वाला हूँ। हमारे इस मुल्क की बादशाह एक औरत है। जिसका नाम बिलक़िस है। उसके मातहत बारह हज़ार सिपह सालार हैं। और हर सिपह सालार के मातहत एक एक लाख सिपाही है फिर उसने यअफ़ूर से कहा। तुम मेरे साथ एक अज़ीम एक अज़ीम मुल्क और लश्कर देखने चलोगे?

यअफ़ूरः भई मेरे बादशाह सुलेमान अलेहिस्सलाम की नमाज़े अस्र का वक़्त हो रहा है। और उन्हें वज़ू लिए पानी दरकार होगा। और पानी की जगह बताने पर मैं मामूर हूँ। अगर देर हो गई तो वो नाराज़ होंगे।

यमनी हुद हुदः नहीं बल्के यहाँ के मुल्क और फ़रमानरवा बिलक़िस की मुफ़स्सिल ख़बर सुन कर खूश होंगे।

यअफ़ूरः अच्छा तो चलो।

(दोनों उड़ गए। और यअफ़ूर मुल्क यमन को देखने लगा)

और इधर हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलमा ने नमाज़ अस्र के वक़्त हुद हुद को तलब फ़रमाया। तो वो ग़ैर हाज़िर निकला। आप बड़े जलाल में आ गए। और फ़रमाया। क्या हुआ। के मैं हुद हुद को नहीं देखता। या वो वाक़ई हाज़िर नहीं ज़रूर मैं उसे सख़्त अज़ाब करूंगा। या ज़िबह करूंगा। या कोई रोशन सनद मेरे पास लाए। (क़ुरआन करीम पारा 19 रूकू 71)

और फिर अक़ाब को हुक्म दिया। के वो उड़ कर देखे। के हुद हुद कहाँ है? चुनाँचे अक़ाब उड़ा। और बहुत ऊपर पहुँच कर सारी दुनिया को इस तरह देखने लगा। जिस तरह आदमी अपने हाथ के पियाले को देखता है। अचानक उसे हुद हुद यमन की तरफ़ से आता हुआ दिखाई दिया। अक़ाब फ़ौरन उसके

पास पहुँचा और कहा ग़ज़ब हो गया। अपनी फ़िक्र कर ले अल्लाह के नबी सुलेमान ने तुम्हारे लिए क़सम खा ली है। के मैं हुद हुद को सख़्त सज़ा दूंगा। या ज़िबह कर दूंगा"

हुद हुद ने डरते हुए पूछा। और अल्लाह के नबी ने उस हलफ़ में किसी बात का इसतसना भी फ़रमाया है या नहीं? अक़ाब ने कहा। हाँ ये फ़रमाया है के "या कोई रोशन सनद मेरे पास लाए।"

हुद हुद ने कहा तो फिर मैं बच गया। मैं उनके लिए एक बहुत बड़ी ख़बर लेकर आया हूँ। फिर अक़ाब और हुद हुद दोनों बारगाहे सुलेमानी में हाज़िर हुए हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने रौब व जलाल में फ़रमाया। "हुद हुद को हाज़िर करो"

हुद हुद बेचारा दमबखुद, अपनी दुम नीचे किए हुए पर ज़मीन से मलता हुआ और कांपता हुआ हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के क़रीब आया। तो हज़रत सुलेमान ने उसको सर से पकड़ कर अपनी तरफ़ घसीटा। उस वक़्त हुद हुद ने कहा: *उज़्कुरू कूफ़ाका बेना यदायिल्लाही* "हुज़ूर! अल्लाह के सामने अपनी हाज़री को याद कर लीजिए"

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने ये बात सुनकर उसे छोड़ दिया और उसे माफ़ फ़रमा दिया। फिर हुद हुद ने अपनी ग़ैर हाज़री की वजह बयान की। और बताया के मैं एक बहुत बड़ी मल्का को देखकर आया हूँ। खुदा ने उसे हर क़िस्म का सामान ऐश व इशरत दे रखा है और वो सूरज की पुजारिन है: *वलाहा अरशुन अज़ीम* और उसका एक बहुत बड़ा तख़्त है।

रिवायत है के ये तख़्त सोने और चाँदी का बना हुआ था और बड़े बड़े जवाहरात से मरसअे था। बिलक़िस ने एक मज़बूत घर बनवाया था। जिस घर में दूसरा घर था। फिर उस घर के अन्दर तीसरा घर था। और फिर तीसरे घर के अन्दर चौथा घर था। उसी तरह फिर उसमें पाँचवाँ और पाँचवें में छटा और छटे में सातवाँ घर था। उस सातवें घर में वो तख़्त मुक़फ़्फ़िल था और सात ही ग़िलाफ़ उस तख़्त में चढ़ा रखे थे और उस तख़्त के चार अदद पाए थे। एक पाया सुर्ख़ याक़ूत का। दूसरा ज़र्द याक़ूत का। तीसरा सब्ज़ ज़रमुर्द का और चौथा सफ़ेद मोती का था। ये तख़्त अस्सी (80)गज़ लम्बा। चालीस (40) गज़ चौड़ा और तीस (30) गज़ ऊँचा था बिलक़िस सातवें घर के अन्दर रखे हुए उस तख़्त अज़ीम पर बैठा करती थी। हर घर के बाहर सख़्त पहरा था। और बिलक़िस तक पहुँचना एक दुश्वार अम्र था।

हुद हुद ने जब सुलेमान अलेहिस्सलाम को बिलक़िस की बात सुनाई

तो सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मेरा एक ख़त ले जाओ और बिलक़िस को पहुँचा आओ। चुनाँचे आपने एक ख़त लिखा। जिस पर *बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम* लिख कर लिखाः *अन्ला तअलू अलय्या व आतूनी मुस्लिमीन* "मेरे मामले में बड़ाई ज़ाहिर ना करो। और मुसलमान बन कर मेरे हुज़ूर हाज़िर हो जाओ।" और उस ख़त पर शाही मोहर सब्त करके हुद हुद को दे दिया। हुद हुद गया और सातों क़िलों के पहरों से बेनियाज़ होकर नबी का ये चिठ्ठी रसाँ रोशन दानों में से गुज़रता हुआ बिलक़िस तक जा पहुँचा बिलक़िस उस वक़्त सो रही थी। हुद हुद वो ख़त बिलक़िस के सीने पर रख कर बाहर निकल आया।

बिलक़िस जब उठी तो ये ख़त पाकर घबराई। और अयाने सल्तनत से मशवरह तलब किया। के क्या किया जाए? वो बोले के आप डरती क्यों हैं? हम ज़ोर वाले और लड़ने में माहिर हैं। सुलेमान अगर लड़ना चाहता है तो लड़े। हम शिकस्त तसलीम नहीं करते। आईंदा जो आपकी मर्ज़ी बिलक़िस ने कहा। के जंग अच्छी चीज़ नहीं बादशाह जब किसी शहर में अपने ज़ोर क़ुव्वत से दाख़िल होते हैं तो उसे तबाह कर देते हैं मेरा ख़याल है के मैं सुलेमान की तरफ़ एक तोहफ़ा भेजूं और फिर देखूं के सुलेमान उसे क़बूल करते हैं या नहीं? अगर वो बादशाह हैं तो तोहफ़ा क़बूल कर लेंगे। और अगर नबी हैं तो मेरा ये तोहफ़ा क़बूल ना करेंगे बजुज़ इसके के उनके दीन का इत्तिबा किया जाए।

चुनाँचे बिलक़िस ने पाँच सौ ग़ुलाम और पाँच सौ बांदियाँ बेहतरीन रेशमी लिबास और ज़ेवरात के साथ आरास्ता करके उन्हें एसे घोड़ों पर बैठाया जिनकी काठियाँ सोने की और लगामें जवाहरात से मरसअ थीं। और एक हज़ार सोने और चाँदी की ईंटें और एक ताज जो बड़े बड़े क़ीमती मातियों से मुज़य्यन था। वग़ैरा वग़ैरा मअ एक ख़त के अपने क़ासिद के साथ रवाना किए।

हुद हुद देख कर चल दिया। और सुलेमान अलेहिस्सलाम को सारा क़िस्सा सुना दिया। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने अपने जिनी लश्कर को हुक्म दिया। के सोने चाँदी की ईंटें बना कर छः मील तक इनहीं ईंटों की सड़क बना दी जाए और सड़क के इधर उधर सोने और चाँदी की बुलंद दीवारें खड़ी कर दी जाएँ और समुंद्र के जो खूबसूरत जानवर हैं। इसी तरह खुश्की के भी जो खूबसूरत जानवर हैं वो सब हाज़िर किए जाएँ। चुनाँचे आपके हुक्म की तअमील फ़ौरन की गई। छः मील सोने चाँदी की सड़क बन गई

उस सड़क के दोनों तरफ़ सोने चाँदी की दीवारें भी बन गईं और खुश्की व तरी के खूबसूरत जानवर भी हाज़िर कर दिए गए। और फिर हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने अपने तख़्त की दायें जानिब चार हज़ार सोने की कुर्सियाँ और बायें जानिब भी चार हज़ार सोने की कुर्सियाँ रखवाईं और उन पर अपने मुक़र्रबीन व ख़्वास को बिठाया। और अपने जिनी लश्कर और इंसानी लश्कर को दूर दूर तक सफ़ ब सफ़ खड़ा कर दिया। और वहशी जानवरों, और दरिन्दों और चोपायों को भी सफ़ ब सफ़ खड़ा कर दिया। इस क़िस्म का शाही दबदबा और जलाल और इस शान व शौकत की हकूमत चश्मे फ़लक ने कभी देखी ही ना थी।

बिलक़िस का क़ासिद अपने ज़ओम में बड़ा क़ीमती तोहफ़ा ला रहा था। जब उसने सोने चाँदी की बनी हुई सड़क पर क़दम रखा। और इर्दगिर्द सोने चाँदी की दीवारें देखीं और फिर सुलेमान अलेहिस्सलाम की जाह व इज़्ज़त और शान व शौकत के नज़ारे देखे तो उसका दिल धक धक करने लगा। और शर्म के मारे पानी पानी हो गया और सोचने लगा के मैं ये बिलक़िस का तोहफ़ा किस मुंह से सुलेमान की ख़िदमत में पेश करूंगा। बहरहाल जब वो बारगाहे सुलेमानी में पहुँचा। तो हज़रत ने फ़रमाया। क्या तुम लोग माल दुनिया से मेरी मदद कना चाहते हो तुम लोग अहले मफ़ाख़्रत हो। दुनिया पर फ़ख़्र करते हो। एक दूसरे के तोहफ़े व हदिये पर खूश होते हो। मुझे ना दुनिया से खूशी होती है। ना उसकी हाजत है। अल्लाह तआला ने मुझे बहुत कुछ दे रखा है और इतना कुछ दिया है। लिहाज़ा ऐ बिलक़िस के क़ासिद पलट जा। और ये अपना तोहफ़ा ले जाओ अपने साथ ही और जाकर कह दो। के अगर वो मुसलमान होकर हमारे हुज़ूर हाज़िर नहीं होती। तो हम उस पर लश्कर लायेंगे। के उसके मुक़ाबले की उसे ताक़त ना होगी। और हम उसे ज़लील करके शहर से निकाल देंगे।

बिलक़िस का क़ासिद पैग़ाम ले कर वापस पलटा। और बिलक़िस से सारा क़िस्सा तफ़्सील से कहा। बिलक़िस ने ग़ौर से सुना। और बोली। बेशक वो नबी है और उससे मुक़ाबला करना हमारे बस का काम नहीं। फिर उसने अयाने सलतनत से मशवरह तलब करने के बाद हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम की ख़िदमत में खुद हाज़िर होने का इरादा कर लिया। हुद हुद ने ये सारी रिपोर्ट हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम तक पहुँचा दी। और हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने भरे दरबार में ये एलान फ़रमायाः

अय्युकुम यातिनी बिअरशिहा क़ब्ला अंयातूनी मुसलिमीन "कौन

है जो बिलक़िस के यहाँ पहुँचने से पहले पहले उसका तख़्त यहाँ ले आए।"

अफ़रीयत नामी एक जिन्न उठा। और बोलाः *अना आतिका बिही क़ब्ला अन तक़ूमा मिन्मक़ामिक़ा* "आपके इजलास बर्ख़ास्त होने से पहले पहले मैं ले आऊँगा।"

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। हम उससे भी ज़्यादा जल्दी मंगवाना चाहते हैं।

तो फिर एक आलिमे किताब उठा। और बोला।

अना आतिका बिही क़ब्ला अंयरतद्दा इलेका तरफ़ूका

"मैं एक पल मारने से भी पहले ले आऊँगा।"

ये कहा और पल की पल में वो तख़्त ले भी आया। और सुलेमान ने देखा तो तख़्त सामने रखा था। फिर बिलक़िस ने हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम की बारगाह में हाज़िर हुई और हज़रत की शान व शौकत और सदाक़त व नबूव्वत का नज़ारा करके मुसलमान हो गई। (हैवा अलहैवान सफ़ा 305 जिल्द 2 रूह-उल-बयान सफ़ा 896 जिल्द 2)

सबक़: हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के दरबार, और बिलक़िस के तख़्त के मुक़ाम का दरमियानी फ़ासला दो महीना का राह का था। और तूल व अर्ज़ उसका आप पढ़ चुके। के तीस गज़ के तीस गज़ ऊँचा। चालीस गज़ चौड़ा और अस्सी गज़ लम्बा था। इतनी तवील मुसाफ़ और इतने वज़नदार होने और इतने महफ़ूज़ मुक़ाम में होने के बावजूद सुलेमान अलेहिस्सलाम का एक सिपाही उसे पल भर में ले आया। तो फिर जो सुलेमान अलेहिस्सलाम के आक़ा व मौला हुज़ूर सय्यद-उल-अम्बिया सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के औलिया उम्मत हैं वो क्यों दूर दराज़ की मुसाफ़त से किसी मज़लूम की एआनत व हिमायत को नहीं पहुँच सकते?

2- वो आलिमे किताब वो तख़्त लाने के लिए भरे दरबार से बिलक़िस के महल में गया। और वहाँ से तख़्त उठा कर वापस आया। मगर इस अर्से में वो हज़रत सुलेमान के दरबार से ग़ायब भी नहीं हुआ। और मुक़ाम तख़्त तक भी पहुँच गया। मालूम हुआ के अल्लाह वालों में ये ताक़त है के वो एक ही वक़्त में मुतअद्दिद जगह हाज़िर हो सकते हैं और ये ताक़त हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के एक सिपाही की है। फिर जो हज़रत सुलेमान के भी आक़ा व मौला सल-लल्लाहो अलेह सल्लम हैं उनका एक वक़्त में मुतअद्दिद जगह तशरीफ़ फ़रमा होना क्यों मुमकिन नहीं?

3- हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के उस सिपाही ने दो महीने की राह

को पल भर में तय कर लिया। और पल भर में चला भी गया। और आ भी गया। फिर हुजूर सय्यद–उल–अम्बिया सल–लल्लाहो अलेह व सल्लम का शबे मैराज पल भर में अर्श पर तशरीफ़ ले जाना। और वापस तशरीफ़ ले आना क्यों मुमकिन नहीं?

4- तख़्त सुलेमान अलेहिस्सलाम को मअे एक लश्कर अज़ीम के हवा उठा लेती थी ये "नबी" का तसर्रूफ़ व इख़्तियार है। और जो अम्बिया को अपनी मिस्ल बशर कहते हैं उनमें से कोई साहब ज़रा अपनी बीवी समेत ही किसी छत से हवा में छिलांग लगाकर दिखाएँ। ताके दूसरे को इब्रत हासिल हो।

5- हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम हरम शरीफ़ में पहुँच कर हर रोज़ पाँच हज़ार ऊँट पाँच हज़ार गाय और बीस हज़ार बकरियाँ ज़िबह फ़रमाते रहे। मगर एक फ़िर्क़ा आज कल ऐसा भी है। जो अय्यामे हज में एक बकरी तक की क़ुर्बानी को भी फ़िज़ूल कहता है और मुसलमानों को इस शरई अम्र से रोकता है।

6- जिन्नो इन्स, वहीश व तियूर, खुश्की और तरी के हैवानात और दीगर अल्लाह की ज़बरदस्त मख़्लूक़ भी सुलेमान अलेहिस्सलाम की ताबअे थी। और आज जो लोग अम्बिया को अपनी मिस्ल बशर कहते हैं। उनके घर की तरफ़ नज़र दौड़ाईये। तो उनकी बीवी भी उनके ताबअे नहीं। फ़यालुलअजब!

हिकायत नम्बर (93) सुलेमान अलेहिस्सलाम का फ़ैसला

हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम की अदालत में दो शख़्स हाज़िर हुए, एक ने ये दावा किया। के उस दूसरे शख़्स की बकरियाँ रात को मेरे खेत में घुस गईं और उन्होंने मेरा सारा खेत खा लिया है। हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम ने ये फ़ैसला दिया के सब बकरियाँ खेत वाले को दे दी जाएँ उन बकरियों की क़ीमत खेत के नुक़्सान के बराबर थी। जब वो दोनों शख़्स वापस हुए। तो हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम से रास्ते में मुलाक़ात हो गई। उन दोनों ने सुलेमान अलेहिस्सलाम को हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम का फ़ैसला सुनाया। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। इस फ़ैसले से बेहतर एक और फ़ैसला भी है। उस वक़्त हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ ग्यारह बरस की थी। हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम ने जो सलेमान अलेहिस्सलाम के वालिद थे। जब

अपने साहबज़ादे की ये बात सुनी तो सुलेमान अलेहिस्सलाम को बुला कर दरयाफ़्त फ़रमाया। के बेटा! वो कौन सा फ़ैसला है जो बेहतर है? सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। वो ये है के बकरियों वाला उस खेत की काश्त करे और जब तक खेती इस हालत को पहुँचे। जिस हालत में बकरियों ने खाई है उस वक़्त तक खेती वाला बकरियों के दूध वग़ैरा से फ़ायदा उठाए और खेती उस हालत में पहुँच जाने के बाद खेती वाले को खेती वापस कर दी जाए। बकरियों वाले को उसकी बकरियाँ वापस कर दी जाएँ। ये फ़ैसला हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम ने भी पसंद फ़रमाया। (क़ुरआन करीम पारा 17 रूकू 6 रूह-उल-बयान सफ़ा 652 जिल्द 2)

सबक़: हज़रत दाऊद हज़रत सुलेमान अलेहिम अस्सलाम के ये दोनों फ़ैसले अज़रूए इजतहाद थे। मालूम हुआ। के! इजतहाद करना अम्बियाक्राम अलेहिम अस्सलाम की सुन्नत है।

हिकायत नम्बर(94) माँ की मामता

हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम के ज़माने में दो औरतें थीं। दोनों की गोद में दो बेटे थे। वो दोनों कहीं जा रही थीं के रास्ते में एक भेड़िया आया। और एक का बच्चा उठा कर ले गया। वो औरत जिसका बच्चा भेड़िया उठा कर ले गया था। दूसरी औरत के बच्चे को छीन कर बोली के ये बच्चा मेरा है। भेड़िया तेरे बच्चे को उठा कर ले गया है। बच्चे की माँ ने कहा। बहन अल्लाह से डर। ये बच्चा तो मेरा है। भेड़िये ने तेरे बच्चे को उठाया है। उन दोनों में जब झगड़ा बढ़ गया। तो दोनों हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम की अदालत में हाज़िर हुईं। हज़रत दाऊद अलेहिस्सलाम ने वो बच्चा बड़ी औरत को दिला दिया, हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम को इस बात की ख़बर हुई। तो आपने फ़रमाया। अब्बा जान! एक फ़ैसला मेरा भी है और वो ये है के छुरी मंगवाई जाए मैं उस बच्चे के दो टुकड़े करता हूँ। और आधा बड़ी को और आधा छोटी को दे देता हूँ। ये फ़ैसला सुनकर बड़ी तो ख़ामोश रही। और छोटी बोली। के हुज़ूर! आप बच्चा बड़ी को ही दे दें लेकिन ख़ुदारा बच्चे के टुकड़े ना कीजिए। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। बच्चा इसी छोटी का है। जिसके दिल में शफ़्क़त मादरी पैदा हो गई चुनाँचे वो बच्चा छोटी को दे दिया गया। (फ़तह-अल-बारी सफ़ा 268 जुज़ 12 मिश्कात शरीफ़ सफ़ा 500)

सबक़: इजतिहाद के साथ बड़े बड़े मुश्किल मसायल हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(95) सुलेमान अलेहिस्सलाम और मलक-उल-मौत

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के दरबार आली में एक आदमी घबराया हुआ हाज़िर हुआ और अर्ज़ करने लगा। हुज़ूर हवा को हुक्म दीजिए। के मुझे सरज़मीन हिन्द में पहुँचा दे। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। बात क्या हुई। यहाँ से क्यों जाना चाहते हो वो कहने लगा। हुज़ूर! अभी अभी मैंने मलक-उल-मौत को देखा है जो मुझे घूर घूर कर देख रहा था। वो देखिये वो मुझे घूर रहा है। हुज़ूर! मेरी ख़ैर नहीं मुझे अभी हिन्द पहुँचा दीजिए। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने हवा को हुक्म दिया। तो हवा फ़ौरन उसको हिन्द छोड़ आई। थोड़ी देर के बाद मलक-उल-मौत हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम के पास आया और अर्ज़ करने लगा। हुज़ूर! सुना आपने उस आदमी का क़िस्सा? खुदा का मुझे हुक्म था। के उस शख़्स की जान सर ज़मीन हिन्द में क़ब्ज़ करो। मैं हैरान था। के उसकी जान हिन्द में क़ब्ज़ करने को फ़रमाया गया है। और ये यहाँ आपके पास खड़ा है। मैं इसी हैरानी में उसे देख रहा था। के खुद ही उसने हिन्द जाने की तमन्ना ज़ाहिर कर दी। चुनाँचे इधर आपने हवा को हुक्म दिया और वो उड़ा कर हिन्द ले गई और उधर मैं उसके पीछे गया। और जिस वक़्त वो सर ज़मीन हिन्द पर उतरा है। उसका वक़्त आ चुका था। उसी वक़्त मैंने वहाँ उसकी जान क़ब्ज़ कर ली। (मसनवी शरीफ़)

सबक़: मौत से भागना मुश्किल है जहाँ पहुँचो ये आ जाएगी।

हिकायत(96) सौतेली बेटी

हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने ज़माना में एक बादशाह था। जिसकी बीवी किसी क़द्र बूढ़िया थी। उस बूढ़िया की पहले ख़ाविंद से एक नौजवान लड़की थी। बूढ़िया को ये ख़ौफ़ हुआ के मैं तो बूढ़िया हो गई हूँ। ऐसा ना हो। के ये बादशाह किसी ग़ैर औरत से शादी कर ले। और मेरी सल्तनत जाती रहे इसलिए ये बेहतर है के अपनी जवान लड़की से उसका उक़्द कर दूं। इस ख़याल से एक दिन शादी का इन्तिज़ाम करके हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम को बुला कर पूछा के मेरा ये इरादा है। हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने फ़रमया के ये निकाह हराम है। जायज़ नहीं। ये फ़रमा कर आप वहाँ से तशरीफ़ ले आए। इस बद ख़याल दुनियादार बूढ़िया को बहुत गुस्सा आया। और आपकी दुश्मन हो गई। रात दिन आपके क़त्ल करने का फ़िक्र करती

थी। एक दिन मौक़ा पाकर बादशाह को शराब पिला कर अपनी बेटी को बना कर संवार कर बादशाह के पास ख़लवत में भेज दिया। जब बादशाह अपनी सौतेली बेटी की तरफ़ राग़िब हुआ। तो बूढ़िया ने कहा के मैं इस काम को खूशी से मंज़ूर करती हूँ। मगर याहिया इजाज़त नहीं देते। बादशाह ने हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम को बुला कर पूछा। हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया के ये तुम्हारी हक़ीक़ी बेटी की तरह तुम पर हराम है। बादशाह ने जल्लाद को हुक्म दिया के याहिया को ज़िबह कर दो। फ़ौरन जल्लादों ने हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम को शहीद कर दिया। शहीद होने के बाद भी हज़रत याहिया के सर अनवर से आवाज़ आई। के ऐ बादशाह ये औरत तुझ पर हराम है। ऐ बादशाह ये औरत तुझ पर हराम है। ऐ बादशाह ये औरत तुझ पर हमेशा के लिए हराम है। (सीरत-उल-सालेहीन स80)

सबक़: फ़ासिक़ व फ़ाजिर हाकिम अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तकमील के लिए बड़े बड़े मज़ालिम ढहाते हैं और फ़ासिक़ा व फ़ाजिरा औरतों के खूश करने की ख़ातिर अल्लाह के प्यारों के दरपैय आज़ार हो जाते हैं। और अल्लाह वाले पैग़ामे हक़ पहुँचाने में जान तक की भी परवाह नहीं करते।

हिकायत नम्बर(97) तेरह सौ साल(1300) की उम्र का बादशाह

हज़रत दानयाल अलेहिस्सलाम एक दिन जंगल में चले जाते थे। आपको एक गुंबद नज़र आया। आवाज़ आई। के ऐ दानयाल! इधर आ। दानयाल अलेहिस्सलाम उस गुंबद के पास गए। मालूम हुआ के किसी मक़्बरे का गुंबद है जब आप मक़्बरे के अन्दर तशरीफ़ ले गए तो देखा। बड़ी उम्दा इमारत है और इमारत के बीच एक आलीशान तख़्त बिछा हुआ है। उस पर एक बड़ी लाश पड़ी है फिर आवाज़ आई। के दानयाल तख़्त के ऊपर आओ। आप ऊपर तशरीफ़ ले गए। तो एक लम्बी चौड़ी। तलवार मुर्दे के पहलू में रखी हुई नज़र आई। उस पर ये इबारत लखी हुई नज़र आई। के मैं क़ौमे आद से एक बादशाह हूँ। खुदा ने तेरा सौ साल की मुझे उम्र अता फ़रमाई। बारह हज़ार मैंने शादियाँ कीं। आठ हज़ार बेटे हुए ला तअदाद ख़ज़ाने मेरे पास थे इस क़द्र नअेमतें लेकर भी मेरे नफ़्स ने खुदा का शुक्र ना किया। बल्के उल्टा कुफ़्र करना शुरू किया। और खुदाई दअवे करने लगा। खुदा ने मेरी हिदायत के

लिए एक पैग़म्बर को भेजा। हर चन्द उन्होंने मुझे समझाया। मगर मैंनें कुछ ना सुना। अंजाम कार वो पैग़म्बर मुझे बददुआ दे कर चले गए। हक़ तआला ने मुझ पर और मेरे मुल्क पर क़हेत मुसल्लत कर दिया। जब मेरे मुल्क में कुछ पैदा ना हुआ। तब मैंने दूसरे मुल्कों में हुक्म भेजा। के हर एक किस्म का ग़ल्लह और मेवा मेरे मुल्क में भेजा जाए। बमौजिब मेरे हुक्म के हर क़िस्म का ग़ल्लह और मेवा मेरे मुल्क में आने लगा जिस वक़्त वो ग़ल्लह या मेवा मेरे शहर की सरहद में दाख़िल होता है। फ़ौरन मिट्टी बन जाता और वो सारी मेहनत बेकार जाती। और कोई दाना मुझे नसीब ना होता। इसी तरह सात दिन गुज़र गए। मेरे क़िले से सारे अहाली मवाली बीवियाँ बच्चे सब भाग गए। मैं तनहा क़िले में रह गया। सिवाए फ़ाक़ह के मेरी कोई ग़िज़ा ना थी। एक दिन मैं निहायत मजबूर होकर फ़ाक़ह की तकलीफ़ में किले के दरवाज़े पर आया। वहाँ मुझे एक शख़्स नज़र आया। जिसके हाथ में कुछ ग़ल्लह के दाने थे जिनको वो खाता चला जाता था। मैंने उस जाने वाले से कहा के एक बड़ा बर्तन भरा हुआ मोतियों का मुझ से ले ले और ये अनाज के दाने मुझे दे दे मगर उसने ना सुना। और जल्दी से उन दानों को खा कर मेरे सामने से चला गया अंजाम ये हुआ। के इस फ़ाक़ह की तकलीफ़ से मैं मर गया। ये मेरी सरगुज़िश्त है जो शख़्स मेरा हाल सुने। वो कभी दुनिया के क़रीब ना आए। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 79)

सबक़: खुदा से हर क़िस्म की नअेमत पाकर फिर उसकी नाशुक्री करना। इन्तेहाई नाआक़्बत अनदेशी है। और अल्लाह की नाशुक्री से भूक, फ़ाक़ह, क़हेत और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बलायें नाज़िल होती हैं। और ये भी मालूम हुआ के इंसान चाहे कितनी बड़ी उम्र पाए। एक दिन उसने मरना ज़रूर है।

हिकायत नम्बर (98) बेसिबाती दुनिया

बनी इस्राईल के एक नोजवान आबिद के पास हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम तशरीफ़ लाया करते थे। ये बात उस वक़्त के बादशाह ने सुनी तो उस नोजवान आबिद को बुलाया और पूछा के क्या बात सच है के तुम्हारे पास हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम आया करते हैं? उसने जवाब दिया के हाँ, बादशाह ने कहा। अब जब वो आयें तो उन्हें मेरे पास लेकर आना। अगर ना लाओगे। तो मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा। चुनाँने एक दिन हज़रत ख़िज़्र अलेहिस्सलाम उस आबिद के पास तशरीफ़ लाए। तो आबिद ने उनसे सारा वाक़ेयां अर्ज़ कर

दिया। आपने फ़रमाया चलो उस बादशाह के पास चलते हैं। चुनाँचे आप उस बादशाह के पास तशरीफ़ ले गए। बादशाह ने पूछा। क्या आप ही ख़िज़्र हैं? फ़रमाया हाँ! बादशाह ने कहा। तो हमें कोई बड़ी अजीब बात सुनाईये। फ़रमाया मैंने दुनिया की बड़ी बड़ी अजीब बातें देखी हैं। मगर उनमें से एक सुनाता हूँ। लो सुनो!

मैं एक दफ़ा एक बहुत बड़े खूबसूरत और आबाद शहर से गुज़रा मैंने उस शहर के एक बाशिन्दे से पूछा। ये शहर कब से बना है? तो उसने कहा। ये शहर बहुत पुराना शहर है। इसकी इब्तिदा का ना मुझे इल्म है। और ना हमारे आबाओ अज्दाद को। खुदा जाने कब से ये शहर यूं ही आबाद चला आ रहा है। फ़िर मैं पाँस सौ साल के बाद इसी जगह से गुज़रा तो वहाँ शहर का नाम व निशान तक ना था। एक जंगल था और वहाँ एक आदमी लकड़ियाँ चुन रहा था। मैंने उससे पूछा ये। शहर कब से बर्बाद हो गया है? वो मुझे देखकर हंसा और कहा। यहाँ शहर था ही कब? ये जगह तो मुद्दतों से जंगल चली आ रही है। हमारे आबाओ अज्दाद ने भी यहाँ जंगल ही देखा है पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा तो वहाँ एक अज़ीम-मुश्शान दरया बह रहा था। और किनारे पर चन्द शिकारी बैठे थे। मैंने उनसे पूछा ये जंगल दरया कब से बन गया है? तो वो लोग मुझे देख कर कहने लगे आप जैसा आदमी ऐसा सवार करे? यहाँ तो हमेशा ही से दरया बहता चला आ रहा है मैंने पूछा। क्या इससे पहले ये जगह जंगल ना थी? वो कहने लगे हर गिज़ नहीं ना हम ने देखी। और ना ही अपने आबाओ अज्दाद से सुनी। फ़िर मैं पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा। तो वो जगह एक बहुत बड़ां चटयल मैदान देखा। जहाँ एक आदमी को फिरते देखा। मैंने उससे पूछा। ये जगह खुश्क कब से हो गई? वो बोला के ये जगह तो हमेशा से यूंही चली आती है मैंने पूछा। यहाँ क़भी दरया नहीं बहता था? उसने कहा। ऐसा ना कभी देखा ना अपने आबाओ अज्दाद से सुना। फिर मैं पाँच सौ साल के बाद वहाँ से गुज़रा तो वहाँ एक अज़ीम-मुश्शान शहर आबाद देखा। जो पहले शहर से भी ज़्यादा खूबसूरत और आबाद था। मैंने एक बाशिन्दे से पूछा ये शहर कब से है? वो बोला ये शहर पुराना है। इसकी इब्तिदा का ना हमें इल्म है ना हमारे आबाओ अज्दाद को। (अजायब-उल-मख़लूक़ात-उल-क़ज़्वीनी सफ़ा 129 जिल्द 1)

सबक़: इस दुनिया को सिबात नहीं है। ये हज़ारों रंग बदती है। कभी आबादी, कभी बर्बादी, कभी मातम, कभी शादी।

हिकायत नम्बर (99) यूसुफ़ अलेहिस्सलाम और आईना

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम का एक दोस्त आपसे मुलाक़ात करने आया। तो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने उससे फ़रमाया। भई दोस्त दोस्त के पास आता है। तो उसके लिए कोई तोहफ़ा लाता है। बताओ तुम मेरे लिए क्या लाए हो? दोस्त ने जवाब दिया। इस वक़्त दुनिया में आपसे बढ़कर कोई और हसीन व जमील चीज़ है ही नहीं। जो मैं आपके लिए लाता। इसलिए मैं आपकी ख़िदमत में आप ही को लाया हूँ। और यूसुफ़ के लिए तोहफ़ा भी यूसुफ़ लाया हूँ ये कहकर एक आईना यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के सामने रख दिया। और कहा लीजिए इसमें अपने हुस्न व जमाल का नज़ारा कीजिए। इससे बढ़कर और क्या तोहफ़ा होगा। (मसनवी शरीफ़)

सबक़: इंसान को चाहिए। के वो अपना दिल मिस्ल आईना के साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ बना ले। और कल जब खुदा पूछे के मेरे लिए क्या लाए हो तो यही दिल हाज़िर कर दे और अर्ज़ करे के इलाही ये दिल लाया हूँ। जिसमें तेरे ही जलवे हैं।

हिकायत नम्बर (100) बिरादराने यूसुफ़

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम बड़े हसीन व जमील थे। आपकी उम्र शरीफ़ ग्यारह साल की हुई आपने एक ख़्वाब देखा। के आसमान से ग्यारह सितारे उतरे हैं। और उनके साथ सूरज और चाँद भी उन सब ने आपको सज्दा किया है। आपने अपना ये ख़्वाब अपने वालिद माजिद हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम से बयान किया। तो याक़ूब अलेहिस्सलाम इस ख़्वाब की ताबीर समझ गए। के मेरा यूसुफ़ शरफ़ नबुव्वत से सरफ़राज़ किया जाएगा। और उसके ग्यारह भाई उसके मती होंगे। हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ से बड़ी मोहब्बत थी। इस मोहब्बत के बाइस बिरादराने यूसुफ़ के दिलों में हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के खिलाफ़ जज़्बात थे। हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम को उस सारी हालत का इल्म था। इसलिए हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से फ़रमाया। बेटा! ये ख़्वाब अपने भाईयों से मत बयान करना ताके वो तेरे साथ कोई चाल ना चलें। उस दिन से हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से और भी ज़्यादा मोहब्बत करने लगे।

बिरादराने यूसुफ़ पर ये बात बड़ी नागवार गुज़री। और उन्होंने बाहम

मिलकर ये मशवरह किया। के कोई ऐसी तरकीब करें के वालिद साहब को हमारी तरफ़ ज़्यादा इलतिफ़ात हो जाए। उस मजलिस मशवरे में शैतान भी शरीक हुआ। और उसने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के क़त्ल का मशवरा दिया और तय ये पाया के यूसुफ़ को किसी बहाने जंगल में ले जाकर किसी गहरे कुएँ में फैंक दिया जाए। चुनाँचे बिरादराने यूसुफ़ इकट्ठे होकर हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम के पास हाज़िर हुए। और कहा। अब्बा जान! ये क्या बात है के आप यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को हमारे साथ नहीं रहने देते। और हमारा एतबार नहीं करते हम तो उसके ख़ैरख़्वाह हैं कल उसे हमारे साथ तफ़रीह के लिए। भेज दीजिए। फिर फिरा कर हम वापस आ जाऐंगे। और आप कोई फ़िक्र ना कीजिए। वो हमारी हिफ़ाज़त में रहेगा। हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मुझे एतबार नहीं है। अगर तुम उसे ले गए। तो डरता हूँ के तुम्हारी ग़फ़्लत से कोई भेड़िया उसे खा ले। वो बोले! अब्बा जान! हमारे होते हुए अगर कोई भेड़िया उसे खाले तो फिर हम किसी मुसर्रफ़ के नहीं। आप घबराईये नहीं और उसे ज़रूर हमारे साथ भेज दीजिए। चुनाँचे उनके मजबूर करने पर याक़ूब अलेहिस्सलाम ने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को उनके साथ भेज दिया। और हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम की क़मीस मुबारक जो जन्नत की बनी हुई थी। जिस वक़्त के इब्राहीम अलेहिस्सलाम के कपड़े उतार कर आपको आग में डाला गया था। जिब्राईल अलेहिस्सलाम ने वो क़मीस आपको पहनाई थी। वो क़मीस हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम से हज़रत इसहाक़ अलेहिस्सलाम और उनसे उनके फ़रज़न्द याक़ूब अलेहिस्सलाम को पहुँची थी। वो क़मीस हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने तअवीज़ बना कर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के गले में डाल दी।

बिरादराने यूसुफ़ ने याक़ूब अलेहिस्सलाम के सामने तो बड़ी मोहब्बत से यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को कंधे पर उठा लिया। और फिर जब दूर एक जंगल में पहुँच गए। तो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को ज़मीन पर दे पटका और दिलों में जो अदावत थी वो ज़ाहिर हुई। जिसकी तरफ़ जाते थे। वो मारता था। और वो ख़्वाब जो उन्होंने किसी तरह सुन पाया था। बयान कर कर के ताने देते थे और कहते थे के ये तअबीर है तुम्हारे ख़्वाब की। फिर उन्होंने एक बहुत बड़े गहरे और तारीक कुएँ में बड़ी बेदर्दी के साथ आपको फैंक दिया। और अपने गुमान में यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को मार डाला। (क़ुरआन करीम पारा 12, रूकू 12) (ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 336)

सबक़: किसी भाई की इज़्ज़त व वक़ार और उसका उरूज देखकर

डालना अच्छी बात नहीं है। इस क़िस्म के जज़्बात का अंजाम अच्छा नहीं होता। और ये भी मालूम हुआ। के हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम को इस बात का इल्म था के मेरा यूसुफ़ नबी बनने वाला है। और ये भी इल्म था के उसके भाई उसके साथ अच्छा सलूक नहीं करेंगे। और भाईयो ने जो वापस आकर उज़्र पेश करना था। के यूसुफ़ को भेड़िया खा गया है। उसका भी याक़ूब अलेहिस्सलाम को इल्म था। इसी लिए आपने फ़रमाया था के यूसुफ़ को तुम्हारे साथ भेज देने में ये डर है के उसे भेड़िया ना खा जाए। और ये भी मालूम हुआ। के अल्लाह वालों के कपड़े भी मुश्किलात के वक़्त ज़रिया निजात हैं। और तअवीज़ बनाना और गले में डालना पैग़म्बरों की सुन्नत है।

हिकायत नम्बर(101) रोशन क़मीस

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को जब उनके भाईयों ने एक बहुत बड़े गहरे कुएँ में फैंका। तो जिब्राईले अमीन को हुक्मे इलाही हुआ के ऐ जिब्राईल! *सिदरत-उल-मुनतहा* से इसी वक़्त परवाज़ करो। और यूसुफ़ वक़्त परवाज़ करो। और यूसुफ़ को कुएँ की तह तक पहुँचने से पहले पहले अपने परों पर उसे बिठा लो। और बड़े आराम से उस पत्थर पर जो कुएँ में एक तरफ़ रखा है। बिठा दो। चुनाँचे। जिब्राईले अमीन लम्हा भर में वहाँ पहुँचे। और हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को अपने परों पर लेकर आराम के साथ उस पत्थर पर बिठा दिया। और फिर वो क़मीस इब्राहीम बतौर तअवीज़ जो यअक़ूब अलेहिस्सलाम ने गले में डाल दी थी वो तअवीज़ खोल कर आपको पहना दिया। उससे अंधेरे कुएँ में रोशनी पैदा हो गई। (रूह-उल-बयान सफ़ा 147 जिल्द 2, ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 336)

सबक़:- हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलमा की क़मीस मुबारक से अंधेरे कुएँ में रोशनी पैदा हो गई और एक पैग़म्बर की क़मीस भी नूर है तो सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम क्यों नूर अला नूर नहीं और आप के वजूद नूर से क्यों तारीक दुनिया रोशन ना हो।

हिकायत(102) जअल साज़ी

बरादरान यूसुफ़ ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को एक अमीक़ कुएँ में फैंक दिया। और अपने ज़ौम में उन्हें मार डाला। फिर आपकी क़मीस मुबारक जो कुएँ मुबारक जो कुएँ में फैंकने के वक़्त उनके बदन से उन्होंने उतारी थी उसको एक बकरी के खून में रंग कर साथ ले लिया। और वापस आए

और जब मकान के क़रीब पहुँचे। तो रोना शुरू कर दिया। हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने उनको इस हाल में देखा। तो पूछा। मेरे फर्ज़ंदों क्या हुआ। और ये तो बताओ के यूसुफ़ कहाँ है? वो रोते हुए बोले। अब्बा जान! हम आपस में एक दूसरे से दौड़ करते थे। के कौन आगे निकल जाता है इस दौड़ में हम सब बहुत दूर निकल गए और यूसुफ़ को हम अपने असबाब के पास छोड़ गए थे। वो अकेला रह गया। और एक भेड़िया मौक़ा पाकर उसे खा गया है ये उसकी खून आलूद क़मीस है। अब्बा ज़ान! आप हमारा यक़ीन तो ना करेंगे मगर बात दरअसल यही है। हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया बेटो! तुम्हारे दिलों ने ये एक बात घड़ी है अच्छा मैं तो अब सब्र करूंगा और अल्लाह ही से इस बात में फैसला चाहूंगा। (क़ुरआन करीम पारा 12 रूकू 12, ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 336)

सबक़:- ज़ालिम अपना ज़ुल्म छुपाने के लिए बड़ी बड़ी जअल साज़ियों से काम लेते हैं। और अपनी मज़लूमियत साबित करने के लिए रोकर भी दिखा देते हैं। मालूम हुआ। के हर रोने वाला ज़रूरी नहीं के सच्चा हो ये भी मालूम हुआ के क़मीस को मसनुई खून से रंग कर उसे असल खून बताना ये भी जअल साज़ी ही है। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम को इस बात का सब इल्म था के मेरे यूसुफ़ को भेड़िये ने हर गिज़ नहीं खाया। बल्के उनके दिल की ये बनाई हुई बात है और ये भी मालूम हुआ। के जहाँ बिरादराने यूसुफ़ ने जअल साज़ी से रोना चिल्लाना शुरू कर दिया। वहाँ अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने सब्र का मुज़ाहेरह फ़रमाया। गोया सब्र का मुज़ाहेरह, यही हक़ है ना के चीखना चिल्लाना।

हिकायत नम्बर(103) खूश नसीब क़ाफ़ला

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को उनके भाईयों ने जंगल के एक तारीक कुएँ में फैंक दिया। और ये समझ कर के हम ने यूसुफ़ को मार डाला है वापस चले आए। मगर अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को कुएँ में महफ़ूज़ रखा। तीन दिन तक आप उस कुएँ में रहे ये कुआँ जंगल मं आबादी से बहुत दूर था। और उसका पानी बेहद खारी था मगर यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की बर्कत से उसका पानी मीठा हो गया। एक रोज़ वहाँ से एक क़ाफ़्ला गुज़रा। ये क़ाफ़्ला मदयन से मिस्र की तरफ़ जा रहा था। ये काफ़्ले वाले उस कुएँ के क़रीब उतरे तो उन्होंने उस कुएँ पर एक आदमी भेजा ताके

वो उससे पानी खींच कर लाए। उसने कुएँ में अपना डोल डाला तो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने वो डोल पकड़ लिया और उसमें लटक गए डोल वाले ने डोल खींचा तो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम बाहर तशरीफ़ ले आए। उसने जो आपका हुस्न व जमाल देखा तो निहायत खूशी में आकर अपने साथियों को मिसदह सुनाया के ये देखो कुएँ से एक खूबसूरत लड़का निकला है हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के भाई जो जंगल में अपनी बकरियाँ चराते थे वो देखभाल रखते थे आज जो उन्होंने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को कुएँ में ना देखा तो उन्हें तलाश हुई और क़ाफ़्ला में पहुँचे। वहाँ उन्होंने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को देखा तो सालारे क़ाफ़्ला से कहा के ये गुलाम है। हमारे पास से भाग आया है किसी काम का नहीं। नाफ़रमान है अगर खरीदो तो हम उसे सस्ता बेच देंगे। फिर उसे कहीं इतनी दूर ले जाना के इसकी खबर भी हमारे सुनने में ना आए। यूसुफ़ अलेहिस्सलाम उनके ख़ौफ से ख़ामोश रहे और फिर आप के भाईयों ने आपको क़ाफ़्ले वालों के हाथ चन्द खोटे दामों पर बेच दिया और क़ाफ़्ले वाले आपको खरीद कर अपने साथ मिस्र ले गए। (कुरआन करीम पारा 12 रूकू 12, खज़ायन-उल-इर्फ़ान स337)

सबक़: जिसे अल्लाह रखे उसे कौन चखे। ज़माना लाख बुरा चाहे मगर वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की बर्कत से खारी पानी भी मीठे हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर (104) शमा और उसके परवाने

बिरादराने यूसुफ़ ने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को जंगल में एक तारीक कुएँ में फैंक दिया। अल्लाह ने आपको बचा लिया। और एक खूश नसीब क़ाफ़्ले ने उस तरफ़ से गुज़रते हुए कुएँ से पानी निकालना चाहा। तो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम उस डोल के साथ बाहर आ गए और क़ाफ़्ले वालों का सितारा क़िस्मत चमक उठा। ये खूश नसीब क़ाफ़्ला हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को मिस्र ले आया और जब यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के मिस्र तशरीफ़ लाने की ख़बर मश्हूर हुई तो सदहा आदमी सुबह ही सुबह सालारे क़ाफ़्ला मकान की छत पर चढ़ कर बोला। लोगो! तुम यहाँ क्यों आए हो? वो बोले आपके साथ जो कनआनी गुलाम है। हम उसकी ज़ियारत के लिए आए हैं। सालार क़ाफ़्ला ने कहा। अच्छा जो शख़्स उसकी ज़ियारत करना चाहे वो एक अशर्फी मुंह दिखाई दे। सब ने इस शर्त को मंज़ूर कर लिया। और दरवाज़ा खोलने की दरख़्वास्त की। सालारे क़ाफ़्ला ने दरवाज़ा खोला और मकान के सहन में

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को एक कुर्सी पर बिठाया। हर शख़्स एक एक अशर्फ़ी हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के पैरों में डाल कर आपकी ज़ियारत करता था। इसी तरह दो दिन में सालारे काफ़्ला के पास हज़ारों अशर्फ़ियाँ जमा हो गईं। फिर तीसरे दिन उसने मनादी करा दी के जो शख़्स कनआनी गुलाम के ख़रीदने का इरादा रखता हो। वो आज मिस्र के बाज़ार में चला आए ये मनादी सुनकर हर एक शख़्स आपकी खरीदारी पर आमादा हो गया। और सारा मिस्र आपको देखने आया। यहाँ तक के पर्दा वाली औरतें और इबादत गुज़ार बुड्ढे और सारे गोशा नशीन भी आपकी ज़ियारत के मुश्ताक़ होकर मिस्र के बाज़ार में आ गए और खुद अज़ीज़े मिस्र भी शाही ख़ज़ाने साथ लेकर खरीदार यूसुफ़ बन कर आ गया। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 146)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल और इनाम याफ़्ता हज़रात मरजअे खलायक़ होते हैं। और ये दुनिया उनके क़दमों पर गिरती है और उनके तुफ़ैल दूसरे लोग खाते हैं। फिर अगर कोई ऐसा शख़्स जो शोमई क़िसमत से सुबह ही सुबह नज़र आ जाए तो देखने वाले को सारा दिन रोटी नां मिले वो अगर उन अल्लाह वालों की मिस्ल बनने लगे तो किस क़द्र जाहिल व बेख़बर है।

हिकायत नम्बर(105) मिस्र की रईसज़ादी

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जब मिस्र के बाज़ार में बिकने के लिए लाए गए। और ऐसे जाह व जलाल के वक़्त जब के यूसुफ़ के हुस्न का बाज़ार निहायत गर्म था। जब के हज़ारहा मर्द व औरत बेखुद और बेदम होकर मर रहे थे। एक औरत जिसका नाम फारिग़ा था और मिस्र की एक रईसज़ादी थी वो मुतअद्दिद ख़च्चर माल व दौलत के, सांथ लेकर हज़रत यूसुफ़ को खरीदने के लिए आई। जब उसकी नज़र यक बयक हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम पर पड़ी। आँखें उसकी चुंधिया गईं और बेखुद होकर बोली के ऐ यूसुफ़! आप कौन हैं? आपका हुस्न व जमाल देखकर मेरी तो अक़्ल क़ायम नहीं रही। मैं जितना माल व दौलत आपको खरीदने के लिए लाई हूँ। अब आपको देखकर मुझे मालूम हुआ। के ये सारी दौलत तो आपके एक पैर की भी क़ीमत नहीं। लेकिन ये तो बताईये के आपको बनाया किस ने है? हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मैं अपने खुदा का बन्दा हूँ। उसी ने मुझे बनाया है। और उसी ने मेरी सूरत ऐसी हसीन बनाई है के तुम देख कर हैरान रह गई हो। ये बात सुन कर वो औरत बोली के ऐ यूसुफ़! मैं ईमान लाई उस ज़ात पर, जिसने तेरे जैसे हसीन को पैदा फ़रमाया। जब आप

उसकी मख़लूक़ होकर इस क़द्र हसीन हैं तो ख़ालिक़ के हुस्न व जमाल की क्या शान होगी? ये कहकर कर उस औरत ने सारा माल अल्लाह की राह में ग़रीबों, मिसकीनों को दे दिया। और सब कुछ छोड़ कर महबूबे हक़ीक़ी की तलाश में लग गई। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 248)

सबक़:- अल्लाह वालों के ज़रिये से खुदा मिल जाता है और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों का हुस्न व जमाल देखकर खुदा याद आ जाता है। फिर जिन लोगों को देख कर गाँधी याद आने लगे। वो अगर उन पाक लोगों की मिस्ल बनने लगें तो किस क़द्र ज़ुल्म है।

हिकायत नम्बर(106) अज़ीज़ मिस्र

यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जब मिस्र के बाज़ार में लाए गए। इस ज़माने में मिस्र का बादशाह निरवान इब्ने वलीद अमलीक़ी था। और उसने अपनी अनान सल्तनत क़तफ़ीर मिस्री के इक़्तिदार में दे रखी थी। तमाम ख़ज़ायन उसी के तहत और तसर्रूफ़ में थे। उसको अज़ीज़ मिस्र कहते थे। और वो बादशाह का वज़ीरे आज़म था। जब हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम मिस्र के बाज़ार में बेचने के लिए लाए गए तो हर शख़्स के दिल में आपकी तलब पैदा हुई और ख़रीदारों ने क़ीमत बढ़ाना शुरू की ताआँके आपके वज़न के बराबर सोना और इतनी ही चाँदी इतना ही मुश्क और इतनी ही हरीर क़ीमत मुक़र्रर हुई और आपका वज़न चार सौ रतल था। और उम्र शरीफ उस वक़्त तेरह साल की थी। अज़ीज़ मिस्र ने इस क़ीमत पर आपको खरीद लिया। और अपने घर ले आया। और दूसरे खरीदार उसके मुक़ाबले में ख़ामोश हो गए। (ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 337)

सबक़:- ख़ुदा तआला के मुक़र्रबीन और मक़्बूल बन्दों के बड़े बड़े बादशाह और वज़ीर भी तालिब व मोहताज होते हैं। फिर जिसकी परवाह उसकी बीवी भी ना करे। वो उन अल्लाह वालों की मिस्ल कैसे हो सकता है।

हिकायत नम्बर(107) ज़ुलेखा

ज़ुलेखा बड़ी हसीन औरत थी। और शाहे मग़रिब तेमूस की बेटी थी उसने एक रात ख़्वाब में एक पेकर हुस्नो जमाल शख़्स को देखा। और उससे पूछा। के तुम कौन हो? तो उसने बताया के मैं अज़ीज़े मिस्र हूँ। ज़ुलेखा के दिल में उस ख़्वाब का नक़्शा जम गया और हर वक़्त वो ख़्वाब पेश नज़र रहने लगा।

बड़े बड़े बादशाहों के पैग़ाम उक़द आए लेकिन उसने इंकार कर दिया। और अपना इरादा ज़ाहिर कर दिया के मैं तो अज़ीज़ मिस्र ही से निकाह करूंगी। चुनाँचे शाहे तेमूस अपनी बेटी ज़ुलेखा का निकाह अज़ीज़े मिस्र से कर दिया।

ज़ुलेखा ने जब अज़ीज़े मिस्र को देखा। तो ये देखकर कर हैरान रह गई के ये वो नहीं है जिसे ख़्वाब में देखा था। हत्ता के अज़ीज़ मिस्र ने मिस्र के बाज़ार में बिकते हुए हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को खरीदा। और उन्हें घर लाया ज़ुलेखा ने जब हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को देखा। तो ख़्वाब के नक़्शे मुताबिक़ पाया। और वो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की मोहब्बत में वारिफ़्ता हो गई और फिर उसने एक महल बनवाया। जिसके अन्दर सात कमरे थे और उस महल को खूब मुज़य्यन किया। और खुद भी आरास्ता होकर किसी बहाने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को उस महल में ले गई। और पहले कमरे में दाखिल होते ही उस कमरे का दरवाज़ा बन्द कर लिया। फिर दूसरे कमरे में ले गई और उसका दरवाज़ा भी बन्द कर दिया। फिर तीसरे में फिर चौथे में। हत्ता के सब कमरों के दरवाज़े बन्द करते हुए सातवें कमरे में हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को ले गई। और वहाँ जाकर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से क़बाहत की तलबगार हुई हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ये सूरतेहाल देखकर हैरान रह गए उस वक़्त उस कमरे की छत फटी और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने देखा। के हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम अपनी उंगली मुबारक दांतों में दबाए। इर्शाद फ़रमा रहे हैं। के बेटा! ख़बरदार! कोई बुरा ख़याल तक ना आने पाए।

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने ज़ुलेखा से फ़रमाया। अल्लाह से डर और इस महल सरवर को महल हज़न ना बना और मेरे दरपए ना हो। ज़ुलेखा ने ना माना और वो बेहद दरपए आज़ार हो गई। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने जब ये सूरते हाल देखी। तो आप वहाँ से भागे। ज़ुलेखा भी पीछे भागी। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने भागते हुए जिस कमरे का भी रूख किया उस क़मरे के दरवाज़े का क़ुफ़्ल खुद ब खुद खुलता गया।

ज़ुलेखा ने पीछा करते हुए आपका कुर्ता मुबारक पीछे से पकड़ कर खींचा के आप निकलने ना पाएँ मगर आप ग़ालिब आए और बाहर निकल आए। इस कशमकश के वक़्त बाहर के दरवाज़े पर अज़ीज़ मिस्र खड़ा था। उसने दोनों को दौड़ते देख लिया तो ज़ुलेखा ने अपनी बुराअत ज़ाहिर करने और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को खायफ करने के लिए हीला

तराशा और अपने खाविंद से कहने लगी के जो तेरी बीवी से बुराई के साथ पेश आए। उसकी क्या सज़ा है। मैं सो रही थी के उसने आकर मेरा कपड़ा हटा कर मुझे फुसलाया है। उसे कैद कर दो। या कोई और तकलीफ दह सज़ा दो। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। ये ग़लत कहती है। वाक़ेया इसके बरअक्स है फिसलाना तो ये खुद चाहती थी। और मेरा नाम लगाती है। अज़ीज़ मिस्र ने कहा। इस बात का सबूत? उस कमरे में ज़ुलेखा के मामूं का एक शीरख़्वार बच्चा जिसकी तीन माह की उम्र थी। पंघोड़े में लेटा हुआ था। यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया इस बच्चे से पूछ लो। अज़ीज़ मिस्र ने कहा। इस तीन महीने के बच्चे से क्या पूछुं। और ये क्या बताएगा। यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। खुदा तआला उसे बोलने की ताक़त देने और मेरी सच्चाई ज़ाहिर करने पर क़ादिर है। अज़ीज़ मिस्र ने बच्चे से दरयाफ़्त किया। तो वो बच्चा बोला और कहने के यूसुफ़ अलेहिस्सलाम का कुर्ता देख लो। अगर उनका कुर्ता आगे से फटा है तो ज़ुलेखा सच्ची और अगर पीछे से फटा है तो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम सच्चे। चुनाँचे कुर्ता देखा गया। तो वो पीछे से फटा था और ये हाल साफ ये बता रहा था। के यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ज़ुलेखा से भागे थे और ज़ुलेखा पीछे पड़ी थी। इसलिए कुर्ता से पीछे से फटा। अज़ीज़ मिस्र ने ये हकीक़त देखकर जान लिया। के यूसुफ़ अलेहिस्सलाम सच्चे हैं। फिर उसने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से मअज़रत तलब की। (क़ुरआन करीम पारा 12 रूकू 13, रूह-उल-बयान सफ़ा 157, सफ़ा 158)

सबक़: अम्बियाक्राम अलेहिमअस्सलाम मासूम होते हैं और हर क़िस्म के छोटे बड़े गुनाह से पाक। और ये भी मालूम हुआ। के इंसान जब अल्लाह से डरकर अल्लाह की तरफ़ रूजूअ कर ले तो रास्ते की सारी रूकावटें खुद ब खुद दूर हो जाती हैं। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम अपने प्यारे यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के हालात से बाख़बर थे। और आपको इल्म था के इस वक़्त यूसुफ़ अलेहिस्स्लाम कहाँ हैं और उस वक़्त उनसे ये मामला दरपेश है। और ये भी मालूम हुआ। के अल्लाह वाले बज़ाहिर चाहे कोसो दूर भी हों लेकिन मुश्किल के वक़्त इम्दाद के लिए पहुँच जाते हैं। और ये भी मालूम हुआ। के अल्लाह तआला अपने मुक़र्रबीन की बराअत के लिए तीन महीने बच्चे को भी क़ुव्वते गोयाई दे देता है। और अपने पाक बन्दों के दामन अस्मत पर शक व शुबह की मैल का धब्बा तक नहीं आने देता।

हिकायत नम्बर (108) तासीर हुस्न

जुलेखा हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की मोहब्बत में कुछ ऐसी दारिफ़्ता हुई के उसे अपना होश ना रहा और उसकी इस मोहब्बत के चर्चे सारे मिस्र में होने लगे और शरीफ घराने की औरतें कहने लगीं के जुलेखा को तो अपने नंग व नामूस और पर्दे व उफ़्फत का लिहाज़ भी ना रहा और वो एक नोजवान का दिल लुभाने लगी है। जुलेखा ने जब अपने मुतअल्लिक़ ये बातें सुनीं तो उसने एक दअवत का इन्तेज़ाम किया जिस में मिस्र के शरीफ घरानों की चालीस औरतें बुलाईं। इन औरतों में वो औरतें भी थीं जो जुलेखा के मुतअल्लिक़ बातें करती थीं और उसे मलामत करती थीं। जुलेखा ने उनके लिए मसनदें तैयार कीं और उन्हें बड़ी इज़्ज़त व एहत्राम के साथ बिठाया और सामने दसतरख़्वान बिछाए जिन पर क़िस्म क़िस्म के खाने और मेवा चुने और फिर हर औरत को एक एक छुरी भी दी ताके वो उससे गोश्त काटें और मेवे चीरें और फिर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को उम्दा लिबास पहना कर उनसे कहा के आप ज़रा इन औरतों के सामने आकर उनको अपना हुस्नो जमाल दिखा दें। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने पहले तो इंकार फ़रमाया। लेकिन फिर जुलेखा की मुख़ालफत के अंदेशे से आप उन औरतों के सामने तशरीफ़ ले आए। उन औरतों ने जब यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की तरफ़ नज़र की। और उस जमाल आलिम अफरोज़ के साथ नबुव्वत व रिसालत के अनवार और तवाज़ै व इनकिसार के आसार और शाहाना हैबत व इक़्तिदार देखा। तो तअज्जुब में आ गईं। और आपकी अज़मत व हैबत दिलों में बैठ गई और हुस्नो जमाल ने ऐसा वारिफ़्ता किया के उन औरतों को खुद फ़रामोशी हो गई और बजाए लीमू के उन्होंने उन छुरियों से अपने हाथ काट लिए और तासीर हुस्न के बाइस उन्हें तकलीफ का कुछ अहसास ना हुआ। और फिर आलमे हैरत में बोल उठीं के *हाशा लिल्लाह!* ये बशर तो नहीं है ये तो कोई फरिश्ता है।

जुलेखा ने कहा। देख लिया उसके हुस्नो जमाल को? यही है वो हुस्नो जमाल का पेकर जिसका तुम मुझे ताना देती थीं। (कुरआन करीम पारा 12, रूकू 14, खज़ायन-उल-इर्फान 339)

सबक़:- हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के हुस्नो जमाल की तासीर का ये आलम था के देखने वाली औरतें पुकार उठीं के ये तो कोई फरिश्ता है बशर हर गिज़ नहीं फिर जो शख़्स हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के भी सरदार हुज़ूर अहमद मुख़्तार सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हुस्नो जमाल

का कुछ भी ख़याल ना करे और यूं कहे के वो हमारी मिस्ल एक बशर हैं तो वो शख़्स किस क़द्र जाहिल, बे अदब और औरतों से भी गया गुज़रा है।

हिकायत नम्बर (109) साक़ी व बावर्ची

ज़ुलेखा ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को तंग करने के लिए। और अपनी बात मनवाने के लिए किसी बहाने उनको जेल भेज दिया। उसी दिन जिस दिन हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जेल भेजे गए। दो नोजवान और भी जेल में दाखिल किए गए। ये दोनों बादशाहे मिस्र अमलीक़ी के ख़ास मुलाज़िम थे एक उसका साक़ी था। और एक बावर्ची। उन दोनों पर बादशाह को ज़हर देने का इल्ज़ाम था।

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने जेल में अपने इल्मो फ़ज़्ल का इज़हार शुरू फ़रमा दिया। और तौहीद की तबलीग़ शुरू फ़रमा दी और आपने ये भी ज़ाहिर फ़रमाया के मैं ख़्वाबों की तअबीर भी खूब समझता हूँ। चुनाँचे वो दो नोजवान जो आपके साथ ही जेल में दाखिल किए गए थे। कहने लगे हम ने आज रात को ख़्वाब देखे हैं। उनकी तअबीर बताईये।

साक़ी ने कहा। मैंने देखा है। मैं एक बाग़ में हूँ और अंगूर के खोशे मेरे हाथ में हैं और मैं उन खोशों से शराब निचोड़ता हूँ।

बावर्ची ने कहा। और मैंने देखा है। के मेरे सर पर कुछ रोटियाँ हैं जिनमें से परिन्दे खा रहे हैं। फ़रमाईये इनकी क्या तअबीर है?

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। ऐ साक़ी! तू तो अपने ओहदे पर बहाल किया जाएगा। और हस्बे साबिक़ अपने बादशाह को शराब पिलाएगा। और ऐ बावर्ची! तू सूली दिया जाएगा। और परिन्दे तेरा सर खाऐंगे। ये तअबीर सुनकर वो दोनों कहने लगे। ख़्वाब तो हम ने कुछ भी नहीं देखा हम तो महज़ मज़ाक़ कर रहे थे। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया अब जो कुछ भी हो। ख़्वाब तुम ने देखा हो या ना देखा हो मगर मैंने जो कुछ कह दिया। वो होकर रहेगा। और अब मेरा ये कहना किसी सूरत टल नहीं सकता।

चुनाँचे वही हुआ। जो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया था। साक़ी पर इल्ज़ाम साबित ना हो सका। और वो अपने ओहदे पर बहाल हो गया और बावर्ची मुज्रिम साबित हुआ। और वो सूली दे दिया गया।

(क़ुरआन करीम पारा 13, रूकू 15, रूह-उल-बयान सफ़ा 171 सफ़ा जिल्द 2)

सबक़:- पैग़म्बर की ये शान होती है। के वो जो बात फ़रमा दे वो

होकर रहती है। फिर जो ये बात कहे के रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता। और रसूल नफ़अे ज़रर का मालिक नहीं। किस क़द्र जाहिल और गुमराह है।

हिकायत नम्बर(110) बादशाह का ख़्वाब

मिस्र के बादशाह निरवान बिन वलीद अमलीक़ी ने एक रात ख़्वाब देखा के सात फ़रबा गाँयें हैं। जिन्हें सात दुबली गाँयें खा रही हैं। और सात हरी बालें हैं। जिन्हें सात सूखी बालें खा रही हैं। बादशाह को इस ख़्वाब से बड़ी परेशानी हुई और बड़े बड़े साहिरों और काहिनों से इस ख़्वाब की तअबीर पूछी। मगर कोई भी उसकी तअबीर बयान ना कर सका।

बादशाह का साक़ी जो जेल में रह चुका था और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के फ़रमाने के मुताबिक़ अपने ओहदे पर बहाल हो चुका था। बादशाह से कहने लगा के जेल में एक आलिम है। जो ख़्वाब की तअबीर बताने में यक्ता है। बादशाह ने कहा। तो तुम उसके पास जाकर मेरा ख़्वाब बयान करो। और उससे तअबीर पूछकर आओ। चुनाँचे वो साक़ी जेल में हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के पास आया। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से अर्ज़ करने लगा। ऐ यूसुफ़ हमारे बादशाह ने ये ख़्वाब देखा है। इसकी तअबीर क्या है? आपने फ़रमाया। इसकी तअबीर ये है। के तुम सात बरस लगातार खेती करोगे और ग़ल्लह खूब होगा। सात मोटी गाँयें और सात हरी बालों का उसी तरफ़ इशारा है। और फिर उसके बाद सात बरस बड़े सख़्त और क़हेत के आएँगे। उन सालों में तुम पहले सात सालों का जमा कर्दा ग़ल्लह खा जाओगे। सात दुबली गाँयें और खुश्क बालों का इशारा इसी तरफ़ है। फिर उसके बाद एक बरस ऐसा आएगा। जिसमें खूशहाली का दौर होगा और ज़मीन सर सब्ज़ होगी। और दरख़्त खूब फलेंगे।

साक़ी ने ये तअबीर जब बादशाह को सुनाई। तो बादशाह इस तअबीर को सुनकर मुतमईन हो गया। और जान गया। के तअबीर यही हो सकती है और उसको शौक़ पैदा हुआ के ये तअबीर यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की अपनी ज़बानी सुने। इसलिए उसने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को बुला भेजा। चुनाँचे हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के पास बादशाह का क़ासिद पहुँचा। और उसने कहा। के बादशाह आपको बुलाता है तो आपने उस क़ासिद से फ़रमाया। पहले तुम बादशाह को जाकर मेरा पैयाम दो के मेरे मामले की तहक़ीक़ करे। और देख ले के मुझे बिला वजह जेल में भेज दिया गया था। क़ासिद ये पैयाम लेकर बादशाह के पास पहुँचा तो बादशाह ने सारा क़िस्सा

मालूम कर के औरतों को जमा किया। और ज़ुलेखा को भी बुलाया। और उन सबसे यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ पूछा। तो सब ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर कहा के हाशा लिल्लह! हम ने यूसुफ़ में कोई बुराई नहीं पाई। और ज़ुलेखा को भी ये कहना पड़ा के असली बात खुल गई और वाक़ई मेरा ही क़सूर था। और वो बिलकुल सच्चा है। उसके बाद बादशाह के हुक्म से बड़ी इज़्ज़त व एहत्राम के साथ हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जेल से रिहा कर दिए गए। (क़ुरआन करीम पारा 12 रूकू 16ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 342)

सबक़:- अम्बियाक्राम के उलूम हक़ हैं और अंजाम कार हक़ व सदाक़त ही की फ़तह होती है।

हिकायत नम्बर(111) ताजपोशी

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जब जेल से बड़ी इज़्ज़त व एहत्राम के साथ रिहा किए गए। तो बादशाह मिस्र निरवान इब्ने वलीद ने आपको बड़े अदब व एहत्राम के साथ अपने साथ तख़्त पर बिठाया। और फिर अपना ख़्वाब जो उसने देखा था। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से खुद बयान किया। और उसकी तअबीर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की ज़बाने हक़ तर्जुमान से उसने सुनी। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने पहले तो बादशाह का देखा हुआ ख़्वाब मुफस्सिल बयान फ़रमाया। और फिर तफसील से उसकी तअबीर बयान फ़रमाई। बादशाह ये देखकर के बावजूद ये के आपसे ये ख़्वाब पहले मजमलन बयान किया गया था। मगर आपने तफसील से वो सारा ख़्वाब सुना दिया, बड़ा हैरान हुआ और कहा के ख़्वाब तो अजीब थी ही मगर उससे भी अजीब तर आपका बयान कर देना है, फिर तअबीर सुनकर बादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से मशवरह तलब किया तो आपने फ़रमाया के अब लाज़िम है के ग़ल्लह जमा किया जाए और उन फ़राखी के सालों में कसरत से काश्त की जाए। और गल्लह मअ बालों के महफ़ूज़ रखा जाए और रिआया की पैदावार में से ख़ुम्स लिया जाए उससे जो जमा होगा वो मिस्र व हवाली मिस्र के बाशिन्दों के लिए काफी होगा और फिर ख़ल्क़े खुदा हर तरफ़ से तेरे पास ग़ल्लह ख़रीदने आएगी और तेरे यहाँ अपने ख़ज़ायन व अमवाल जमा होंगे जो तुझ से पहलों के लिए जमा ना हुए। बादशाह ने कहा, मगर ये इन्तिज़ाम कौन करे, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुम अपनी क़लमुरू के तमाम ख़ज़ाने मेरे सपुर्द कर दो, बादशाह ने कहा बहुत अच्छा आपसे ज़्यादा मुसतहिक़ और कौन हो सकता है और उसको मंज़ूर कर

लिया और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के ज़ेरे तसर्रूफ मुल्क के सारे ख़ज़ाने कर दिए और फिर एक साल के बाद बादशाह ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को बुला कर आपकी ताजपोशी की और तलवार व मोहर आपके सामने पेश की और आपको तिलाई तख़्त पर बिठा कर अपना मुल्क आपके सपुर्द कर दिया और अज़ीज़ मिस्र को मअज़ूल कर दिया और खुद भी मिस्ल रिआया के हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के ताबअे हो गया। (कुरआन करीम पारा 13, रूकू, ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान स, 343)

सबक़:- अल्लाह तआला बड़ा बेनियाज़, क़ादिर व तवाना और हकीम है और उसने अपने पैग़म्बरों को बड़े बड़े तसर्रूफ व इख़्तियार और ख़ज़ायन अर्ज़ पर तसल्लुत अता फ़रमाया है और ये भी मालूम हुआ के अक़ामत अदल और हिफाज़त दीन की ख़ातिर किसी ज़ालिम बादशाह से ओहदा तलब करना और क़बूल कर लेना जायज़ है।

हिकायत नम्बर (112) यूसुफ़ व ज़ुलेखा

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम मिस्र के बादशाह बन गए और सारा मिस्र आपके ज़ेरे इख़्तिताम आ गया, ज़ुलेखा के ख़ाविंद अज़ीज़ का इन्तिक़ाल हो गया और ज़ुलेखा मायूस व परेशान ख़ातिर होकर अपने इक्तिदार के दौर के कुछ ज़र व जवाहरात साथ लकर एक जंगल में चली गई और जंगल में ही एक कुटिया बना ली जिसमें रहने लगी अब उसका वो हुस्नो जमाल और आलम शबाब भी बाक़ी ना रहा, यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के ऊरूज व इक्तिदार के तो डंके बजने लगे और ज़ुलेखा गोशाऐ गुमनामी में जा पड़ी हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम एक दिन अपने लश्कर समेत बड़ी शान व शौकत और शहाना जाह व जलाल के साथ उस जंगल से गुज़रे ज़ुलेखा को पता चला तो अपनी कुटिया से निकली और हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को शहाना अंदाज़ से गुज़रते हुए देखकर बेसाख़्ता बोली:

सुबहाना मन जआलल मुलूका अबीदन बिलमअसियति व जआलल अबीदा मुलूका बित्ताआति

"पाक है वो ज़ात जिसने नाफरमानी के बाइस बादशाहों को ग़ुलाम बना दिया और फ़रमाँबर्दारी के सदके में ग़ुलामों को बादशाह बना दिया।"

ज़ुलेखा की ये आवाज़ यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने सुनी तो रो पड़े और अपने एक ग़ुलाम से फ़रमाया, उस बूढ़िया की हाजत पूरी करो, वो ग़ुलाम ज़ुलेखा के पास पहुँचा और कहा के ऐ बूढ़िया! तुम्हारी क्या हाजत है? वो

बोली, मेरी हाजत यूसुफ़ ही पूरी कर सकेंगे।

चुनाँचे वो गुलाम जुलेखा को शाही महल में साथ ले आया, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम जब महल में पहुँचे और आपने अपना शाही लिबास उतारा और अल्लाह की इबादत के लिए अपने मुसल्ले पर बैठे तो उस वक़्त आपको फिर वही जुमला याद आया *सुबहाना मन जआलल मुलूका अबीदन बिलमअसियति व जआलल अबीदा मुलूका* और आप रोने लगे, फिर गुलाम को बुला कर पूछा के उस बूढ़िया की हाजत पूरी की या नहीं, उसने अर्ज़ किया, हुजूर! वो बूढ़िया यहीं आ गई है और कहती है के मेरी हाजत तो यूसुफ़ खुद ही पूरी करेंगे, फ़रमाया अच्छा! उसे यहाँ ले आओ, चुनाँचे ज़ुलेखा खिदमत में हाज़िर की गई और उसने हाज़िर होते ही सलाम अर्ज़ किया, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने सर झुकाए हुए ही सलाम का जवाब दिया और फिर फ़रमाया, ऐ औरत! तुम्हारी जो हाजत हो बयान कर, वो बोली हुजूर! क्या आप मुझे भूल गए? फ़रमाया, कौन हो तुम? वो बोली....

बगुफ़्त आनम के चू रूऐ तू देदम
तराज़ जुमलह आलम बरगज़ीदम!
फाशानदम गंज व गोहर दरबहायत
दिल व जाँ वक़्फ करदम दरहवायत
जवानी दरग़मत बर्बाद दारम
दरीं पैरी के मी बीनी फतादम
गिरफ़्ती शाहिद मुल्क अन्दर आग़ोश
मरा यकबार तू करदी फ़रामोश

ऐ यूसुफ़! मैं ज़ुलेखा हूँ। हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ये सुन कर पुकार उठे:

लाइलाहा इल्ललाहू अल्लज़ी यूहयी वहुवा हय्युला यमूतु

फिर आपने ज़ुलेखा से पूछा के तुम्हारा वो आलमे शबाब और हुस्नो जमाल और माल कहाँ गया? ज़ुलेखा ने जवाब दिया, वो ले गया जिसने आप को जेल से निकाला और मिस्र की हकूमत आपको अता फ़रमाई, यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया अच्छा तो बताओ! अब तुम्हारी क्या हाजत है? वो बोली, क्या आप पूरी फ़रमा देंगे? पहले वादा कीजिए, फ़रमाया हाँ! ज़रूर पूरी करूंगा, वो बोली तो सुनिए! तीन हाजतें हैं:

पहली ये के मैं आप के ग़म फिराक़ में रो रो कर अंधी हो चुकी हूँ खुदा

तआला से दुआ कीजिए के वो मेरी नज़र मुझे वापस दे दे।

दूसरी ये के मेरा हुस्न व शबाब मुझे वापस मिल जाए।

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने दुआ फ़रमाई और मिस्ल साबिक़ वो जवान और हसीन भी हो गई।

यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, बता अब तीसरी हाजत क्या है?

वो बोली ऐ यूसुफ़! तीसरी हाजत ये है के आप मुझ से निकाह फ़रमा लें।

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ख़ामोश हो गए और सर अनवर झुका लिया थोड़ी देर के बाद जिब्राईल हाज़िर हुए और कहा ऐ यूसुफ़! आपका रब आपको सलाम फ़रमाता है और फ़रमाता है ज़ुलेखा जो हाजत पेश कर रही है उसको पूरा करने में बुख़्ल से काम ना लो उसकी दो हाजतें तेरी दुआ से हम ने पूरी कर दीं, ये तीसरी हाजत उसकी तुम पूरी कर दो...

के मा अजज़ ज़ुलेखा राचू दीदयम!!
बतू अर्ज़ वनियाज़िश राशनीदयम!!
दलिश अज़तीग़ नोमीदी नहसतीम
बतू बालाऐ अर्शिश उक़द बसतीम

"ऐ यूसुफ़! हमने तुम्हारे साथ उसका निकाह अर्श पर कर दिया है पस आप उससे निकाह कर लीजिए के दुनिया व आख़िरत में आपकी बीवी है।"

चुनाँचे हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने बहुक्मे इलाही हज़रत ज़ुलेखा से निकाह कर लिया और आसमानों से फरिश्तों ने आकर मुबारकबादें दीं और खुदा ने भी मुबारक बादी फ़रमाई, फिर ज़ुलेखा ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्लाम से ये बात भी ज़ाहिर कर दी के अज़ीज़ मिस्र औरत के नाक़ाबिल था और अल्लाह ने मुझे आपके महफ़ूज़ व मामून रखा है।

चुनाँचे हज़रत ज़ुलेखा के हाँ फिर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के दो साहबज़ादे पैदा हुए एक का नाम अफ़्राईम और दूसरे का मीशा था और दोनों ही हुस्न व जमाल के पेकर थे। (रूह-उल-बयान, सफा 182 ता 184 जिल्द 2)

सबक़: ज़ुलेखा को अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्लाम की ख़ातिर अज़ीज़ मिस्र से जो उसका जायज़ शौहर था महफ़ूज़ रखा, फिर सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की महबूबा बीवी उम्म-उल-मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ीअल्लाहो अनहा पर आज जो लोग मआज़ अल्लाह किसी क़िस्म का इल्ज़ाम लगाएँ किस क़द्र गुमराह, जाहिल और बे दीन हैं और ये भी मालूम हुआ के हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम से हज़रत ज़ुलेखा का निकाह अल्लाह के हुक्म से अर्श पर

फिर फ़र्श पर भी हुआ और आपके बतन से हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के दो फ़रज़ंद हुए।

हिकायत नम्बर (113) कहतसाली

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम मिस्र के बादशाह बन गए और आपने मुल्क में अदल व इंसाफ और अमनो अमान क़ायम फ़रमा दिया और आने वाली क़हतसाली के पेशेनज़र ग़ल्ले के बड़े बड़े ज़ख़ीरे जमा फ़रमाए फिर जब क़हत का दौर आया तो सारे मुल्क में ये बलाऐ अज़ीम आम हो गई और तमाम बिलादो इमसार उस मुसीबत में मुबतला हो गए और हर जानिब से लोग ग़ल्लह ख़रीदने मिस्र आने लगे, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम हर किसी को एक ऊँट से ज़्यादा ग़ल्लह नहीं देते थे ताके सबकी इमदाद हो सके और जिस तरह ये क़हत की मुसीबत तमाम शहरों में नाज़िल हुई उसी तरह कनआन भी क़हत की लपेट में आ गया हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने बिनयामिन के सिवा दसों बेटों को ग़ल्लह ख़रीदने मिस्र भेजा, जब ये दसों भाई मिस्र हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचे तो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने उन्हें पहचान लिया मगर वो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को ना पहचान सके इसलिए के उनका ख़याल था के यूसुफ़ अलेहिस्सलाम इतने तवील अर्से में कहीं इन्तिक़ाल फ़रमा चुके होंगे और इसलिए भी के हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम उस वक़्त शाही लिबास में मलबूस तशरीफ़ फ़रमा थे, उन दसों भाईयों ने हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम इब्रानी ज़बान में गुफ़्तगू की और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने भी इब्रानी में जवाब दिया, आपने फ़रमाया तुम कौन लोग हो, वो बोले, हम शाम के रहने वाले हैं और हम भी क़हत के बाइस परेशान हैं और आपसे ग़ल्लह खरीदने आए हैं, आपने फ़रमाया, तुम जासूस तो नहीं, वो बोले, हम अल्लाह की क़सम खाते हैं के हम जासूस नहीं हैं हम सब भाई हैं और एक बाप की औलाद हैं हमारे बाप बहुत मोअम्मर बुज़ुर्ग हैं और उनका नाम नामी हज़रत याक़ूब (अलेहिस्सलाम) है। वो अल्लाह के नबी हैं, आपने फ़रमाया, तुम कितने भाई हो, वो बोले थे तो हम बारह मगर एक भाई हमारे साथ जंगल में गया था वहाँ हलाक हो गया और वालिद साहब को हम सबसे प्यारा था, फ़रमाया, अब तुम कितने भाई हो? वो बोले दस! फ़रमाया ग्यारहवाँ कहाँ है? कहा वो वालिद साहब के पास है क्यों के जो हलाक हो गया था वो माँ की तरफ़ से भी उसका हक़ीक़ी भाई है इसलिए अब वालिद साहब को उसी से कुछ तसल्ली हो जाती है। हज़रत

यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने उन भाईयों की बड़ी इज़्ज़त की और उनकी मेज़बानी फ़रमाई और फिर हर भाई का ऊँट ग़ल्लेह से भर दिया और ज़ादे सफ़र भी दिया और रूख़्सत फ़रमाते हुए फ़रमाया के अब जो आओ तो अपने ग्यारहवें भाई को भी साथ लाना मैं उसके हिस्से का एक ऊँट भर ग़ल्लह और ज़्यादा दूंगा देख लो मैं कितना महमान नवाज़ हूँ और अगर तुम उसे साथ ना लाए तो फिर मेरे पास ना आना, तुम्हें मुझ से कुछ ना मिलेगा, फिर आपने ग़ुलामों से फ़रमाया के उस दसों भाईयों ने ग़ल्लेह की जो क़ीमत दी है ये सारी पूंजी भी उनके ग़ल्लेह में रख दो।

चुनाँचे वो दसों वापस कुनआन पहुँचे और हज़रत याकूब अलेहिस्सलाम से बादशाह मिस्र की और उसके हुस्न सलूक की बड़ी तारीफ़ की और फिर जब ग़ल्लेह को खोला तो अपनी अदा कर्दा क़ीमत भी उसमें निकल आई, ये देख कर वो बड़े मुतास्सिर हुए और कहा अब्बा जान! ये बादशाह तो बड़ा ही दरया दिल और सखी है, देखिये ग़ल्लह भी दे दिया है और क़ीमत भी लौटा दी, अब्बा जान! उसने हमें ये भी कहा है के तुम अगर अपने भाई बिनयामिन को भी साथ ले आओ तो मैं उसके हिस्से का ग़ल्लह भी दे दूंगा तो अब्बा जान! आप बिनयामिन को भी हमारे साथ भेज दीजिए ताके उसके हिस्से का भी ग़ल्लह मिल जाए। याकूब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, इससे पहले मैं बिनयामिन के भाई यूसुफ़ को तुम्हारे साथ भेज कर देख चुका हूँ अब इसे भी तुम्हारे साथ भेज कर तुम्हारा फिर एतबार कैसे कर लूं? वो बोले अब्बा जान! हम उसकी ज़रूर हिफाज़त करेंगे और इस बात पर हम अल्लाह का ज़िम्मह देते हैं और इसे ज़रूर हमारे साथ भेजिए, याकूब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया अच्छा ख़ुदा निगहबान है जाओ बिनयामिन को ले जाओ, चुनाँचे ये लोग बिनयामिन को लेकर फिर मिस्र आए और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के पास हाज़िर हुए और कहा, जनाब हम अपने ग्यारहवें भाई को भी साथ ले आए हैं, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम बहुत खुश हुए और उनकी बड़ी ख़ातिर मदारात की और फिर एक दअवत का इन्तेज़ाम फ़रमा कर एक वसीअ दसतरख़्वान बिछाया और दो, दो साहबो को बिठाया, वो दसों भाई तो दो दो होकर बैठ गए मगर बिनयामिन अकेले रह गए वो रो पड़े और कहने लगे अगर आज मेरे भाई यूसुफ़ ज़िन्दा होते तो मेरे साथ वो बैठते, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुम्हारा एक भाई अकेला रह गया है लिहाज़ा उसे मैं अपने साथ बिठाता हूँ चुनाँचे बिनयामिन के साथ आप खुद बैठ गए और उससे फ़रमाया के अगर तुम्हारे गुमशुदा भाई यूसुफ़ की जगह मैं तुम्हारा

भाई हो जाऊँ तो क्या तुम पसंद करोगे?

बिनयामिन ने कहा, सुबहान अल्लाह! आप जैसा भाई अगर मयस्सर आए तो ज़हे नसीब! लेकिन याकूब का फ़रज़ंद और राहील (यूसुफ़ अलेहिस्सलाम और बिनयामिन की माँ का नाम) का नूर नज़र होना तो आपको हासिल नहीं हो सकता, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम रो पड़े और बिनयामिन को गले लगा लिया और फ़रमाया मैं ही तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ तुम पर जो कुछ ये लोग कर रहे हैं इसका कोई ग़म ना करो अल्लाह का एहसान है के उसने हमको फिर जमा फ़रमा दिया और देखो इस राज़ की इत्तिला अपने भाईयों को ना देना, बिनयामिन ये सुन कर खुशी से बेखुद हो गए। (क़ुरआन करीम पारा 13 रूकू 3, ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 344)

सबक़: अल्लाह वाले बुरा सलूक करने वालों से खन्दा पैशानी से पेश आते हैं और बजाए बुराई के बुराई का बदला भी नेकी से देते हैं।

हिकायत नम्बर (114) प्याले की गुमशुदगी

बिनयामिन अपने दसों भाईयों के साथ ग़ल्लह लेने के लिए मिस्र पहुँचे तो बादशाह मिस्र ने उनकी खूब ख़ातिर मदारात की और एक दअवत का भी इन्तेज़ाम किया, इस दअवत में शाहे मिस्र बिनयामिन के साथ बैठे और ये राज़ ज़ाहिर कर दिया के मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ, बिनयामिन ये सुनकर बड़े खुश हुए, कहने लगे भाई जान! अब आप मुझे किसी तरकीब से अपने पास ही रख लीजिए और जुदा ना कीजिए, यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया बहुत अच्छा।

यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फिर सब भाईयों को एक एक बार ऊँट ग़ल्लह दिया और बिनयामिन के हिस्से का भी एक बार ऊँट ग़ल्लह तैयार किया उस वक़्त बादशाह के पानी पीने का जवाहरात से मरस्सअे जो पियाला था, ग़ल्लह नापने का काम इस पियाला से लिया जा रहा था, ये पियाला यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने बिनयामिन के कजावे में रखवा दिया और ये क़ाफ़्ला कुनआन के इरादे से रवाना हो गया, जब शहर से बाहर जा चुका तो अंबार ख़ाने के कारकुनों को मालूम हो गया के पियाला नहीं है उनके ख़याल में यही आया के ये क़ाफ़्ले वालों का काम है चुनाँचे उन्होंने जुस्तजू के लिए कुछ आदमी क़ाफ़्ले के पीछे भेजे और क़ाफ़्ले को रोक लिया और कहा के शाही पियाला नहीं मिलता और हमें आप लोगों पर शुबह है, वो बोले ख़ुदा की क़सम हम ऐसे लोग नहीं हैं, उन्होंने कहा, अच्छा तलाशी दो और

अगर वो पियाला तुम्हारे कजावों में से किसी कजावे से निकल आए उसके बदले में उस कजावे वाले ही को अपने पास रख लेना, चुनाँचे सामान की तलाशी ली गई तो पियाला बिनयामिन के कजावे से निकल आया और वो दसों भाई बहुत शर्मिंदा हुए और हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के सामने पेश किए गए तो वो दसों भाई बोले जनाब! इस बिनयामिन ने अगर चोरी की है तो तअज्जुब की बात नहीं, इसका भाई यूसुफ़ भी चोरी कर चुका है हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने ये बात सुनकर सब्र फ़रमाया और राज़ फाश नहीं फ़रमाया।

फिर वो दसों भाई कहने लगे, हमारे वालिद साहब बहुत बूढ़े हैं और उन्हें बिनयामिन से बड़ी मोहब्बत है इसलिए आप इसकी जगह हम में से किसी को ले लें और उसे छोड़ दें, यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, हम उसको लेने के मुसतहिक़ हैं जिसके कजावे में हमारा माल निकला इसके बदले दूसरे को लेना तो ज़ुल्म होगा।

ये सूरत हाल देखकर वो दसों भाई आपस में सरगोशियाँ करने लगे के अब क्या किया जाए, उनमें से बड़ा बोला के हम वालिद साहब से बिनयामिन के बारे में अल्लाह का ज़िम्मह देकर आए हैं, अब बिनयामिन को ना पाकर वो हमें क्या कहेंगे, मैं तो यहीं रहता हूँ और तुम जाओ और वालिद साहब से सारा वाक़ेया कह दो चुनाँचे बड़ा भाई वहीं रहा और बाक़ी वापस कुनआन पहुँचे और हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम से सारा वाक़ेया बयान कर दिया, हज़रत याक़ूब अलेहिस्सलाम ने सारा क़िस्सा सुनकर फिर फ़रमाया के अच्छा मैं तो अब भी सब्र ही करूंगा और अनक़रीब मुझे अल्लाह तआला उन तीनों से मिला देगा, फिर याक़ूब अलेहिस्सलाम अलग होकर यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को याद फ़रमाने लगे बेटे बोले अब्बा जान! क्या आप हमेशा यूसुफ़ ही की याद करते रहेंगे? आपने फ़रमाया, मैं अपने ग़म की फ़रयाद अपने अल्लाह ही से तो करता हूँ और सुन लो जो कुछ अपने अल्लाह से मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते, मेरे बेटो! जाओ, यूसुफ़ और उसके भाई का सुराग़ लगाओ और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद ना हो। (क़ुरआन करीम पारा 13, रूकू 4, ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 348)

सबक़: अल्लाह वाले हर हाल में सब्र व शुक्र ही से काम लेते हैं और ये भी मालूम हुआ के याक़ूब अलेहिस्सलाम को इस बात का इल्म था के यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ज़िन्दा हैं इसी लिए फ़रमाया के अनक़रीब अल्लाह मुझे उन तीनों से मिला देगा, तीनों कौन? बिनयामिन और वो बड़ा भाई

जो मिस्र रह गया था और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम और इसी लिए फ़रमाया के जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते फिर जो शख़्स ये कहे के याकूब अलेहिस्सलाम को यूसुफ़ अलेहिस्सलाम का इल्म ना था वो किस क़द्र खुद ही बेख़बर और बेइल्म है।

हिकायत नम्बर(115) अफ़्शाए राज़

हज़रत याकूब अलेहिस्सलाम ने अपने बेटों से फ़रमाया के अल्लाह की रहमत से मायूस ना हो और यूसुफ़ की तलाश करो चुनाँचे वो फिर मिस्र पहुँचे और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगे के ऐ शाहे मिस्र! हम बड़ी मुसीबत में हैं हमारी हक़ीर सी पूंजी क़बूल कर के हमें और ग़ल्लह दे और हम पर ख़ैरात भी कर, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम अपने भाईयों का ये अज्ज़ो इन्किसार और उनकी परेशानी देखकर फ़रमाने लगे क्या तुम्हें कुछ ख़बर है के तुम ने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या सलूक किया? यानी यूसुफ़ को मारना, कुएँ में फैंकना, बेचना और उनके बाद उनके भाई को तंग रखना, परेशान करना क्या क्या कुछ याद है? और ये फ़रमाते हुए यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को हंसी भी आ गई और भाईयों ने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम के गोहर ददाँ का हुस्न देखकर पहचान लिया के ये तो जमाल यूसुफ़ी की शान मालूम होती है और फिर कहने लगे के आप ही तो यूसुफ़ नहीं हैं? फ़रमाया हाँ! मैं ही यूसुफ़ हूँ और ये मेरा भाई बिनयामिन, अल्लाह ने हम पर बड़ा एहसान फ़रमाया है और अल्लाह परहेज़गारों और साबिर बन्दों का अज्र ज़ाए नहीं करता।

वो सब बस्द नदामत बोले, खुदा की क़सम! बेशक अल्लाह ने आपको हम पर फज़ीलत दी और हम वाक़ई ख़ताकार थे हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया मगर ऐ भाईयो! तुम पर मेरी तरफ़ से कोई मलामत नहीं अल्लाह तुम्हें माफ करे और वो बड़ा मेहरबान है। (क़ुरआन करीम पारा 13 रूकू 4, ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 349)

सबक़: खुदा के मक़बूल बन्दों का ये शैवा है के वो अपनी ज़ात का जायज़ बदला लेने की ताक़त रखकर भी माफ़ फ़रमा देते हैं और कोई मलामत नहीं करते।

हिकायत नम्बर(116) क़मीस यूसुफ़

हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने अपने भाईयों के सामने अफ़्शाए राज़ फ़रमा दिया और बता दिया के मैं ही यूसुफ़ हूँ और फिर अपने भाईयों से

हज़रत याकूब अलेहिस्सलाम का हाल दरयाफ़्त फ़रमाया, वो कहने लगे के आपके फ़िराक़ में रोते रोते उनकी नज़र बहाल नहीं रही, यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया तो ये लो मेरी क़मीस ले जाओ, इसे वालिदे माजिद के मुंह पर डाल दो उनकी बीनाई वापस आ जाएगी, हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की इस क़मीस मुबारक की ये शान थी के किसी बीमार पर भी डाली जाती तो वो अच्छा हो जाता, चुनाँचे वो लोग क़मीस लेकर वापस लौटे और वो भाई जिसने यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को कुएँ में फैंकने के बाद आपकी क़मीस खून आलूद कर के याकूब अलेहिस्सलाम को दिखाई थी कहने लगा के उस दिन भी मैंने क़मीस यूसुफ़ उठाई थी और वालिद साहब को रंज पहुँचाया था और आज भी मैं ही क़मीस यूसुफ़ उठाता हूँ और वालिद साहब को खूश करूंगा चुनाँचे क़मीस यूसुफ़ उसी ने उठाई और कुनआन की तरफ़ रवाना हुए इधर ये लोग मिस्र से निकले और उधर कुनआन में याकूब अलेहिस्सलाम अपने और अहबाब से फ़रमाने लगे के आज मुझे यूसुफ़ की खुश्बू आ रही है वो कहने लगे आप तो उसी पुरानी वारफ़्तगी में हैं भला अब यूसुफ़ कहाँ?

इतने में बिरादराने यूसुफ़ आ पहुँचे और वो क़मीस हज़रत याकूब अलेहिस्सलाम के मुंह पर डाली गई तो फौरन आपकी बीनाई फिर आई आपने अल्लाह का शुक्र अदा किया और फ़रमाया मैं ना कहता था के जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते। (कुरआन करीम पारा 13, रूकू 5, रूह-उल-बयान सफा 205 जिल्द 2)

सबक़: अल्लाह वालों के बदन अनवर से जो चीज़ लग जाए वो दाफ़अे-उल-बला और बीमारियों के लिए शिफा बन जाती है फिर अल्लाह वाले खुद क्यों ना दाफ़अे-उल-बला होंगे और उन्हें दाफ़अे-उल-बला कहना शिर्क कैसे हो सकता है?

हिकायत नम्बर (117) बिछड़ों का मिलाप

याकूब अलेहिस्सलाम की मुबारक आँखें क़मीस यूसुफ़ की बर्कत से अच्छी हो गईं और याकूब अलेहिस्सलाम ने वक़्त सहर बाद नमाज़ हाथ उठा कर अल्लाह तआला के दरबार में अपने साहबज़ादों के लिए दुआ की वो क़बूल हुई और याकूब अलेहिस्सलाम को वही फ़रमाई गई के साहबज़ादों की ख़ता बख़्श दी गई इधर हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने अपने वालिद माजिद को मअे उनके अहलो अयाल के बुलाने के लिए दो सौ सवारियाँ और बहुत सा सामान भेजा और याकूब अलेहिस्सलाम ने मिस्र का इरादा फ़रमाया

और अपने अहल को जमा किया, कुल मर्दो ज़न बहत्तर तन थे और जब याक़ूब अलेहिस्सलाम मिस्र के क़रीब पहुँचे तो हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम और हज़ारहा लश्करी और कसीर तअदाद मिस्री सवारों को हमराह लेकर इसतक़बाल के लिए रेशमीं फ़रीरे उड़ाते क़तारें बाँधे रवाना हुए, याक़ूब अलेहिस्सलाम ने देखा तो बेटे यहूदा, से फ़रमाया, बेटा! क्या ये फ़िरऔन मिस्र का लश्कर है जो इस शानो शिकोह के साथ आ रहा है? अर्ज़ किया नहीं ये हुज़ूर के फ़रज़ंद यूसुफ़ हैं फिर जिब्राईल ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया हुज़ूर! ऊपर देखिए आपके जश्न मुसर्रत में शिर्कत के लिए फरिश्ते भी हाज़िर हैं जो आपके ग़म में रोया करते थे मलायका की तसबीह, घोड़ों का हिनहिनाना, तिब्ल व बूक़ की आवाज़ें अजीब कैफियत पैदा कर रही थीं, ये मोहर्रम की दसवीं तारीख़ थी जब दोनों बाप बेटा क़रीब हुए तो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम ने सलाम करना चाहा, जिब्राईल ने कहा आप तवक़्क़ुफ़ कीजिए, वालिद को मौक़ा दीजिए, याक़ूब अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ ग़म दूर करने वाले! अस्सलाम अलेक! फिर दोनों ने मुआनक़ह किया और खूब रोए और मुज़य्यन व नफ़ीस फ़रोदगाह में जो ख़ेमों वग़ैरासे आरास्ता थे दाख़िल हुए और फिर जब मिस्र में दाखिल हुए और यूसुफ़ अलेहिस्सलाम अपने तख़्त पर बैठे तो आपने अपने माँ बाप को भी तख़्त पर बिठाया हज़रत यूसुफ़ अलेहिस्सलाम की ये शानो शौकत और रफ़अत व अज़मत देखी तो आपके वालदैन और आपके सब भाई आपके लिए सज्दा में गिर गए और उस ख़्वाब की जो आपने देखा था के ग्यारह सितारे और चाँद सूरज उन्हें सज्दा कर रहे हैं तअबीर पूरी हो गई। (क़ुरआन करीम पारा 13, रूकू 5, ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान सफ़ा 350,)

सबक़: वालदैन का इक्राम व अदब हर एक पर लाज़िम है और सज्दा तअज़ीम व तहियत जो यूसुफ़ अलेहिस्सलाम को किया गया उस शरीयत में जायज़ था और हमारी शरीअत में ये सज्दा जायज़ नहीं, हाँ! हमारी शरीअत में मुसाफेहा व मआनक़ह तअज़ीमन दस्त बोसी ये जायज़ है।

हिकायत नम्बर (118) बे मौसम का फल

हज़रत मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* की वालिदा ने हालते हमल में ये नज़्र मानी थी के ऐ रब मेरे! मैं तेरे लिए मन्नत मानती हूँ के जो मेरे पेट में है वो ख़ालिस तेरी ख़िदमत के लिए रहेगा चुनाँचे आपके हाँ एक बच्ची पैदा हुई जिसका नाम मरयम रखा गया और वालिदा मरयम अपनी इस बच्ची को बैत-उल-मुक़द्दस में ले गईं और मस्जिद की ख़िदमत के लिए

वहाँ दाखिल कर दिया बैत-उल-मुक़द्दस के मुतावल्लियों में हज़रत ज़क्रया अलेहिस्सलाम भी थे और आप मरयम के अज़ीज़ भी थे आपकी अहलिया मरयम की ख़ाला थीं इसलिए मरयम को आपने अपनी निगहबानी में रखा, ज़क्रया अलेहिस्सलाम ने मरयम के लिए मस्जिद में एक कमरा बनवाया और मरयम को अपनी ज़ेरे निगरानी उसमें रखा, आपके सिवा इस कमरे में कोई ना जा सकता था आप जब बाहर जाते तो कमरे के दरवाज़े बन्द कर के जाते और तशरीफ़ लाते तो खुद ही खोलते, हज़रत मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* की करामत देखिए के ज़क्रया अलेहिस्सलाम जब भी उस कमरे में दाखिल होते तो उस बन्द कमरे में मरयम के पास मुख़्तलिफ क़िस्म के ताज़ा फल मौजूद पाते, गर्मियों के फल सर्दियों में और सर्दियों के फल गर्मियों में वहाँ रखे होते, हज़रत ज़क्रया अलेहिस्सलाम ने ये सूरत देखी तो फ़रमाया ऐ मरयम! ये फल तुम्हें इस बन्द कमरे में कौन दे जाता है? और ये फल कहाँ से आते हैं मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* ने फ़रमाया, "वो अल्लाह के पास से आते हैं वो जिसे चाहे बे हिसाब दे।"

हज़रत ज़क्रया अलेहिस्सलाम की उम्र शरीफ पिछत्तर साल से भी ज़्यादा थी सर अनवर सफेद हो चुका था और आवाज़ मुबारक में भी ज़ौफ आ चुका था और आपके हाँ औलाद ना थी, आपने ख़याल फ़रमाया के खुदा तआला मरयम को बे मौसम के फल अता फ़रमाता है तू मुझे भी इस बूढ़ापे में जब के मेरी बीवी भी बाँझ है यक़ीनन औलाद देने पर क़ादिर है इस ख़याल से आपने उसी जगह जहाँ आप मरयम के पास बैठे थे दुआ की के "ऐ अल्लाह मुझे अपने पास से साफ सुथरी औलाद दे बेशक तू दुआ सुनने वाला है।"

आपकी इस दुआ के बाद जिब्राईल हाज़िर हुए और अर्ज़ किया के अल्लाह तआला ने आपको बशारत दी है के आप के हाँ लड़का पैदा होगा जिसका नाम याहिया होगा।

(क़ुरआन करीम पारा 3, रूकू 12, रूह-उल-बयान सफ़ा 324, जिल्दः 1)

सबक़: औलिया की करामात बरहक़ है, मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* के पास बे मौसम के फल मौजूद होना, ये उनकी करामत थी और ये भी मालूम हुआ के जिस जगह अल्लाह वालों के क़दम आ जायें उस जगह को एक ख़ास ख़सूसियत हासिल हो जाती है और उस जगह जो दुआ माँगी जाए वो खुदा जल्दी सुनता है इसलिए हज़रत ज़क्रया अलेहिस्सलाम ने उस जगह जहाँ मरयम थी दुआ माँगी और वो क़बूल हो गई और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के बताने से अंबियाक्राम को माफी-उल-अरहाम का

भी इल्म हो जाता है क्योंके जब अल्लाह ने बशारत दी के तुम्हारे हाँ याहिया पैदा होगा तो ज़क्रया अलेहिस्सलाम को इल्म हो गया के मेरी अहलिया के पेट में लड़का है।

हिकायत नम्बर (119) खुदा की निशानी

हज़रत मरयम अलेहा अस्सलाम एक रोज़ अपने मकान में अलग बैठी थीं के आपके पास जिब्राईले अमीन एक तनदरूस्त आदमी की शक्ल में आए, मरयम अलेहा अस्सलाम ने जो एक ग़ैर आदमी को अपने पास मौजूद देखा तो आपने फ़रमाया तुम कौन हो? और यहाँ क्यों आए हो, देखो खुदा से डरना मैं तुझ से अल्लाह की पनाह माँगती हूँ, जिब्राईले अमीन ने कहा, डरो मत मैं अल्लाह का भेजा हुआ आया हूँ और इसलिए आया हूँ के मैं तूझे एक सुथरा बेटा दूं, मरयम बोलीं, बेटा मेरे कहाँ से होगा जबके मैं अभी बियाही ही नहीं गई और किसी आदमी ने मुझे हाथ भी नहीं लगाया और कोई बदकार औरत भी नहीं हूँ, जिब्राईल बोले, ये ठीक है मगर रब ने फ़रमाया है के बाप के बग़ैर भी बेटा देना मेरे लिए कुछ मुश्किल नहीं और ये बात भी मुझे आसान है और हम चाहते हैं के तुम्हारे यहाँ बग़ैर बाप के बेटा पैदा कर के अपनी रहमत का और लोगों के लिए एक निशानी का मुज़ाहरह करें और ये काम होकर ही रहेगा, हज़रत मरयम ये बात सुनकर मुतमईन हो गईं फिर जिब्राईले अमीन ने उनके गिरेबाँ में एक फूंक मारी तो मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* उसी वक़्त हामला हो गईं आपका बग़ैर शौहर के हामला हो जाना लोगों के लिए बाइसे तअज्जुब हुआ, सबसे पहले आपके हमल का इल्म आपके चचा ज़ाद भाई यूसुफ़ नजार को हुआ जो बैत-उल-मुक़द्दस का ख़ादिम था, वो हज़रत मरयम का ज़ेहदो अतक़ा और आपकी इबादत और मस्जिद से ग़ैर हाज़री याद करता और फिर आपका हामला हो जाना देखता तो बड़ा हैरान होता के ये क्या बात है? आख़िर एक दिन उसने जुराअत करके *अला इब्निहा अस्सलाम* से पूछ लिया और बात इस तरह शुरू की के ऐ मरयम! मुझे बताओ क्या खेती बग़ैर तुख़्म और दरख़्त बग़ैर बारिश के और बच्चा बग़ैर बाप के पैदा हो सकता है, मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* ने जवाब दिया क्या तूझे मालूम नहीं के अल्लाह तआला ने जो सबसे पहले खेती पैदा की वो बग़ैर तुख़्म के ही पैदा की और दरख़्त बग़ैर बारिश के अपनी क़ुद्रत से लगाए और क्या तूझे मालूम नहीं के अल्लाह तआला ने आदम और हव्वा को बग़ैर माँ बाप के पैदा किया, यूसुफ़ ने कहा बेशक अल्लाह तआला उन

सब उमूर पर क़ादिर है और मेरा शुबह रफ़अे हो गया।

उसके बाद अल्लाह तआला ने मरयम को इलहाम किया के वो अपनी क़ौम से अलेहदा चली आयें इसलिए वो एक दूर जगह चली गईं और जब बच्चा जनने का दर्द शुरू हुआ तो आप एक खुश्क दरख़्त से तकिया लगा कर बैठ गईं और फ़ज़ीहत व नदामत के अंदेशे से बोलीं, हाय! किसी तरह मैं इससे पहले ही मर गई होती और भूली बिसरी हो जाती, मरयम ने जब ये बात कही तो उन्हें एक आवाज़ आई के ऐ मरयम! अपनी तनहाई का, लोगों की चहमेगोई का और खाने पीने का कोई ग़म ना कर, तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर जारी कर दी है और उस खजूर के दरख़्त की जड़ पकड़ कर उसे हिला, चुनाँचे मरयम ने उस दरख़्त को हिलाया तो वो फ़ौरन सर सब्ज़ व शादाब हो गया और उसे ताज़ा फल भी लग गया और पकी खजूरें गिरने लगीं, फिर जब आपके पेट से हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम पैदा हुए तो आवाज़ आई के ले फल भी खा पानी भी खा और अपने नूरऐन बच्चे से आँखें भी ठण्डी रख और जब कोई शख़्स तुझ से इस मामले में पूछे तो तुम खुद कुछ मत कहना बल्के इसी अपने बच्चे की तरफ़ इशारा कर देना।

हज़रत मरयम फिर अपने बच्चे को गोद में लेकर अपनी क़ौम के पास आई तो लोगों ने ये अजीब बात देख कर कुंवारी मरयम की गोद में बच्चा है कहा के ऐ मरयम! तुम ने ये अच्छा काम नहीं किया, तेरे माँ बाप तो ऐसे ना थे, अफ़सोस! तुम ने ये बहुत बुरी बात की, मरयम *अला इन्निहा अस्सलाम* ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया के मुझ से कुछ ना कहो, अगर कुछ कहना है तो उससे कहो लोग ये बात सुन कर और भी गुस्से में आ गए और बोले के हम उस दूध पीते पनघोड़े के बच्चे से कैसे बात करें?

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने दूध पीना छोड़ दिया और अपने बायें हाथ पर टेक लगा कर क़ौम की तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाने लगे, सुनो! मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, अल्लाह ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है और मुबारक किया है चाहे मैं कहीं भी रहूँ और अल्लाह ने मुझे नमाज़ ज़कात की ताकीद फ़रमाई है और मुझे माँ के साथ नेक सलूक करने वाला बनाया और बदबख़्त नहीं बनाया।

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम की इस शहादत से वो लोग हैरान और ख़ामोश हो गए। (कुरआन करीम पारा 16, रूकू 5, खज़ायन-उल-कुरआन सफ़ा 434)

सबक़:- अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है, वो किसी ज़रिये का

मोहताज नहीं है जो चाहे कर सकता है असबाब को फ़अइल जानना या बग़ैर उनके खुदा को आजिज़ मानना सरासर जहालत, कुफ्र और हिमाक़त है और ये भी मालूम हुआ के नूरानी मख़्लूक़ बशरीयत का लिबादा ओढ़ कर आ जाए तो वो हमारी मिस्ल बशर नहीं हो जाती और उसकी हक़ीक़त नूर बदल नहीं जाती जैसे के जिब्राईले अमीन जो नूरानी थे एक तंदरूस्त आदमी की शक्ल में आए मगर वो हमारी तरह बशर ना थे और ना हैं बल्के नूर ही थे और नूर ही हैं इसी तरह हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम भी जो सब नूरों के मुनब्बअे नूर हैं हमारे पास लिबास बशरीयत में तशरीफ़ लाए तो इस लिबादा बशरीयत के ओढ़ लेने से आप हमारी मिस्ल बशर हर गिज़ ना थे और ना हैं बल्के आप नूर ही थे और नूर ही हैं और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह की कोई नअेमत जिस ज़रिये से मिले उस नअेमत का मिलना इस ज़रिये की तरफ़ मनसूब कर देना जायज़ है जैसे के बेटा देना अल्लाह का काम है मगर जिब्राईल ने यूं कहा के "मैं इस लिए आया हूँ ताके तुझे एक सुथरा बेटा दूं।"

चूंके मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* को बेटा मिला जिब्राईल की वसातत से था इसलिए क़ुरआन ने ये बेटा देने की निसबत जिब्राईल की तरफ़ कर दी और इस बात का एलान फ़रमा दिया के मरयम को बेटा जिब्राईल ने दिया है गोया मुताबिक़ आयत क़ुरआनी के ईसा अलेहिस्सलाम का दूसरा नाम जिब्राईल बख़्श है, बिना बरीं किसी अल्लाह वाले की दुआ की वसातत से कोई काम हो जाए तो हम कह सकते हैं के ये काम फलाँ बुज़ुर्ग ने किया है या पीर व मुर्शिद की दुआ से अल्लाह बेटा दे तो हम कह सकते हैं के ये बच्चा पीर ने दिया है और उसका नाम पीर बख़्श रख सकते हैं।

और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के नबियों को आने वाली बातों का पहले ही का इल्म होता है इसी लिए हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने शीर ख़्वारगी के आलम ही में सबसे पहले जो बात की वो ये की के मैं अल्लाह का बन्दा हूँ यानी आप को इस बात का इल्म था के मुझे अल्लाह और अल्लाह का बेटा कहेंगे इसलिए आपने सब से अव्वल अपनी अबूदियत ही का एलान फ़रमाया और ये भी मालूम हुआ के विलादत ईसा अलेहिस्सलाम के बाद खुश्क खजूर से अल्लाह तआला ने ताज़ा खजूरें निछावर कीं तो अगर महफ़िल मीलाद शरीफ में सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह सल्लम के ज़िक्र मीलाद के बाद हम मिठाई तक़सीम करें तो मना क्यों कहा जाए?

हिकयत नम्बर (120) शार्गिद या उस्ताद

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम जब चलने फिरने लगे तो मरयम अला इब्निहा अस्सलाम आपको उस्ताद के पास लेकर आईं और कहा के इस बच्चे को पढ़ाओ, उस्ताद ने हज़रत ईसा अला इब्निहा अस्सलाम से कहा ऐ ईसा! पढ़! ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, उस्ताद ने फिर कहा कहो रे बे जीम दाल, ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया क्या तुम जानते हो के इन हरूफ का मअनी क्या हैं? उस्ताद ने कहा इन हरूफ का मअनी तो मैं नहीं जानता फ़रमाया तो मुझ से सुनो अलिफ से मुराद अल्लाह, बे से मुराद अल्लाह की बहुज्जत, जीम से मुराद अल्लाह का जलाल और दाल से मुराद है अल्लाह का दीन, उस्ताद ने हज़रत मरयम *अला इब्निहा अस्सलाम* से कहा के आप इस बच्चे को वापस ले जायें, ये किसी उस्ताद का मोहताज नहीं भला मैं इसे क्या पढ़ा सकता हूँ जब के ये खुद मुझे पढ़ा रहा है। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 432 जिल्द 2)

सबक़:- नबी किसी दुनयवी उस्ताद के मोहताज नहीं होते और उसका उस्ताद व मोअल्लिम खुदा होता और नबी ऐसे ऐसे उलूम का मुनब्बअ होता है जिन से दूसरे लोग बेख़बर होते हैं।

हिकायत नम्बर (121) दस्ते मसीहा

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम अभी कमसिन बच्चे ही थे के आप का गुज़र अपनी वालिदा के साथ एक शहर में हुआ जहाँ के लोग अपने बादशाह के दरवाज़े पर जमा थे, ईसा अलेहिस्सलाम ने इस अज़्दहाम की वजह पूछी तो पता चला के बादशाह की बीवी बच्चा जनने के क़रीब है और बच्चा पैदा नहीं होता ये लोग अपने बुतों से इस तकलीफ से निजात के लिए गिड़गिड़ा कर दुआयें माँग रहे हैं ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया अगर मेरा हाथ बादशाह की बैगम के पेट पर रख दिया जाए तो फौरन बच्चा पैदा हो जाएगा, लोगों ने ये गुफ़्तगू सुनी तो आपको बादशाह के पास ले गए, ईसा अलेहिस्सलाम ने बादशाह से फ़रमाया ऐ बादशाह! मैं अगर ये भी बता दूं के इस औरत के पेट में लड़का है या लड़की और फिर पेट पर हाथ रख दूं और बच्चा पैदा हो जाए तो क्या तू एक अल्लाह पर ईमान ले आएगा? बादशाह ने कहा बेशक! हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया तो सुन! इसके पेट में लड़का है जिसके रूख़सार पर सियाह तिल और पीठ पर सफ़ेद तिल

है, इसके बाद आपने फ़रमाया ऐ बच्चे मैं तुझे इस ज़ात की क़सम देता हूँ जिसने सब मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया तो जल्दी पेट से बाहर आ जा, आपके ये कहते हुए ही बच्चा पैदा हो गया और सबने देखा के उसके रूख़सार पर सियाह तिल और पीठ पर सफेद तिल था आपका अेजाज़ देख कर बादशाह मुसलमान होने को तैयार हुआ मगर क़ौम ने ये कहकर ये जादू है बादशाह को मुसलमान होने से रोक दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 433 जिल्द 2)

सबक़:- अल्लाह का नबी बड़े बड़े उलूम व इख़्तियार लेकर आता है और उनकी नज़र माफी-उल-अरहाम तक भी पहुँच जाती है और उनके हाथ भी दाफ़अे-उल-बला होते हैं।

हिकायत नम्बर (122) अन्धा और लंगड़ा चोर

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम अभी नो उम्र ही थे के आप अपनी वालिदा के साथ मिस्र के एक अमीर कबीर के हाँ महमान हुए इस अमीर आदमी के हाँ बहुत से मुफ़्लिस और मोहताज आदमी महमान रहा करते थे, इत्तेफाक़ से एक दिन उसके हाँ चोरी हो गई और कुछ माल जाता रहा, उस अमीर आदमी को उन्हीं मुफ़्लिस और मोहताज लोगों पर जो उसके पास रहते थे शुबह था, हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने अपनी वालिदा से कहा के उस अमीर आदमी को कहिये के उन सब मुफ़्लिसों को एक जगह इकठ्ठा करे जब उस शख़्स ने उन मुफ़्लिसों को एक जगह जमा कर लिया तो आप उनमें तशरीफ़ ले गए और उनमें से एक लंगड़ा आदमी को उठा कर एक अन्धे शख़्स की गर्दन पर बैठा दिया और कहा ऐ अन्धे! इस लंगड़े को उठा कर खड़ा हो जा, वो अन्धा बोला मैं निहायत ज़ईफ और कमज़ोर आदमी हूँ इसे क्योंकर उठा सकता हूँ, हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया गुज़िश्ता शब को तुम में इसके उठाने की ताक़त कहाँ से आ गई थी? ये सुनकर वो अन्धा कांपने लगा, दरअसल उसी अन्धे ने इस लंगड़े को उठाया था और उसके ज़रिये ये चोरी की थी चुनाँचे वो दोनों चोर पकड़े गए। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 433 जिल्द 2)

सबक़:- अल्लाह के नबी छुपी हुई बातों को जो हो चुकीं या होने वाली हों, सबको जान लेते हैं, नबी को बेख़बर जानना बेख़बरों का काम है।

हिकायत नम्बर (123) दुनिया परस्त का अंजाम

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम एक सफर में निकले तो उनके साथ एक यहूदी हो लिया, इस यहूदी के पास दो रोटियाँ थीं और हज़रत ईसा

अलेहिस्सलाम के पास एक रोटी थी, ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया आओ दोनों मिलकर रोटी खायें, यहूदी ने मान लिया मगर जब उसने देखा के ईसा अलेहिस्सलाम के पास एक रोटी और मेरे पास दो रोटियाँ है तो पछताया के मैंने शिर्कत का वादा क्यों कर लिया चुनाँचे जब खाने का वक़्त हुआ तो यहूदी ने एक ही रोटी निकाली, ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुम्हारे पास दो रोटियाँ थीं एक कहाँ गई? यहूदी बोला मेरे पास तो एक ही रोटी थी, दो कब थीं? खाना खाने के बाद जब आगे बढ़े तो रास्ते में एक अन्धा मिला, ईसा अलेहिस्सलाम ने इसके लिए दुआ की तो वो बीना हो गया ये मोजज़ा दिखा कर ईसा अलेहिस्सलाम ने यहूदी से फ़रमाया, तुझे उस अल्लाह की क़सम! जिसने मेरी दुआ से इस अन्धे को आँखें दे दीं सच सच बता दूसरी रोटी कहाँ गई, वो बोला मुझे उसी अल्लाह की क़सम! मेरे पास तो एक ही रोटी थी, फिर जब और आगे बढ़े तो एक हिरन दिखाई दिया, ईसा अलेहिस्सलाम ने उसे बुलाया, वो आ गया आपने उसे ज़िबह किया, भूना और खाया और फिर उसकी हड्डियों से फ़रमाया, कुम बिइज़निल्लाह! वो हिरन फिर ज़िन्दा हो गया, ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया तुझे उस अल्लाह की क़सम जिसने हमें ये हिरन खिलाया और उसे फिर ज़िन्दा कर दिया, सच मुच बताओ के दूसरी रोटी कहाँ गई, वो यहूदी बोला मुझे उसी अल्लाह की क़सम! मेरे पास तो दूसरी रोटी थी ही नहीं, आगे बढ़े तो एक क़स्बा आ गया, ईसा अलेहिस्सलाम ने वहाँ क़याम किया यहूदी ने मौक़ा पाकर हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम का असा चुरा लिया और खुश हुआ के मैं इस सोंटे से मुर्दे ज़िन्दा कर लिया करूंगा चुनाँचे उस क़स्बे में उसने एलान किया के मुर्दे ज़िन्दा कराने हों तो मुझ से करा लो, लोग उसे हाकिम शहर के पास ले गए जो बड़ा सख़्त बीमार था और कहा ये बीमार है उसे अच्छा कर दो, यहूदी ने पहले तो उस हाकिम के सर पर ज़ोर से वो डंडा मारा और कहा, कुम बिइज़निल्लाह! मगर वो ज़िन्दा ना हो सका, अब तो ये घबराया लोगों ने पकड़ लिया और फाँसी पर लटकाने लगे, इतने में ईसा अलेहिस्सलाम पहुँच गए और फ़रमाया तुम्हारा हाकिम मैं ज़िन्दा कर देता हूँ उसे छोड़ दो चुनाँचे आपने कुम बिइज़निल्लाह फ़रमाया तो वो हाकिम ज़िन्दा हो गया और लोगों ने यहूदी को छोड़ दिया, ईसा अलेहिस्सलाम ने उससे कहा तुझे उसी खुदा की क़सम जिसने तुम्हारी जान बचाई सच सच बताओ, वो दूसरी रोटी कहाँ गई? वो बोला उसी खुदा की क़सम! जिसने मेरी जान बचाई दूसरी रोटी मेरे पास थी ही नहीं, आगे बढ़े तो सोने की तीन ईंटें मिलीं ईसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया इनमें से एक

ईंट मेरी दूसरी तेरी और तीसरी उसकी जिसने तीसरी रोटी खाई वो बोला, ऐ ईसा! खुदा की क़सम तीसरी रोटी मैंने ही खाई थी, आपने वो तीनों ईंटें उसे दे दीं और फ़रमाया अब तुम मेरा साथ छोड़ दो चुनाँचे वो इन ईंटों को लेकर खुशी खुशी वापस हुआ लेकिन रास्ते में अल्लाह ने उसे ईंटों समेत ज़मीन में धंसा दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 207 जिल्द 2)

सबक़: दुनिया परस्त बेहद झूटा होता है और दुनिया की मोहब्बत में खुदा और उसके रसूल की कुछ परवाह नहीं करता और ऐसे ना आक़बत अंदेश का अंजाम बड़ा होलनाक होता है।

हिकायत नम्बर (124) नाकाम क़ातिल

यहूदी हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम के बहुत दुश्मन थे एक रोज़ यहूदियों के एक गिरोह ने हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम को गालियाँ दीं और यूं कहा के तुम जादूगर हो और तुम्हारी माँ भी जादूगरनी है और तुम बदकार हो और तुम्हारी माँ भी बदकार है (मआज़ अल्लाह) हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम को इस बात से बड़ा रंज हुआ और खुदा से दुआ माँगी के ऐ अल्लाह मैं तेरा पैग़म्बर हूँ और ये लोग मुझे और मेरी माँ को बुरा भला कह रहे हैं इलाही! उनको अपने अज़ाब का मज़ा चखा दे चुनाँचे आपकी दुआ क़बूल हुई और वो यहूदी अज़ाब मस्ख़ में मुब्तला होकर बन्दर और सूअर बन गए, यहूदियों के अमीर ने जब ये क़िस्सा सुना तो वो दौड़ा के कहीं ईसा हम सब को ऐसा ना बना डाले इस डर से उसने सारे यहूदियों को इकठ्ठा किया और कहा के किसी सूरत ईसा को क़त्ल कर डालो उधर जिब्राईल ने ईसा अलेहिस्सलाम को मतलअ कर दिया यहूदी आपको क़त्ल करने आयेंगे और आपको ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया जाएगा चुनाँचे एक रोज़ सब यहूदियों ने इकठ्ठे होकर ईसा अलेहिस्सलाम के घर का मुहासरा कर लिया और सबसे पहले एक आदमी को अन्दर भेजा ताके वो पता ले के ईसा घर में है या नहीं वो आदमी जब अन्दर गया तो उसकी शक्ल हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम की सी हो गई और ईसा अलेहिस्सलाम को अल्लाह ने ऊपर आसमान पर उठा लिया थोड़ी देर बाद जब यहूदी अन्दर घुसे तो उन्होंने अपने आदमी को ही ईसा समझ कर क़त्ल कर डाला और समझा ये के हमने ईसा को मार डाला है, उसके बाद वो खुद ही सोचने लगे के हमारा आदमी जो अन्दर आया था, वो कहाँ गया? अगर ये मक़्तूल ईसा है तो वो कहाँ? और अगर यही है तो फिर ईसा कहाँ?

अपने गुमान में तो उन्होंने ईसा अलेहिस्सलाम को क़त्ल कर डाला मगर

ऐसा हुआ नहीं बल्के उन्होंने अपने ही आदमी को क़त्ल कर डाला और ईसा अलेहिस्सलाम आसमानों पर ज़िन्दा उठा लिए गए। (क़ुरआन करीम पारा 6, रूकू 2, रूह-उल-बयान सफ़ा 513, जिल्द 1)

सबक़:- हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम आसमान पर ज़िन्दा उठा लिए गए हैं और जो लोग उनके क़त्ल हो जाने या मर जाने के क़ायल हैं वो महज़ धोके में हैं।

चौथा बाब

खुलफ़ा-ए-राशिदीन रिज़वानल्लाही अलेहिम अज़मईन

मोहम्मद माह व गर्दिश चार अख़्तर
अबुबक्र व उमर, उस्मान व हेदर

हिकायत नम्बर (125) सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह का ख़्वाब

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह क़ब्ल अज़ इस्लाम बहुत बड़े ताजिर थे आप एक मर्तबा मुल्क शाम में गए तो वहाँ आपने एक ख़्वाब देखा आपने देखा के चाँद और सूरज आसमान से नीचे उतर आए हैं और दोनों हज़रत अबुबक्र रज़ी अल्लाहो अन्ह की गोद में दाखिल हो गए हैं हज़रत अबुबक्र रज़ी अल्लाहो अन्ह ने दोनों को पकड़ कर अपने सीने से लगा लिया और अपनी चादर मुबारक ऊपर डाल दी, सुबह आप बैदार हुए तो उस अजीबो ग़रीब ख़्वाब की तअबीर पूछने के लिए एक राहिब के पास पहुँचे उस राहिब ने सारा ख़्वाब सुनकर पूछा, आपका नाम क्या है और आप कहाँ के रहने वाले हैं और कौन से क़बीले में? हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया मेरा नाम अबुबक्र है मक्का का रहने वाला हूँ और बनी हाशिम से हूँ, राहिब ने पूछा और काम क्या करते हैं? आपने फ़रमाया तिजारत करता हूँ, राहिब ने कहा तो मुबारक हो मक्के से और क़बीला-ए- बी हाशिम से नबी आख़िर-उज़-ज़माँ का ज़हूर होने वाला है अगर ये नबी पाक ना होते तो अल्लाह तआला ज़मीन व आसमान को पैदा ना फ़रमाता और

सारी कायनात भी कभी ज़ाहिर ना होती और जुमला अंबिया-ए-क्राम भी कभी पैदा ना होते वो नबी पाक रसूलों के सरदार होंगे और सब उन्हें "मोहम्मद अलअमीन" के नाम से याद करेंगे और ऐ अबुबक्र! इस ख़्वाब की तअबीर ये है के तुम उसके दीन में दाख़िल होगे और उसके अव्वलीं वज़ीर बनोगे और उसका ख़लीफा होगे।

ऐ अबुबक्र! मैंने उस नबी पाक की तौरेत में तारीफ पढ़ी है इंजील व ज़बूर में उसका ज़िक्र पढ़ा है और मैं उस पर ईमान ला चुका हूँ और उसके दीन में दाख़िल हो चुका हूँ और ईसाइयों के ख़ौफ से अपना ईमान छुपा रहा हूँ आज तुम से सारी हक़ीक़त बयान कर दी।

हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह ये सुनकर बड़े मुतास्सिर हुए और दिल पर रक़्त तारी हुई और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से मुलाक़ात के शौक़ का ग़ल्बा हुआ और फौरन मक्का वापस आए और हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए हुज़ूर को देख कर दिल, बाग़ बाग़ हो गया हुज़ूर भी अबुबक्र को देखकर मुसकुराए और फ़रमाया अबुबक्र! जल्दी कलमा पढ़ो और मेरे दीन में आ जाओ, सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह ने अर्ज़ किया हुज़ूर! क्या कोई मओज्ज़ा देख सकता हूँ? हुज़ूर ने मुसकुरा कर फ़रमायाः-

मुल्क शाम में जो ख़्वाब देखकर आए हो और राहिब ने जो तअबीर सुनाई थी वो मेरा मओज्ज़ा ही तो है।

सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह फौरन पुकार उठे

अशहद अन लाइलाहा इल्ललाहू व अशहद अन्ना मोहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू

(जामअे अलमओज्ज़ात सफ़ा 4, नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 302 जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वज़ीर अव्वल और ख़लीफा-ए-बिला फस्ल हैं और ये बात पहले ही से मुक़र्रर हो चुकी थी और इंजील व तोरेत के आलिम भी इस हक़ीक़त से बाख़बर थे फिर जो आपकी विज़ारत व ख़िलाफत का इंकार करे वो किस क़द्र ना वाक़िफ व बेख़बर है!

और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अगली पिछली दिन और रात की सब बातें जानते थे और आपसे कोई बात ग़ायब ना थी।

हिकायत नम्बर (126) यार-ए-ग़ार

मक्का मोअज़्ज़मा में जब मुसलमानों को कुफ़्फ़ार की तरफ़ से बहुत ईज़ा दी जाने लगी तो अल्लाह ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को मक्का मोअज़्ज़मा से हिजरत फ़रमा जाने का अज़्न दे दिया, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस बात का ज़िक्र सिद्दीके अक्बर से फ़रमाया और फ़रमाया के मैं अनक़रीब यहाँ से हिजरत कर जाऊँगा।

सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान, मैं भी हुज़ूर के साथ ही चलूंगा।

चुनाँचे शब हिजरत जब कुफ़्फ़ारे मक्का ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को शहीद कर देने की नीयत से हुज़ूर के घर का मुहासरा कर लिया और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सूरह यासीन तिलावत फ़रमाते हुए उस मुहासरे से सबके सामने घर से बाहर तशरीफ़ ले आए और हुज़ूर का बाहर निकलना किसी को भी नज़र ना आ सका तो हुज़ूर घर से निकल कर सीधे सिद्दीके अक्बर के घर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया ऐ अबुबक्र! मुझे अभी इसी वक़्त हिजरत फ़रमाने का अज़्न मिल चुका है और मैं मक्का छोड़ कर जा रहा हूँ, सिद्दीक़ अक्बर ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों, मैं भी साथ चलूंगा? फ़रमाया चलो, सिद्दीके अक्बर से हुज़ूर की मईयत की इजामत पाकर फ़र्ते मुसर्रत से रोने लगे और हुज़ूर के साथ हो लिए और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सिद्दीक़ अक्बर को हमराह लेकर मक्का मओज़्ज़मा से चल दिए, सिद्दीके अक्बर कभी हुज़ूर से आगे और कभी पीछे रह कर चलते। हुज़ूर ने इसकी वजह दरयाफ़्त की तो अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मैं चाहता हूँ के दुश्मन तआक़्क़ुब करता हुआ आगे या पीछे से आ जाए तो उसका वार मुझी पर हो और हुज़ूर पर मैं ही क़ुर्बान हों और हुज़ूर को कोई गज़िंद ना पहुँचे। चलते चलते सौर पहाड़ पर पहुँचे इस पहाड़ में एक ग़ार था जिसका नाम ग़ारे हव्वाम था, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उस ग़ार में तशरीफ़ फ़रमा हाने का क़सद फ़रमाया तो सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! ठहर जाईये पहले मुझे अन्दर जाने दीजिए, पुराना ग़ार है पहले मैं अन्दर जाता हूँ और उसे साफ करता हूँ, साफ कर लूं तो आप अन्दर आ जाईयेगा।

चुनाँचे पहले उस ग़ार में सिद्दीके अक्बर गए और उसे साफ करने लगे

उस ग़ार में कई बिल थे सिद्दीक़े अक्बर उन बिलों को अपने कपड़े फाड़ फाड़ कर बन्द करने लगे सिफ इसलिए के कोई मूज़ी जानवर हुज़ूर को तकलीफ ना पहुँचाए इस ग़ार में एक बहुत बड़ा सांप रहता था सिद्दीक़े अक्बर ने उसका बिल जो देखा तो कपड़ा ख़त्म होने के बाइस कपड़े से तो उसे बन्द ना कर सके और अपनी ऐड़ी उसमें रख दी अपनी जान की परवाह ना की और यही सोचा के मुझे जो चाहे तकलीफ पहुँचे मगर हुज़ूर को कोई तकलीफ ना पहुँचे इस बिल पर ऐड़ी रखने के बाद सिद्दीक़े अक्बर ने फिर हुज़ूर को अन्दर बुला लिया और हुज़ूर अन्दर तशरीफ़ ले आए और अपना सरे अनवर सिद्दीक़ अक्बर की गोद में रख कर सो गए, वो बिल जिस पर सिद्दीक़े अक्बर की ऐड़ी थी उसमें से ज़हरीले सांप ने सिद्दीक़े अक्बर को डस लिया, सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को तकलीफ तो हुई मगर आप अपनी जगह से हिले तक नहीं ताके हुज़ूर की नींद मुबारक में खलल ना आए, सांप के ज़हर की तकलीफ से सिद्दीक़े अक्बर के आंसू निकल आए और चन्द आंसू हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर गिरे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमया अबुबक्र क्यों रो रहे हो? सिद्दीक़े अक्बर ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों मुझे सांप ने डस लिया है, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उसी वक़्त अपना लआब दहन शरीफ लगा दिया तो सिद्दीक़े अक्बर की सारी तकलीफ दूर हो गई।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और सिद्दीक़े अक्बर जब उस ग़ार में दाख़िल हुए तो ग़ार से दूर एक दरख़्त था हुज़ूर ने उस दरख़्त को हुक्म दिया तो वो दरख़्त अपनी जगह से चल कर ग़ार के मुंह पर आकर खड़ा हो गया यूं मालूम होने लगा के ये दरख़्त यहीं उगा हुआ है और ग़ार का मुंह उस दरख़्त की शाखों से बन्द हो गया और अल्लाह ने उसी वक़्त एक मकड़ी को भेजा जिसने इस दरख़्त की शाखों के अन्दर जाला बुन दिया, ये सब सामान इसलिए किया गया ताके काफिर अगर हुज़ूर का तआक़्कुब करते हुए वहाँ तक आएँ तो वो ग़ार के मुंह के आगे दरख़्त और उसकी शाखों में जाला बुना हुआ देखें तो उन्हें हुज़ूर के अन्दर चले जाने का शुबह भी ना गुज़रे चुनाँचे इधर जब काफिरों को पता चला के मोहम्मद(सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) तो अबुबक्र की मईयत में मक्का से चले गए तो बहुत हैरान हुए और हुज़ूर की तलाश करने लगे और कुछ खोजी हुज़ूर का खोज निकालने के लिए मुक़र्रर कर दिए उन खोज निकालने वालों में से एक शख़्स

खोज निकालता हुआ ग़ार तक आ पहुँचा और फिर कहने लगा के यहाँ तक मोहम्मद और अबुबक्र आए हैं लेकिन उसके बाद पता नहीं चल रहा के दायें गए या बायें, काफिर वहाँ जमा हो गए लेकिन वहीं हैरान के हैरान खड़े रहे कुछ पता ना चला के यहाँ से आगे किधर गए हैं, सिद्दीक़े अक्बर ने जब काफिरों के क़दम ग़ार से बाहर देखे तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लाम की फिक्र में आप परेशान से हुए तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया, कोई फिक्र ना करो, अल्लाह हमारे साथ है।

इतने में उन काफिरों में से एक काफिर बोला, ज़रा इस ग़ार के अन्दर तो जाकर देखें, ये सुनकर दूसरों ने जवाब दिया बेवकूफ हो ग़ार के मुंह के आगे दरख़्त उगा हुआ है और उसपर मकड़ी का जाला भी बना हुआ है अगर अन्दर कोई गया होता तो ये शाखें और उनका जाला ज़रूर टूटा फूटा नज़र आता मगर ये बात तो नज़र नहीं आती फिर किसी के अन्दर जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

चुनाँचे वो मायूस होकर वहाँ से लौट गए और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और उनके साथी सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह अपने अल्लाह की हिफाज़त में बिलकुल खेरियत से रहे, "क़ुरआन करीम पारा 10 रूकू 12" (मिश्कात शरीफ सफ़ा 548, रूह-उल-बयान सफ़ा 902 जिल्द 1)

सबक़:- 1- क़ुरआन पाक में इस वाक़्ये के ज़िम्न में *इज़ यक़ूलू लिसाहिबीही* फ़रमाया कर अल्लाह तआला ने सिद्दीक़े अक्बर को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का सहाबी फ़रमाया है लिहाज़ा जो शख़्स सिद्दीक़े अक्बर की सहाबियत का मुनकिर है वो काफिर है।

2- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने *ला तहज़न इन्नल्लाहा मआना* फ़रमा कर यानी "ग़म ना कर अल्लाह हमारे यानी हम दोनों के साथ है" ये ज़ाहिर फ़रमाया दिया के अल्लाह तआला सिद्दीक़े अक्बर के साथ है, मालूम हुआ के सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बाद जो तख़्ते खिलाफत पर मुतमकिन हुए ये आप ही का हक़ था और आप ग़ासिब व ज़ालिम ना थे इसलिए अल्लाह ग़ासिब व ज़ालिम के साथ नहीं होता फिर अगर कोई ज़ालिम आपको ज़ालिम कहे तो उसने गोया आयत *ला तहज़न इन्नल्लाहा मआना* का इंकार कर दिया।

3- शबे हिजरत हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का

सिद्दीके अक्बर के घर तशरीफ़ ले जाकर उन्हें अपने साथ ले चलना और सिद्दीके अक्बर का सब कुछ छोड़ कर हुज़ूर के साथ चल पड़ना बताता है के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को सिद्दीके अक्बर से और सिद्दीके अक्बर को हुज़ूर से इन्तिहाई मोहब्बत थी।

4- ग़ार के अन्दर हुज़ूर को बाहर ठहरा कर सिद्दीके अक्बर का पहले खुदा अन्दर जाना और बिलों को अपने कपड़े फाड़ फाड़ कर बन्द करना और फिर एक बिल पर अपनी ऐड़ी रख देना बताता है के सिद्दीके अक्बर को माल व जान से भी ज़्यादा प्यारे थे और यही कमाले ईमान की निशानी है जो सब से ज़्यादा सिद्दीके अक्बर में नज़र आती है।

5- मुक़ाम डंक पर हुज़ूर का अपना लुआब दहन शरीफ लगा कर शिफा बख़्श देना साबित करता है के हुज़ूर का लआब दहन शरीफ भी दाफ़ओ अलबला है।

6- इर्शाद मुसतफा की तअमील करते हुए दरख़्त का अपने मुक़ाम से चल कर ग़ार के मुंह पर आ जाना बताता है के हमारे हुज़ूर का हुक्म व तसर्रूफ कायनात के हर ज़र्रे पर जारी है।

7- काफिरों का ग़ार के मुंह तक आ पहुँचना और फिर वहाँ से मायूस व ना मुराद लौटना बताता है के हक़ के मुक़ाबले में सारी इसकीमें और तदबीरें खाक में मिल जाती हैं।

हिकायत नम्बर(127) आसमान के तारे

एक रात जब के आसमान साफ था और सितारे चमक रहे थे, हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उम्म-उल-मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अन्हा के पास तशरीफ़ फ़रमा थे हज़रत आयशा ने आसमान की तरफ़ देख कर हुज़ूर से दरयाफ़्त फ़रमाया या रसूल अल्लाह! जितने आसमान के तारे हैं उतनी किसी शख़्स की नेकियाँ भी हैं? हुज़ूर ने फ़रमाया हाँ! सिद्दीक़ा ने अर्ज़ किया, हुज़ूर वो किस की? हुज़ूर ने फ़रमाया उमर की।

उम्म-उल-मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा का ख़याल था के हुज़ूर सिद्दीके अक्बर का नाम लेंगे मगर हज़रत उमर का नाम सुनकर सिद्दीक़ा ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह और मेरे वालिद की नेकियाँ किधर गईं, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया आयशा! उमर की सब नेकियाँ अबुबक्र की नेकियों में से एक नेकी के बराबर हैं। (मिश्कात शरीफ सफ़ा 552)

सबक़:- सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह की बहुत बड़ी शान है नबियों के बाद सबसे बड़ा मर्तबा आप ही का है और आप जो शब हिजरत हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मईयत में रहे उस एक ही नेकी का इतना बड़ा दर्जा है के आसमान के तारों के बराबर नेकियाँ भी उस एक नेकी के बराबर नहीं सकतीं।

और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से उम्मत के नेक व बद आमाल ग़ायब नहीं बल्के हुज़ूर सब के आमाल को जानते हैं बाज़ नेकियाँ अलल एलान होती हैं मगर कई नेकियाँ पौशीदा भी होती हैं और हज़रत उमर की जुमला नेकिनयाँ जिनमें एलानिया नेकियाँ भी थीं और पौशीदा नेकियाँ भी उन सब नेकियों का इल्म हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को था, जभी तो फ़रमाया के उमर की नेकियाँ आसमान के तारों के बराबर हैं।

हिकायत नम्बर(128) पाँच चीज़ें

एक दिन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह से पूछा जनाब! ये तो फ़रमाईये आप इतने बड़े मर्तबे को किन बातों से पहुँच गए?

सिद्दीके अक्बर ने फ़रमाया, पाँच बातों से:

1- मैंने लोगों को दो तरह का पाया, एक वो जो दुनिया की तलब में सरगरदाँ हैं दूसरे वो के जो आख़िरत की तलब में कोशाँ हैं, मैंने मौला की तलब में कोशिश की है।

2- मैं जब से इस्लाम में आया हूँ कभी दुनिया का खाना पेट भर कर नहीं खाया क्योंके इर्फ़ाने हक़ की लज्ज़त ने मुझे इस दुनिया के खाने से बे नियाज़ कर दिया है।

3- जब से इस्लाम लाया हूँ कभी सेर होकर पानी नहीं पिया, क्योंके मोहब्बत इलाही के पानी से सैराब हो चुका हूँ।

4- जब भी मुझे दुनिया व आख़िरत के दो काम पेश आए तो मैंने अख़रवी काम को मुक़द्दम किया और दुनयवी काम की कुछ परवाह किए बग़ैर अख़रवी काम ही को इख़्तियार किया।

5- मैं हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की सोहबत में रहा और मेरी ये सोहबत हुज़ूर के साथ बड़ी अच्छी रही। (नज़्हत-उल-मजालिस सफ़ा 304 जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह उम्मत में से सबसे बड़े तालिब मौला आरिफ़ कामिल, मुहिब्ब हक़, मुत्तक़ी और सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सहाबी हैं।

हिकायत नम्बर(129) पुल सिरात की राहदारी

एक दिन सिद्दीके़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह हज़रते मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की तरफ़ देख कर मुसकुराए, मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने दरयाफ़्त किया जनाब मुझे देख कर आप मुसकुराए क्यों? सिद्दीके़ अक्बर ने फ़रमाया ऐ अली! मुबारक हो, मुझ से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के जब तक अली किसी को पुल सिरात से गुज़रने की चिट्ठी ना देगा तब तक वो पुल सिरात से गुज़रने ना सकेगा, इस पर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह भी मुसकुरा पड़े और फ़रमाया ऐ ख़लीफ़ात-उल-मुसलिमीन! आपको भी मुबारक हो, मुझ से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के ऐ अली! तुम उस शख़्स को पुल सिरात की राहदारी हर गिज़ ना देना जिसके दिल में अबुबक्र की अदावत हो बल्के उसी देना जो अबुबक्र का मुहिब्ब हो। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 306 जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की मोहब्बत व गुलामी से कुछ फ़ायदा जभी हासिल हो सकता है जब के सिद्दीके़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह की मोहब्बत भी दिल में हो वरना बराए नाम मोहब्बते अली किसी काम की नहीं।

हिकायत नम्बर(130) अंगूठी का नक़्श

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सिद्दीके़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को अपनी अंगूठी मुबारक दी और फ़रमाया के इस पर *ला इलाहा इल्ललाहू मोहम्मदुर रसूल अल्लाह* लिखवा लाए जब अंगूठी हुज़ूर की ख़िदमत में पेश की तो उस पर लिखा था: *ला इलाहा इल्ललाहू मोहम्मदुर रसूल अल्लाह* और उसके साथ ही सिद्दीके़ अक्बर का अपना नाम भी लिखा था, हुज़ूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया अबुबक्र! हम ने तो *ला इलाहा इल्ललाहू* लिखवाने को कहा था मगर तुम हमारा नाम भी और अपना नाम भी लिखवा लाए, अर्ज़ किया हुज़ूर! मेरा दिन ना मानता था के खुदा के नाम के साथ आपका नाम ना हो ये आपका नाम तो मैंने ही

लिखवाया है मगर मेरा नाम? ये तो यहाँ तक आते आते ही लिखा गया वरना मैंने हर गिज़ नहीं लिखवाया इतने में जिब्राईल अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! खुदा फ़रमाता है, सिद्दीक़ इस अम्र पर राज़ी ना हुए के आपका नाम हमारे नाम से जुदा करें और हम इस अम्र पर राज़ी ना हुए के सिद्दीक़ का नाम आपके नाम से जुदा करें, सिद्दीक़ ने आपका नाम हमारे नाम के साथ लिखवा दिया और हम ने सिद्दीक़ का नाम आपके नाम के साथ लिख दिया। (तफ़्सीर कबीर सफ़ा 91 जिल्द 1)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सच्चे रफ़ीक़ हैं और हर जगह हुज़ूर के साथ हैं और खुद अल्लाह तआला इस रफ़ाक़त का मोईद व शाहिद है।

हिकायत नम्बर(131) खुदा की तसदीक़

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह एक दिन यहूदियों के एक मदर्से में तशरीफ़ ले गए उस दिन यहूदियों का एक बहुत बड़ा आलिम जिसका नाम फिखास था आया हुआ था और उसकी वजह से वहाँ बहुत से यहूदी जमा थे, सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने वहाँ पहुँच कर फिखास से फ़रमाया ऐ फिख़ास! अल्लाह से डर और मुसलमान हो जा, खुदा की क़सम मोहम्मद के सच्चे रसूल हैं जो हक़ लेकर आए हैं और तुम लोग उनकी तारीफ तौरेत व इंजील में पढ़ते हो लिहाज़ा तुम मुसलमान हो जाओ और सच्चे रसूल की तसदीक़ करो, नमाज़ें पढ़ो ज़कात दो और अल्लाह को क़र्ज़ हुस्न दो ताके तुम जन्नत में जाओ, फिखास बोला ऐ अबुबक्र! क्या हमारा खुदा हम से क़र्ज़ मांगता है? इससे तो ये साबित हुआ के हम ग़नी हैं और खुदा फक़ीर है। हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को ये सुन कर बड़ा ग़ुस्सा आया और फिखास के मुंह पर एक थप्पड़ मारा और फ़रमाया क़सम बखुदा! अगर हम में और तुम में ये मुआहेदा ना होता तो इसी वक़्त तेरी गर्दन अलग कर देता, फिखास थप्पड़ खा कर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के पास आया और सिद्दीक़े अक्बर की शिकायत की, हुज़ूर ने सिद्दीक़ अक्बर से पूछा तो सिद्दीक़े अक्बर ने अर्ज़ किया, हुज़ूर उसने यूँ कहा था के हम ग़नी हैं और अल्लाह फक़ीर है मुझे इस बात पर ग़ुस्सा आया था फिखास इस बात से फिर गया और कहने लगा मैंने हरगिज़ ऐसा नहीं कहा उसी वक़्त सिद्दीक़े अक्बर की तसदीक़ में अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल फ़रमाईः-

लक़द समी अल्लाहू क़ौलल्लज़ीना क़ालू इन्नल्लाहा फक़ीरं व नहनू अग़निया

"यानी अल्लाह ने उन लोगों का ये क़ौल सुना के अल्लाह फक़ीर है और हम ग़नी हैं।"

खुदा तआला की इस तसदीक़ व शहादत से सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह की सदाक़त वाज़ेह हो गई। (क़ुरआन करीम पारा 4 रूकू 10, रूह-उल-बयान, सफ़ा 393, जिल्द 1)

सबक़:- सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह दीन के मामले में बड़े ग़यूर थे और आपके जज़्बा-ए-सादिक़ा की ये शान है के खुदा तआला भी आपके जज़्बा-ए-सादिक़ा का मद्दाह और आपका मोईद है फिर जो शख़्स सिद्दीके अक्बर का मद्दाह नहीं वो दरअसल खुदा ही से ख़फा है।

हिकायत नम्बर (132) बिलाल की आज़ादी

हज़रत बिलाल रज़ी अल्लाहो अन्ह एक हबशी ग़ुलाम थे ये मुसलमान हो गए तो उनके मालिक उमय्या ने जो बड़ा दुश्मने रसूल काफिर था हज़रत बिलाल को बड़ी सख़्त ईज़ायें देना शुरू कीं, सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को पता चला तो आपने बहुत बड़ी क़ीमत का सोना देकर हज़रत बिलाल को आज़ाद कर दिया सिद्दीके अक्बर का ये ईसार अल्लाह को बड़ा पसंद आया और क़ुरआन मकें इर्शाद फ़रमाया के वो (सिद्दीक़) महेज़ अल्लाह की रज़ा के लिए खर्च करता है और अनक़रीब वो राज़ी होगा। (क़ुरआन करीम पारा 30 रूकू 18, रूह-उल-बयान सफ़ा 661 जिल्द 4)

सबक़:- सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपना माल व ज़र सब कुछ इस्लम पर क़ुर्बान कर डाला और खुद अल्लाह तआला ने भी क़ुरआन में सिद्दीके अक्बर की तारीफ फ़रमाई है और फ़रमाया है के हम उसे राज़ी करेंगे फिर जो सिद्दीक़ पर राज़ी नहीं तो खुदा उस पर राज़ी नहीं।

हिकायत नम्बर (133) ग़ज़वा-ए-तबूक

ग़ज़वा-ए-तबूक के मौक़े पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सहाबा-ए-इक्रमा से फ़रमाया के अल्लाह की राह में जिहाद करने के लिए तैयार हो जाओ ये ज़माना निहायत तंगी और क़हतसाली का था यहाँ तक के दो, दो आदमी एक खजूर पर बसर करते थे सफर दूर का था और दुश्मन कसीर और क़वी थे. हजरत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उस ग़ज़वे

में बड़ी आली हिम्मती से खर्च किया दस हज़ार मुजाहिदीन को सामान दिया और दस हज़ार दीनार इस ग़ज़वे पर खर्च किया उनमें सबसे पहले हज़रते अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह हैं जिन्होंने अपना कुल माल हाज़िर कर दिया, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह रावी हैं के इस दिन इत्तेफाकन मेरे पास कुछ माल था मैंने सोचा के मैं आज इस क़द्र ईसार करूंगा के अबुबक्र से भी बढ़ जाऊँ चुनाँचे हज़रत उमर ने अपने कुल माल के दो हिस्से किए और एक हिस्सा घर रख कर आधा माल हुज़ूर की खिदमत में ले आए और फिर इस ख़याल से बहुत खुश हुए के मैंने आप बहुत ईसार किया है आज अबुबक्र आगे ना बढ़ सकेंगे मगर क्या देखते हैं के परवाना-ए-शमा मुसतफा सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह अपने घर का कुल माल लिए हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो गए और अपनी सारी पूंजी बारगाहे महबूब में पेश कर दी हज़रत उमर ये देखकर हैरान रह गए और सोचने लगे के इनसे बढ़ना मुश्किल है, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत सिद्दीक़े अक्बर का ईसार देखकर बहुत खुश हुए और फ़रमाया ऐ सिद्दीक़ सब कुछ यहाँ ले आए हो ये तो बताओ के घर के लिए क्या छोड़ आए हो? सिद्दीक़ अक्बर का जवाब ये था के.....

परवाने को चिराग़ तो बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिए है खुदा का रसूल बस

थोड़ी देर के बाद जिब्राईल अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! अल्लाह तआला सिद्दीक़े अक्बर पर सलाम फ़रमाता है या रसूल अल्लाह! आप सिद्दीक़े अक्बर से पूछिये के वो इस आलमे फक़ीर में मुझ(अल्लाह) से राज़ी है या नाराज़? हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ये पैग़ामे खुदा सिद्दीक़े अक्बर को सुनाया तो सिद्दीक़े अक्बर इस पैग़ाम की लज़्ज़त से आलमे वजद में आकर कहने लगे:-

असख़त अन रब्बी? अना अन रब्बी राज़ी, अना अन रब्बी राज़ी, अना अन रब्बी राज़ी "क्या मैं अपने रब से राज़ी हूँ, मैं अपने रब से राज़ी हूँ" (कंज़-उल-ईमान सफ़ा 275, तारीख-उल-खुलफा सफ़ा 31)

<u>**सबक़:**</u> सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह ने सारे सहाबा-ए-इक्राम रज़ी अल्लाह अन्हम से ज़्यादा क़ुर्बानियाँ फ़रमाई हैं और आप ने राहे हक़ में सब कुछ निछावर कर दिया था और आपका ये मर्तबा है के खुद खुदा, वो खुदा जिसकी रज़ा की सारी खुदाई तालिब है हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सदक़े में सिद्दीक़े अक्बर की रज़ा चाहता है सिद्दीक़ के

लिए ख़ास अपना सलाम भेजता है फिर जो खुद बदबख़्त सिद्दीके अक्बर का दुश्मन है वो खुदा का दुश्मन ना हुआ तो और क्या हुआ?

हिकायत नम्बर(134), दिलैर व बहादुर

एक दिन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने लोगों से खड़े होकर फ़रमाया भला तुम जानते हो तमाम लोगों में ज़्यादा बहादुर और शुजअ कौन है? हाज़रीन ने जवाब दिया जनाब आप! फ़रमाया नहीं, बल्के सबसे ज़्यादा दिलैर व बहादुर अबुबक्र सिद्दीक़ थे उसका इम्तिहान यूं हुआ के जब बद्र का मआरका पेश आया तो हमने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए एक छप्पर तैयार किया और हुज़ूर को वहाँ बिठा कर कहा के हुज़ूर की पासबानी और हिफाज़त के लिए कौन शख़्स खड़ा होगा? ताके बुत परस्तों में से कोई शख़्स आपके पास ना पहुँच सके, मैं क़सम खा कर कहता हूँ के उस वक़्त सिर्फ अबुबक्र ही आगे बढ़े और इस बात के मुताकफ़्फ़िल होकर आपके सर मुबारक पर नंगी तलवार लिए खड़े रहे। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 310 जिल्द 2)

सबक़:- सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह सबसे ज़्यादा सखी भी और सबसे ज़्यादा जरी भी थे और इस बात के गवाह खुद हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह हैं।

हिकायत नम्बर(135) खुत्बा-ए-खिलाफत

हज़रत सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अ जब तख़्त खिलाफत पर मुतमकिन हुए तो आपने एक मजमअे आम में तक़रीर फ़रमाई।

फ़रमाया- भाईयो और अज़ीज़ो! क़ुरआ इन्तिखाब मेरे नाम पड़ा और मैं तुम्हारा ख़लीफा मुक़र्रर हो गया। गो मैं तुम से बहेतर व अफ़्ज़ल ना था मगर मैं तुम्हारा सरदार मुक़र्रर कर दिया गया हूँ लेकिन मेरी सरदारी क़ैसर व किसरा जैसी सरदारी नहीं के किसी को मेरे काम में मजाल दम ज़द्न न हो, खूब समझ लो के तुम्हारे अन्दर जो क़वी है मेरे नज़दीक उस वक़्त तक कमज़ोर व ज़ईफ है जब तक के मैं ज़ईफ को उससे हक़ न दिलवा दूं और जो तुम में ज़ईफ है वो मेरे नज़दी क़वी है ता वक़्त ये के मेरी एआनत से उसे उसका हक़ ना मिल जाए देखो एक बात और है जिहाद से कभी तसाहिल ना बरतना इस तरीके को हर गिज़ तर्क ना करना, याद रखो जो क़ौम जिहाद को छोड़ देती है वो दुनिया में ख्वारियों और रूसवायों की नज़र हो जाती है,

रास्ती और रसज़त रवी अमानत है, कजरवी और कज़िब बयानी खियानत है। जब तक अल्लाह और अल्लाह के रसूल का फ़रमाँबरदार हूँ उसी वक़्त तक तुम पर मेरी इताअत वाजिब है, और जब मुझे ऐसा करते ना देखो बिला तकल्लुफ मेरी इताअत से इंकार कर दो उस वक़्त मेरी इताअत तुम पर वाजिब नहीं तुम्हारा फर्ज़ है के तुम मुझे सीधे रास्ते पर चलाओ। (तारीखे इस्लाम सफ़ा 130)

सबक़:- सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह बइत्तिफाक़ मुसलिमीन खलीफात-उल-मुसलिमीन मुक़र्रर हुए और आपका मक़्सद महज़ आलाऐ कलमत-उल-हक़ अल्लाह और अल्लाह के रसूल के अहकाम का निफाज़ था कोई दुनयवी ग़र्ज़ ना थी और वो अपने आप को अल्लाह, रसूल का गुलाम समझते थे और रिआया को आज़ादी दे दी थी के वो खिलाफे शरीअत हर्कत अपने ख़लीफा में देखें तो उसकी इताअत ना करें।

हिकयत नम्बर(136) पुर असरार ख़ादिम

इत्राफे मदीना मुनव्वरह में एक अंधी बूढ़िया औरत रहती थी जिसका कोई अज़ीज़ ना था, हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाह अन्ह हर रोज़ रात को उसके घर आते और उसका पानी भर देते और भी जो कुछ उसका काम होता कर देते एक रोज़ रात को उस बूढ़िया के घर आए तो क्या देखते हैं के उसका सारा काम कोई दूसरा शख़्स कर गया है, दूसरे रोज़ आए तो उस रोज़ भी आपसे पहले ही कोई शख़्स उसका सारा काम कर गया था, इसी तरह हज़रत उमर हर रोज़ उसकी ख़िदमत के लिए आते तो आप देखते के उस बूढ़िया का काम कोई दूसरा शख़्स कर गया है आप हैरान रह गए के ये कौन है जो मुझ से पहले ही यहाँ पहुँच कर इस बूढ़िया का पानी भी भर जाता है और उसका सारा काम भी कर जाता है चुनाँचे आप एक रोज़ बहुत जल्दी आए और इस इन्तिज़ार में रहे के देखें ये पुर असरार ख़ादिम कौन है? थोड़ी देर के बाद आने वाला आया और उस बूढ़िया का काम करने लगा, फारूके आज़म ये देख कर हैरान रह गए के ये पुर असरार ख़ादिम खलीफात-उल-मुसलिमीन हज़रते अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह हैं। (तारीख़-उल-खुलफा सफ़ा 59)

सबक़:- इतना बुलंद मरतबत खलीफा और ये तवाज़ै व जज़्बा-ए-खिदमत के एक अंधी बूढ़िया की खिदमत अपने ज़िम्मे ले ली, ये बात की निशानी है के सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह सच्चे

ख़लीफ़ा-ए-रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं और आप ही ख़िलाफ़त के हक़दार थे वरना दुनिया परस्त और जाह तलब बादशाहों में ऐसी बातें कब नज़र आती हैं? और मालूम हुआ के इंसानों का अमीर असल में मुसलमानों का ख़ादिम होता है और उसका फ़र्ज़ होता है के वो अपनी अमीर ग़रीब सारी रिआया की ख़बर रखे और सबके काम आए।

हिकायत नम्बर (137) फ़िराक़े महबूब

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से इस क़द्र मोहब्बत थी के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद आप फ़िराक़े महबूब के सदमे से बेचैन रहने लगे और थोड़ी मुद्दत के बाद ही आप बीमार पड़ गए आपके इलाज के लिए एक तबीब को बुलाया गया, तबीब ने बड़े ग़ौर से देखा और कहा के ये मरीज़ किसी की मोहब्बत में बीमार है और उनका महबूब उनसे जुदा है इसी फ़िराक़ महबूब के ग़म में ये बीमार हुए उनका इलाज बजुज़ दीदारे यार के और कुछ नहीं जहाँ तक हो सके उनके महबूब को उन्हें दिखाओ। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 90)

सबक़:- सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह सच्चे महबूब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सच्चे मुहिब्ब व तालिब थे।

हिकायत नम्बर (138) दीदारे महबूब

हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह ने एक रात ख़्वाब देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए और आपके बदन मुबारक पर दो सफ़ेद कपड़े थे थोड़ी देर मे वो दोनों सफ़ेद कपड़े सब्ज़ रंग के हो गए और इस क़द्र चमकने लगे के निगाह उन पर ना ठहर सकती थी फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सामने तशरीफ़ लाकर हज़रत अबुबक्र से अस्सलाम अलेकुम फ़रमाया और मुसाफ़ह किया और अपना नूरानी हाथ हज़रत अबुबक्र के सीने पर रखा जिसके सबब सारी क़ल्ब और सीने की तकलीफ़ दूर हुई फिर फ़रमाया के ऐ अबुबक्र! क्या अभी हम से मिलने का वक़्त नहीं आया? हज़रत अबुबक्र ये बात हुज़ूर से सुनकर इस क़द्र रोए के सारे घर वालों को ख़बर हो गई, फिर अर्ज़ किया *व शरफ़ा इलेका या रसूल अल्लाह* "या रसूल अल्लाह! देखिये आपकी मुलाक़ात का

शरफ़ कब मुझे हासिल होता है।" हज़रत अबुबक्र का फ़िराक़ में रोना सुनकर हुज़ूर ने फ़रमाया, घबरओ नहीं अब हमारी तुम्हारी मुलाक़ात का वक़्त क़रीब है, इस ख़्वाब को देखकर हज़रत अबुबक्र बहुत ख़ुश हुए। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 92)

सबक़: सिद्दीक़े अक्बर को हुज़ूर से और हुज़ूर को सिद्दीक़ से बड़ी मोहब्बत थी।

हिकायत नम्बर (239) वसीयत

सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपने आख़री मर्ज़ में हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह को बुलाया और वसीयत फ़रमाई के ऐ अली! जब मेरी वफ़ात हो जाए तो मुझे तुम अपने हाथों से ग़ुस्ल देना क्योंके तुमने उन हाथों से रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ग़ुस्ल दिया है फिर मुझे मेरे पुराने कपड़ों में कफन देकर उस हुजरह शरीफ के सामने रख देना जिसमें हुज़ूर का मज़ार है फिर अगर बग़ैर कुंजियों के क़ुफ़्ल ख़ुद खुल जाए तो अन्दर दफ़्न कर देना वरना आम मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में ले जाकर दफ़्न करना। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 91)

सबक़: सिद्दीक़े अक्बर जिनके विसाल में जान दे रहे हैं चाहते हैं के विसाल के बाद मुझे उसी महबूब की आग़ोशे रहमत में जगह मिले। मालूम हुआ के सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दिलो जान से चाहने वाले सच्चे मुहिब्ब थे।

हिकायत नम्बर (140) अबु उबैदा का ख़्वाब

जिस वक़्त सहाबा-ए-क्राम का लश्कर मुल्क शाम के फतह करने में मशग़ूल था और दमिश्क़ फतह करने का मनसूबा दरपेश था मगर दमिश्क़ के फतह करने में किसी क़द्र दिक्कतें पेश आ रही थीं और सहाबा-ए-क्राम को एक क़िसम का तरद्दुद लाहक़ था ऐसी हैरानी के वक़्त हज़रत अबु उबैदा रज़ी अल्लाह अन्ह ने ख़्वाब में देखा के मेरे खेमे में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए और अबु उबैदा को बशारत दी के ऐ अबु उबैदा! मुसलमानों से कह दो के आज ये मुक़ाम फतह हो जाएगा, इतमिनान रखो ये फ़रमा कर हुज़ूर ने बहुत जल्द वापसी का अज़्म फ़रमाया हज़रत अबु उबैदा ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! इस वक़्त हुज़ूर को जल्दी इतनी क्यों है? फ़रमाया ऐ

अबु उबैदा! आज अबुबक्र की वफात हो गई है मैं उनका जनाज़ा तैयार छोड़ कर आया हूँ मुझे अभी अबुबक्र के जनाज़े पर वापस जाना है ये फ़रमा कर हुज़ूर फौरन वापस तशरीफ़ ले गए। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 39)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह से एक ख़ास तअल्लुक़ था और हुज़ूर की यहाँ भी वहाँ भी सिद्दीक़े अक्बर पर एक ख़ास नज़र रही है।

हिकायत नम्बर(141) जनाज़ा

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपने विसाल मुबारक से पहले हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह को फ़रमाया था के मेरे जनाज़े को तैयार करके हुजरह शरीफ जिसमें हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का मज़ार अनवर है के सामने रख कर अर्ज़ करना अस्सलाम अलेक या रसूल अल्लाह, ये अबुबक्र आपके दरवाज़े पर हाज़िर है फिर जैसा हुक्म हो करना, चुनाँचे आपकी वसीयत के मुताबिक़ आपके जनाज़े को हुजरह के सामने रख कर अर्ज़ किया गया या रसूल अल्लाह! ये आपके यारे ग़ार अबुबक्र आपके दरवाज़े पर हाज़िर हैं और उनकी तमन्ना आपके हुजरे में दफ़्न होने की है अगर इजाज़त हो तो हुजरह शरीफ में दफ़्न किया जाए, ये सुनकर हुजरह शरीफ का दरवाज़ा जो पहले बन्द था खुद ब खुद खुल गया और आवाज़ आई।

अदखिलू अलहबीबा इलल हबीबी फइन्नल हबीबा इलल हबीबी मुश्ताकुन

"हबीब को हबीब से मिला दो क्योंके हबीब को हबीब से मिलने का इश्तियाक़ है"

जब हुजरह शरीफ से हज़रत अबुबक्र रज़ी अल्लाहो अन्ह के दफ़्न करने की इजाज़त हुई तो जनाज़ह मुबारक को अन्दर ले गए और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के कंधे मुबारक के क़रीब आपको दफ़्न कर दिया गया। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा 92)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह की बुलंद बाला शान इसी बात से ज़ाहिर है के आप ही सानी असनेन फी-अलग़ार हैं और आप ही सानी असनेन फी-अलमज़ार भी हुए, मालूम हुआ के नबियों के बाद सिद्दीक़े अक्बर का कोई सानी नहीं।

हिकायत नम्बर(142) उमर बिन अलख़त्ताब रज़ी अल्लाहो अन्ह

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक दिन अल्लाह से ये दुआ की ऐ अल्लाह! उमर बिन ख़त्ताब के वजूद से इस्लाम को इज़्ज़त दे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दुआ हो और फिर क़बूल ना हो चुनाँचे इधर तो ये दुआ हुई और उधर हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को क़त्ल कर देने के इरादे से घर से निकले, रास्ते में आपको एक शख़्स ने मिल कर पूछा के उमर! तुम कहाँ जाते हो? कहा मोहम्मद(सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) को क़त्ल करने, उसने कहा, भला अगर तुम ने ऐसा किया तो बनी हाशिम से किस तरह अमन में रह सकते हो? और पहले अपने घर की तो ख़बर लो, उमर! तुम्हारी बहन फातिमा और तुम्हारे बहनोई सईद बिन ज़ैद दोनों के दोनों मुसलमान हो चुके हैं, हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह उस शख़्स की ये गुफ़्तगू सुनकर गुस्से में थर थर कांपने लगे और बोले अच्छा तो मैं उन ही दोनों का काम तमाम करता हूँ, ये कहकर आप अपनी बहन के घर आए और थोड़ी देर डेवढ़ी में खड़े होकर अपनी बहन की आवाज़ को सुना और दफअतन घर के अन्दर चले गए और बहन से कहने लगे के ये आवाज़ कैसी थी जो उस वक़्त मैंने तुम दोनों से सुनी? उस वक़्त हज़रत उमर की बहन के घर में एक शख़्स बैठे उनकी बहन और बहनोई को सूरते ताँहा पढ़ा रहे थे उन्होंने जूंही हज़रत उमर की आहट पाई फौरन मकान के एक गोशे में छुप गए जब हज़रत उमर ने ग़ज़ब के लहजे में ये अलफाज़ कहे तो आपके बहनोई सईद कहने लगे, उमर! भला अगर हम हक़ पर हो तो भी आप हमें बुरा समझेंगे? इस पर हज़रत उमर को और ज़्यादा गुस्सा आया और आपने अपने बहनोई को बड़े ज़ोर से धक्का दिया और दो चार ज़ोर से घूंसे भी मार दिए, आपकी बहन फातिमा अपने शौहर की ये कैफियत देखकर बड़ी बेताबी से उठीं और भाई को ख़ाविंद से अलेहदा किया मगर हज़रत उमर ने उन्हें भी मार कर अपने दिल का खूब गुबार निकाला यहाँ तक के उनका चेहरा लहू लुहान हो गया, जब हज़रत उमर उन दोनों से अलेहदा हुए तो बहन से कहा लाओ मुझे वो सहीफा तो दिखाओ जिसे तुम पढ़ रही थीं, फातिमा ने कहा भाई इसे पाक लोग छू सकते हैं पहले आप पाक हो लें, हज़रत उमर उठे और बहन की हिदायत के मुताबिक़ वज़ू किया और वज़ू,

करके इस सहीफे को हाथ में लिया, इसमें लिखा था *ताँहा मा अनज़लना अलेकल क़ुरआना लितशक़ा इल्ला तज़किरातन लिमंयख़्शा* आप इन आयतों को पढ़ते पढ़ते *इन्नी अन्नल्लाहा लाइलाहा इल्ला अना फआबूदूनी अक़ीमिस्सलाता लिज़िक्री* तक पहुँचे थे के कलामे इलाही आप पर अपना असर डाल गया और आपने उसी वक़्त बचश्म तर फ़रमाया मुझे फौरन मोहम्मद (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) के पास ले चलो, हज़रत उमर की गुफ़्तगू सुनकर उन सहाबी को जो आपके बहन बहनोई को तालीम दे रहे थे इतमिनान हुआ और अन्दर से निकल कर कहा, उमर! तुम्हें बशारत हो के मैंने जनाब रसूले करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को फ़रमाते सुना है के आप जनाब इलाही में यूं दुआ करते हैं:

"इलाही उमर बिन अलख़त्ताब के वजूद से इस्लाम को इज़्ज़त दे।"

उसके बाद हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हुज़ूर हाज़िर होने को चले दरवाज़े पर देखते हैं के हज़रत हम्ज़ा और चन्द आदमी खड़े हैं उन लोगों ने हज़रत उमर को देखा तो डर गए और हज़रत उमर की दहशत उन पर तारी हो गई, हज़रत हम्ज़ा ने कहा खुदा तआला अगर हज़रत उमर के साथ भलाई करना चाहता है तो उसे इस्लाम की हिदायत करेगा और अगर खुदा ने उसके अलावा कोई दूसरी बात चाही है तो उमर को क़त्ल कर डालना हम पर कोई मुश्किल नहीं है, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को हज़रत उमर के आने की ख़बर पहुँची तो आप बाहर तशरीफ़ लाए और उनके कपड़ों को पकड़ कर फ़रमाया, उमर! क्या तुम अभी भी बाज़ ना आओगे फिर आपने वही दुआ माँगी और फ़रमाया इलाही उमर बिन ख़त्ताब के वजूद से इस्लाम को इज़्ज़त दे।" जूंही हज़रत की ज़बान से ये कलमात निकले, हज़रत उमर बेसाख़्ता पुकार उठे:-

अशहद अन लाइलाहा इल्ललाहू व अशहद अन्नका रसूल अल्लाह

हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह का एलाने हक़ सुनते ही मौजूदा मुसलमानों ने ऐसे ज़ोर से अल्लाह अक्बर का नअरा बुलंद किया के तमाम मस्जिद वालों ने सुन लिया। (तारीख-उल-खुलफा सफ़ा 79, नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 313, जिल्द 2)

सबक़:- सारे सहाबा-ए-इक्राम अलेहिमुर्रिज़वान बहुत बड़ी शान, और बड़े रूत्बे के मालिक हैं मगर हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह की ये एक इम्तियाज़ी शान है के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने

हज़रत उमर को अल्लाह से माँग कर लिया है और ज़ाहिर है के जो चीज़ ख़्वाहिश व तमन्ना से हासिल की जाए वो बड़ी अज़ीज़ और महबूब होती है फिर जो लोग हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह के खिलाफ हो वो गोया मरज़ी-ए-मुसतफा के खिलाफ हैं।

हिकायत नम्बर (143) एलाने हक़

हुज़ूर अलेहिस्सलाम पर जब हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह ईमान ले आए और मुसलमान हो गए तो इस्लाम की शौकत को चार चाँद लग गए और कुफ्र के घर सफे मातम बिछ गई, मुसलमानों की तअदाद भी बहुत थोड़ी थी और मुसलमान अपने फ़रायज़ की अदायगी अलल ऐलान ना कर सकते थे मगर हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह के दाख़िले इस्लाम होते ही मुसलमानों में एक ख़ास जज़्बा पैदा हो गया और हज़रत उमर ने एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह हम दीने हक़ पर हैं और कुफ़्फ़ार बातिल पर तो हम अपने दीन को क्यों छुपाएँ? या रसूल अल्लाह! मुझे उस ज़ात की क़सम जिसने आपको दीने बरहक़ के साथ भेजा है मुझ से वो मजलिस कभी बाक़ी नहीं रह सकती जिसमें कुफ्र की मद के लिए ना बैठा था मगर अब इस्लाम के इज़हार व इम्दाद के लिए ज़रूर बैठूंगा, इसके बाद हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह मजलिस नबव्वी से बाहर निकले और खाना कअबा का तवाफ किया, आप कअबे के इर्दगिर्द घूम रहे थे और कलमा शरीफ ज़ोर ज़ोर से पढ़ रहे थे, मुशरिकीने मक्का ये सुनकर आप झपट पड़े और सब ने मिल कर हमला किया हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने तन तनहा सबका मुक़ाबला किया और उनमें से एक मुशरिक को गिरा कर उसके सीने पर चढ़ कर अपनी दोनों उंगलियाँ उसकी दोनों आँखों में डाल दीं जूंही वो शख़्स चीखा तमाम मुशरिकीन हज़रत उमर के ख़ौफ से भाग लिए और फिर हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह ने अलल ऐलान हर मजलिस में आवाज़ हक़ बुलंद की और कुफ़्फ़ार को चेलेंज दिया के जो शख़्स नबी बरहक़ और दीन हक़ की मुख़ालफत करेगा मेरी तलवार उसका फैसला करेगी और फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! कोई मजलिस बाक़ी नहीं रही जिसमें मैंने एलान हक़ ना कर दिया हो, ये सुनकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम बहुत खुश हुए और कअबा की तरफ़ ले आपके आगे आगे तो हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह चले जाते थे और पीछे पीछे हज़रत हम्ज़ा रज़ी अल्लाहो अन्ह, हत्ता के

आपने ख़ाना कअबा का ऐलानिया तवाफ किया और मुसलमानों ने खुल्लम खुल्ला नमाज़ पढ़ी। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 314 जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह की ज़ात ग्रामी से इस्लाम को ग़ल्बा हुआ और ये सारी बरकतें हुज़ूर ही की थीं मगर उनका ज़हूर हज़रत उमर के वजूद से हुआ फिर जिसे हज़रत उमर से कोई शिकायत है तो उसे गोया ग़ल्बा-ए-इस्लाम ही की शिकायत है।

हिकायत नम्बर (144) क़ुफ़्ले जहन्नुम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने एक दफा हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से कहा, ऐ क़ुफ़्ल जहन्नुम के बेटे! हज़रत अब्दुल्लाह अपने वालिद माजिद के मुतअल्लिक़ ये जुमला सुनकर बड़े परेशान हुए और घर जाकर हज़रत उमर रज़ी अल्लाह तआला अन्ह से कहा अब्बा जान! अब्दुल्लाह बिन सलाम ने आपको क़ुफ़्ल जहन्नुम कहा है। हज़रत उमर ने ये बात सुनी तो अब्दुल्लाह बिन सलाम के पास पहुँचे और दरयाफ़्त फ़रमाया के आपने मेरे हक़ में ये अलफाज़ क्यों इस्तेमाल फ़रमाया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम कहने लगे इसकी वजह ये है के मुझे मेरे बाप ने और उन्हें उनके आबाओ अजदाद ने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से ख़बर दी है के हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया मुझे जिब्राईल ने ख़बर दी है के पैग़म्बर आख़िर-उज़-ज़माँ हज़रत मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उम्मत में एक शख़्स पैदा होगा जिसे उमर बिन ख़त्ताब कहा जाएगा मुबारक नफ़्स जब तक उम्मते मोहमदिया में रहेगा तब तक जहन्नुम का दरवाज़ा बन्द रहेगा गोया वो जहन्नुम का क़ुफ़्ल होगा लेकिन जब उसका इन्तिक़ाल हो जाएगा तो जहन्नुम का दरवाज़ा खुल जाएगा और लोग अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों में मुबतला होकर इधर उधर परेशान होकर मुतफर्रिक़ हो जाऐंगे। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 318, जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाह तआला अन्ह की ज़ाते ग्रामी पर गुस्ताख़ाना हमले करने वाला अपने लिए जहन्नुम का क़ुफ़्ल खोलता है।

हिकायत नम्बर (145) दबदबा-ए-फारूक़

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक जंग से वापस तशरीफ़ लाए तो एक लड़की ने आकर अर्ज़ की या रसूल अल्लाह!

मैंने नज़्र मानी थी के अल्लाह तआला मैदान जंग से आपको बख़ैरियत वापस लाए तो मैं आपके सामने दफ़ बजाऊंगी और गाऊंगी, हुज़ूर ने फ़रमाया, अच्छा अगर तुम ने यही नज़्र मानी है तो अपनी नज़्र पूरी कर लो चुनाँचे वो लड़की दफ़ बजाने लगी। इतने में हज़रत अबुबक्र रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तशरीफ़ लाए और वो लड़की दफ़ बदस्तूर बजाती रही फिर हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी तशरीफ़ ले आए तो उस लड़की ने फौरन दफ़ को रानों के नीचे छुपा लिया और ख़ुद उस दफ़ के ऊपर बैठ गई। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ये बात देख फ़रमाने लगे, उमर शैतान तुझ से बहुत डरता है। ये लड़की मेरे सामने दफ़ बजाती रही मगर तुझे देखकर उसने दफ़ को छुपा लिया (मिशकात शरीफ, सफ़ा 550)

सबक़:- ये हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का दबदबा है के शैतान आपके वजूद से डरता है बल्के वो आपके नाम भी सुन ले तो कांप उठता है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुख़्तार हैं के जिसको चाहें और जिस बात की चाहें इजाज़त दे दें।

हिकायत नम्बर (146) ग़ैरते फारूक़

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जब मैराज से वापस तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया, मैंने जन्नत में एक बहुत बड़ा महल देखा है जिसके सहन में एक औरत बैठी वज़ू कर रही थी, मैंने पूछा ये महल किस का है? तो मुझे बताया गया के ये महल उमर का है।

ऐ उमर! मैं महल के अन्दर जाता मगर तुम्हारी ग़ैरत को याद कर के मैं अन्दर नहीं गया और वापस चला आया, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह क्या मैं आप पर ग़ैरत करता? मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों या रसूल अल्लाह! ऐसा कब हो सकता है फिर हज़रत उमर रोने लगे। (मिशकात शरीफ, सफ़ा 549, तारीख-उल-खुलफ़ा सफ़ा 83)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह इतने ग़यूर थे के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जो सबके आक़ाए मौला हैं आपकी ग़ैरत की गवाही दे रहे हैं फिर जो हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ज़ाते ग्रामी पर गुस्ताख़ाना हमले करे वो किस क़द्र बेग़ैरत है।

हिकायत नम्बर (147) अद्ले फारूक़

एक दफा का ज़िक्र है के हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मदायन किसरा में एक लश्कर भेजा, जब लश्कर दजला के किनारे पर पहुँचा तो वहाँ कोई जहाज़ और कश्ती ना थी जिसके ज़रिये पार होते, सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जो इस लश्कर के जरनैल थे और ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने लश्कर से आगे बढ़कर फ़रमाया के ऐ दरया! अगर तू हुक्म इलाही से चलता है तो हम तुझे हुरमत नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और अद्ले उमर का वास्ता देते हैं तो हमें रास्ता दे दे ताके हम बाआसानी पार हो जाएँ ये कहकर उन दोनों बाहिम्मत जरनैलों ने अपने घोड़े दरया में डाल दिए और जब जान निसार और वफादार लश्कर ने अपने सरदारों के घोड़े दरया में देखे तो सब ने दफ़अतन घोड़ों की बागें छोड़ दीं और दरया में कूद पड़े, दरया ने उन पाक लोगों को रास्ता दे दिया और उनके घोड़ों के खुर तक पानी से तर ना हुए और सही सालिम पार हो गए। (नज़्हत-उल-मजालिस, सफ़ा 319, सफ़ा 2)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के अद्ल की बरकत थी जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के तुफैल ज़हूर पज़ीर हुई और बग़ैर किसी जहाज़ व कश्ती के सारा लश्कर दरया से पार हो गया और ये भी मालूम हुआ के सच्चे मुसलमान अपने नबी की हुरमत और अपने अमीर की अदालत पर एतमाद रखते हैं और बड़ी से बड़ी रूकावट को भी ख़ातिर में नहीं लाते।

हिकायत नम्बर (148) ग़ैबी आवाज़

हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने एक मुल्क में अपना लश्कर जिहाद के लिए भेजा और उस लश्कर का अफ़्सर हज़रत सारिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को मुक़र्रर फ़रमाया, हज़रत सारिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने लश्कर को लेकर उस मुल्क में गए और काफिरों से जिहाद करने लगे। इधर मदीना मुनव्वरह में एक रोज़ खुत्बा देते हुए हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आवाज़ दी "ऐ सारिया पहाड़ के साथ हो और पहाड़ को अपने पीछे रखो।" लोग हैरान हुए के खुत्बे के अन्दर ये बे जोड़ बात कैसी? सारिया तो यहाँ से दूर किसी मुल्क में लड़ रहा है फिर यहाँ उसे आवाज़ देने का क्या मअनी? थोड़े दिनों के बाद मैदाने जिहाद से

एक क़ासिद आया और उसने बताया के हमारा मुक़ाबला काफ़िरों से हो रहा था और काफ़िर हम पर ग़ालिब आ रहे थे के हमें एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी "ऐ सारिया पहाड़ के साथ रहो और पहाड़ को अपने पीछे रखो।" चुनाँचे हम ने इस हिदायत पर अमल किया और पहाड़ को पीछे रखकर हम ने अपनी पुश्त को महफ़ूज़ कर लिया और फिर दुश्मन से डट कर मुक़ाबला किया तो दुश्मन शिकस्त खा गया और अल्लाह तआला ने हमें फ़तह दी।

सबक़:- फ़ारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के ज़माने में फ़ारूक़े आज़म की बरकत से मुसलमानों को बड़ी फ़तूहात हासिल हुईं और ये भी मालूम हुआ के ख़ुदा के मक़्बूलों की नज़र के सामने कोई चीज़ हिजाब नहीं बनती और वो दूर की चीज़ें भी देख लेते हैं और अपने बेकसों की मदद फ़रमाते हैं और उनकी इम्दाद से बिगड़े हुए काम संवर जाते हैं और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले दूर की आवाज़ भी सुन लेते हैं जैसे के हज़रत सारिया ने हज़रत की आवाज़ सुन ली।

हिकायत नम्बर (149) नज़रे ईमान

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़ारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दौरे ख़िलाफ़ में एक ख़्वाब देखा के मस्जिद नबवी में ख़ुद हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे हैं और हज़रत अली भी हुज़ूर की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ रहे हैं, सलाम फ़ैरने के बाद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मस्जिद की दीवार से पुश्त अनवर लगा कर बैठ गए इतने में एक औरत खजूरों का एक तबाक़ लेकर हाज़िर हुई और हुज़ूर के सामने वो तबाक़ रख दिया, हुज़ूरे अकरम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उसमें से एक खजूर उठाई और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को अता फ़रमाई और बाक़ी खजूरें दूसरे नमाज़ियों में तक़सीम फ़रमा दीं। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की आँख खुल गई और आपने देखा के ज़बान पर वहीं खजूर का ज़ायक़ा और शीरनी मौजूद है, ठीक सुबह के वक़्त आपकी आँख खुली आप फ़ौरन मस्जिद में पहुँचे। आपने देखा के हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह नमाज़ पढ़ा रहे हैं, आप जमाअत में शामिल हो गए, सलाम फ़ैरने के बाद हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह उसी तरह मस्जिद की दीवार से तकिया लगा कर बैठ गए जिस तरह हज़रत अली ने रात को ख़्वाब में हुज़ूर को देखा था। थोड़ी देर के बाद एक औरत भी खजूरों का

एक तबाक़ लेकर आ गई और फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में पेश कर दिया। हज़रत उमर ने भी इस तबाक़ से एक खजूर उठाई और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को दे दी और बाक़ी सब खजूरें दूसरे नमाज़ियों में बाँट दीं, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह से कहा ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! एक खजूर मुझे भी दे देते तो क्या बात थी हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया: ऐ अली अल-मुर्तज़ा! अगर रात रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम आपको दूसरी खजूर इनायत फ़रमाते तो उस वक़्त मैं भी आपको दूसरी खजूर दे देता जब सरकार ने ना दी तो मैं कैसे दूं?

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बोले ऐ उमर! ये ख़्वाब का वाक़ेया आपको कैसे मालूम हो गया? हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया ऐ अली! बन्दा-ए-मोमिन नूरे ईमान से सब कुछ देख लेता है। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 157, जिल्द 2)

सबक़:- जिस मुसल्ले पर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ख़्वाब में नमाज़ पढ़ाते देखा उसी मुसल्ले पर हज़रत फारूके आज़म को जागते में नमाज़ पढ़ाते देख लिया, गोया फारूके आज़म हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सच्चे जानशीन हैं और ये भी मालूम हुआ के मोमिन की नज़र से कोई बात छुपी नहीं रहती फिर जो बारगाहे ईमान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ यूं कहे के उनको दीवार के पीछे की भी ख़बर ना थी किस क़द्र बेख़बर और बे इल्म है।

हिकायत नम्बर (150) फैसला

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ज़माने में एक यहूदी और एक मुनाफिक़ में किसी बात पर झगड़ा पैदा हो गया, यहूदी चाहता था के जिस तरह भी हो मैं उसे हज़रत मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में ले चलूं चुनाँचे वो कोशिश करके उसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बारगाह अदालतत में ले आया और हुज़ूर ने वाक़ेयात सुनकर फैसला यहूदी के हक़ में दे दिया। वो मुनाफिक़ यहूदी से कहने लगा के मैं तो उमर के पास चलूंगा और उनका फैसला मंज़ूर करूंगा, यहूदी बोला, अजब उल्टे आदमी हो, कोई बड़ी अदालत से होकर छोटी अदालत में भी जाता है? जब तुम्हारे पैग़म्बर मोहम्मद (सल-लल्लाहो

अलेह व सल्लम) फैसला दे चुके तो अब उमर के पास जाने की क्या ज़रूरत है? मगर वो मुनाफिक़ ना माना और इस यहूदी को लेकर हज़रत उमर के पास आया और हज़रत उमर से फैसला तलब करने लगा, यहूदी बोला जनाब! पहले ये बात सुन लीजिए के हम इससे क़ब्ल मोहम्मद (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) से फैसला ले आए हैं और उन्होंने फैसला मेरे हक़ में दिया है मगर ये शख़्स इस फैसले पर मुतमईन नहीं और अब यहाँ आपके पास आ पहुँचा है, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ये बात सुनी तो आपने फ़रमाया, अच्छा ठहरो मैं अभी आया और अभी तुम्हारा फैसला करता हूँ, ये कहकर आप अन्दर तशरीफ़ ले गए और फिर एक तलवार लेकर निकले और उस मुनाफिक़ की गर्दन पर ये कहते हुए मारी के, "जो हुज़ूर का फैसला ना माने उसका फैसला ये है।"

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तक ये बात पहुँची तो आपने फ़रमाया वाक़ई उमर की तलवार किसी मोमिन पर नहीं उठती उसके बाद फिर अल्लाह तआला ने भी ये आयत नाज़िल फ़रमा दी।

फला व रब्बिका ला योमिननूना हत्ता यूहक्कीमूनाका फीमा शजरा बेनाहुम

"तेरे रब की क़सम! ये लोग कभी मोमिन नहीं हो सकते जब तक तुम्हें या रसूल अल्लाह अपना हाकिम ना मानें और तेरा फैसला तसलीम ना करें।"
(तारीख-उल-खुलफा सफ़ा 88)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह का इस बात पर यक़ीन था के हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम हाकिमे आला हैं और उनका फैसला ही मोमिन के लिए वाजिब-उल-अमल है और जो उनका फैसला तसलीम ना करे वो मुजरिम है और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह के अमल की रसूल खुदा सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम भी ताईद फ़रमाते हैं और खुद खुदा भी ताईद फ़रमाता है।

हिकायत नम्बर(151) पानी पर हकूमत

मिस्र का दरयाए नील हर साल खुश्क हो जाता था और ता वक़्त ये के कुंवारी खूबसूरत लड़की की भेंट ना ले लेता, इसी तरह खुश्क रहता और जारी ना होता था हत्ता के हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्ह के अहेदे खिलाफ़त में मिस्र फतह हुआ और हज़रत उमरो व बिन अलआस रज़ी अल्लाहो अन्ह वहाँ के गवरनर मुक़र्रर हुए, कुछ अर्से के बाद हज़रत उमरो बिन अलआस ने

सुना के दरया खुश्क हो गया है आपने लोगों से दरयाफ़्त किया के क्या हर साल ये दरया इसी तरह खुश्क हो जाता है। लोगों ने बताया के हाँ जनाब! इसी तरह खुश्क हो जाता है और जब तक हम एक कुंवारी खूबसूरत लड़की इसकी भेंट ना चढ़ायें ये जारी नहीं होता, गवरनर साहब ने फ़रमाया के ये साल ब साल एक बे गुनाह लड़की का ना हक़ क़त्ल व खून इस्लाम को मंज़ूर नहीं, सब्र करो और देखो खुदा को क्या मंज़ूर है और फिर आपने उसी वक़्त एक चिट्ठी मदीना मुनव्वरह में हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह की तरफ़ लिखी जिस में दरया के खुश्क हो जाने और हर साल एक कुंवारी लड़की के खून का मुफस्सिल वाक़ेया लिखा। उनका ये खत जब हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की ख़िदमत में पहुँचा और आपने कैफियत मालूम की तो उसी वक़्त आपने एक ख़त दरया के नाम और एक गवरनर साहब के नाम तहरीर फ़रमाया, जो ख़त दरया के नाम था उसका मज़मून ये था:

मिन अब्दिल्लाही उमरा बिन अलख़त्ताब इला नीली मिस्र अम्मा बअदा इन कुनता तजरी बिअमरिल्लाही फइन्ना नसअलू इज्राअका मिनल्लाही वइन कुन्ता तजरी मिन इंदिका फला हाजता लना बिका।

"ये ख़त अल्लाह के बन्दे उमर बिन ख़त्ताब की तरफ़ से दरयाए नील के नाम है, ऐ दरया! अगर तू खुदा के हुक्म से बहता था तो हम अब भी खुदा ही से तेरी जारी होना माँगते हैं और अगर तू खुद अपनी मर्ज़ी से बहता है और अपनी ही मर्ज़ी से रूक जाता है तो हमें तेरी कोई परवाह और ज़रूरत नहीं है।"

फिर हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने गवरनर मिस्र के नाम ये हुक्म नामा लिखा के बजाए किसी लड़की के मेरा ये ख़त दरया के अन्दर खुश्क रेत में जाकर डाल देना,

अमीर-उल-मोमिनीन का ये अनोखा इर्शाद सुनकर सारे मिस्र में धूम मच गई, लाखों आदमी ये मंज़र देखने को दरया पर जमा हो गए, मजमअे कसीर के साथ गवरनर मिस्र भी हज़रत फारूक़ का ख़त लेकर दरया पे पहुँचे और फिर दरया के अन्दर जाकर फारूके आज़म का हुक्म नामा दरया को पहुँचा कर वहाँ से बाहर चले आए, चन्द लम्हों के बाद दरयाए नील खुद ब खुद इस ज़ोर व शोर से जारी हुआ के कभी भेंट लेकर भी ऐसा जारी ना हुआ था और हर साल से इस साल छः गज़ पानी ज़्यादा ऊँचा आया फिर इस दिन से ऐसा जारी हुआ के आज तक बन्द होने का नाम ना लिया। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 90)

सबक़:- फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह खुदा व मुसतफा के सच्चे ताबअेदार थे और कमाल इत्तिबा का ये नतीजा था के दरया तक आपके फ़रमाँबरदार थे और आपकी हकूमत पानी पर भी जारी थी और एक आज हम भी हैं के खुदा और रसूल से मुंह मोड़ लिया जिसकी पादाश में के पानी सैलाब की शक्ल में हमें हलाक कर रहा है।

हिकायत नम्बर(152) फक़ीर सिफ्त बादशाह

बज़्रचमहर ने हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह की ख़िदमत में अपना एक क़ासिद भेजा ताके वो देखकर आए के मुसलमानों के इतने बड़े जलील-उल-क़द्र बादशाह की सूरत व सीरत कैसी है? चुनाँचे वो क़ासिद मदीना मुनव्वरह में पहुँचा तो मुसलमानों से पूछने लगा के *ऐन-उल-मुल्क* यानी तुम्हारा बादशाह कहाँ है? मुसलमानों ने जवाब दिया वो हमारा बादशाह नहीं बल्के हमारा अमीर है अभी अभी घर से बाहर तशरीफ़ ले गया है, वो क़ासिद भी पीछे गया और क्या देखता है के हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह एक जगह धूप में सो रहे हैं दुर्रह सर के नीचे रखा है और पैशानी नूरानी से ऐसा पसीना बहा है के ज़मीन तर हो गई है, क़ासिद ने जब ये हाल देखा तो उसके दिल पर बड़ा असर हुआ और सोचने लगा के तमाम दुनिया के बड़े बड़े बादशाह जिसकी हैबत से लरज़ह बरइंदाम हैं तअज्जुब है के वो इस फक़ीराना सिफ्त पर है फिर अर्ज़ करने लगा, ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! आपने अद्ल किया उस वजह से बे खटके सोए, और हमारा बादशाह ज़ुल्म करता है इसलिए ख़्वाह-म-ख़्वाह हरासाँ रहता है, मैं गवाही देता हूँ के तुम्हारा दीन सच्चा है अगर मैं क़ासिद बन कर ना आया होता तो अभी मुसलमान हो जाता मगर अब मैं फिर हाज़िर होकर मुसलमान होंगा। (कीमियाए सआदत, सफ़ा 267)

सबक़:- फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह बावजूद इतनी बड़ी बुलंद शान के अपना मिज़ाज ज़ाहिदाना और फक़ीराना रखते थे और अल्लाह वालों की यही सीरत होती है।

हिकायत नम्बर(153) मुक़द्दस नक़ाब पोश

मदीना मुनव्वरह का मुक़द्दस व मुतहर शहर रहमत है और फारूके आज़म उमर बिन अलख़त्ताब रज़ी अल्लाह अन्ह मसनद नशीन ख़िलाफत हैं सरे अनवर पर ख़िलाफत नबव्वी का ताज सज रहा है और हर तरफ़ अद्ल

इंसाफ़ का डंका बज रहा है, आधी रात का वक़्त है, दरया हबीब के ख़ुश नसीब बाशिन्दे अपने अपने घरों में इस्तराहत फ़रमा हैं इस आधी रात के वक़्त इस पाक शहर में एक नक़ाब पोश अपने एक साथी के हमराह शहर का चक्कर लगा रहा है और हर गली कूचे और एक एक मकान को बग़ौर देखता हुआ जा रहा है अचानक उसने एक मकान से धुंदली सी रोशनी निकलती देखी, नक़ाब पोश वहाँ रूक गया और साथी से मुख़ातिब होकर कहने लगा:-

नक़ाब पोश: तुम ने देखा इस मकान से रोशनी आश्कार है और मेरे ख़याल में साहबे ख़ाना भी बैदार है।

साथी: हाँ हुज़ूर ऐसा ही है और सुनिए तो बच्चों के रोने की भी आवाज़े आ रही है और देखिये ये ग़ालिबन बच्चों की माँ है जो उन्हें समझा रही है और चुप करा रही है।

नक़ाब पोश: ख़ामोश रह कर सुनो और ग़ौर करो, ये क़िस्सा क्या है? चुनाँचे वो नक़ाब पोश और उसका साथी हमातन गोश होकर मकान की आवाज़ सुनने लगे और उन्होने सुना के मकान के अन्दर बच्चों और उनकी माँ में ये गुफ़्तगू हो रही है।

एक बच्चा: अम्मी जान! कितना वक़्त गुज़र गया है? आधी रात होने को आई और अभी तक ना हंडिया पकी और ना हम ने कुछ खाया।

दूसरा बच्चा: अम्मी! ये देख तेरा बच्चा भूक से मर रहा है, ख़ुदारा कुछ खाने को दो, अम्मी जान! कुछ खाने को दो!

तीसरा बच्चा: (रोते हुए) या अल्लाह! रहम फ़रमा और हमारी इस हंडिया को ख़ूब पका ताके हम कुछ खा सकें और अपनी जान बचा सकें।

माँ! मेरे बच्चो! घबराओ नहीं सब्र करो और ख़ुदा पर भरोसा रखो, ये देखो तुम्हारे सामने ही हंडिया चढ़ा रखी है ख़ुदा को मंज़ूर हो तो अभी इस सब्र का फल पाओगे और सब मिल कर खाना खाओगे।

ये गुफ़्तगू सुनकर वो नक़ाब पोश मकान के अन्दर पहुँच गया बच्चे और उनकी माँ एक अजनबी नक़ाब पोश और उसके साथी को देखकर घबरा गए और वो औरत बोली।

औरत: तुम कौन हो और मेरे मकान के अन्दर क्यों आए?

नक़ाब पोश: बहन! मैं इस वक़्त अपने एक मक़सद अज़ीज़ की ख़ातिर तुम्हारे मकान के पास से गुज़र रहा था के मैंने तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की दर्दनाक गुफ़्तगू सुनी मेरा दिल तुम्हारी इस गुफ़्तगू से तड़प कर रह गया माफ़

करना मैं असल क़िस्सा मालूम करने अन्दर आ गया हूँ।

औरतः भई! तुम अपनी राह लो, ना जान ना पहचान मुझ बदनसीब का क़िस्सा सुनकर क्या कर लोगे? अगर सुन लोगे तो मेरा क्या फ़ायदा और अगर ना सुनोगे तो तुम्हारा क्या नुक़सान?

नक़ाब पोशः बहन तुम मुझे अपना दुश्मन ना समझो और ना यहाँ मेरा पहुँचना बेकार जानो तुम अपना क़िस्सा सुनाओ और मुझे अपना हमदर्द यक़ीन करो।

औरतः मैं ग़रीब हूँ, ग़मज़दा हूँ और हैरान हूँ और इन बच्चों के लिए बड़ी परेशान हूँ, छोड़ो इस क़िस्से को और मेरे ज़ख़्मों, दिल के टाँकों को ना उधेड़ो।

नक़ाब पोशः बहन मेरी इल्तिजा तुम्हें कान धरना ही होगा और असल वाक़ेया ज़ाहिर करना ही होगा।

औरतः अच्छा तो लो सुनो! मुझे अमीर-उल-मोमिनीन उमर से शिकायत है वो हमारा अमीर है ख़ुदा ने उसे हमारी हिफाज़त व ख़िदमत के लिए मसनदे ख़िलाफत पर बिठाया है मगर उसने मुझ ग़रीब बेवा औरत की ख़बर ना रखी दो रोज़ से मैं और मेरे यतीम बच्चे फाक़ह से हैं आज ये भूक से निढाल हो गए तो मैंने महेज़ उनका दिल बहलाने की ख़ातिर अव्वल शब से इस हंडिया को चूलहे पर चढ़ा रखा है और हंडिया में बजुज़ पानी के और कुछ भी नहीं उनको यूंही तसल्लियाँ देते देते सुबह हो जाएगी और सुबह फिर जो ख़ुदा को मंज़ूर हुआ वो होगा, अफ़्सोस! के अमीर-उल-मोमिनीन को मेरे इन यतीम और भूके बच्चों का कुछ पता नहीं।

नक़ाब पोशः (ग़मज़दा आवाज़ में) बहन! लेकिन उमर को क्या ख़बर के तुम इस हाल में हो? तुम ने क्यों उस तक पहुँच कर उसे अपने हालात से आगाह नहीं किया?

औरतः वाह साहब वाह! ख़लीफा-ए-वक़्त को जब ख़ुदा ने रिआया की हिफाज़त व ख़याल के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है तो ये ख़लीफा का अपना फ़र्ज़ है के वो अपनी सारी रिआया के हालात से बाख़बर हो, अगर वो अपनी रिआया के हालात से यूंही बेख़बर है तो फिर उसे मसनदे ख़िलाफत पर बैठने का कोई हक़ नहीं, आज उसने मेरे इन यतीम बच्चों की ख़बरगीरी नहीं की तो कल मैं इंशाअल्लाह कमली वाले आक़ा के सामने उमर की शिकायत करूंगी।

नक़ाब पोश ये बात सुन कर रोने लगा और फ़ौरन मकान से निकला

और थोड़ी देर के बाद अपनी पीठ पर आटे की एक बोरी उठाए हुए अन्दर दाख़िल हुआ और बोरी को पीठ से उतारा और कपड़े झाड़े और अपने साथी से मुख़ातिब हुआ।

नक़ाब पोशः अलहम्दूलिल्लाह! आटे की बोरी मैं खुद उठा कर ले आया।

साथीः हुज़ूर मैंने अर्ज़ की थी के मैं बोरी उठाता हूँ मगर आपने मेरी अर्ज़ को क़बूल नहीं फ़रमाया।

नक़ाब पोशः इफ़्लाह! (नक़ाब पोश के साथी के नाम) क्या क़यामत के दिन भी मेरा बोझ उठा लोगे? अगर नहीं तो फिर यहाँ भी ये बोझ मुझी हो उठाना मुनासिब था।

औरतः (ये मंज़र देखकर) भई! खुदा तुम पर हज़ार हज़ार बरकतें नाज़िल फ़रमाए तुम तो कोई फरिश्ता ख़सलत इंसान हो, मैं तो अब बहुत शर्मिंदा हू के अपना क़िस्सा तुम्हें सुनाकर तुम्हें नाहक़ कोफ़्त में डाला।

नक़ाब पोशः इन बातों को रहने दीजिए और मुझे अपना फर्ज़ अदा करने दीजिए।

नक़ाब पोश ने फिर बोरी से आटा निकाला, खुद ही गूंद्धा और खुद ही आग सुलगाई, साथी का बयान है के चूलहे में फूंक मारते हुए मैंने नक़ाब पोश की दाढ़ी से धुआँ निकलते देखा रोटियाँ भी खुद ही इस फरिश्ता ख़सलत इंसान ने पकाईं और फिर उन बच्चों को खिलाईं और फिर उन रोते हुए यतीम बच्चों को खाना खिला कर खूश तबई की बातें करके हंसाया और कहा मैं चाहता हूँ के जिन आँखों से मैंने न बच्चों को रोते हुए देखा है उन्हीं आँखों से इन्हें हंसते हुए भी देखूं।

नक़ाब पोश का ये सलूक रहमत देखकर वो औरत बड़ी मुतास्सिर हुई और बोली।

औरतः ऐ नेक दिल इंसान! तुमने तो कमाल कर दिया और हम ग़रीबों को खुशहाल कर दिया।

नक़ाब पोशः क्या वाक़ई तुम मुझ पर खुश हो बहन!

औरतः खुदा गवाह है के मैं तुम पर बड़ी खुश हूँ।

नक़ाब पोशः तो फिर मेरी ख़ातिर उमर का क़सूर माफ कर दे बहन! कल क़यामत के दिन उसकी शिकायत क़मली वाले आक़ा से ना करना।

औरतः मगर तुम्हें अमीर-उल-मोमिनीन की इतनी पासदारी क्यों है?

नक़ाब पोशः तुम पहले उसे माफ कर दो फिर मैं इस पासदारी की

वजह बताऊंगा।

औरतः अच्छा तो मैंने उसे तुम्हारी ख़ातिर माफ कर दिया मगर ये दुआ ज़रूर करूंगी के खुदा उसे मसनदे खिलाफत से हटाए और तुम्हें उसे पर बिठाए।

नक़ाब पोशः तो बहन सुनो! तुम्हारी ये दुआ भी रायगाँ नहीं गई।

औरतः वो कैसे?

नक़ाब पोशः (नक़ाब को मुंह से हटाते हुए) इधर देखो।

औरतः (हैरान व शशिद्र रह कर) ऐ अमीर-उल-मोमिनीन खुदा

(मुंतख़ित कंज़-उल-अमाल हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 35)

सबक़: हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की खि़लाफत अल्लाह की एक रहमत थी जिससे सब ने फायदा उठाया और हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह अल्लाह के सच्चे बन्दे और अल्लाह के बन्दों के बेहतरीन निगहबान थे। फिर जो हज़रत उमर से राज़ी नहीं वो गोया अल्लाह की रहमत पर राज़ी नहीं।

हिकायत नम्बर (154) फारूक़े आज़म और एक बदू

हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह अपने ज़मानाए खि़लाफत में बसा अवक़ात रात को चौकीदार के तौर पर शहर की हिफाज़त भी फ़रमाते थे एक मर्तबा इसी हालत में एक मैदान में गुज़र हुआ तो देखा के एक खेमा बालू का लगा हुआ है जो पहले वहाँ नहीं था उसके क़रीब पहुँचे तो देखा के एक साहब वहाँ बैठे हैं और खेमे से कुछ कराहने की आवाज़ आ रही है, सलाम करके उन साहब के पास बैठ गए और दरयाफ़्त किया के तुम कौन हो? उन्होंने कहा एक मुसाफिर हूँ जंगल का रहने वाला हूँ, अमीर-उल-मोमिनीन के सामने कुछ अपनी ज़रूरत पेश करके मदद चाहने के वास्ते आया हूँ, दरयाफ़्त फ़रमाया के ये खेमे से आवाज़ कैसे आ रही है? उन साहब ने कहा मियाँ जाओ अपना काम करो, आपने इसरार फ़रमाया के नहीं बता दो कुछ तकलीफ की आवाज़ है, उन साहब ने कहा के मेरी बीवी है और विलादत का वक़्त क़रीब है, दर्दे ज़ेह हो रहा है, आपने दरयाफ़्त फ़रमाया के कोई दूसरी औरत भी पास है? उन्होंने कहा कोई नहीं, आप वहाँ से उठे और अपने मकान में तशरीफ़ ले गए और अपनी बीवी हज़रत उम्मे कुलसुम से फ़रमाया के एक बड़े सवाब की चीज़ मुक़द्दर से तुम्हारे लिए आई है, उन्होंने पूछा क्या है, फ़रमाया एक गाँव की रहने वाली बेचारी तनहा है उसको दर्दे ज़ेह हो

...उन्होंने कहा हाँ हाँ! आपकी सलाह है तो मैं तैयार हूँ, हज़रत उमर ने फ़रमाया के विलादत के वक़्त जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती हो तेल गुड़ वग़ैरा ले लो और एक हांडी और कुछ घी और दाने वग़ैरह भी साथ ले लो, वो लेकर चलीं, हज़रत उमर खुद पीछे पीछे हो लिए वहाँ पहुँच कर हज़रत उम्मे कुलसुम तो खेमे में चली गईं और आपने आग जलाकर उस हांडी में दाने उबाले, घी डाला, इतने में विलादत से फ़राग़त हो गई, अन्दर से हज़रत उम्मे कुलसुम ने आवाज़ देकर अर्ज़ किया, अमीर-उल-मोमिनीन! अपने दोस्त को लड़का पैदा होने की बशारत दीजिए, अमीर-उल-मोमिनीन का लफ़्ज़ जब उन साहब के कान में पड़ा तो वो घबराए, आपने फ़रमाया घबराने की बात नहीं, वो हांडी खेमे के पास रख दी के उस औरत को भी कुछ खिला दें, हज़रत उम्मे कुलसुम ने उसको खिलाया उसके बाद हांडी बाहर दे दी। हज़रत उमर ने उस बद्दू से कहा के लो तुम भी खाओ, रात भर तुम्हारी जागने में गुज़र गई उसके बाद अहलिया को साथ लेकर तशरीफ़ लाए और उन साहब से फ़रमा दिया के कल आना तुम्हारे लिए इन्तिज़ाम कर दिया जाएगा। (अशहर-उल-मशाहीर, हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 62)

सबक़:- क़ौम का सरदार क़ौम का ख़ादिम होता है और इस हक़ीक़त का इज़हार ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के अहेद में खूब हुआ। हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह इतनी बड़ी बुलंद शान के बावजूद एक ग़रीब बद्दू की रात भी ख़िदमत करते हैं भला इस ज़माना में कोई बादशाह या रईस नहीं कोई मामूली हैसियत का मालदार भी ऐसा है जो ग़रीबी की ज़रूरत में मुसाफिर की मदद के वास्ते इस तरह बीवी को जंगल में ले जाए और खुद चूलहा धूंक कर पकाए। मुसलमानों को अपने इन बुज़ूर्गों की सीरत को अपने सामने रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर (155) फ़ारूक़े आज़म और एक बूढ़िया

हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह एक मर्तबा अपनी रूअय्यत के हालात का मुतालेआ फ़रमाने गश्त लगा रहे थे के एक बूढ़िया औरत को अपने खेमे में बैठे देखा। आप उसके पास पहुँचे और उससे पूछा ऐ ज़ईफ़ा! उमर के मुतअल्लिक़ तुम्हारा क्या ख़याल है? वो बोली खुदा उमर का भला ना करे, हज़रत उमर बोले ये तुम ने बद दुआ क्यों की, उमर से क्या क़सूर सरज़द हुआ है? वो बोली, उमर ने आज तक मुझ ग़रीब बूढ़िया की ख़बर नहीं ली और मुझे कभी कुछ नहीं दिया, हज़रत उमर बोले मगर उमर को क्या

ख़बर के उस खेमे में इम्दाद की मुसतहिक़ एक ज़ईफा रहती है। वो बोली सुबहान अल्लाह! एक शख़्स लोगों पर अमीर मुक़र्रर हो और फिर वो अपनी ममलिकत के मशरिक़ व मग़रिब से नावाक़िफ हो? तअज्जुब की बात है, ये बात सुनकर हज़रत उमर रो पड़े और अपने आपको मुख़ातिब फ़रमा कर बोले, ऐ उमर! तुझ से तो ये बूढ़िया ही दाना निकली फिर आपने इस बूढ़िया से फ़रमाया ऐ अल्लाह की बंदी! ये तकलीफ जो तुम्हें उमर से पहुँची है तुम मेरे हाथों कितने दामों पर बेचोगी मैं चाहता हूँ के उमर की ये लग़ज़िश तुम से क़ीमतन ख़रीद लूं और उमर को बचा लूं, बूढ़िया बोली भई मुझ से मज़ाक़ क्यों करते हो, फ़रमाया, नहीं मैं मज़ाक़ हरगिज़ नहीं करता सच कह रहा हूँ के तुम ये उमर से पहुँची हुई अपनी तकलीफ बेच दो मैं जो माँगोगी उसकी क़ीमत दे दूंगा, बूढ़िया बोली, तो पच्चीस दीनार दे दो, ये बातें हो रही थीं के इतने में हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह और हज़रत इब्ने मसऊद रज़ी अल्लाहो अन्ह तशरीफ़ ले आए और आकर कहा "अस्सलाम अलेका या अमीर-उल-मोमिनीन!" बूढ़िया ने जब "अमीर-उल-मोमिनीन" का लफ़्ज़ सुना तो बड़ी परेशान हुई अेर अपना हाथ पैशानी पर रख कर बोली ग़ज़ब हो गया ये तो खुद ही अमीर-उल-मोमिनीन उमर है और मैंने उन्हें मुंह पर ही क्या कुछ कह दिया। हज़रत उमर ने बुढ़िया की ये परेशानी देखी तो फ़रमाया, ज़ईफा! घबराओ मत, खुदा रहम फ़रमाए तुम बिलकुल सच्ची हो, फिर आपने एक तहरीर लिखी जिसकी इबारत बिस्मिल्लाह के बाद ये थी के

"ये तहरीर इस अम्र के मुतअल्लिक़ है के उमर बिन ख़त्ताब ने इस ज़ईफा से अपनी लग़ज़िश और इस ज़ईफा की परेशानी जो उमर के अहेदे खिलाफत से लेकर आज तक वाक़अे हुई पच्चीस दीनार पर ख़रीद ली, अब ये बुढ़िया क़यामत के दिन अल्लाह के सामने उमर की कोई शिकायत ना करेगी अब उमर इस लग़ज़िश से बरी है इस बीअ पर अली इब्ने अबी तालिब और अबी इब्ने मसऊद गवाह हैं।"

ये तहरीर लिख कर बुढ़िया को पच्चीस दीनार दे दिए और इस क़तआ-ए-तहरीर को हज़रत उमर ने अपने साहबज़ादे को दे दिया और फ़रमाया, जब मैं मरूं तो मेरे कफ़न में इस तहरीर को रख देना। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 43, जिल्द 1)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह जो क़तई जन्नती हैं उनका मुबारक हाल देख कर हमें अपनी फिक्र करनी चाहिए और सोचना चाहिए के कल क़यामत के दिन जब हमारा आमाल नामा ज़ाहिर हुआ तो हम क्या

जवाब देंगे? और आज कल दुनिया के सरबराहों को भी ग़ौर करना चाहिए के वो अपनी रिआया का कहाँ तक ख़याल रखते हैं।

हिकायत नम्बर (156) नफ़ीस हलवा

हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के दौर में जब आज़रबाईजान फतह हुआ और मुसलमानों को मुख़तलिफ चीज़ें मिलीं एक शख़्स उत्बा नामी को निहायत नफीस हलवा दसतियाब हुआ जो उसने हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाह अन्ह की ख़िदमत में तोहफातन भेज दिया। हज़रत फारूके आज़म ने इस हलवे को देखकर और चख कर फ़रमाया, क्या ये हलवा सबने खाया है या मेरे ही लिए आया है? लाने वाले ने कहा हुज़ूर! सिर्फ आप ही के लिए आया है, आपने उसी वक़्त भेजने वाले के नाम हस्बे ज़ेल ख़त लिखाः-

"अल्लाह के बन्दे अमीर-उल-मोमिनीन उमर की जानिब से उत्बा बिन मरक़द के नाम, अम्मा बअद! याद रखो के ये हलवा ना तो तुमहारी कोशिश से हासिल हुआ और ना ही तुम्हारे माल या तुम्हारे बाप की कोशिश से हासिल हुआ है, हम तो सिर्फ वही चीज़ें खायेंगे जिसे तमाम मुसलमान अपने अपने घरों में पेट भर कर खायें।" (फतूह-उल-बलदान, मुग़नी-उल-आज़ीन, सफ़ा 473)

सबक़:- ये थे हमारे इसलाफ जिन्हें रिआया के हर फर्द का ख़याल था और वो कोई ऐसी चीज़ ना खाते जो रिआया को मयस्सर ना आ सके और वो रिआया को औलाद से भी अज़ीज़ समझते थे।

हिकायत नम्बर (157) इसकंद्रिया की फतह

इसकंद्रिया की फतह में ताख़ीर हुई तो फारूके आज़म रज़ी अल्लाह अन्ह ने उमरो बिन आस रज़ी अल्लाह अन्ह को लिखा के तुम वहाँ जाकर शायद ऐशो इशरत में मशग़ूल हो गए हो तुम्हें चाहिए के शहर पर सबके सब एक दम हमला कर दो और फतह करके ही दम लो, चुनाँचे आपके इर्शाद के मुताबिक़ किया गया तो इसकंद्रिया फतह हो गया, इसकंद्रिया की फतह की बशारत लेकर क़ासिद दोपहर के वक़्त मदीना मुनव्वरह पहुँचा और ये सोच कर के फारूके आज़म इस वक़्त आराम फ़रमाते होंगे सीधा मस्जिद नबव्वी की तरफ़ चल दिया एक औरत के दरयाफ़्त करने पर बोला के इसकंद्रिया फतह हो गया है और मैं ये मसदह पहुँचाने इसकंद्रिया से आ

रहा हूँ, औरत ने झट ये ख़बर फारूके आज़म को पहुँचा दी हज़रत फारूके आज़म क़ासिद से मिलने बाहर तशरीफ़ लाने लगे के इतने में क़ासिद भी पहुँच गया, हज़रत फारूके आज़म ने फ़रमाया तुम सीधे मेरे पास क्यों ना चले आए? अर्ज़ की इस ख़याल से के आपके आराम में ख़लल ना हो, फ़रमाया तुम ने मेरी निसबत ऐसा ख़याल क्यों किया अगर में दिन में आराम की ख़ातिर सो जाया करूं तो खिलाफत का काम कौन सर अंजाम देगा? फिर इसके बाद इसकंद्रिया की फतह का मसदह सुनकर आप सज्दे में गिर पड़े। (फतूह-उल-बलदान मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 474)

सबक़ः- मालूम हुआ के क़ौम की इमारत ऐशो इशरत और ख़्वाब ग़फ्लत के लिए नहीं होती बल्के उसमें बैदारो होशयार रहना पड़ता है।

हिकायत नम्बर (158) रूअय्यत और क़यामत

हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह के ज़माना-ए-ख़िलाफत में लोगों ने अर्ज़ किया के आप इस क़द्र मेहनत शाक़ा क्यों उठाते हैं के ना दिन को चैन ना रात को आराम फ़रमाते हैं, फ़रमाया के अगर दिन को आराम करूं तो रूअय्यत बे आराम हो और अगर रात को चैन करूं और खुदा का ज़िक्र ना करूं तो क़यामत में क्या मुंह दिखाऊंगा। (किताब मज़कूर)

सबक़ः- मुसलमान हाकिम रिआया की हमदर्दी और खुदा की बन्दगी में मशग़ूल रहते हैं।

हिकायत नम्बर (159) रोम का एलची

(मंज़ूम हिकायत)

ख़िदमत फारूक़ में इक एलची
रोम से लाया प्यामे कैसरी
वो मदीने में फिरा ये पूछता
दो ख़लीफा के महल का कुछ पता
लोग जब सुनते थे उसका ये कलाम
हंस के कहते थे के ऐ फ़रखंदा नाम
सब्रो शुक्र उसके हैं दो हसन हुसैन
क़स्र की इस शीर को हाजत नहीं
है अमीर-उल-मोमिनीन गरचै उमर
पर नहीं रखता ग़रीबों सा भी घर

सुन के लोगों से अजब ये माजरा
शौके क़ासिद दम ब दम बढ़ने लगा
हर तरफ़ करता रहा वो जुस्तजू!
कर रहा था अपने दिल से गुफ़्तगू
है तअज्जुब फातह मुल्क शहाँ
जाने रोशन की तरह हो यूं नहाँ
आख़िर इक बुढ़िया ये बोली देखकर
नख़्ल खुरमा के तले है वो उमर
ज़िल हक़ साया में है सोया हुआ
ये उमर है जिसका तू जोया हुआ!!
डील में था एलची गोपील तन
लेकिन उसका कांप उठा तन बदन
दिल में कहता था इलाही क्या हुआ
क़ैसर व किसरा को देखा बारहा
मैंने मारे बीसियों शेर व पलंग
पर कभी बदला ना उस चेहरे का रंग
कांपता है अब तो मेरा जोड़ जोड़
आके याँ निकली है अब सारे मरोड़
आसमानी रौब है उस शख़्स का
है खुदाई भेद गदड़ी में छुपा (मोतियों का हार तर्जुमा मसनवी शरीफ, सफ़ा 44)

सबक़: जो डरे हक़ से हर इक उससे डरे
इससे सब देव व परी भागें परे

हिकायत नम्बर (160) फारूके आज़म और एक चोर

(मंज़ूम हिकायत)

चोरी करते एक दुज़्दे बे हया
अहेद में फारूक़ के पकड़ा गया
लाए जब उसको हुज़ूर दीं पनाह
और साबित हो गया उसका गुनाह
उस मुजस्सिम अद्ल ने फत्वा दिया
हाथ काटो है यही इसकी सज़ा

सुन के ये चिल्ला उठा वो बे शऊर
रहम कीजिए है मिरा पहला क़ुसूर
पास वालों ने सिफारिश की बहुत
अफ़्व व रहमत की सताईश की बहुत
इक ना मानी और कहा फारूक़ ने
हद करो जारी हमारे सामने
झूट बकता है ये मुझ को है यक़ीन
पहली इसकी ये ख़ता हरगिज़ नहीं!
है मिरे रब की ये सत्तारी से दूर
इस ग़नी की है ये ग़फ़्फारी से दूर
यूं फज़ीहत अपने बन्दे को करे
और तौबा की ना दे मोहलत इसे
(मोतियों का हार, सफ़ा 100)

सबक़:- ये समझ बन्दा के टल जाएगा अब
चश्म पोशी बारहा करता है रब!
बाज़ आता ही नहीं जब बे हया
रूसवा करता है उसे फिर बरमला!

हिकायत नम्बर (161) फारूक़े आज़म की शहादत

हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह ने एक रात ख़्वाब में देखा के एक सुर्ख़ रंग के मुर्ग़ ने आपके बदन में दो तीन ठोंगें मारी हैं, आपने ये ख़्वाब-ए-जुमअे में बयान फ़रमया, इस ख़्वाब की ये तअबीर बयान की गई के कोई काफिर उमर को शहीद कर देगा, चुनाँचे जुमअे के रोज़ ये ख़्वाब बयान किया गया और बुध के दिन सुबह की नमाज़ में आप ज़ख़्मी किए गए, आपकी ये आदत थी के नमाज़ शुरू करने से पहले सफ़ों को सीधा किया करते थे जब सफ़ें सीधी हो जातीं तब अल्लाह अक्बर कह कर नीयत बाँधते थे, बुध के दिन जब आपने सफ़ें सीधी करने के बाद नीयत बाँधी तब फिरोज़ नामी एक आतिश परस्त मशरिक ग़ुलाम ने आपको दो धारी छुरी से ज़ख़्मी कर दिया, फारूक़े आज़म के शिकम पर ज़ख़्म आया, आपको गिरा कर वो काफिर फिरोज़ भागा, रस्ते में जमाअत के अन्दर और भी सहाबा के शदीद ज़ख़्म लगाए आख़िर एक अनसारी ने उस पर अपने कम्बल को डाल कर उसे पकड़ लिया जब उस ज़ालिम ने जान लिया के अब मैं पकड़ा

गया हूँ और मेरा हश्र बुरा होगा तो वो काफिर अपने हाथ से छुरी मार कर गया। हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्हु ने अब्दुर्रहमान बिन ओफ को अपनी जगह नमाज़ पढ़ाने के लिए हुक्म दिया और खुद वहीं बैठ कर नमाज़ पढ़ते रहे और ज़ख्मी होकर भी वहीं हाज़िर रहे जब लोग नमाज़ से फारिग़ हुए तो हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया, ऐ इब्ने अब्बास! देखो तो मुझे किसने क़त्ल किया है? इब्ने अब्बास ने अर्ज़ किया के एक आतिश परस्त मुशरिक ग़ुलाम ने जिसका नाम फिरोज़ है, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्हु ने ये सुनकर फ़रमाया, इलाही तेरा शुक्र है मेरी मौत किसी कलमा गो शख़्स के हाथों नहीं हुई, आपको शदीद ज़ख़्म आया था हत्ता के आपको जो शर्बत पिलाया गया वो ज़ख़्म के रास्ते से बाहर निकल आया, लोग आपके पूछने के लिए आते थे, एक नोजवान आया और हाल पूछ कर लोटा तो हज़रत उमर ने देखा के उसका तहबंद ज़मीन से लगता है, फ़रमाया इस नोजवान को मेरे पास वापस लाओ, जब वो दोबारा हाज़िर हुआ तो फ़रमाया, मियाँ! अपने तहबंद को ऊँचा कर लो ये अमल अल्लाह के नज़दीक अच्छा है और तुम्हारा कपड़ा भी ज़मीन पर ख़राब होने से महफूज़ रहेगा। जब आपकी हालत ज़्यादा ख़राब हो गई तब आपने अपने साहज़ादे अब्दुल्लाह से फ़रमाया बेटा! तुम उम्म-उल-मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अनहा के पास जाओ और उनसे मेरा सलाम कह कर अर्ज़ करना के उमर ने आपसे अज़्न चाहा है के आप अपने हुजरह में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के पैरों में दफ़्न होने की इजाज़त फ़रमायें चुनाँचे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाहो अन्हु हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अनहा के पास आए, क्या देखते हैं के उम्म-उल-मोमिनीन भी हज़रत उमर के ग़म में रो रही हैं, हज़रत अब्दुल्लाह ने हज़रत उमर का सलाम व पैग़ाम अर्ज़ किया तो उम्म-उल-मोमिनीन ने फ़रमाया के ये जगह ख़ास मैं अपने लिए रखी थी मगर मैं अपनी जान से उमर की जान को ज़्यादा पसंद करती हूँ और इजाज़त देती हूँ के शौक़ से इस मुबारक जगह में दफ़्न किए जाएँ जब हज़रत अब्दुल्लाह यहाँ से इजाज़त लेकर वापस आए और हज़रत उमर को उनका इजाज़ दे देना सुनाया तो हज़रत उमर ने फ़रमाया अलहम्दूलिल्लाह इजाज़त मिल गई मगर ऐ अब्दुल्लाह! तुम एक काम करना जिस वक़्त मैं मर जाऊँ मेरे जनाज़े को तैयार करके फिर हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अनहा के सामने ले जाकर रखना और ये कहना के इस वक़्त उमर का जनाज़ा हाज़िर है और आपसे इजाज़त चाहता है अगर उस वक़्त भी इजाज़त फ़रमायें तो अन्दर दफ़्न कर

देना मुझे अंदेशा है के शायद कुछ मेरे लिहाज़ से इजाज़त दी हो इसलिए बाद वफ़ात फिर इजाज़त ले लेना और फिर फ़रमाया बेटा! मेरा सर तकिये से हटा कर ज़मीन पर डाल दे ताके मैं अपना सर खुदा के सामने ज़मीन पर डाल कर रगड़ूं ताके मेरा रब मुझ पर रहम फ़रमाए, ऐ बेटा मैं मर जाऊँ तो मेरी आँखें बन्द कर देना और मेरे कफन में मियाना रवी करना, इसराफ़ ना करना क्योंके मैं अगर खुदा के नज़दीक कुछ अच्छा ठहरूंगा तो मुझे दुनिया के कफ़न से बहुत बेहतर कफन मिल जाएगा और अगर मैं बुरा क़रार दिया गया तो ये भी मेरे पास ना रहेगा, बेटा! अगर सारे जहान की दौलत और सामान उस वक़्त मेरे पास होता तो मैं उसे क़यामत के दिन की घबराहट से निजात पाने के लिए ख़ैरात कर देता, ये सुनकर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया के क़सम अल्लाह की मैं तो आपके मुतअल्लिक़ ये यक़ीन रखता हूँ के आप तो बराए नाम ही क़यामत की होलनाक चीज़ें देखेंगे क्योंके आप अमीर-उल-मोमिनीन हैं, अमीन-उल-मोमिनीन हैं, सय्यद-उल-मोमिनीन हैं, आप किताब उल्लाह से और निहायत इंसाफ से फैसला करने वाले हैं, हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह को हज़रत इब्ने अब्बास की ये तक़रीर बहुत पसंद आई और सख़्त तकलीफ के बावजूद जोश व शौक़ में उठ कर बैठ गए और फ़रमाया ऐ इब्ने अब्बास! क्या तू इन बातों की शहादत क़यामत के दिन अल्लाह के सामने देगा? हज़रत इब्ने अब्बास ने फ़रमाया, हाँ दूंगा, ये सुनकर हज़रत उमर को इतमिनान हुआ, उसके बाद बहुत सी नसीहतें और वसीयतें फ़रमाईं और इन्तिक़ाल फ़रमाया। *इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन।* फिर आपके जनाज़े को तैयार करके हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अनहा के हुजरह शरीफ के सामने लाकर रखा गया और ब आवाज़ बुलंद अर्ज़ किया के ऐ उम्म-उल-मोमिनीन! ये जनाज़ा उमर का हाज़िर है और अब फिर आपसे इजाज़त माँगता है के अगर हुक्म हो तो हुजरह शरीफ में दफ़्न किया जाए। हज़रत उम्म-उल-मोमिनीन रोती थीं और फ़रमाती थीं के मैं खुशी से आज फिर हज़रत उमर को इजाज़त देती हूँ, चुनाँचे आपको हुजरह शरीफ में हुज़ूर के क़दमों में दफ़्न किया गया।

जिस दिन हज़रत उमर का इन्तिक़ाल हुआ उस दिन सूरज को गहन लगा सारे मदीना में अंधेरा हुआ, इस तरफ़ लोगों का रोना, इधर सूरज का सियाह होना एक मअरका क़यामत का नज़र आता था। मदीने के बच्चे अपनी माँओं से पूछते थे ऐ माँ क्या आज क़यामत है? माँयें कहती थीं के नहीं आज अमीर-उल-मोमिनीन उमर का इन्तिक़ाल हुआ है।

बाद अज़ वफात हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाहो अन्ह ने आपको ख़्वाब में देखा और पूछा के ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! क्या मामला हुआ? फ़रमाया। वजहतू रब्बी रहीमन "मैंने अपने रब को बड़ा रहम वाला पाया" (सीरत-उल-सालेहीन) सफ़ा 94)

सबक़:- हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह का क़तई जन्नती होने के बावजूद ख़ौफ़े इलाही देखिये के किस तरह अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर होने में ख़शियत का इज़हार फ़रमाते थे और नज़अ का आलम है मगर ख़िलाफ़ शरअ बात नहीं देख सकते और नोजवान को तहबंद ऊँचा बांधने की नसीहत फ़रमाते हैं।

मालूम हुआ के मुसलमान को बहर हाल शरीअत का पाबंद और शरीअत के खिलाफ हर बात से बेज़ार रहना चाहिए और अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर होने से डरते रहना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के सिद्दीक़े अक्बर की तरह फारूक़े आज़म भी बड़े ही खुश क़िसमत थे के उन्हें भी हुज़ूर के साथ ही दफ़्न होने को जगह मिली।

हिकायत नम्बर (162) हज़रत उस्मान ज़ुलनूरैन रज़ी अल्लाहो अन्ह

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की चार साहबज़ादियाँ थीं, ज़ेनब, रुक़य्या, उम्मे कुलसुम, और फातिमा (रज़ी अल्लाहो अनहन) हज़रत रुक़य्या की शादी हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह से हुई, हज़रत रुक़य्या का इन्तिक़ाल हो गया और हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को इस बात का रंज पहुँचा तो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने अपनी दूसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसुम रज़ी अल्लाहो अनहा का भी निकाह हज़रत उस्मान से कर दिया और फ़रमाया ऐ उस्मान! अगर मेरी सौ लड़की भी हो और उनका यके बाद दीगरे इन्तिक़ाल होता जाए तो मैं यके बाद दीगरे तुम्हारे निकाह में देता जाऊँ। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 196, जिल्द 1)

सबक़: ये खसूसियत सिर्फ उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को हासिल है के नबी की दो बेटियाँ आपके निकाह में आईं जब से दुनिया शुरू हुई उस वक़्त से लेकर क़यामत तक बजुज़ हज़रत उस्मान के ना कोई हुआ ना होगा जिसके निकाह में नबी की दो बेटियाँ आई हों इसलिए आपका लक़ब "ज़ुलनूरैन" है।

हिकायत नम्बर (163) हया उस्मान

एक दफा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपने दौलत कदा में लेटे हुए थे और आपकी रान मुबारक या पिंडली मुबारक से कपड़ा हटा हुआ था इतने में हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह तशरीफ़ ले आए और अन्दर आने की इजाज़त माँगी, हुज़ूर ने इजाज़त दे दी, आप अन्दर आए और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम उसी तरह बदस्तूर लेटे रहे और रान मुबारक या पिंडली मुबारक से कपड़ा बदस्तूर हटा रहा और आप गुफ़्तगू फ़रमाते रहे फिर हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह भी आ गए और अन्दर आने की इजाज़त माँगी, हुज़ूर ने उन्हें भी इजाज़त दे दी और वो भी अन्दर आ गए और हुज़ूर फिर भी बदस्तूर लेटे रहे और रान या पिंडली मुबारक से कपड़ा मुबारक बदस्तूर हटा रहा और आप गुफ़्तगू फ़रमाते रहे, फिर हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह भी आ गए और आपने अन्दर आने की इजाज़त माँगी तो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम फौरन उठ बैठे और अपना कपड़ा बराबर फ़रमाते हुए, रान पिंडली मुबारक को ढांप लिया और फिर हज़रत उस्मान को अन्दर आने की इजाज़त दी, हज़रत सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अनहा फ़रमाती हैं जब वो लोग चले गए तो मैंने हुज़ूर से दरयाफ़्त किया, या रसूल अल्लाह! ये क्या बात के सिद्दीक़े अक्बर आए तो आप बदस्तूर लेटे रहे, फारूक़े आज़म आए तो भी बदस्तूर लेटे रहे मगर जब उस्मान आए तो आप फौरन उठ बैठे और कपड़ा बराबर फ़रमा लिया।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया ऐ आयशा! मैं इस शख़्स से हया क्यों ना करूं जिससे फरिश्ते भी हया करते हैं। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 553)

सबक़:- हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह की ये शान है के फरिश्ते और खुदा का रसूल भी उनसे हया फ़रमाता है फिर जो शख़्स हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह की ज़ात वाला में बेअदबी और गुस्ताख़ी करे किस क़द्र बेहया है।

हिकायत नम्बर (164) उस्मान ग़नी सख़ावत का धनी

जंगे तबूक के मौक़े पर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मुसलमानों को अल्लाह की राह में ख़र्च करने की तरग़ीब दे रहे थे के हज़रत उस्मान

रज़ी अल्लाहो अन्ह उठे और अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! साज़ो सामान समेत एक सौ ऊँट मैं देता हूँ हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने फिर तरग़ीब दी तो हज़रत उस्मान ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! साज़ो सामान समेत दो सौ ऊँट मैं देता हूँ, हुज़ूर ने फिर तरग़ीब दी तो हज़रत उस्मान ने फिर अर्ज़ किया, हुज़ूर साज़ो सामान समेत तीन सौ ऊँट मैं देता हूँ और फिर उन तीन सौ ऊँटों के अलावा हज़रत उस्मान ने एक हज़ार दीनार (एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत उस्मान ने एक हज़ार ऊँट, सत्तर घोड़े और दस हज़ार रुपये इस जंग में ख़र्च किए। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 172, जिल्द 1) भी हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के सामने पेश कर दिए, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने हज़रत उस्मान की ये सख़ावत देखी तो हज़रत उस्मान के पेश कर्दा दीनारों में अपना हाथ मुबारक डाल कर फ़रमाया, उस्मान के इस नेक अमल के बाद अब इसे कोई बात ज़रर ना देगी। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 553)

सबक़:- हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह बहुत बड़े ग़नी थे और फिर सख़ावत के धनी भी थे और रसूल के इर्शाद पर अपना सब कुछ लुटा देने वाले थे।

हिकायत नम्बर (165) जन्नत का चश्मा

जब मुहाज्रीन मक्का मओज़्ज़मा से हिजरत करके मदीना मुनव्वरह में आए तो यहाँ का पानी पसंद ना आया जो खारी था, मदीना मुनव्वरह में एक शख़्स की मिलक में चश्मा था जिसका नाम रोमा था वो शख़्स अपने चश्मे का पानी क़ीमतन देता था, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने उससे फ़रमाया के तुम अपना ये चश्मा मेरे हाथ जन्नत के चश्मे के अवज़ बेच दो और जन्नत का चश्मा मुझ से ले लो, उसने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मेरी और मेरे बाल बच्चों की मआश इसी से है, मुझ में ताक़त नहीं, ये ख़बर हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाह अन्ह को पहुँची तो आपने 35 हज़ार रुपये नक़द देकर उस शख़्स से वो चश्मा ख़रीद लिया और फिर हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! जिस तरह आप उस शख़्स को जन्नत का चश्मा अता फ़रमाते थे अगर मैं ये चश्मा उससे ख़रीद लूं तो क्या हुज़ूर वो जन्नत का चश्मा मुझे दे देंगे? आपने फ़रमाया हाँ दे दूंगा, अर्ज़ की तो मैंने वो चश्मा ख़रीद लिया है और मुसलमानों पर मैं उसे वक़्फ़ करता हूँ। (तिबरानी शरीफ, अलअमन व अला, स262)

हिकायत नम्बर (166) मुबारक हाथ

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम बैत-उल्लाह शरीफ की ज़ियारत के लिए बक़स्दे उमरा मक्का मओज़्ज़मा को रवाना हुए सहाबा-ए-इक्राम भी साथ थे, रास्तें में एक मुक़ामे हुदैबिया पर ठहरे और हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को क़ुरेश मक्का के पास मक्का मओज़्ज़मा भेजा और फ़रमाया, जाकर उनसे कहना के हमारा इरादा किसी जंग का नहीं है, हम सिर्फ ज़ियारत बैत-उल्लाह के लिए आए हैं और जो मुसलमान मक्का मओज़्ज़मा में हैं उनसे कहना के घबराओ मत, मक्का मओज़्ज़मा अनक़रीब फतह हो जाएगा चुनाँचे हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह पैग़म्बरे खुदा सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के पयामबर बनकर मक्का मओज़्ज़मा पहुँचे और क़ुरैश मक्का को इर्शादे नबव्वी सुनाया, क़ुरैश मक्का ने जवाब दिया के इस साल तो हम मोहम्मद (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) को मक्का में ना आने देंगे और हज़रत उस्मान से कहा के अगर आप कअबा का तवाफ करना चाहें तो शौक़ से कर लें, हज़रत उस्मान ने जवाब दिया, ऐसा नहीं हो सकता के मैं बग़ैर रसूले करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के तवाफ करूं और फिर वहाँ से उठकर मक्का के ज़ईफ मुसलमानों के पास पहुँचे और उनको मक्का की फतह की बशारत सुनाई। इधर मुक़ाम हुदैबिया में सहाबा इक्राम ने हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के मुतअल्लिक़ कहा के उस्मान बड़े खुशक़िसमत हैं जो कअबा मओज़्ज़मा पहुँच गए हैं और बैत-उल्लाह के तवाफ से मुर्शफ हो गए हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के उस्मान बग़ैर मेरे कभी तवाफ ना करेंगे।

फिर जो हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को वापस आने में कुछ देर हुई तो आपके मुतअल्लिक़ ये बात मशहूर हो गई के क़ुरैश मक्का ने हज़रत उस्मान को शहीद कर दिया है, इस बात से मुसलमानों में जोश पैदा हो गया और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने सहाबा-ए-इक्राम से काफिरों के मुक़ाबले में जिहाद में साबित क़दम रहने की बैत ली। इस बैत में चूंके हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह मौजूद ना थे इसलिए हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने खुद अपना बायाँ हाथ अपने ही दायें हाथ में लेकर फ़रमाया के ये हाथ उस्मान का है और मैं उस्मान से भी बैत लेता हूँ। (तफ़सीर ख़ज़ायन-उल-इर्फान, सफ़ा 722, तारीख़-उल-खुलफा सफ़ा 107)

सबक़: हुज़ूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम ने अपने मुबारक हाथ

को हज़रत उस्मान के हाथ क़रार दिया गोया हज़रत उस्मान को हुज़ूर से एक ख़ास निसबत हासिल है फिर जो लोग हज़रत उस्मान के मुख़ालिफ हैं वो लोग गोया इस निसबत के पेशे नज़र हुज़ूर ही के मुख़ालिफ हैं और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को हुज़ूर इतने प्यारे थे और आपके दिल में हुज़ूर का इस क़द्र एहत्राम व वक़ार था के बग़ैर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के बैत-उल्लाह शरीफ के तवाफ को भी नज़र अंदाज़ कर दिया और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम को इस बात का इल्म था के उस्मान शहीद नहीं हुए और वो बखैरियत हैं जभी तो आपने अपने हाथ को उनका हाथ क़रार देकर उनकी बैत ली।

और ये भी मालूम हुआ के क़ुरआन जो हज़रत उस्मान के हाथों जमा हुआ इस निसबत से अल्लाह ही के हाथ से जमा हुआ क्योंके हज़रत उस्मान का हाथ, हुज़ूर का हाथ और हुज़ूर का हाथ और हुज़ूर का हाथ अल्लाह का हाथ है तो हज़रत उस्मान का हाथ वसीला मुसतफा से अल्लाह का हाथ हुआ तो उस्मान के हाथ से जमा शुदा क़ुरआन अल्लाह के हाथ से ही जमा शुदा है।

हिकायत नम्बर (127) बेनज़ीर ज़ियाफत

एक मर्तबा हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ियाफत की और अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! मेरे ग़रीब ख़ाने पर अपने दोस्तों समेत तशरीफ़ लाएँ और माहज़्र तनावुल फ़रमाएँ, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने ये दअवत क़बूल फ़रमा ली और वक़्त पर मअे सहाबा इक्राम के हज़रत उस्मान के घर तशरीफ़ ले चले, हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर के पीछे पीछे चलने लगे और हुज़ूर का एक एक क़दम मुबारक जो उनके घर की तरफ़ चलते हुए ज़मीन पर पड़ रहा था गिनने लगे, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया ऐ उस्मान! ये मेरे क़दम क्यों गिन रहे हो? हज़रत उस्मान ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों मैं चाहता हूँ के हुज़ूर के एक एक क़दम के अवज़ में आपकी तअज़ीम व तोक़ीर की ख़ातिर एक एक ग़ुलाम आज़ाद करूं, चुनाँचे हज़रत उस्मान के घर तक हुज़ूर के जिस क़द्र क़दम पड़े उसी क़द्र ग़ुलाम हज़रत उस्मान ने आज़ाद किए। (जामअे-उल-मोजज़ात, सफ़ा 65)

सबक़:- हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह बड़े ग़नी और बड़े

ही सखी और हुजूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम के सच्चे मुहिब्ब और तालिब थे।

हिकायत नम्बर (168) मोहर की गुमशदगी

हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास हुजूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम की मोहर मुबारक थी जिस पर "मोहम्मद रसूल अल्लाह" कूंदह था। एक दिन हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो,अन्ह एक कुएँ पर बैठे थे के इत्तेफाकन मोहर मुबारक आपके हाथ से कुंएँ में गिर गई, इस कुएँ में इंसान की कमर तक पानी था हज़रत उस्मान ने हुक्म दिया के जो शख़्स इस मोहर को कुएँ से निकाल देगा, एक लाख रुपया उसे इनाम दूंगा, लोगों ने हर चंद कोशिश की और इस कुएँ की मिट्टी तक निकाल डाली मगर मोहर ना मिली, इस मोहर की बर्कत से हज़रत उस्मान के सब मतीअ थे, मगर जब वो मोहर गुम हो गई तो लोगों का ख़याल कुछ दीगरगूँ हो गया और तरह तरह की बेबुनियाद शिकायतें हज़रत उस्मान की करने लगे और मामूली मामूली बातों पर आपको गिरफ़्त करने लगे, एक शख़्स ने मदीना मुनव्वरह में कबूतर उड़ाने शुरू कर दिए, हज़रत उस्मान ने उन कबूतरों के पर काट डाले अब वो कबूतर बाज़ हज़रत के दुश्मन हो गए फिर किसी ने गुलेल बनाई और गुल्लह उड़ाने लगा आपने फ़रमाया के इससे किसी को तकलीफ होगी वो गुलेल तुड़वा दी, गुलेल बाज़ भी आपके दुश्मन हो गए, मोहर गुमशुद्गी से इसी तरह लोग बिला वजह आपके ख़िलाफ होने लगे। (सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 99)

सबक़:- चूंके शर्फे शहादत से आपको मुशर्रफ होना था, और इसकी खबर हुज़ूर ने पहले ही से दे दी थी, चुनाँचे एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मअ अबुबक्र व उमर और उसामन के एक पहाड़ पर तशरीफ ले गए और वो पहाड़ हिला तो हुज़ूर ने अपना पैर मुबारक इस पहाड़ पर मार कर फ़रमाया, ठहर जा ऐ पहाड़! के तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद खड़े हैं। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 554)

ये दो शहीद कौन थे? एक हज़रत उमर और दूसरे हज़रत उस्मान, हज़रत उमर तो शहीद हो गए थे और अब हज़रत उस्मान की बारी थी, और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने एक मर्तबा उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के कान में भी आपके शहीद होने का सारा किस्सा बयान फ़रमा दिया था (नुज़्हत-उल-मजालिस, सफ़ा 341, जिल्द 2) इसलिए हज़रत उस्मान की इस मुक़द्दर शहादत की इब्तिदा इस मोहर की गुमशुदगी से हो गई।

हिकायत नम्बर (169) एक फितने बाज़ यहूदी

अब्दुल्लाह बिन सबा एक शरीर और मुफत्तन यहूदी था जो हज़रत उस्मान के वक़्त में मुनाफिक़ बनकर मुसलमान हो गया था, कुछ दिन मक्का व मदीना में रहा मगर यहाँ उसका दाव ना चला तो फिर ये मुसाफिर शहर बसरा में गया, कुछ वहाँ नुक़्स फैलाया, फिर कूफे में गया मगर कहीं पूरे तौर से उसको मौक़ा ना मिला, जब मिस्र में आया तो अहले मिस्र को ये बात तालीम दी के बताओ मोहम्मद (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) का मर्तबा ज़्यादा है या ईसा (अलेहिस्सलाम) का? सबने कहा हमारे हज़रत का मर्तबा ज़्यादा है, कहा, तो बड़ा अफ़्सोस है के ईसा तो क़यामत से पहले दुनिया में आवें और काफिरों को हलाक करें और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम न आवें और आपके दुश्मन जो चाहें किया करें, ये बात कब हो सकती है? बाज़ अहले मिस्र ने ये रजअत का मसला मान लिया, जब इस यहूदी का ये दाव चल गया तो फिर वो एक क़दम और आगे बढ़ा और कहने लगा के हर नबी का एक वसी होता है और जनाब नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के वसी हज़रत अली करमल्लाहो वजह हैं, ख़िलाफत का हक़ वसी का होता है, उस्मान ने ख़िलाफत का ग़सब कर लिया है, तुम किसी तरह उस्मान को ख़िलाफत से अलग करो और अली को बिठाओ ये बे दीन यहूदी हज़रत अली का भी ख़ैरख़्वाह ना था वो तो महेज़ मुसलमानों में इफ़्तिराक़ पैदा करना चाहता था, चुनाँचे कई लोग उसके इस दाव में भी आ गए और कहने लगे के हम उस्मान को किस तरह ख़िलाफत से अलग करें। वो बोला के तुम पहले जो हाकिम हज़रत उस्मान की तरफ़ से मिस्र पर मुक़र्रर हैं उनकी शान में एतराज़ करो और लोगों को अपनी तरफ़ राग़िब करो और जगह जगह मिस्र में और बसरा में ख़त रवाना करो चुनाँचे जगह जगह से ख़त हाकिमों के मुतअल्लिक़ शिकायतों के लिखे जाने लगे और राय आम्मा को इस तरफ़ किया जाने लगा के उस्मान के हाकिम ज़ुल्म करते हैं बहुत से कूफा और बसरा के लोग भी इस साज़िश में शरीक हो गए यहाँ तक के अहले मिस्र ने अहले कूफा व बसरा ने हज़रत उस्मान की तरफ़ लिखा के और तो हम हर तरह चैन से हैं मगर आपके हाकिम हम पर बड़ा ज़ुल्म करते हैं, आप उन्हें मौक़ूफ़ कर दें। हज़रत उस्मान ने जवाब में लिखा के जिस जिस पर मेरे आमिलों ने ज़ुल्म किया है वो इस मर्तबा ज़रूर हज करने आए, मेरे आमिल भी आएँगे इस वक़्त सबके ज़ुल्म का बदला दिलवाऊँगा, हज़रत उस्मान ने

इधर अपने सब आमिलों को तलब कर लिया चुनाँचे हुक्काम तो सब आ गए मगर शिकायत करने वालो में से कोई ना आया, हज़रत उस्मान ने उन हाकिमों से पूछा के तुम ज़ुल्म क्यों करते हो? तो उन सब ने अर्ज़ किया के ये बात बिलकुल ग़लत और बनावटी है हम ने कभी कोई ज़ुल्म नहीं किया चुनाँचे हज़रत उस्मान ने भी मालूम कर लिया के ये महेज़ शरारत और झूट है। (सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 100)

सबक़:- हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के ख़िलाफ ये साज़िश यहूदियों की थी और यहूदियों की ये दिली ख़्वाहिश थी के मुसलमानों की आपस में फूट पड़े और हमारा दिल ठंडा हो।

हिकायत नम्बर (170) हाकिम की तबदीली

इब्ने सबा यहूदी की साज़िश से अहले मिस्र कूफा और बसरा वाले हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के खिलाफ हो गए और बसरा वालों ने एक मर्तबा बे बुनियाद शिकायात के ख़त लिखे जिनका जवाब हज़रत उस्मान ने दिया मगर उन्होंने जब दूसरी मर्तबा बेबुनियाद शिकायतों के ख़त लिखे तो हज़रत उस्मान ने फिर कोई जवाब ना दिया उसके बाद फिर इब्ने सबा यहूदी के उक्साने पर एक हज़ार मिस्री और उसी क़द्र कूफी और पाँच सौ बसरा के लोग हज के नाम से मदीना मुनव्वरह की तरफ़ रवाना हुए और मदीना मुनव्वरह को घेर लिया, जब हज़रत उस्मान ने देखा के लोग मेरे क़त्ल के दरपे हैं तो आप हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास आए और ये कहा के मेरी और तुम्हारी क़ुराबत है लोग तुम्हारी बात मान लेंगे उन लोगों को मना करो के मेरे खून में हाथ रंगीं ना करें और जो कुछ उनका मतलब है बयान करें, मैं पूरा करूंगा, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह उन लोगों के पास गए और सख़्ती से उनको रोका और दरयाफ़्त फ़रमाया के तुम्हारा मतलब क्या है? उन्होंने कहा के मिस्र से पहले हाकिम को माक़ूफ किया जाए और मोहम्मद बिन अबी बक्र को मिस्र का हाकिम बनाया जाए हज़रत उस्मान ने उनकी इस बात को तसलीम करके पहले हाकिम को मोक़ूफ कर दिया और मोहम्मद बिन अबी बक्र को हाकिम बना दिया अहले मिस्र उस वक़्त वापस चले गए। (तारीख-उल-खुलफा, सफ़ा 111, सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 101)

सबक़:- ये बाग़ी बराए नाम तरफ़े दाराने हज़रत अली थे और दरअसल इब्ने सबा यहूदी की साज़िश का शिकार थे और खुद हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह ही के तरफ़दार थे चुनाँचे

आपने उन बाग़ियों को सख़्ती से रोका और एक दूसरी रिवायत में है के आपने हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह से फ़रमाया के ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! आप मुझे इजाज़त दीजिए मैं आपकी तरफ़ से उन बाग़ियों के साथ जंग करूं मगर हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमया के ऐ अली! मैं नहीं चाहता के मेरी वजह से लोगों का खून बहे। (हयात-उल-जीवान, सफ़ा 46, जिल्द 1)

हिकायत नम्बर(171) जअली ख़त

हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह का एक रिश्तादार था जिसका नाम मरवान था, ये शख़्स बड़ा निकम्मा और फितने बाज़ था, हज़रत उस्मान ने जब मिस्र के हाकिम को मअज़ूल करके मोहम्मद बिन अबी बक्र को मुक़र्रर किया तो चूंके मिस्र का साबिक़ हाकिम मरवान का रिश्तेदार था इसलिए उसे ये बात बुरी मालूम हुई और उसने एक जअली ख़त मिस्र के हाकिम के नाम लिखा के ये ख़त उस्मान अमीर-उल-मोमिनीन की तरफ़ से है जिस वक़्त मोहम्मद बिन अबी बक्र तुम्हारे पास आए तो उसे क़त्ल कर देना, और फलाँ फलाँ सात आदमियों को भी क़त्ल कर देना, खुफिया तौर पर हज़रत उस्मान की मोहर लगाकर हज़रत उस्मान के ग़ुलाम को ऊँट पर सवार करके मिस्र को रवाना किया, रास्ते में वो लोग और ये ग़ुलाम बाहम मिल गए, इस ग़ुलाम से पूछा के तुम कहाँ जाते हो, कहा के मैं मिस्र जाता हूँ, पूछा क्यों जाते हो? कहा के अमीर-उल-मोमिनीन का एक पैग़ाम बनाम हाकिम मिस्र लेकर जाता हूँ, लोगों ने कहा हाकिम मिस्र तो हमारे साथ है जो पैग़ाम है उन से कहो, कहा ये नहीं वो हाकिम जो मिस्र में है, कहा तुम्हारे पास कोई ख़त है? ग़ुलाम ने कहा के नहीं कोई ख़त नहीं, लोगों को शुबह हुआ उस ग़ुलाम की तलाशी ली तो देखा के हज़रत उस्मान की तरफ़ से पहले हाकिम मिस्र के नाम ख़त है उसमें लिखा है के मोहम्मद बिन अबी बक्र को लोगों ने ज़बरदस्ती हाकिम मुक़र्रर करवाया है जिस वक़्त ये लोग मिस्र में आवें तो मोहम्मद बिन अबी बक्र के हाथ पेर काट देना और उन सबको दायम-उल-हब्स करना, ये ख़त देखकर सब ग़ुस्से में आग हो गए और फिर वापस मदीना मुनव्वरह में आए और मदीना में तमाम लोगों को जमा किया और वो ख़त सुनाया, मदीने लोग वो ख़त लेकर हज़रत उस्मान की ख़िदमत में हाज़िर हुए और ख़त दिखाया और पूछा के ये ख़त आपने लिखवाया है? हज़रत उस्मान वो ख़त देखकर हैरान रह गए और फ़रमाया, मैंने ये खत हरगिज़ नहीं लिखवाया, लोगों ने

कहा के सवारी का ऊँट आप ही का है? आपने फ़रमाया हाँ! ऊँट तो मेरा ही है और जो उस पर गुलाम बैठ कर ख़त लिए जा रहा था वो गुलाम भी आप ही का है? फ़रमाया हाँ वो गुलाम मेरा ही है, ये मोहर आपकी है जो ख़त के ऊपर लगी हुई है? फ़रमाया हाँ! मोहर भी मेरी है, फिर ख़त आपका क्यों कर नहीं? फ़रमाया वल्लाह! ना मैंने ख़त लिखा ना लिखवाया, मेरी मोहर किसी ने चुराई है और मेरी तरफ़ से लगाई है अब तो सबने कहा के ये ऐसे बूढ़े हो गए हैं के उनको मोहर और ख़त की भी ख़बर नहीं रही तो उनको बहरहाल ख़िलाफत से मअज़ूल करना ही पड़ेगा वरना उन्हें हम क़त्ल कर देंगे। (तारीख़-उल-ख़ुलफा, सफ़ा 111, सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 102)

हिकायत नम्बर (172) हज़रत उस्मान की शहादत

इब्ने सबा यहूदी की साज़िश और मरवान की शरारत से अहले बसरा को कूफे और मिस्र वाले हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह के बेगुनाह खून से हाथ रंगे बग़ैर ना रह सके चुनाँचे वो लोग हज़ारों की तअदाद में बलवा करके आ गए उस वक़्त सहाबा-ए-इक्राम ने अर्ज़ किया, या अमीर-उल-मोमिनीन! आप हम को लड़ाई का हुक्म दीजिए ताके हम उनको मार भगायें, आपने फ़रमाया के तुमको क़सम है अल्लाह की! मेरे लिए किसी मुसलमान का एक क़तरा खून ना गिराना, मैं क़यामत के दिन खुदा को क्या जवाब दूंगा? सहाबाइक्राम ने कहा आप मक्का मोअज़्ज़मा चले जाईये, या मुल्क शाम चले जाईये वहाँ हज़रत मुआविया रज़ी अल्लाहो अन्ह हैं और उनका लश्कर है आपने फ़रमाया दोस्तो! मैं आख़री वक़्त में अपने नबी के मज़ार को किस तरह छोड़ कर चला जाऊँ? हाँ! मस्जिदे नबव्वी में चलता हूँ और उन लोगों से पूछता हूँ के तुम बिला वजह मुझे क्यों क़त्ल करना चाहते हो।

चुनाँचे आप तशरीफ़ ले गए और उन बलवाईयों से खिताब फ़रमाया के ऐ मिस्री लोगो! तुम मुझ को क्यों क़त्ल करते हो, मेरी उम्र थोड़ी सी रह गई है मैं खुद ब खुद ही इन्तिक़ाल कर जाऊँगा क़सम है खुदा की जब कभी लोगों ने किसी नबी को नाहक़ क़त्ल किया है तो हज़ारहा आदमी इस नबी के बदले में क़तल हुए और मैं ख़ली[illegible]य्यद-उल-मुरसलीन हूँ मेरे बदले में अस्सी हज़ार क़तल होंगे अगर मुस[illegible] मेरे क़ातिलों से बदला ना लेंगे तो आसमान से अल्लाह तआला पत्थर बरसा कर मेरे क़ातिलों को हलाक कर देगा, देखो ऐसा ना करना, खुदा की क़सम इस वक़्त तो तुम मेरी मौत चाहते हो और मेरे क़त्ल होने के बाद यूं तमन्ना करोगे के काश उस्मान का एक

एक सांस एक एक बरस की बराबर उम्र का होता, उस वक़्त एक बलवाई ने आपके हाथ का असा जो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का तबर्रूक था, हज़रत के उस्मान के हाथ से छीन कर अपने घुटने पर रख कर तोड़ दिया, फौरन उसके घुटने में एक फोड़ा पैदा हुआ और शाम तक उसका सारा बदन गल कर मर गया, अब बलवाई सेंकड़ों की तअदाद में हज़रत उस्मान के गिर्द आकर जमा हो गए और मकान को घेर लिया और ये कहा के अब हम आपको क़त्ल किए बग़ैर ना छोड़ेंगे, सबका आना जाना अन्दर का बन्द किया, हज़रत उस्मान को नमाज़ के वास्ते भी घर से ना निकलने दिया कोई चीज़ खाने की भी अन्दर ना जाने दी यहाँ तक के आपका पानी भी बन्द किया जो कुछ घर में था वो सब ख़त्म हुआ फिर सारा घर प्यासा मरने लगा जब सात दिन बराबर इसी तरह गुज़रे और किसी को एक क़तरा भी पानी का ना मिला तब हज़रत उस्मान ने अपने मकान की खिड़की से सर बाहर निकाला और आवाज़ दी के यहाँ अली हैं? किसी ने जवाब ना दिया, फ़रमाया सअद हैं? फिर किसी ने जवाब ना दिया, हज़रत उस्मान ने फ़रमाया के ऐ उम्मते मोहम्मदिया! रोम फारस के बादशाह भी अगर किसी को क़ैद करते हैं ज़रूर क़ैदी को दाना पानी देते हैं, ऐ लोगो! मैं तुम्हारा ऐसा गुनेहगार क़ैदी हूँ के मुझ को पानी भी नहीं देते। है कोई जो अल्लाह के वास्ते उस्मान को एक पियाला पानी का दे उसका बदला मैं पहला पियाला जो मुझ को मेरे नवी से होज़े कोसर पर मिलेगा उसको दूंगा। वहाँ होज़े कोसर की किस को परवाह थी मगर जब हज़रत अली को ख़बर हुई, तीन मशकें आपने भरकर कमर से तलवार बाँधी और सर पर आँहज़रत सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का अमामा बाँध कर पानी लेकर चले और लोगों से कहा के ये काम तो काफ़िर भी नहीं करते जो काम तुम ने किया है पानी बन्द ना करो, देखो ग़ज़बे इलाही नाज़िल हो जाएगा। मगर उन ज़ालिमों ने मश्कों में बरछे मारकर पानी किाल दिया इतने में जनाब उम्मे हबीबा उम्म-उल-मोमिनीन एक ख़च्चर पर सवार होकर और एक पानी की मश्क साथ लेकर आईं और ये ख़याल किया के कमबख़्त मेरा तो अदब करेंगे और लोगों से कहा के बनी उमय्या की कुछ अमानतें उस्मान के पास हैं ज़रा मैं उनको पास जाना चाहती हूँ ताके वो अमानत ले आऊँ, ये सुनकर बलवाई बोले के ओ झूटी! ये कहकर ख़च्चर के मुंह पर लकड़ी मारी और चार जामे का बन्द काट दिया ख़च्चर आपको ले भागा, हज़रत उम्म-उल-मोमिनीन गिरते गिरते बचीं। ये वाक़िया देखकर लोग घबराए और ये कहा, ख़ूदा तुम्हारा नास करे अज़वाजे

नबी के साथ भी ऐसी बुरी तरह पेश आने लगे, अहले मदीना को बहुत गुस्सा आया और तलवारें लेकर हज़रत उस्मान से अर्ज़ किया के अब तो अज़वाजे नबी की भी बेहुर्मती होने लगी ऐ उस्मान! अब तो लड़ने की इजाज़त दीजिए, हज़रत उस्मान ने फ़रमाया, तुम मेरे लिए अपनी जानें ज़ाए ना करो मुझे अगर लड़ना मंज़ूर होता तो अब तक हज़रहा फौज शाम और इराक़ से मंगवाता, मैं लड़ना हरगिज़ नहीं चाहता, सब को क़समें देकर वापस कर दिया फिर जब कुछ दिन गुज़रे और हज़रत उस्मान को प्यास की बहुत सख़्त तकलीफ हुई तो आपने फिर अपना मुंह खिड़की से बाहर निकाला और फ़रमाया तुम जानते हो जब हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मदीना मुनव्वरह में आए थे तो यहाँ पानी मुसलमानों को मोल मिलता था और कुँआ यहूद के क़ब्ज़े में था। हुज़ूर ने फ़रमाया कौन है जो इस कुएँ को ख़रीद दे और इसके बदले में जन्नत का चश्मा ले ले, मैंने वो कुँआ 35 हज़ार में ख़रीदकर तुम्हारे ऊपर वक़्फ कर दिया वही आज मैं हूँ के चालीस दिन से पानी के लिए उस्मान के बच्चे रोते हैं और उन्हें पानी नहीं मिलता, लोगो! तुम को मालूम है के मस्जिद नबव्वी इब्तिदा में निहायत तंग थी मैंने पच्चीस हज़ार रुपया देकर मकान और ज़मीन देकर मस्जिदे नबव्वी में शामिल की, आज मैं ऐसा हो गया के तुम मुझ को इसी मस्जिद में दो रकातें पढ़ने से रोकते हो, लोगो! क़यामत के रोज़ क्या उज़्र करोगे?

पचास दिन तक हज़रत उस्मान उसी मकान में क़ैद रहे, इस अर्से में बराबर रोज़े रखते रहे एक रात आपने ख़्वाब में देखा के जनाब रिसालत मआब सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम अपने मज़ार शरीफ से बाहर तशरीफ़ लाए और अबुबक्र और उमर रज़ी अल्लाहो अन्हुमा आपके साथ हैं, हज़रत उस्मान के पास आए और फ़रमाया, ऐ उस्मान! क्या तुम्हें प्यास बहुत लगी है? तुमने चालीस दिन तक रोज़ा रखा, ऐ उस्मान! कल रोज़ा तुम हमारे पास आकर खोलोगे, हम होज़े कोसर से तुम्हारा रोज़ा खुलवाएंगे, ऐ उस्मान! कल तुम शहीद किए जाओगे, और तुम्हारा खून का पहला क़तरा आयत *फसायकफीकाहुमुल्लाहू वहुवस्समी-उल-अलीम* पर पड़ेगा।

ये ख़्वाब देखकर हज़रत उस्मान ने अपने मकान का दरवाज़ा खोल दिया और फ़रमाया, आने दो आज तो मेरी दअवत हुज़ूर होज़े कोसर पर कर गए हैं, दरवाज़ा खोलते ही बलवाई अन्दर घुस आए और इस ख़याल से के कोई दरवाज़ा फिर बन्द ना कर दे किवाड़ों में आग लगा दी, दरवाज़े के ऊपर छप्पर पड़ा था उसको भी आग लग गई, घर वाले घबरा गए मगर

हज़रत उस्मान उस वक़्त नमाज़ पढ़ते थे और सूरत ताँहा शुरू थी घर में आग लग रही थी मगर जनाब की नमाज़ या क़िराअत पढ़ने में ज़रा भ फर्क़ या लुकनत ना थी यहाँ तक के नमाज़ से आप फ़ारिग़ हुए, क़ुरआन मंगाया, खोला, सामने रखा वहीं आयत निकली, एक आदमी आपके क़त्ल के इरादे से आपके पास आया, आपने फ़रमाया, तू मुझको क़त्ल ना कर क्योंके नबी अलेहिस्सलाम ने तेरे लिए दुआ की थी के अल्लाह तुझ को उस्मान के खून में हाथ रंगने से बचाए क्या तू मेरे नबी की दुआ के ख़िलाफ करेगा? इस शख़्स को तो ये बात सुनते ही पसीना आया और शर्मिंदा होकर घर से निकल गया, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ी अल्लाहो अन्ह इस मौक़े पर आए और फ़रमाया, ज़ालिमो! ख़बरदार! उस्मान का खून ना करो, देखो अल्लाह तआला एक उस्मान के बदले अस्सी हज़ार को क़त्ल करेगा, उस वक़्त तक मदीना मुनव्वरह की हिफाज़त फरिश्ते करते हैं जिस वक़्त तुम उस्मान को क़त्ल करोगे फरिश्ते चले जाऐंगे, एक ज़ालिम बोला, ओ यहूदी बच्चे! तू क्या जाने, जा अपना काम कर, हज़रत उस्मान ने फ़रमाया के तुम सब्र करो।

इतने में सोदान बिन हमरान एक शख़्स आया और कहने लगा, ओ उस्मान तू किस दीन पर है? आपने फ़रमाया मैं दीने मोहम्मदी पर हूँ, उसने बड़े ज़ोर से आपका गला घोंटा, फिर एक और ज़ालिम आपके पास आया और आपके चहरे पर तमाचा मारा और तलवार आपकी जानिब उठाई आपने हाथ से तलवार को रोका, हाथ कट गया, फ़रमाया ये वो हाथ था जो वही लिखा करता था आज ये राहे मौला में कटे हैं, ये वो हाथ है जिसने सय्यद-उल-मुरसलीन के हाथ पर बैत की जिस दिन से ये हाथ नबी के हाथ से मिला था किसी गंदी चीज़ को इस हाथ ने छुआ था, लोगो! ज़रा इस हाथ को अच्छी तरह दफ़्न करना, उस ज़ालिम ने कहा लो बुलाओ अपने मददगारों को, फ़रमाया मेरा जो मददगार है मेरें पास है, फिर एक और ज़ालिम आया उसने तीन ज़ख़्म आपके माथे पर और तीन छाती पर बरछी की नोक से किए उस वक़्त जो क़ुरआन शरीफ सामने रखा था और उसे आप पढ़ रहे थे उस पर पहला क़तरा आपके खून का जो पड़ा वो इस आयात पर पड़ा वो इस आयत पर पड़ा फसायकफीकाहुमुल्लाहू "ऐ उस्मान! तेरा बदला लेने को तेरा अल्लाह काफी है" आप अशहदअंल्लाइलाहा इल्ललललाहू व अशहदअन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह कहते हुए ज़मीन पर गिरे, उस ज़ालिम ने आपकी पसलियों पर कूदना शुरू किया, आपकी तीन पसलियाँ टूट गईं ज़ालिमों ने आपके अज़वाज का ज़ेवर उतारा और घर का सब असबाब लूट लिया।

(तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 112, सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 101)

सबक़: अब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी की साज़िश रंग लाई और अहले मिस्र उसके मंसूबे का शिकार होकर मुसलमानों में एक अज़ीम फितने के ज़हूर का मौजिब बन गए, ये फितना फिर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के दौर में और भी ज़्यादा फैला और यहूदियत मुख़्तलिफ रूपों में ज़ाहिर हुई और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह को अपने नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से अपनी शहादत का सारा किस्सा मालूम हो चुका था और आप राज़ी बरज़ाऐ इलाही थे इसी वास्ते आपने सहाबाइक्राम को उनसे लड़ने की इजाज़त ना दी और ना ही शाम व इराक़ से कोई फौज मंगवाई और ये भी मालूम हुआ के इब्ने सबा यहूदी की तालीम से बलवाईयों के दिल में ना सहाबा की इज़्ज़त रही और ना अज़वाज-उन्नबी की हुर्मत और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह की शहादत शरीफा से हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह की शहादत भी कुछ कम नहीं बल्के उससे भी ज़्यादा दर्दनाक है करबला में ज़ालिमों ने चन्द दिन पानी बन्द किया था मगर यहाँ चालीस रोज़ से ज़्यादा पानी बन्द रहा, अगर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह मज़लूम हैं तो हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह उनसे भी बढ़कर मज़लूम हैं। रज़ी अल्लाहो अन्हुमा

हिकायत नम्बर(173) हज़रत अली मुर्तज़ा करमल्लाहो वजहू

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के एक चचा थे जिनका नाम इमरान कुनियत अबु तालिब थी, अबु तालिब की बहुत सी औलाद थी जिनमें से एक हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह भी थे, एक मर्तबा मक्का मोअज़्ज़मा में क़ेहत पड़ गया और लोग इस मुसीबत में बुरी तरह घिर गए, अबु तालिब जो कसीर-उल-अयाल थे अपनी महदूद आमदनी और कसीर-उल-औलाद की वजह से इस क़ेहत से बहुत मुतास्सिर हुए, उस वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने अपने दूसरे चचा हज़रत अब्बास से फ़रमाया के चलिये मेरे साथ अबु तालिब के घर चलें और उनके अयाल का बार कुछ हल्का करें चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम और हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाहो अन्ह अबु तालिब के पास पहुँचे और हज़रत अब्बास ने अपनी कफालत में जअफर को ले लिया और हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने अपनी निगरानी में हज़रत अली को ले लिया और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह अभी सात या आठ साल ही के थे के आने इस्लाम क़बूल

फ़रमाया लिया। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 343, जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर की तरबीयत में रहे और थोड़ी उम्र के लोगों में से सबसे पहले आप ही हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम पर ईमान लाए।

हिकायत नम्बर (174) अबु त्राब

एक दिन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह मस्जिद की दीवार के पास ज़मीन पर आराम फ़रमा थे और आपकी पुश्ते अनवर मिट्टी से लग रही थी इतने में हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए और हज़रत अली को ज़मीन पर लेटे हुए देख कर आपको उठाया और आपकी पुश्त अनवर से अपने दस्ते अनवर से मिट्टी झाड़ते हुए फ़रमाया *अजलस अबा त्राब* मिट्टी वाले उठ बैठ। हज़रत अली को हुज़ूर के मुंह से "अबु त्राब" का लफ़्ज़ कुछ ऐसा पसंद आया के आपको अपने असली नाम से ज़्यादा यही नाम पसंद आने लगा और अली कहने से आप इतना खुश ना होते जितना अबु त्राब कहने से खुश होते। (तारीख-उल-खुलफा सफ़ा 118)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह का कुनयती नाम "अबु त्राब" हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का रखा हुआ था और इस नाम में एक ख़ास मोहब्बत जलवा फ़रमा है, इसीलिए हज़रत अली को ये नाम बड़ा प्यारा था के ये नाम प्यारे का रखा हुआ प्यार का नाम है।

हिकायत नम्बर (175) हैदर कर्रार

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम सहाबा इक्राम अलेहिम-उर्र-रिज़वान के मुक़द्दस लश्कर को लेकर ख़ैबर के यहूदियों की सरकोबी के लिए निकले और ख़ैबर पहुँच कर यहूदियों के सब क़िलों को महसूर किया, यहूदियों ने जब अपने आपको क़िलों में महसूर पाया तो मजबूर होकर क़िलों के अन्दर बैठ कर ही मदाफअत करने लगे। यहूदियों को अपने इन क़िलों पर बड़ा नाज़ था लेकिन इस्लामी शेरों ने उनके तीरों और पत्थरों की ज़द में रहते हुए आगे बढ़कर क़िले नाअम के साथ और भी दो एक क़िले फतह कर लिए फिर क़िला क़मूस पर धावा किया चुनाँचे ये क़िला भी दो तीन दिन में फतह हो गया और इसी तरह मसअब, तलीह और सलायम नाम के क़िले भी फतह हो गए अब क़िले ख़ैबर की बारी थी ये क़िला सबसे ज़्यादा मज़बूत था उसकी फतह के लिए बड़ी कोशिश की गई मगर ये क़िला फतह होने में ना

आया। जब कई रोज़ गुज़र गए तो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया खुदा की क़सम! कल मैं झंडा ऐसे शख़्स को दूंगा जो अपनी खुदा दाद क़ुव्वत से क़िले को फतह करेगा चुनाँचे दूसरे दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह को झंडा दिया और फ़रमाया जाओ तुम इस क़िले को फतह करो, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह झंडा और लश्कर लेकर क़िले ख़ैबर की तरफ़ बढ़े तो क़िले ख़ैबर का मालिक मरहब हज़रत अली के मुक़ाबले में आया और ये शैर पढ़ने लगा:-

क़द अलिमत ख़ैबरू अन्नी मरहबन
शाकी-इस-सिलाही बतलन मुजर्रिब

मतलब इन शैरों का ये है के तमाम ख़ैबर को मालूम है के मैं मरहब हूँ वो मुसल्लह और तजुर्बेकार बहादुर है।

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जब मरहब का ये शैर सुना तो आपने जवाब में ये शैर पढ़ा।

अनाअल्लज़ी सम्मतनी उम्मी हेदराहू
कलीसी ग़ाबतिन करीहिल मंज़राहू

यानी सुन ओ मरहब! "मैं वो हूँ जिसका नाम मेरी माँ ने शेर रखा है जो जंगल के शेरों की तरह मुहीब है"

इसके बाद मरहब और हज़रत अली का मुक़ाबला शुरू हो गया, आख़िर हज़रत शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो अन्ह की तलवार मरहब की सप्र को काटते हुए उसके सर पर पहुँची और सर के दो टुकड़े करके उसके बदन के भी दो टुकड़े कर दिए।

सरे खुद सर को काटा चेहरा काटा हलक़ से निकली
निदाऐ अलहज़्र हर सू ज़बान ख़ल्क़ से निकली

मरहब खाक पर लौटने लगा, मरहब को इस हालत में देखकर उसके दूसरे साथियों ने क़िले से निकल कर मुसलमानों पर हमला कर दिया लेकिन बहादुराने इस्लाम ने जान पर खेल कर ऐसा धावा किया के यहूदी हिम्मत हार के भागे और मुसलमानों ने उनका तआक़्क़ुब किया, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह क़िले के फाटक पर पहुँच गए और क़िले के दरवाज़े को पकड़ कर इस ज़ोर से खींचा के पल भर में उसे उखाड़ के अलग फैंक दिया और सब मुसलमान क़िले के अन्दर दाख़िल हो गए मुसलमानों की इस यलग़ार से यहूदियों के छक्के छूट गए और क़िला फतह हो गया। (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 230, जिल्द 1)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह बहुत बड़े बहादुर थे और शेरे खुदा थे और ये सब कुछ हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की अता और आपका सदक़ा था और ये भी मालूम हुआ के मग़रूर काफ़िरों के मुक़ाबले में उनका तकब्बुर व ग़ुरूर तोड़ने के लिए अपने ओसाफ को फ़ख्रिया के तौर पर बयान करना जायज़ है और ये भी मालूम हुआ के उन अल्लाह वालों में बहुत बड़ी ताक़त होती है जो वज़नी दरवाज़ा कई आदमी मिलकर खोलते थे हज़रत अली ने इतना बड़ा दरवाज़ा अपने एक हाथ से उखाड़ कर परे फैंक दिया।

हिकायत नम्बर(176) ज़िरह की चोरी

एक मर्तबा हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की ज़िरह चोरी हो गई ओर एक यहूदी से बरआमद हुई हज़रत अली ने उससे फ़रमाया के ये तो मेरी ज़िरह है, यहूदी ने कहा अगर आपकी है तो दावा कीजिए और कोई गवाह पेश कीजिए।

चुनाँचे हज़रत अली शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत क़ाज़ी शरीह रज़ी अल्लाहो अन्ह की अदालत में दावा दायर कर दिया और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह और वो यहूदी मुद्दई और मुद्दा अलिया की सूरत में अदालत में पेश हुए। क़ाज़ी ने बग़ैर किसी रिआयत के दोनों के बयान लिए और हज़रत अली से गवाह तलब किए हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपने साहबज़ादे इमाम हसन रज़ी अल्लाहो अन्ह और अपने ग़ुलाम कंबर को गवाही के लिए पेश किया, बेटे और ग़ुलाम की गवाही हज़रत अली के नज़दीक जायज़ थी मगर काज़ी साहब के नज़दीक जायज़ ना थी, ये मसला अमीर-उल-मोमिनीन और क़ाज़ी साहब के माबेन मुख़्तलिफ फीह था इसी लिए क़ाज़ी साहब ने अपने इजतिहाद पर अमल करके हज़रत अली का दावा ख़ारिज कर दिया।

कमरा-ए-अदालत से बाहर निकलने पर यहूदी ने हज़रत अली के चहरे पर बग़ौर देखा तो उसे कोई रंज व मलाल नज़र ना आया। यहूदी दिल में सोचने लगा के हज़रत अली ने ख़लीफ़ा-ए-वक़्त और असद-उल्लाह होने के बावजूद अपना दावा ख़ारिज हाते हुए देखकर कोई ग़ुस्सा नहीं मनाया और आप मतलक़ बरहम नहीं हुए आख़िर किस चीज़ ने उन्हें इस बात से रोका है? उस सवाल का जवाब यहूदी के दिल ही ने दिया के इस्लाम ने, चुनाँचे यहूदी फ़ौरन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह

के क़दमों में गिर गया और अर्ज़ कीः

हुज़ूर मैंने आपकी ज़िरह ली, आपने मेरा दिल ले लिया। अशहद-अन-लाइलाहा इल्ललाहू व अशहदअन्ना मोहम्मदुर रसूल अल्लाह। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 576)

सबक़:- इस्लाम ने अद्ल व इंसाफ का दर्स दिया है और हमारे इसलाफ़ ने हर हाल में अद्ल व इंसाफ का साथ दिया है, इस्लाम की नज़र में क़ानून छोटे बड़े, राई रिआया और अमीर ग़रीब सबके लिए बराबर है, हमारे बुज़ुर्गों ने इसी अद्ल व इंसाफ और इस्लामी अख़लाक़ की तलवार से दुनिया को फतह किया।

हिकायत नम्बर (177) अजीब फैसला

अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह का अहेदे ख़िलाफत है एक नोजवान घबराया हुआ और ये कहता हुआ के ऐ अहकम-उल-हाकमीन मुझ में और मेरी माँ में फैसला फ़रमा, हाज़िर हुआ और आकर अर्ज़ की ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! मेरी माँ ने नो माह तक मुझे शिकम में रखा फिर वज़अे के बाद दो साल तक मुझे दूध पिलाया जब मैं जवान हो गया तो उसने मुझे घर से निकाल दिया और मेरी फ़रज़ंदी का इंकार कर बैठी और अब कहती है के वो पहचानती भी नहीं।

अमीर-उल-मोमिनीन! तेरी वालिदा कहाँ है?

नोजवानः फलाँ क़बीले के फलाँ मकान में रहती है।

अमीर-उल-मोमिनीनः इस नोजवान की माँ को मेरे पास लाया जाए।

आपके हुक्म की तामील की गई और फौरन इस औरत को उसके चार भाईयों और चालीस मसनुई गवाहों समेत लाया गया जो इस बात की क़सम खाते थे के ये औरत इस नोजवान को जानती भी नहीं बल्के ये नोजवान झूटा और ज़ालिमाना दावा कर रहा है। इसका मतलब इस बात से ये है के वो इस औरत को उसके क़बीले में ज़लील करे हालाँके इस औरत का अभी निकाह ही नहीं हुआ, फिर बच्चा कहाँ से जनती, ये तो इस वक़्त तक पाक दामन है।

अमीर-उल-मोमिनीनः ऐ नोजवान! तू क्या कहता है?

नोजवानः ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! खुदा की क़सम, ये मेरी माँ है। उसने मुझे जना और दूध पिलाया और फिर घर से निकाल दिया।

अमीर-उल-मोमिनीनः ऐ औरत ये लड़का क्या कहता है?

औरतः ऐ मोमिनों के सरदार! मुझे खुदा की क़सम! ना मैं उसे पहचानती

हूँ और ना ये जानती हूँ के ये किन लोगों में से है, ये मुझे ख़्वाह-म-ख़्वाह ज़लील करना चाहता है, मैं एक कुरैशी लड़की हूँ और अभी तक कुंवारी हूँ।

अमीर-उल-मोमिनीनः तो इस मामले का तेरे पास गवाह हैं?

औरतः हाँ! ये हैं, उसके बाद फौरन चालीस गवाह क़सम खाने वाले आगे बढ़े जिन्होंने क़समें खाकर औरत के हक़ में गवाही दी और नोजवान को झूटा बतलाया।

अमीर-उल-मोमिनीनः अच्छा तो आज मैं तुम्हारे दरमियान ऐसा फैसला नाफिज़ करूंगा जिसको मालिक अर्श बालाऐ अर्श पसंद फ़रमाएगा, क्यों ऐ औरत तेरा कोई वली है?

औरतः क्यों नहीं, ये मेरे भाई हैं।

अमीर-उल-मोमिनीनः (उसके भाईयों से मुख़ातिब होकर) क्या मेरा हुक्म तुम्हारे लिए और तुम्हारी बहन के लिए क़ाबिले क़बूल होगा?

चारों भाईः हाँ हाँ! क्यों नहीं! अमीर-उल-मोमिनीन जो फ़रमायें हमें मंज़ूर है।

अमीर-उल-मोमिनीनः मैं खुदा को और हाज़रीन को गवाह करता हूँ के मैंने बिला शक इस औरत को इस नोजवान के साथ बयाह दिया, चार सौ नक़द दरहमों के मेहर पर अपने माल से, ऐ कंबर! मेरे पास चार सौ दरहम लाओ, कंबर ने फौरन तामील की और उन दरहमों को नोजवान के हाथ में रख दिया।

अमीर-उल-मोमिनीनः ऐ नोजवान! इन दरहमों को अपनी औरत की गोद में डाल दे और जाओ अब मेरे पास इस हालत में आना के तुझ में नहाने का असर हो (यानी बाद मुबाशरत व ग़ुस्ल के हाज़िर होना) नोजवान ये इर्शाद सुनकर उठा और दरहम औरत की गोद में डाल दिए।

औरतः (चिल्ला कर) ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! जहन्नम जहन्नम! क्या आप ये चाहते हैं के आप मुझे मेरे फ़रज़ंद से बयाह दें, बखुदा ये मेरा फ़रज़ंद है, मेरे भाईयों ने एक कमीने आदमी से मेरा उक़द कर दिया था जिससे मैंने ये फ़रज़ंद जना। फिर जब ये बालिग़ हुआ तो भाईयों ने मुझे ये हुक्म दिया के मैं इसकी फ़रज़ंदी से इंकार कर दूं और उसे घर से निकाल दूं, बखुदा ये मेरा लख़्ते जिगर है।

अमीर-उल-मोमिनीनः अच्छा जाओ, अपने फ़रज़ंद को घर ले जाओ। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 577)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्हु बाब *मदीनत-उल-इल्म*

थे और ये इस पाक इल्म का नतीजा था के ऐसे ऐसे मुश्किल मसायल बड़ी आसानी से हल फ़रमा लेते थे और इस क़िस्म की मुश्किलात इल्म दीन ही से हल होती हैं।

हिकायत नम्बर (178) आठ रोटियाँ

दो आदमी हम सफर थे एक के पास पाँच रोटियाँ थीं और दूसरे के पास तीन, खाने का वक़्त आया तो रास्ते में एक जगह दोनों ठहरे और वो रोटियाँ इकट्ठी करके दोनों मिलकर खाने को बैठे इतने में एक तीसरा शख़्स भी आ गया, उन्होंने उससे कहा आओ भई! खाना हाज़िर है इस शख़्स ने ये दअवत क़बूल कर ली और वो भी उनके साथ खाने में शरीक हो गया और फिर तीनों ने मिलकर वो रोटियाँ खाईं, खाना खा लेने के बाद तीसरा शख़्स आठ रुपये उनको दे गया और कह गया के आपस में बाँट लेना चुनाँचे जब वो दोनों उन आठ रुपयों को बाँटने लगे तो पाँच रोटी वाले ने कहा के मेरी पाँच रोटियाँ थीं मैं पाँच रुपये लेता हूँ और तेरी तीन थीं, तो तीन ले तीन रोटी वाला कहने लगा, ऐसा हर गिज़ ना होगा बल्के आधे रुपये तेरे और आधे मेरे, हम दोनों ने मिलकर रोटी खाई है इसलिए दोनों का हिस्सा भी बराबर होगा, दोनों में तकरार बढ़ गई और फिर दोनों अपने इस झगड़े का फैसला कराने हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की अदालत में पहुँचे, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने सारा क़िस्सा सुनकर तीन रोटी वाले से फ़रमाया के तुम्हें अगर तीन रुपये मिलते हैं तो तीन ही ले लो, तुम्हारा फायद इसी में है वरना अगर हिसाब करके लोगे तो तुम्हारे हिस्से में सिर्फ एक रुपया आता है, वो हैरान होकर बोला, एक रुपया? भला ये किस तरह हो सकता है? मुझे ये हिसाब समझा दीजिए तो मैं एक ही ले लूंगा।

हज़रत अली ने फ़रमाया, अच्छा तो सुनो! तुम्हारी तीन रोटियाँ थीं और इस तुम्हारे साथी की पाँच, कुल आठ रोटियाँ थीं और तुम खाने वाले तीन तो उन आठ रोटियों के तीन तीन टुकड़े टुकड़े करो तो चौबीस टुकड़े बनते हैं अब इन चोबीस टुकड़ों को तीन खाने वालों पर तक़सीम करो तो आठ आठ टुकड़े सबके हिस्से में आए यानी तीनों ने आठ आठ टुकड़े खाए। आठ तुम ने, आठ तुम्हारे साथी और आठ तुम्हारे महमान ने, अब सुनो के तुम्हारी तीन रोटियाँ थीं, इन तीन रोटियों के तीन तीन टुकड़े करें तो नो टुकड़े बनते हैं और तुम्हारे साथी की पाँच रोटियाँ थीं, इन पाँच रोटियों के तीन तीन टुकड़े करें तो पंद्रह टुकड़े बनते हैं तो तुमने अपने नो टुकड़ों में आठ खुद

खाए और तुम्हारा सिर्फ एक टुकड़ा बचा जो महमान ने खाया लिहाज़ा तुम्हारा एक रुपया, तुम्हारे साथी ने अपने पंद्रह टुकड़ों में से आठ खुद खाए और उसके सात टुकड़े बचे जो महमान ने खाए, लिहाज़ा सात रुपये उसके, ये फैसला सुनकर वो शख़्स हैरान रह गया और मजबूरन उसे एक ही रुपया लेना पड़ा और दिल में कहने लगा के तीन ही ले लेता तो अच्छा था। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 126)

सबक़:- हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जो बाब मदीनत-उल-इल्म हैं बड़े बड़े मुश्किल मसायल को हल फ़रमाया और वाक़ई आप मुश्किल कुशा हैं।

हिकायत नम्बर (179) जंगली दरिंदा

एक शख़्स ने हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह से अर्ज़ किया के जनाब! मेरा इरादा सफर का है मगर मैं जंगली दरिंदों से डरता हूँ आपने उसे एक अंगूठी देकर फ़रमाया, जब तेरे नज़दीक खौफनाक जानवर आए तो फौरन कह देना के ये अली बिन अबी तालिब की अंगूठी है, अज़ाँ बाद इस शख़्स ने सफर किया और इत्तेफाक़ से राह में एक जंगली दरिंदा उस पर हमला करने दौड़ा, उसने पुकार कर कहा ऐ दरिंदे! ये देख मेरे पास अली इब्ने अबी तालिब की अंगूठी है, दरिंदे ने जब हज़रत अली की अंगूठी देखी तो अपना सर आसमान की तरफ़ उठाया और फिर वहाँ से दौड़ता हुआ कहीं चला गया, ये मुसाफिर जब सफर से वापस आया तो उसने ये सारा क़िस्सा हज़रत अली को सुनाया तो आपने फ़रमाया, उस दरिंदे ने आसमान की तरफ़ मुंह करके ये क़सम खाई थी और कहा था के मुझे रब्बे समा की क़सम! मैं इस इलाके में बिलकुल हरगिज़ ना रहूंगा जिसमें लोग अली इब्ने अबी तालिब के सामने मेरी शिकायत करें। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 351, जिल्द 2)

सबक़: शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो अन्ह का रौब व दबदबा जंगली शेरों और दरिंदों पर भी था।

हिकायत नम्बर (180) जिब्राईल की तलाश

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास एक मर्तबा जिब्राईल एक आदमी की शक्ल में हाज़िर हुआ और आकर कहने लगा ऐ अली! आप बाब मदीनत-उल-इल्म हैं ज़रा जिब्राईल की तलाश तो कीजिए और बताईये इस वक़्त जिब्राईल कहाँ है? हज़रत अली रज़ी अल्लाहो

अन्ह ने पहले तो दायें बायें देखा फिर ज़मीन की तरफ़ देखा फिर ऊपर देखा और फ़रमाया, इस वक़्त जिब्राईल ना तो आसमानों में नज़र आया है और ना ज़मीन में कहीं लिहाज़ा मेरे ख़याल में जिब्राईल तू ही है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 352)

सबक़:- ये नज़र है हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की जो मदीनत-उल-इल्म के दरवाज़े हैं फिर जो मदीनत-उल-इल्म हैं और मौला अली के भी मौला हैं यानी हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के इल्म व नज़र की वुसअत का जो इंकार करे और यूं कहे के हुज़ूर को दीवार के पीछे की भी ख़बर ना थी किस क़द्र जाहिल व बेख़बर है।

हिकायत नम्बर (181) लड़के की माँ

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के ज़माने में दो औरतों ने बच्चे जने रात अंधेरी थी, एक के हाँ लड़का पैदा हुआ और एक के हाँ लड़की, दोनों में झगड़ा इस बात का पैदा हुआ के हर एक कहती थी के लड़का मैंने जना है, आख़िर कार दोनों हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास लाई गईं हर एक उनमें से ये कहती थी के लड़के की माँ मैं हूँ, हज़रत अली ने फ़रमाया के तुम दोनों थोड़ा थोड़ा दूध छातियों से निकाल कर दो बर्तनों में रखो, चुनाँचे ऐसी ही किया गया आपने दोनों दूधों को तोला एक वज़नी उतरा फ़रमाया जिसका दूध वज़नी है लड़का उसी का है, ये फैसला सुनकर लोगों ने दरयाफ़्त किया के आपने ये मसला कहाँ से निकाला, फ़रमाया आयत *लिज़्ज़करी मिस्लू हज़्ज़िल उनसीयीन* से, इस आयत से साफ मालूम होता है के खुदा ने मर्द को हर चीज़ में फज़ीलत दी है हत्ता के ग़िज़ा में भी, पस मैंने इसी हक़ीक़त के पेशे नज़र सोचा था के लड़के की माँ का दूध ज़रूर वज़नी होगा। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 355, जिल्द 2)

सबक़: इस क़िस्म की उक़्दा कुशाई इल्मे दीन ही की बदौलत हो सकती है और क़ुरआने पाक का सही इल्म रखने वाला क़ुरआने पाक से हर मुश्किल का हल पा लेता है।

हिकायत नम्बर (182) मुश्किल सवालात

तौरात के एक आलिम ने जिसका नाम मुज़िर था एक मर्तबा हज़रत अली से पूछा के मेरे चन्द सवालों का जवाब दीजिए। हज़रत अली ने फ़रमाया पूछो क्या पूछते हो? उसने पूछा।

बताईये वो कौन सा मर्द है जिसका ना बाप है ना माँ और वो कौन सी औरत है जिसका ना बाप है ना माँ? और वो कौन सा मर्द है जिसकी माँ तो है लेकिन बाप नहीं और वो कौन सा पत्थर है जिसने जानवर जना है और वो कौन सी औरत है जिसने एक ही दिन में सिर्फ तीन घड़ियों में बच्चा जन दिया और वो कौन से दो दोस्त हैं जा आपस में कभी दुश्मन ना बनेंगे और वो कौन से दो दुश्मन हैं जो आपस में कभी दोस्त ना बनेंगे?

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया, जवाब सुनो! मर्द जिसका ना बाप है ना माँ आदम अलेहिस्सलाम हैं और वो और जिसका ना बाप है, ना माँ हव्वा अलेहिस्सलाम हैं और वो मर्द जिसकी माँ है लेकिन बाप नहीं। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम हैं और वो पत्थर जिसने जानवर जना है वो वो पत्थर है जिससे हज़रत सालेह अलेहिस्सलाम की ऊंटनी पैदा हुई और वो औरत जिसने एक ही दिन में तीन घड़ियों में बच्चा जना, मरयम अलेहाअस्सलाम हैं जिनको एक घड़ी में हमल ठहर गया और दूसरी घड़ी में दर्देज़ेह पैदा हुई और तीसरी घड़ी में हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम पैदा हो गए और वो दोस्त जो कभी आपस में दुश्मन ना बनेंगे जिस्म और रूह हैं और वो दुश्मन जो कभी आपस में दोस्त ना बनेंगे मौत और हयात हैं। मुज़िर ने सुनकर कहा वाक़ई ऐ अली! तुम ने सही जवाब दिए और वाक़ई तुम बाब *मदीनत-उल-इल्म* हो। (जामअे-उल-मोजज़ात, सफ़ा 23)

सबक़:- *मदीनत-उल-इल्म* के बाब के इल्म से पता चलता है के *मदीनत-उल-इल्म* सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम में कोई ऐसी शै नहीं जो ना हो।

हिकायत नम्बर (183) यहूदी की दाढ़ी

एक यहूदी की दाढ़ी बहुत मुख़्तसिर थी, ठोड़ी पर चन्द एक गिनती के बाल थे और हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो अन्ह की दाढ़ी मुबारक बड़ी घनी और भरी हुई थी, एक दिन वो यहूदी हज़रत अली से कहने लगा, ऐ अली! तुम्हारा ये दावा है के क़ुरआन में जमीअ उलूम हैं और तुम बाब मदीनत-उल-इल्म हो तो बताओ के क़ुरआन में क्या तुम्हारी घनी दाढ़ी और मेरी मुख़्तसिर दाढ़ी का भी ज़िक्र है? हज़रत अली ने फ़रमाया? हाँ है लो सुनो! क़ुरआन में आता है:

वलबलादूत्तय्यबू यख़रूजू नबाताहू बिइज़नी रब्बीही वल्लज़ी ख़बूसा ला यख़रूजू इल्ला नकीदा

"यानी जो अच्छी ज़मीन है उसका अल्लाह के हुक्म से खूब निकलता है और जो खराब है उसमें नहीं निकलता मगर थोड़ा मुश्किल।"

तो ऐ यहूदी! वो अच्छी ज़मीन मेरी ठोड़ी है और ख़राब ज़मीन तेरी ठोड़ी।

सबक़:- क़ुरआने पाक में जमीअ उलूम मौजूद हैं मगर कोई समझने वाला होना चाहिए।

हिकायत नम्बर(184) हज़रत अली और इख़्लास

(मंज़ूम हिकायत)

कहते हैं शेरे खुदा ने एक बार
एक दुश्मन पर किया खंजर का वार
भागा ऐसा ज़ख़्म खा के पुश्त पर
की ना मारे ख़ौफ के पीछे नज़र
कब भला मुमकिन था कर के कोई छल
शेर के पंजे से यूं जाए निकल
कर तआक़्क़ुब जा गिराया खाक पर!
थे जुदा करने को सर से उसका तन
नागहाँ उस मुशरिक बेअक़्ल ने
चाँद से चहरे पर थूका जहल से
मुर्तज़ा ने हाथ से खंजर को छोड़
मुंह लिया उस काफिर बे दीं से मोड़
छोड़ कर उसको हुए यक्सू खड़े
ये कहा बख़्शा तुझे हट जा परे
दरगुज़र थी ये ख़िलाफ दाबे जंग
रह गया काफिर खड़ा हैरान व दंग
दस्त बस्ता अर्ज़ की ऐ बा कमाल
गर इजाज़त हो करूं मैं इक सवाल
मौत थी मेरी शरारत की सज़ा
अफ़्व में मुझ को बता हिकमत है क्या
मुसकुरा कर वो वली उन्स व जाँ
यूं हुए अपनी ज़बाँ से दरफिशाँ
मुझ को तुझ से थी ना ज़ाती दुश्मनी
जो अदावत तुझ से थी लिल्लाह थी

मारता उस वक़्त मैं तुझ को अगर
नफ़्स कहता दिल में अपने फूल कर
इन्तेक़ाम उससे लिया अच्छा किया
थूकने का उसने कुछ पाया मज़ा
मारता तुझ को अगर मैं इस तरह
मुंह दिखाता फिर खुदा को किस तरह
शेरे हक़ हूँ हक़ पे है मेरा यक़ीं
नफ़्स के कहने पे मैं चलता नहीं
देखकर इख़्लास शाहे दीन का
मुशरिक बे दीं मुसलमान हो गया
मुर्तज़ा का देखकर इख़्लासे ताम
क़ौम भी उसकी हुई मोमिन तमाम
शेरे हक़ से ले सबक़ इख़्लास का
यूं अदा करते हैं हक़ इख़्लास का

(मसनवी शरीफ का तर्जुमा, मोतियों का हार, सफ़ा 78)

सबक़:- हिल्म की तलवार करती है वो काम
छोड़ती हर गिज़ नहीं दुश्मन का नाम

हिकायत नम्बर (185) अली अलमुर्तज़ा की शहादत

जिस तरह इब्ने सबा के गिरोह को सहाबा इक्राम से अदावत थी इसी तरह ख़ारज़ी गिरोह को अहले बैत से अदावत थी और ये दोनों गिरोह ही इस्लाम और मुसलमानों के लिए बेहद ख़तरनाक साबित हुए। चुनाँचे हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो अन्ह से उन ख़ारजियों को सख़्त अदावत थी और एक ख़ारजी मलऊन ने जिसका नाम इब्ने मलजिम था हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह को शहीद कर देने का प्रोग्राम बनाया और एक एक तलवार को ख़ास इसी नापाक मक़्सद के लिए ज़हर में बुझाया और मौक़े का मुंतज़िर रहा, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो का दार-उल-खिलाफा कूफा था और आप एक रोज़ सुबह की नमाज़ पढ़ने मस्जिद को जा रहे थे के इब्ने मलजिम ख़ारजी ने जो रास्ते में छुपकर बैठा हुआ था, हज़रत पर हमला कर दिया और आपके माथे पर तलवार मारी, हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने तलवार का ज़ख़्म खा कर एक नअरा मारा फुरूतू बिरब्बिल कअबती "खुदा की क़सम! मैं अपनी मुराद को पहुँचा" और फिर आप ज़मीन पर गिर गए

और हुक्म फ़रमाया के मरे क़ातिल को पकड़ कर मेरे पास ले आओ ये हुक्म सुनकर लोग इब्ने मलजिम ख़ारजी को पकड़ कर ले आए। हज़रत अली ने फ़रमाया इस मेरे मेहमान के लिए नर्म बिस्तर बिछाओ, अच्छा खुश ज़ायक़ा खाना पका कर उसे खिलाओ और उसे ठंडा पानी भी पिलाओ। ज़ख़्म से खून ज़्यादा निकल जाने से फिर आपको बहुत ज़्यादा ज़ौफ लाहक़ हुआ और आपको शिद्दत से प्यास लगी, घर वाले आपके लिए शर्बत बना कर लाए, हज़रत ने फ़रमाया के पहले मेरे क़ातिल को ये शर्बत पिलाओ, घर वाले जब शर्बत इब्ने मलजिम के पास लाए तो वो बदबख़्त बोला, मैं जानता हूँ के तुमने इसमें मेरे लिए ज़हर घोल रखा है ये कह कर पीने से इंकार कर दिया, हज़रत अली करमल्लाहो वजह ये बात सुनकर रोए और फ़रमाया ऐ बद नसीब! अगर तू इस वक़्त ये मेरा शर्बत पी लेता तो मैं क़यामत के दिन जामे कोसर हर गिज़ ना पीता जब तक पहले तुझे ना पिलाता मगर मैं क्या करूं के तूने मेरे साथ रहना पसंद नहीं किया। इसके बाद आपकी हालत बहुत नाज़ुक हो गई और फ़रमाया, मैं देख रहा हूँ के बहुत बड़ी जमात फरिश्तों की है उनके साथ बहुत बड़े क़ाफ़ले नबियों के हैं सबसे आगे सालार क़ाफ़ला हुज़ूर सय्यद-उल-मुरसलीन मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम हैं और मुझ से फ़रमाते हैं के ऐ अली! खुश हो जाओ के अब तुम बड़े बेचैन और राहत में बुलाए जाते हो, उसके बाद आपने कुछ वसीयतें फ़रमाईं फिर कुछ मुश्क बतौर तबुर्रूक निकाला और रोए, पूछा गया के ये मुश्क कैसा है? फ़रमाया हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मुबारक जनाज़ह को इस मुश्क में बसाया गया था उस वक़्त थोड़ा सा मुश्क बतौर तबर्रूक मैंने आज के दिन के लिए रख लिया था जब मुझे गुस्ल देकर कफन पहनाओ तो ये मुश्क मेरे बदन पर लगा देना फिर अस्सलाम अलेकुम कहा, उसके बाद कलमा शरीफ का विर्द फ़रमाया और अपनी जान राहे हक़ में कुर्बान कर दी, *इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन।* (सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 111)

सबक़:- उन अल्लाह वालों की ये सीरत है के अल्लाह की राह में ज़ख़्म खाते हैं और क़सम खा कर फ़रमाते हैं के हम अपनी मुराद को पहुँचे और अपने क़ातिल की ख़ातिर व मदारात करते हैं और उन पर बड़े बड़े मसायब व आलाम नाज़िल होते हैं और वो हर हाल में खुदा की मर्ज़ी पर राज़ी रहते हैं और ये भी मालूम हुआ के उन पाक लोगों की मौत महेज़ एक इन्तिक़ाल मकानी होती है और वो बड़े इतमिनान के साथ अस्सलाम अलेकुम

फ़रमा कर और कलमा शरीफ़ का विर्द फ़रमाते हुए अपने महबूब हक़ीक़ी के पास पहुँच जाते हैं।

हिकायत नम्बर (186) नबी के चार यार

एक दिन हज़रत जिब्राईल एक तबाक़ लेकर आए, जो जन्नत के सेबों से लबरेज़ था, तबाक़ हुज़ूर सल-लल्लहो अलेह व सल्लम के सामने रखकर अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! आप इसमें से उस शख़्स को इनायत कीजिए जो आपको प्यारा हो, ये तबाक़ एक नूरानी खुवानपोश से ढका हुआ था हुज़ूर ने अपना दस्ते अनवर उसमें दाख़िल करके एक सेब निकाला देखते क्या है के उसकी एक जानिब लिखा हुआ है *हाज़िही हदयातुंम मिनल्लाही लिअबी बक्रनिस्सिद्दीक़* "यानी ये खुदा का तोहफा है अबुबक्र के लिए" और उसकी दूसरी जानिब ये इबारत लिखी हुई है *मन अबग़ज़ास सिद्दीक़ा फहुवा ज़िंदीकुन* "यानी सिद्दीक़ से बुग्ज़ रखने वाले बेदीन है" फिर आपने दूसरा सेब उठाया, उसके एक तरफ़ तो ये लिखा था *हदयातुन मिनलवहाबी लिउमरिबनिल ख़त्ताबी* "यानी ये खुदाऐ वहाब का तोहफा है उमर बिन ख़त्ताब के लिए" और दूसरी जानिब ये लिखा है *मन अबग़ज़ा उमरा फहुवा फी सक़रा* "यानी उमर के दुश्मन का ठिकाना जहन्नम में है" जाँ बाद एक और सेब उठाया जिसके एक जानिब ये लिखा था *हाज़िही हदयातुन मिनलहन्नानिल मन्नानिल उसमानिबनी अफ़्फान* "यानी ये खुदाए मन्नान व हन्नान का तोहफा है उस्मान बिन अफ़्फान के लिए"। और दूसरी तरफ़ ये लिखा था *मन अबग़ज़ा उस्माना फख़सामाहू अर्रहमानू* "यानी उस्मान के दुश्मन का रहमान दुश्मन है"। फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने तबाक़ में से एक और सेब उठाया जिसके एक जानिब तो ये लिखा था *हाज़िही हदयातुन मिनल्लाहिल ग़ालिबी लिअलिय्यिब्नी अबी तालिबी* "यानी ये खुदाऐ ग़ालिब का तोहफा है अली इब्ने अबी तालिब के लिए"। और दूसरी जानिब ये लिखा है *मन अबग़ज़ा अलिय्यन लम यकुन लिल्लाही वलिय्यन* "यानी अली का दुश्मन खुदा का दोस्त नहीं"। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने इन इबारात को पढ़ कर अल्लाह की बेहद हम्दो सना की। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 361, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के ये चार यार जिनकी बाज़ हिकायात आपने पढ़ीं बड़े मर्तबों और दर्जों के मालिक हैं और चार याराने नबी का दुश्मन अल्लाह का दुश्मन है लिहाज़ा हर मुसलमान को उन

"चार यार" से मोहब्बत रखना लाज़िम है और उनकी अदावत से बचना वाजिब वरना ईमान की ख़बर नहीं।

हिकायत नम्बर(187) पंजतन पाक

एक दिन नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मदीना मुनव्वरह के एक दरवाज़े से इस तरह बरआमद हुए के आपके दायें तरफ़ हज़रत अबुबक्र, बायें तरफ़ हज़रत उमर, आगे हज़रत अली और पीछे हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अनहुम थे। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फ़रमाया सुन लो के हम जन्नत में भी यूं ही दाख़िल होंगे तो जो कोई हम में ज़रा भी तफरीक़ डाले उस पर खुदा का मार। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 362, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर के चार यार हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के यहाँ भी साथी थे और जन्नत में भी साथी होंगे।

हिकायत नम्बर (188) रसूल अल्लाह(स॰अ॰स॰) का एलाने हक़

एक दिन नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने मिंबर पर चढ़कर अव्वल तो खुदा की हम्दो सना की फिर फ़रमाया, अबु बक्र हुज़ूर के पास आए हुज़ूर ने उन्हें सीने से लगा लिया और दोनों आँखों के दरमियान बोसा दिया और फिर बुलंद आवाज़ से फ़रमाया, ऐ मुसलमानों के गिरोह! ये अबु बक्र सिद्दीक़ हैं, मुहाज्रीन व अनसार के बुज़ुर्ग व शेख़ हैं ये मेरे सच्चे दोस्त और हमदर्द हैं, जिस वक़्त लोगों ने मुझे झुटलाया उन्होंने मेरी तसदीक़ की, उन्होंने जान व माल से मेरी ख़ैर ख़्वाही की, मेरी ख़ातिर बिलाल को ख़रीदा और उसे आज़ाद किया तो सुन लो के उनके दुश्मन पर खुदा की फटकार हो, खुदा ऐसे शख़्स से बेज़ार है और मैं भी बेज़ार हूँ, तुम लोगों को चाहिए के मेरा ये एलान सब को सुना दो।

फिर फ़रमाया, उमर कहाँ हैं? हज़रत उमर बोले मैं हाज़िर हूँ, फ़रमाया मेरे पास आओ, आप हुज़ूर के पास पहुँचे तो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने उन्हें भी सीने से लगा कर पैशानी पर बोसा दिया और फिर बुलंद आवाज़ से फ़रमाया ऐ मुसलमानों की जमात! ये उमर बिन ख़त्ताब मुहाज्रीन व अनसार के शेख़ व बुज़ुर्ग हैं, यही वो हैं जिनके दिल और ज़बान पर खुदा ने हक़ नाज़िल फ़रमाया और जो सच्ची बात कहने से नहीं रूकते तो सुन लो के जो उनका दुश्मन है खुदा और उसका रसूल उससे भी बेज़ार हैं और

उस पर खुदा की मार हो, जाँ बाद फ़रमाया, उस्मान कहाँ हैं? हज़रत उस्मान बोले हुज़ूर! मैं हाज़िर हूँ, फ़रमाया, मेरे पास आओ, हज़रत उस्मान हुज़ूर के पास गए तो हुज़ूर ने उन्हें भी छाती से लगाया और पैशानी को चूम कर बुलंद आवाज़ से फ़रमाया, ये उस्मान मुहाज्रीन व अनसार के शेख़ व बुज़ुर्ग हैं यही वो शख़्स हैं जिन से आसमान के फरिश्ते भी हया करते हैं, यही वो हैं जिनके निकाह में मैंने खुदा के हुक्म से दो बेटियाँ दीं और उनको अपना दामाद बनाया, तो सुन लो के उनके दुश्मन पर भी खुदा की लानत!

इसके बाद फ़रमाया अली कहाँ हैं? हज़रत अली बोले या रसूल अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ, फ़रमाया, मेरे पास आओ, हज़रत अली हुज़ूर के पास गए तो हुज़ूर ने उन्हें भी सीने से लगाया, पैशानी को चूमा और फिर बुलंद आवाज़ से फ़रमया ऐ मुसलमानों के गिरोह! ये अली इब्ने अबी तालिब हैं, मुहाज्रीन व अनसार के शेख़ व बरगज़ीदा हैं ये मेरे भाई और मेरे चचा के बेटे और मेरे दामाद भी हैं, ये मेरे भाई गोश्त और खून हैं ये अल्लाह के दुश्मनों के लिए तलवार हैं, यही शेर खुदा हैं, सो सुन लो के उनके दुश्मन पर खुदा की लानत इससे मैं भी बुरी हूँ, और खुदा भी बरी है जो शख़्स खुदा और रसूल से बेज़ारी चाहे वो अली से बेज़ार हो। (नुज़हत-उल-मजाजिलस, सफ़ा 365, जिल्द 2)

सबक़:- रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने अलल एलान अपने चार यारों के मदारिज बयान फ़रमा दिए और मुसलमानों को ख़बरदार कर दिया के उनसे मोहब्बत रखना ज़रूरी है और उनसे अदावत व बेज़ारी मौजिब लानत है लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिए के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के चार यारों से मोहब्बत रखे।

हिकायत नम्बर (189) जज़ीरे का जिन्न

हज़रत इमाम शफ़अई अलेह अर्रहमत ने एक शख़्स को मक्का में देखा जो पहले इसाई था और अब मुसलमान हो चुका था, इमाम शफ़अई ने उससे पूछा के तेरे मुसलमान होने का सबब क्या है? वो बोला, मैं एक बहरी सफर में था के हमारी कश्ती टूट गई और पानी की मोजों ने उसे एक ऐसे जज़ीरे में ले जा कर डाल दिया जिसमें फल फूल और साफ सुथरे पानी की नहरें जारी हैं। मैंने उस जज़ीरे पर सारा दिन गुज़ारा, रात हुई तो क्या देखता हूँ के एक चोपाया जिसका सर शुतर मुर्ग के सर जैसा था और चेहरा आदमी का सा, उसके हाथ पाँऊ ऊँट के से थे और दुम मछली की सी, वो बुलंद आवाज़ से

कह रहा था के खुदा के सिवा कोई परसतिश के लायक़ नहीं और मोहम्मद उसके बरगज़ीदा रसूल हैं और अबु बक्र उनके यारे ग़ार, उमर फ़तूहात के मालिक, उस्मान शहीद और अली काफ़िरों पर खुदा की तलवार हैं। उनके दुश्मनों पर खुदा की मार हो। मैं ये मंज़र देख कर डर कर भागने लगा तो उसने कहा, ठहर जा और एक क़दम भी आगे मत रखना वरना अभी हलाक हो जाएगा, फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगा, तेरा दीन क्या है? मैंने कहा, इसाई, उसने बड़ी नर्मी से कहा तो मुसलमान हो जा, तमाम आफतों से महफ़ूज़ रहेगा, चुनाँचे मैं मुसलमान हो गया, फिर उसने कहा खूब याद रख के तेरा इस्लाम अबु बक्र, उमर, उस्मान और अली की मोहब्बत रखने की वजह से तकमील को पहुँचेगा, मैंने उससे पूछा के ये बातें तुम्हें कैसे मालूम हुईं? वो बोला, मैं जिन्न हूँ और हमारी एक जमात है जो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम पर ईमान ला चुकी है, ये सब बातें हमारी इस जमात ने हुज़ूर की ज़बानी सुनी हैं। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 367, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के चार यारों की मोहब्बत व उल्फत इंसानों और जिनों के दिल में भी है लेकिन शर्त ये है के इस्लाम मौजूद हो।

हिकायत नम्बर (190) सिद्दीक़ व फारूक़ का दुश्मन

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम सहाबा इक्राम की मईयत में अपनी मस्जिद में रौनक अफरोज़ थे के एक मुनाफिक़ जो बज़ाहिर मुसमलमान था आया और उसकी पिंडलियों से खून बह रहा था, हुज़ूर ने दरयाफ़्त फ़रमाया ये क्या हुआ? उसने बताया के फलाँ मुहल्ले की फलाँ गली से गुज़र रहा था के वहाँ एक कुतिया ने मुझे काट लिया है, थोड़ी देर के बाद एक और मुनाफिक़ आया उसकी पिंडलियों से भी खून बह रहा था, उसने भी यही बताया के उस कुतिया ने मुझे काट खाया है, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने सहाबा इक्राम से फ़रमाया, चलो तो उस कुतिया को देखें, मुमकिन है वो दीवानी हो गई हो, चुनाँचे हुज़ूर सहाबा इक्राम की मईयत में वहाँ पहुँचे तो उस कुतिया ने हुज़ूर को देखते ही आपके क़दमों पर लौटना शुरू कर दिया और जब हुज़ूर ने उससे पूछा के तूने उन दोनों को क्यों काटा? तो वो बज़बाने फसीह बोली, या रसूल अल्लाह! ये दोनों मुनाफिक़ हैं और ये दोनों आपके यारे ग़ार सिद्दीक़े अक्बर और फारूक़े आज़म को गालियाँ दे रहे थे मुझे गुस्सा आया तो मैंने उन्हें काट खाया, हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह

व सल्लम ने फिर उन दोनों आदमियों से पूछा तो उन्होंने इक़रार किया और तौबा की। (जामअे अलमोजज़ात लरहादी मतबूआ मिस्र, सफ़ा 19)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर और फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अनहुमा को जो गालियाँ देता है उससे तो जानवर भी अच्छे हैं और ये भी मालूम हुआ के सहाबा-ए-इक्राम को गालियाँ देने वाले से कुत्ते भी अदावत रखते हैं फिर जो दुश्मुनाने सहाबा से दोस्ती रखे सोचिए के वो कौन है?

हिकायत नम्बर (191) एक बे दीन कुम्हार

हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह अलेह के पड़ोसी में एक बे दीन कुम्हार रहता था जिसने अपने एक गधे का नाम अबु बक्र और एक का उमर रखकर अपनी दिली ख़बासत का इज़हार कर रखा था, एक दिन उन दोनों गधों में से एक ने इस कुम्हार को ऐसी लात मारी के वो मलऊन वहीं ढेर हो गया, ये ख़बर जब हज़रत इमाम आज़म रहमत-उल्लाह अलेह को पहुँची तो आपने फ़रमाया, जाकर देख लो, जिस गधे का नाम मलऊन ने उमर रखा था ये उसी से मारा गया होगा, चुनाँचे तहक़ीक़ की गई तो वो वाक़ई उसी गधे की ज़र्ब से मारा गया था जिसका नाम उसने उमर रखा था। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 859, जिल्द 1)

सबक़:- सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की बे अदबी व गुस्ताख़ी बहुत ख़तरनाक है और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो अन्ह *अशिद्दाऊ अलल कुफ़्फ़ारी* के कुछ ऐसे मज़हर थे के आपका नाम पाक भी जहाँ आया कुफ्र पर हमला आवर हो गया।

हिकायत नम्बर (192) ख़तरनाक दरिंदा

जाफर ख़िदरी फ़रमाते हैं के मैं एक ऐसे क़ाफले के साथ सफर कर रहा था जिसके सब अफ़राद सहाबा इक्राम के दुश्मन थे वो सबके सब हज़रत सिद्दीक़ व हज़रत फारूक़ के मुतअल्लिक़ मुझ से मुनाज़रह करते हुए चल रहे थे मैं हत्ता उलइम्कान उनके हर एत्राज़ का जवाब दे रहा था, इतने में एक ख़तरनाक जंगल आ गया जिस से एक ख़तरनाक दरिंदा निकला, इत्तेफाक़ देखिए के वो दरिंदा सीधा मेरी ही तरफ़ आया और मुझ पर हमला कर के मुझे उठा कर चल दिया, ये देखकर वो क़ाफले वाले बड़े खुश हुए और मुझे इस ख़याल से बड़ी कोफ़्त हुई के वो कहते होंगे के मोहब्बत शेखेन का मज़ा चख लिया, इस दरिंदे ने मुझे अपने भूके बच्चों के आगे लाकर डाल दिया

ताके वो बच्चे खा जाएँ, उस वक़्त मेरे मुंह से बे साख़्ता निकला अग़िस्नी *या रसूल अल्लाह बिहुरमतिश शेखेनी* अब जो इस दरिंदे के भूके बच्चे मेरे क़रीब आए तो मुझे सूंघ कर सब के सब पीछे हट गए, ये देखकर वो दरिंदा ख़ौफनाक आवाज़ में बोला मेरी समझ में वो कह रहा था के खाते क्यों नहीं? पीछे क्यों हट गए? इसके बच्चों ने बज़बान फसीह जवाब दिया *लक़द जव्वातना सलसता अय्यामिन सुम्मा जिअतना बिमन युहिब्बो असहाबन नबिय्यी सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम*

"तूने हमें तीन दिन का भूका रखा और आज इस शख़्स को ले आया हो जो नबी करीम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के असहाब से मोहब्बत रखता है" (भला हम इसे कैसे खायें)।

मैंने खुद उनका ये जवाब सुना और मुसर्रत में उठा और चल दिया। खुदा की क़सम! मुझे उन्होंने कुछ भी ईज़ा ना दी। (जामअे अल मोजज़ात सफ़ा 12)

सबक़:- याराने नबी की मोहब्बत का जंगली दरिंदों को भी पास है और इस मोहब्बत से जैसे जाफर की जान बच गई इसी तरह इस मोहब्बत से ईमान भी बचता है और ये भी मालूम हुआ के पहले मुसलमान भी मुसीबत के वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को याद किया करते थे और या रसूल अल्लाह का नारा लगा कर हुज़ूर से मदद माँगा करते थे।